महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत

श्री मारफत सागर

श्री राज श्यामाजी

प्रकाशक
श्री ५ नवतनपुरीधाम
जामनगर

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

श्री मारफत सागर

ढूंढें सब म्याराज को, सब म्याराज में सब ।
सो सब म्याराज जाहेर करी, सो सब म्याराज देखसी अब ।

सभी लोग ब्रह्मसाक्षात्कारकी रात्रिको ढूँढते हैं क्योंकि इसमें पूर्णब्रह्म परमात्माकी पहचान होनी है. अब यह रात्रि प्रकट हो गई है. इसलिए अब सभी लोग इसमें पूर्णब्रह्म परमात्माका साक्षात्कार करेंगे.

[कुरान और हदीस ग्रन्थोंमें साक्षात्कारकी रात्रि (शब-ए-म्याराज) का वर्णन किया है और उसकी महिमा भी बताई है. इसी रात्रिमें पूर्णब्रह्म परमात्माका साक्षात्कार होगा एवं ब्रह्मज्ञान प्रकट होगा, ऐसा कहकर भविष्यवाणी भी की गई है. इसलिए सभी लोग इसी रात्रिकी प्रतीक्षा कर रहे थे. श्री प्राणनाथजीने कुरान और हदीस ग्रन्थोंका प्रमाण देकर इस रात्रिके आगमनकी बात की है. एक हजार महीनेसे भी बड़ी इस महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) में ब्रह्मात्माएँ ब्रह्मधामसे ब्रह्मज्ञान लेकर इस जगतमें अवतरित होंगी. उनके प्रतापसे लोग इस रात्रिका महत्त्व समझेंगे और परब्रह्म परमात्माका साक्षात्कार करेंगे. महामति श्रीप्राणनाथजीने उक्त चौपाईके द्वारा इसी सन्दर्भको व्यक्त किया है]

॥ मसौदा ॥

ए किताब मारफत सागर, जो हकताला के हुकम से हुई । हादी के दिलपर आप बैठ के बिगर हिजाब बारीक बांतें, चौपाई मुंहसे केहेवाई । सो कलाम ज्यों आवते

गए, त्यों यारोंने लिखे, और हादी फेर प्यार से सुनते गए। सो सुन सुन के हुकम से, हाल अपने पर, अरस बका लाहूती का लेते गए, और जामा नाजुक होता गया। सो इहां तांईं के आखर इस आलम नासूत सेती कूच करके, अपने रूहानी आलम बका वतन हमेसगी, असलु मिलाप के आराम पकड्या, और ए चौपाई जो नाजिल होती गई थीं सो मसविदे ज्योंही के त्योंही रहे। सो अब हक हादी के हुकम से मोमिनों ने इसके बाब बांधे हैं, माफक अकल अपनी के। पर ए जो चौपाई हादीने फुरमाई थी, तिनमें एक हरफ ज्यादा या कम नहीं किए। अब मोमिन इन चौपाइयों के हरफ हरफ के माएने मगज, जाहेर के और बातून के लेय के, हकके हुकम से हादीके कदमों कदम धरेंगे। किस वास्ते के मोमिन हादीके अंग नूर हैं, और नूर विलंद से उतरे हैं। तो चढना इनोंको जरूर है, और अरस बका के पट हादीने, इलम लुदंनी से खोल दिए हैं। आप हकने नाजी फिरके को हिदायत करके, निसबत मोमिन असलू तन, जो बीच अरसके हक हादीके कदम तले बैठे हैं। सो देखाए दई है, रूहकी नजर से। जिनसों हक तालाने बका खिलवत बीच, कौल अलस्तो बे रब कुम का किया, तब कालूबला भी रूह मोमिनों ने कह्या है। और कलाम अल्ला, और हदीसों, और कैयों किताबों के बातूनी मगज मायेने हादी ने वारस मोमिनों कों, रूह की नजर खोलके, दिल हकीकी पर साहेदियों सेती नकस किया है । और दिल अरस कह्या है। और दुनियां मुरदार भी नजीक मोमिनोंके हैं । तिस वास्ते जो हादी तुमको बुलावने आए थे। सो पट बका का खोलके, आगे से केतेक यारों को लेके पधारे हैं। तो मोमिनोकों जरूर कदमों कदम धरना है। हुकम एक हादीके सेती।)

भूमिका-मसविदा (मसौदा) का भावार्थ

इस पूर्वपक्ष (मसविदा) में श्री केशवदासजीने मारफत सागर ग्रन्थके प्रति हृदयके उद्‌गार प्रकट किए हैं- यह मारफत सागर ग्रन्थ परमात्माके आदेशसे प्रकट हुआ है. स्वयं परमात्माने श्री प्राणनाथजीके हृदयमें प्रत्यक्ष (परदाके बिना) विराजमान होकर ये चौपाइयाँ उनके मुखारविन्दसे प्रकट करवाईं हैं. जैसे-जैसे इसका अवतरण होता गया वैसे-वैसे उपस्थित ब्रह्मात्माओंने इसको लिखा. श्री प्राणनाथजीने उनको पुनः सुना. इनको सुनकर वे ब्राह्मी स्थितिमें पहुँचते थे और परमधामका प्रत्यक्ष अनुभव करते थे. जैसे ही उनका शरीर क्षीण होता गया वे नश्वर संसारसे प्रयाण कर दिव्य परमधाममें अपने मूल पर-आत्मा स्वरूपसे श्री राजजीसे मिले.

उनके मुखारविन्दसे जो चौपाइयाँ अवतरित होतीं थीं उनका मसविदा वैसेका वैसा रहा था. अब उनके आदेशसे ब्रह्मात्माओंने अपनी बुद्धिके अनुसार इसके प्रकरणोंको एक जिल्दमें बाँध कर ग्रन्थका रूप दिया. चौपाइयोंमें एक भी शब्दको कम या अधिक नहीं किया. अब ब्रह्मात्माएँ इन चौपाइयोंके एक-एक शब्दके बाह्य एवं गूढ़ अर्थ ग्रहण कर श्री राजजीके आदेशसे सद्गुरुके चरण चिह्नों पर चलेंगी. क्योंकि ब्रह्मात्मआएँ श्री श्यामाजीकी अङ्गस्वरूपा हैं और दिव्य परमधामसे अवतरित हुईं हैं. इनको परमधाममें अवश्य पहुँचना है. इनके लिए सद्गुरुने दिव्य परमधामके द्वार खोल दिए हैं. स्वयं परमात्माने इन धर्मनिष्ठ समुदायको मार्ग दर्शन दे कर इनको आत्मदृष्टिसे परमधामका अनुभव करवाया है, जहाँ पर वे स्वयं श्री राजजीके चरणोंमें विराजमान हैं. इन्हीं ब्रह्मात्माओंके साथ श्री राजजीने परमधाम मूलमिलावेमें 'क्या मैं तुम्हारा स्वामी नहीं हूँ (अलस्तो बि रब कुम) ?' कह कर अपने आनेके वचन दिए थे. उस समय ब्रह्मात्माओंने भी अवश्य कह कर उनके स्वामित्वको स्वीकार किया. श्री प्राणनाथजीने कुरान, हदीस तथा अन्य धर्मग्रन्थोंमें गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर उनके उत्तराधिकारी ब्रह्मात्माओंकी आत्मदृष्टिको खोलकर उनके हृदयमें अङ्कित किया था. इन्हीं ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम कहा गया है. नश्वर जगतके जीव भी ब्रह्मात्माओंके निकट हैं. इसलिए सद्गुरु ब्रह्मात्माओंको बुलानेके लिए आए थे. अब वे परमधामके द्वारा खोल कर कतिपय मित्रोंको साथ लेकर परमधाम पधारे हैं. अब ब्रह्मात्माओंको भी श्री राजजीका आदेश ले कर अपने सद्गुरुके साथ उनके पदचिह्नों पर चलना है.

खिलवतकी रद बदलें

पहेले कहूं अव्वल की, हक हादी हुकम ।
मोमिन दिल अरस में, हकें धरे कदम ॥ १

महामति कहते हैं, अब मैं सर्वप्रथम श्रीराजजी और श्री श्यामाजी(श्री देवचन्द्रजी) के आदेशानुसार परमधाम मूलमिलावेका वृत्तान्त कहता हूँ. जिस प्रकार श्री राजजीने ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधाम बनाकर उनमें अपने चरणकमल प्रतिष्ठित किए हैं.

जो कह्या आयतों हदीसों, और किताबों बोल ।
जिन पर मोहोर महंमदकी, सो कहूं फुरमाय कोल ॥ २

जिस प्रकार पूर्वकालमें कुरानकी आयतों, हदीसों तथा आन्य आसग्रन्थोंमें

परब्रह्म परमात्माके सम्बन्धमें जो उल्लेख हुआ है और जिन पर रसूल मुहम्मदके नामकी मुद्रा अङ्कित है, उन वचनोंका स्पष्टीकरण करता हूँ ।

एक दूजी को मनसूक, करे आएत आएत कों ।
तिस वास्ते लेऊं चुन चुन, जो सिरें रखी सब मों ॥ ३

कुरानकी एक आयत दूसरी आयतको निरस्त कर देती है । इसलिए मैं उन आयतोंको विवेक पूर्वक चयन कर स्पष्ट करता हूँ जिनको सर्वश्रेष्ठ कहा गया है ।

सो सुध पाइए लुदंनी से, देखे ना उपली नजर ।
जो सिफली के दिल मजाजी, बिन इलम देखे क्यों कर ॥ ४

जागृत बुद्धिके ज्ञान(तारतम ज्ञान) से ही इनका रहस्य स्पष्ट हो सकता है । इनको बाह्यदृष्टिसे समझा नहीं जा सकता । इस नश्वर जगतके प्राणी, जिनका हृदय ही नश्वरतासे व्याप्त है, तारतम ज्ञानके बिना इन ग्रन्थोंका मर्म कैसे समझ सकते हैं ?

हुकमें कहूं ता दिन की, जो हक हादी रूहों खिलवत ।
अबलों जाहेर ना काहूं, ए बका मता वाहेदत ॥ ५

श्री राजजीके आदेशसे अब मैं उस समयकी यथार्थता स्पष्ट करता हूँ जब श्री राजजी, श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ परमधाम मूलमिलावेमें प्रेमपरिचर्चा कर रहे थे । परमधामके इस अद्वितीय एकात्मभावरूपी सम्पदाको अभी तक किसीने भी प्रगट नहीं किया था ।

जब नहीं कछु पैदा हुआ, जिमी या आसमान ।
और ना कछु चौदे तबक, फिरस्ते दुनी जहान ॥ ६

ना तब चारों चीज को, किनहु समारे ।
ना कछु चांद ना सूरज, ना पैदा सितारे ॥ ७

जब सृष्टि ही उत्पन्न नहीं हुई थी उस समय पृथ्वीसे लेकर आकाश पर्यन्त चौदह लोकों युक्त यह ब्रह्माण्ड भी उत्पन्न नहीं हुआ था, देवी-देवताओं एवं मनुष्योंकी भी सृष्टि नहीं हुई थी; पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि प्राकृत

तत्वोंको भी किसीने उत्पन्न नहीं किया था. इतना ही नहीं सूर्य, चन्द्रमा तथा नक्षत्रगण भी प्रकाशमें नहीं आए थे ।

ना कोई कहे बेचून को, नाहीं बेचगून ।
ना केहेने वाला बेसबी का, नाहीं बेनिमून ॥ ८

ना खाली तब हवा सुंन, नाहीं ला मकान ।
ना कछु किया तब हुकम, ए जो कह्या कुंन सुभान ॥ ९

उस समय परमात्माके विषयमें शून्य, निराकार निर्गुण अथवा निरञ्जन कहनेवाली अवधारणाएँ भी नहीं थी(जिनको कुरानमें बेचूँ, बेचगूँ, बेसबी और बेनिमून कहा गया है). उस समय निराकार सहित यह सम्पूर्ण शून्य मण्डल(क्षर जगत) नहीं था एवं परमात्माने भी 'हो जा' (कुन) कहकर सृष्टि रचनाका आदेश नहीं दिया था.

एक बका नूर मकान, आगूं नूर तजल्ला ।
रह्या जबराईल हद नूरकी, आगूं पोहोंचे रसूल अल्ला ॥ १०

उस समय अखण्ड धामके रूपमें अक्षरधाम(नूरमकान) तथा उससे आगे परमधाम (नूर तजल्ला) ही थे. देवदूत जिब्रील भी अक्षरधामकी सीमा तक ही रह गया. उससे आगे मात्र अल्लाहके रसूल (मूहम्मद)की सुरता ही पहुँची है.

जबरूत लाहूत दोऊ बका, हादी रूहें लेवें लज्जत ।
ए पातसाही हक की, बीच नूर वाहेदत ॥ ११

अक्षरधाम एवं परमधाम दोनों ही अखण्ड तथा शाश्वत हैं. वहाँ पर श्री श्यामा एवं ब्रह्मात्माएँ सदैव आनन्दका अनुभव करतीं हैं. इस दिव्य परमधाममें अक्षरातीत परब्रह्म परमात्माका साम्राज्य है. यहीं पर एकान्तस्थली मूलमिलावा है.

जब न्यामत पाई हक की, खुली मुसाफ हकीकत ।
तब सब विध पाइए, हक अरस मारफत ॥ १२

अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्माकी अमूल्य निधि समान तारतम ज्ञानके प्राप्त होने

पर कुरान आदि धर्मग्रन्थोंके सभी रहस्य स्पष्ट हुए एवं परब्रह्म परमात्मा तथा अखण्ड परमधामकी पूर्ण पहचान हुई.

जिनको हक मेहेर सों, आप करें हिदायत ।
सो सबे विध बूझहीं, अरस बका निसबत ॥ १३

स्वयं पूर्णब्रह्म परमात्मा जिन पर कृपा करते हैं एवं ब्रह्मज्ञानके द्वारा जिनको मार्ग दर्शन देते हैं वे ब्रह्मात्माएँ ही अखण्ड परमधामके सम्पूर्ण रहस्योंको समझ सकतीं हैं.

अरस दिल एही हकीकी, अरस रूहें मोमन ।
रहें दरगाह बीच असल, सूरत अरस तन ॥ १४

परमधामकी इन ब्रह्मात्माओंका हृदय ही श्री राजजीका परमधाम कहलाता है. ये ब्रह्मात्माएँ मूलरूपमें दिव्य परमधाम मूलमिलावेके अन्तर्गत चिन्मय स्वरूपमें विराजमान हैं.

खासलखाल रूहें कहीं, ए अहंमद उमत ।
भाई कहे महंमद के, हक खासी खिलवत ॥ १५

श्री श्यामाजीकी अङ्गस्वरूपा इन ब्रह्मात्माओंको कुरानमें खासलखास रूह (सर्वश्रेष्ठ आत्माएँ) कहा गया है. रसूल मुहम्मदने इनको अपने भाई कहा है. ये स्वयं श्री राजजीके अन्तरङ्ग स्थल मूलमिलावेमें विराजमान हैं.

देखो बडाई महंमद, मासूक केहेवें हक ।
इनके सरभर दूसरा, कोई नहीं बुजरक ॥ १६

रसूल मुहम्मदकी महिमाको तो देखो, जो परमात्माके प्रिय (माशूक) कहलाए हैं. कुरानके अनुसार इनके समान गौरवशाली अन्य कोई भी नहीं हुआ है.

दो हिजाब जर मोती के, बीच राह साल सतर ।
हक महंमद दोऊ हिजाब में, आखर बातें करी इन बेर ॥ १७

रसूल मुहम्मदको जब खुदाके दर्शन हुए उस समयका वर्णन करते हुए कतेब ग्रन्थोंमें उनके और खुदाके बीच जरी और मोतीके दो परदे बताए गए हैं. इन दोनोंका अन्तर सत्तर वर्षका कहा गया है. कयामतकी अन्तिम घड़ीमें

खुदाने इन्हीं दो परदोंमें रहकर उनसे बातें कीं.

[दर्शनके समय जो दो परदे कहे गए हैं वे वस्तुतः कयामतके समयके लिए हैं. परब्रह्म परमात्माने कयामतकी इस घड़ीमें सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी एवं महामति श्री प्राणनाथजीके शरीररूप परदेमें रहकर इनसे बातें की. तारतम ज्ञानके अवतरण वि. सं. १६७८ से लेकर मारफत सागरके अवतरण वि. सं. १७४८ पर्यन्त सत्तर वर्ष होते हैं. इन दिनोंमें परमात्माने श्री देवचन्द्रजी तथा श्री प्राणनाथजीके हृदयमें रहकर रसूल मुहम्मद द्वारा लाए गए कुरानका गूढ़ रहस्य उजागर कर दिया.]

ए लिख्या सिपारे आम में, करी बातें हक महंमद ।
सो मोमिन आयत देखके, सकसुभे करें रद ॥ १८

यह प्रसङ्ग कुरानके अम्म सिपारेमें उल्लेख है. तदनुसार रसूल मुहम्मदने खुदासे परिचर्चा की. ब्रह्मात्माएँ इन आयतोंको देख कर अपने सन्देहको मिटा लें.

हक महंमद के बीच में, कहे आडे परदे दोए ।
सतर साल बीच राह कही, जाहेरी माएने निसां क्यों होए ॥ १९

दर्शनके समय खुदा एवं रसूल मुहम्मदके बीच दो परदोंका व्यवधान कहा गया और उन दोनों परदोंके मध्यका मार्ग सत्तर वर्षका बताया गया. कुरानका मात्र बाह्य अर्थ ग्रहण करनेवाले लोग इस प्रसङ्गमें निस्सन्देह कैसे हो सकते हैं ?

जोंलों मुसाफ हकीकत, खोले नहीं वारस ।
कोई पावे ना बिना लुदंनी, हक महंमद रूहें अरस ॥ २०

जब तक कुरानके गूढ़ रहस्योंको उसके उत्तराधिकारी ब्रह्मात्माएँ स्पष्ट नहीं करेंगी तब तक तारतम ज्ञानके बिना श्री राजजी, श्री श्यामाजी, ब्रह्मात्माएँ एवं परमधामकी जानकारी नहीं हो सकती.

ए हादी हमेसगी, अरस बका हक जात ।
नूर रूहें वाहेदत, इत और न कछु ए समात ॥ २१

दिव्य परमधाममें श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ शाश्वत रूपमें हैं. श्री राजजीकी इन प्रकाशमयी आत्माओंके अतिरिक्त वहाँ पर अन्य कोई भी नहीं है.

हुई मजकूर अरस में, सो सब वास्ते इसक ।
अरस हक हादी रूहें, ए साहेबी बुजरक ॥ २२

परमधाममें जो भी परिचर्चाएँ हुई वह सब प्रेमके लिए ही हुई है. वहाँ पर श्री राजजी, श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंकी महत्ता सर्वश्रेष्ठ है.

खिलवत हक हादीय की, जो इसक रूहों असल ।
ए बातून बारीक वाहेदत की, इत पोहोंचे ना फना अकल ॥ २३

परमधाममें श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंका अन्तरङ्ग प्रेमभाव है. अद्वैतभावका यह रहस्य अत्यन्त सूक्ष्म है. नश्वरजगतकी मिथ्या बुद्धि इसका वर्णन नहीं कर सकती.

रूहों कह्या हक हादीयसों, हम तुमारे आसक ।
तुम हमारे मासूक, इनमें नाहीं सक ॥ २४

प्रेम परिचर्चामें ब्रह्मात्माओंने श्री राजजी तथा श्री श्यामाजीसे कहा, हम आपकी अनुरागिणी(आशिक) हैं तथा आप हमारे प्रियतम हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं है.

तब कह्या बडी रूहने, इसक मेरा ताम ।
हक रूहों की मैं आसिक, मेरा याहीमें आराम ॥ २५

तब श्री श्यामाजीने कहा, मेरा आहार ही प्रेम है. मैं स्वयं श्री राजजी तथा ब्रह्मात्माओंकी अनुरागिणी हूँ. मुझे इसीमें आनन्दकी अनुभूति होती है.

तब हकें कह्या हादी रूहों को, तुम मासूक मेरे दिल ।
इत इसक मेरा पाए ना सको, जो सहूर करो सब मिल ॥ २६

तब श्री राजजीने श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंको कहा, तुम दोनों मेरे हृदयमें स्थित प्रियतमा हो. यदि तुम परस्पर मिलकर विचार-विमर्श करोगी तो भी मेरे प्रेमकी थाह प्राप्त नहीं कर सकोगी.

नूर मकान नूर हक का, जित हैं नूरजलाल ।
तिन दिल हकें यों चाह्या, देखें इसक नूर जमाल ॥ २७

अक्षरातीत परमात्माके दिव्य प्रकाशसे अक्षरधाम आलोकित है. वहाँ पर

अक्षरब्रह्म(नूरजलाल) अधिष्ठित हैं. स्वयं श्री राजजीने उनके हृदयमें यह चाहना उत्पन्न की कि मैं अक्षरातीत परमात्माके शाश्वत प्रेमका प्रत्यक्ष अनुभव कर सकूँ.

कैसा इसक बडी रूह सों, कैसा इसक रूहों साथ ।
इसक हादी का हक से, कैसा हक सों इसक जमात ॥ २८

श्री राजजी श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके साथ किस प्रकार प्रेम करते हैं तथा श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंका श्री राजजीके प्रति किस प्रकारका प्रेम है.

ए इसक रमूजे रहे हमेसा, हक हादी रूहन ।
ए बेवरा क्योंए न होवहीं, बीच वाहेदत इसक पूरन ॥ २९

श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंका परस्पर इस प्रकार प्रेमालाप होता रहता है. किन्तु प्रेमसे परिपूर्ण अद्वैत भूमि परमधाममें प्रेमका निरूपण किसी भी प्रकार नहीं हो सकता.

तब हके दिल में यों लिया, मैं देखाऊं अपना इसक ।
और पातसाही अपनी, ए देखें रूहें मुतलक ॥ ३०

तब श्रीराजजीने हृदयमें विचार किया, मैं अपना प्रेम एवं प्रभुत्वको दिखाऊँ जिससे इन ब्रह्मात्माओंको इसकी जानकारी प्राप्त हो जाए.

बका अरस में जुदागी, सो तो कबूं न होए ।
ए बेवरा नहीं वाहेदत में, होए कम ज्यादा बीच दोए ॥ ३१

अखण्ड परमधाममें कभी भी वियोग नहीं हो सकता, इसलिए एकात्मभावमें प्रेमका निरूपण भी नहीं हो सकता. कम और अधिकका निरूपण तो नश्वर जगत में ही संभव है. वहाँ पर एकात्मभाव होनेसे प्रेमके न्यूनाधिक्यका निरूपण नहीं हो सकता.

ए मजकूर अव्वल का, हंसते करें सब कोए ।
पर कम ज्यादा वाहेदतमें, बेवरा क्योंए न होए ॥ ३२

सर्वप्रथम परमधाममें इस प्रकार वार्तालाप हुआ. उस समय सभी हँस-हँस

कर बातें कर रहे थे. वहाँ पर एकात्मभाव होनेसे प्रेमके न्यूनाधिक्यका निरूपण नहीं हो सकता.

हक आसिक हादीय का, और आसिक रूहन ।
ऐसा हक का सुकन, क्यों सहें बंदे मोमन ॥ ३३

स्वयं श्री राजजी श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंके अनुरागी हैं. इस प्रकार उनकी अनुरागिणी आत्माएँ उनके ऐसे वचनोंको कैसे सहन कर सकतीं हैं ?

चाहिए मोमिन आसिक हक के, और आसिक हादीके ।
बडी रूह भी आसिक हकीकी, सीधा इसक बेवरा ए ॥ ३४

वस्तुतः ब्रह्मात्माएँ श्रीराजजी एवं श्री श्यामाजीकी अनुरागिणी होनी चाहिए और श्री श्यामाजी भी श्री राजजीकी अनुरागिणी हैं. प्रेमका सीधा निरूपण ही यही है.

वाहेदत कहिए इन को, एक इसक तन मन ।
जुदागी जरा नहीं, वाहेदत में पाव छिन ॥ ३५

एकात्मभाव उसीको कहा जाता है जहाँ पर तन एवं मन दोनों ही प्रेमसे ओत-प्रोत हों. इस एकात्मभावमें क्षणमात्रका भी वियोग सम्भव नहीं है.

मैं छिपाऊं तुमको, बैठो पकड कदम ।
तुम इसकै से पाओगे, आए मिलो माहें दम ॥ ३६

श्री राजजीने ब्रह्मात्माओंसे कहा, तुम मेरे चरणोंको पकड़ कर बैठो. मैं तुम्हें भ्रमका आवरण डाल कर छिपाऊँगा. तब तुम मुझे प्रेमसे ही प्राप्त र सकोगी एवं क्षण मात्रमें आकर मुझसे मिलोगी.

उतर जब तुम देखोगे, लैलत कदर के मांहें ।
और जिमी और आसमान, देखो प्रतिबिंब ताहें ॥ ३७

जब तुम महिमामयी रात्रि(लैलतुलकद्र)के खेलमें उतर कर देखोगी तो वहाँ पर भूमि तथा आकाश कुछ भिन्न प्रकारके दिखाई देंगे. वहाँ पर तुम अपने प्रतिबिम्बित शरीरको देखोगी.

फरामोसी क्यों होएसी, क्या जुदे होसी माहें खेल ।
तुमकों क्यों हम भुलेंगे, ए कैसी है कदर लैल ॥ ३८

तब ब्रह्मात्माओंने श्री राजजीसे पूछा, यह भ्रमका आवरण कैसा होगा ? क्या हम खेलमें अलग-अलग हो जाएँगी ? हम आपको कैसे भूल सकतीं हैं ? यह महिमामयी रात्रि कैसी है ?

कह्या हकें रूहन को, तुम उतरो मांहे लैल ।
बैठो पकड कदम, देखोगे माहें खेल ॥ ३९

तब श्री राजजीने ब्रह्मात्माओंसे कहा, अब तुम खेलमें उतरो तुम मेंरे चरणोंको पकड़कर बैठो, स्वयंको स्वप्नवत् खेलमें पाओगी.

देखो और जिमीय को, औरै आसमान ।
सो सब फना बीच में, दुनियां सकल जहान ॥ ४०

वहाँ जाकर तुम स्वप्नवत् भूमि तथा आकाशको देखोगी. वहाँके सम्पूर्ण पदार्थ नाशवान् हैं. सारा संसार ही मिथ्या है.

तित कानों सुने जाएंगे, ए जो चौदे तबक ।
कोई हमारे अरस की, तरफ न पावे हक ॥ ४१

वहाँ पर चौदह लोकोंकी चर्चाएँ होंगी. तुम उसीको सुनती रहोगी. वहाँ पर कोई भी हमारे इस परमधामकी दिशाको प्राप्त नहीं कर सकेगा.

देखो जिमी दमी आदमी, खलक तमासा ।
ए खाली बीच बसत हैं, मुरदों का बासा ॥ ४२

नश्वर जगतमें जाकर तुम वहाँकी भूमिमें जीव-जन्तु आदि विभिन्न प्राणियोंको नाटकके पात्रकी भाँति देखोगी. अस्तित्वहीन जगतमें मृत्युको प्राप्त होनेवाले लोग रहते हैं.

ए ना कछु पेहेले हुते, ना होसी आखर ।
खेल ऐसा देखो बीच, मांहे लैलत कदर ॥ ४३

वहाँके प्राणी सृष्टि रचनासे पूर्व न कभी अस्तित्वमें थे और न ही भविष्यमें

रहेंगे. इस मोहकी रात्रिमें तुम ऐसा मिथ्या खेल देखोगी.

रूहें देखें झूठ फरेब कों, कै भांत तमासा ।
लाख विधों कै खोजहीं, कोई पावे ना खुलासा ॥ ४४

इसी अनुरूप ब्रह्मात्माओंने इस जगतमें आकर विभिन्न प्रकारके नश्वर खेलोंको देखा. यहाँ पर अनेक लोग विभिन्न प्रकारसे खोजते हैं किन्तु जगतका रहस्य समझ नहीं पाते.

ए जो देखो दुनी खेलती, आवे जाए हुकम ।
झूठा वजूद ना रेहेवहीं, चले कर गिनती दम ॥ ४५

यह दुनियाँ जो खेलती हुई दिखाई दे रही है, वह सब मेरे ही आदेशके कारण आती जाती है. इनका नश्वर शरीर टिका नहीं रहता. निर्धारित श्वास पूर्ण होने पर इनका नाश अवश्यम्भावी है.

आवे जाए मांहें खेलहीं, अपने बल उमर ।
ढूंढ्या फेर न पाइए, ए मुआ क्यों कर ॥ ४६

यहाँके प्राणी अपनी आयु एवं शक्तिके अनुरूप जन्म और मृत्युके चक्रमें घूमते हुए खेल करते हैं. ये लोग मृत्युके मुखमें कैसे चले जाते हैं उनको पुनः ढूँढने पर भी प्राप्त नहीं किया जा सकता. यह सब रहस्य ही बना हुआ है.

कोई आप न चीनहीं, ना चीन्हे हक वतन ।
ना चीन्हे तिन जिमीय को, ऊपर खडा है जिन ॥ ४७

यहाँ पर न कोई स्वयंको पहचानता है और न ही श्री राजजी तथा परमधामकी पहचान कर सकता है. यहाँके लोगोंको इतनी भी पहचान नहीं है कि जिस पर वे खड़े हैं वह भूमिका अस्तित्व क्या है.

कहे हक तुम भुलोगे, उन जिमीमें जाए ।
रहोगे बीच नासूतके, उतहीं उरझाए ॥ ४८

इस प्रकार श्री राजजीने कहा, तुम सभी ब्रह्मात्माएँ ऐसी भूमिमें जाकर स्वयंको भूल जाओगी और उसी मृत्युलोकमें उलझकर रह जाओगी.

चलना जेता रातका, अमल जो सरीयत ।
दिन मारफत हुए बिना, कछुए ना सूझत ॥ ४९

वहाँ पर रात्रिकी भाँति कर्मकाण्डके अज्ञानान्धकारसे तुम्हारे आचरण दिशाहीन हो जाएँगे. जब तक पूर्ण पहचानका प्रभात उदय नहीं होगा तब तक तुम्हें कुछ भी सुधि नहीं होगी.

बिना इसकें सूझे नहीं, ए जो रात का अमल ।
ए राह चलसी लग फजर, तोरे के बल ॥ ५०

अज्ञानमयी रात्रिमें अज्ञानका प्रभाव (अमल) है वह प्रेमके बिना किसी भी प्रकार ज्ञात नहीं होगा. ज्ञानका प्रभात होने तक यह कर्मकाण्डका मार्ग उसी प्रकार चलता रहेगा.

बातून जब तुम देखोगे, खोलसी रूह नजर ।
लैलत कदर के तकरार, तीसरे होसी फजर ॥ ५१

जब तुम तारतम ज्ञानके द्वारा धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको समझ पाओगी तभी तुम्हारी आत्मदृष्टि खुलेगी. इस महिमामयी रात्रिके तीसरे खण्ड (जागनी ब्रह्माण्ड) में ज्ञानका प्रभात होगा.

लिखों हकीकत खिलवत की, आखर होसी जो सब ।
कहांसे लिख भेज्या कौन खसमें, कहोगे आए हम कब ॥ ५२

मैं तुम्हें मूलमिलावेके सङ्केतोंको लिख भेजूँगा. जब आत्मजागृतिका अन्तिम समय आ जाएगा तब तुम पूछोगी, कौन-से धनीने कहाँसे यह लिख कर भेजा है, हम इस जगतमें कब आई हैं ?

ए इसक तो पाइए, जो पेहेले मोकों जाओ भूल ।
तुम ले बैठो जुदागी, मैं भेजों तुम पर रसूल ॥ ५३

तुम मेरे प्रेमको तभी प्राप्त करोगी जब पहले मुझे भूल जाओगी. तुम मुझसे अलग होकर बैठोगी उस समय मैं तुम्हारे पास अपने सन्देशवाहकको भेजूगाँ.

रसूल आवेगा तुम पर, ले मेरा फुरमान ।
आए मेरे अरस की, देसी सब पेहेचान ॥ ५४

सन्देशवाहक मेरा सन्देश लेकर तुम्हारे पास आएगा और तुम्हें परमधामकी सम्पूर्ण जानकारी देगा.

तब दिलमें राखियो, खबरदारी तुम ।
इसारतें कै रमूजें, लिख भेजेंगे हम ॥ ५५

तब तुम आपने हृदयमें इन बातोंका ध्यान रखना. हम तुम्हारे लिए परमधामके विभिन्न सङ्केत व रहस्य लिख कर भिजवाएँगे.

तुम पर भेजोंगा फुरमान, मेरे मासूक के हाथ ।
अरस कुंजी नूर रोसन, भेजों रूह मेरी साथ ॥ ५६

मैं अपनी प्रियतमा श्री श्यामाके साथ तुम्हारे लिए अपना सन्देश भेजूँगा. श्री श्यामाजीके साथ परमधामकी कुञ्जी (तारतम ज्ञान) एवं तारतम सागर रूप वाणी भी भेजूँगा.

द्वार सबे खोलसी, होसी नूर रोसन ।
देखोगे हक सूरत, और असलु तन ॥ ५७

श्री श्यामाजी तुम्हारे लिए परमधामके सभी द्वार खोल देंगी. तब तुम्हारा हृदय प्रकाशित होगा. तभी तुम मेरे स्वरूप एवं अपनी परात्माको देख पाओगी.

तुम कहोगे कहां खसम, कैसा खेल कौन हम ।
देसी साहेदी रसूल रूहअल्ला, जो खिलवत करी हम तुम ॥ ५८

नश्वर खेलमें जाकर तुम कहोगी कि हमारे स्वामी कहाँ हैं, यह खेल कैसा है और हम कौन हैं ? उस समय तुम्हें रसूल मुहम्मद एवं श्री श्यामाजी हमारी यहाँकी एकान्त चर्चाकी साक्षी देंगे.

हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए रोए ।
तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होसमें न आवे कोए ॥ ५९

श्री श्यामाजी स्वरूप सद्गुरु रो-रोकर तुम्हें मेरे सन्देशके मीठे वचन

सुनाएँगे. उनको सुन कर तुम भी रोओगी तथापि कोई भी सुधि (होश) में नहीं आ सकोगी.

तुम कहोगे रसूलको, हम क्यों आए कहां वतन ।
मलकूत बिना कछू और है, आगे तो खाली हवा सुंन ॥ ६०

तुम अपने सन्देशवाहक (सद्गुरु) से कहोगी कि हम इस जगतमें क्यों आई हैं, हमारा घर कहाँ है, क्या वैकुण्ठसे आगे भी कोई लोक है ? उससे आगे तो मात्र शून्य, निराकार ही है.

मैं भेजों रूह अपनी, इलम देसी समझाए ।
तब मूल कुल्ल अकल, असराफील ले आए ॥ ६१

मैं अपनी अङ्गना श्री श्यामाजीको इसलिए तुम्हारे पास भेजूँगा कि वह तुम्हें ज्ञान देकर समझाएगी. तब परमधामकी जागृत बुद्धि लेकर इस्राफील (फरिश्ता) भी प्रगट होगा.

आयतें हदीसें रसूल, और किताबें सब ।
खोलसी इसारतें रमूजें, होसी पेहेचान तब ॥ ६२

श्री श्यामाजी तारतम ज्ञानके द्वारा कुरानकी आयतें, हदीसे तथा विभिन्न धर्मग्रन्थोंके सभी सङ्केतों एवं रहस्योंको खोल देगी तब तुम्हें पूर्ण पहचान होगी.

देखाए फरामोसी तारीकी, ऊपर देऊं मेरा इलम ।
जासों मुरदे होवें जीवते, सो दै हाथ हैयाती तुम ॥ ६३

सर्वप्रथम मैं तुम्हारी बुद्धि पर अज्ञानका आवरण डाल कर तुम्हें विस्मृत करा दूँगा. तदुपरान्त जागृत बुद्धिका ज्ञान दूँगा जिससे जगतकी मृतप्रायः आत्माएँ जागृत हो जाएँगी. उन सबको अखण्ड करनेका कार्य तुम्हारे हाथोंसे सम्पन्न होगा.

जो कछु आखर होएसी, तुम देत हो आगूं बताए ।
सो क्यों हम भूल जाएंगे, जो लेत हैं दिल लगाए ॥ ६४

तब ब्रह्मात्माओंने कहा, उस समय जो घटनाएँ घटेंगी उनको आप पहले ही

बता रहे हैं. जब हम आपकी बातोंको हृदयङ्गम करतीं रहेंगी तो वहाँ जाकर कैसे भूलेंगी ?

दूर तो कहूं न करोगे, बैठें कदम तलें ।
फेरें तुमारा फुरमाया, हम ऐसी क्यों करें ॥ ६५

आप हमें कहीं दूर तो नहीं करेंगे, हम तो आपके श्रीचरणोंमें बैठीं हैं. यदि हम आपके ही चरणोंमें होंगी तो आपके आदेशको कैसे अस्वीकार करेंगी. ऐसा कार्य हमसे कैसे होगा ?

करें हुसीयारी आपुसमें, हम देखें खेल जुदागी ।
देखें हक डारें क्यों जुदागी, हम बैठें सब अंग लागी ॥ ६६

फिर ब्रह्मात्माएँ एक दूसरेको सचेत करने लगीं और कहने लगीं, अब हम वियोगका खेल देखेंगी. देखते हैं श्री राजजी हमें कैसे वियोग देंगे ? हम सब अभिन्न रूपसे एक साथ मिलकर बैठतीं हैं.

इन विध एक दूजीसों, करी सबों मसलत ।
अपन मोमिन सब एक तन, बीच कहां पैठे गफलत ॥ ६७

इस प्रकार सभी ब्रह्मात्माओंने एक दूसरेसे मिलकर विचार-विमर्श किया और कहने लगीं, हम सभी आत्माएँ तन, मनसे एक हैं फिर हममें यह विस्मृति कैसे आ सकती है ?

मैं भूलों तो तूं मुझे, पलमें दीजे बताए ।
तूं भूले तो मैं तुझे, देऊंगी तुरत जगाए ॥ ६८

वे परस्पर कहने लगीं, यदि मैं भूल जाऊँ तो तू मुझे पल मात्रमें ही बता देना. यदि तू भूल जाएगी तो मैं तुझे तत्काल जागृत कर दूँगी.

हम देखेंगे हक इसक, और पातसाही हक ।
सोए आपन मिल देखसी, ऐसा सुख हक का मुतलक ॥ ६९

अब हम श्री राजजीके प्रेम और प्रभुताका अनुभव करेंगी. हम सब मिलकर श्री राजजीका यह सुख निश्चय ही देखेंगी.

हम रूहों को देखाइए, बडा इसक हक ।
और पातसाही हक की, ए जो बडी बुजरक ॥ ७०

इस प्रकार सभी ब्रह्मात्माओंने मिल कर श्री राजजीसे कहा, हम सभी आत्माओंको अपना प्रेम एवं प्रभुताके दर्शन करवाएँ जिसको आप सबसे विशेष कहते हैं.

हम कदम छोड के, कहुं जाए न सकें दूर ।
बैठे इत देखें सबे, बीच तजल्ला नूर ॥ ७१

हम आपके चरणोंको छोड़कर कहीं दूर नहीं जा सकतीं हैं. हम सभी यहीं परमधाममें ही बैठकर नश्वर जगतका खेल देखेंगी.

कहे हक देखो खेल लैल का, बैठे अरस में इत ।
पीछे देखो सरत पर, सूरज मारफत ॥ ७२

श्री राजजीने कहा, तुम परमधाममें ही बैठकर महिमामयी रात्रिका खेल देखो. तत्पश्चात् अपने समय पर ब्रह्मज्ञान (मारिफत) का सूर्य उदय होगा, उसे भी देखना.

राह रसूल बतावहीं, मेरे अरस चढ उतर ।
तब तुम महंमद के, कदम लिजो दिल धर ॥ ७३

मेरे सन्देशवाहक (रसूल) परमधाममें अपनी सुरताको पहुँचा कर पुनः लौट कर तुम्हें वह मार्ग बताएँगे. तब तुम उनके बताए हुए मार्गको अपने हृदयमें धारण करना.

रात अमल तब मेटके, करसी इलम फजर ।
देखोगे दिन मारफत, खोल देसी रूह नजर ॥ ७४

मेरे द्वारा भेजा गया तारतमज्ञान अज्ञानरूपी अन्धकारसे पूर्ण रात्रिको मिटाकर ब्रह्मज्ञानका प्रभात प्रगट करेगा. तब तुम्हारी अन्तर्दृष्टि इस दिव्य आलोकसे भर जाएगी.

रदबदल आपुसमें, कर बैठे मजकूर ।
कौल किया बीच खिलवत, हकें अपने हजूर ॥ ७५

इस प्रकार परस्पर विचार-विमर्श एवं वार्तालाप होने पर श्री राजजीने ब्रह्मात्माओंको मूलमिलावेमें अपने चरणोंमें बैठाकर स्वयं भी नश्वर जगतके खेलमें आनेका वचन दिया.

हकें करी रूहें साहेद, और फिरस्ते साहेद ।
आप भी बीच साहेद, कौल किया वाहेद ॥ ७६

श्री राजजीने ब्रह्मात्माओंको साक्षी बनाया एवं विभिन्न देवदूतों द्वारा विभिन्न धर्मग्रन्थोंमे अपने आगमनकी साक्षियां लिखाई. वे स्वयं भी इसके साक्षी बने क्योंकि उन्होंने अद्वैत परमधाममें ये वचन दिए हैं.

इसक का अरस अजीम में, रबद हुआ बिलंद ।
तो बेवरा देखाया इसक का, माहें फरेबी फंद ॥ ७७

इस प्रकार दिव्य परमधाममें प्रेमके विषयमें महत्त्वपूर्ण परिसम्वाद हुआ. श्री राजजीने नश्वर खेलकी रचना कर इसमें इसी प्रेमका निरूपण किया है.

आप बैठे दिल देयके, ऊपर बारे हजार ।
होसी हांसी सब म्याराज में, जिनको नहीं सुमार ॥ ७८

श्री राजजी बारह हजार ब्रह्मात्माओंके ऊपर अपनी प्रेममयी दृष्टि डाल कर स्वयं सिंहासन पर विराजमान हुए (तब ब्रह्मात्माओंकी सुरताएँ नश्वर जगतमें आई). ब्रह्मात्माओंके परमधाममें पुनः जागृत होने पर उनकी हँसी होगी जिसका कोई पारावार नहीं होगा.

महामत कहे ऐ मोमिनो, याद करो खिलवत सुकन ।
जो किया कौल अलस्तो बे रब, मिल हक हादी रूहन ॥ ७९

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! मूलमिलावेके उन वचनोंको याद करो. वहीं पर श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंने मिलकर परस्पर परिचर्चा की थी. तब श्री राजजीने कहा था, 'क्या मैं तुम्हारा स्वामी नहीं हूँ (अलस्तो बि रब्ब कुम) ?'

प्रकरण १ चौपाई ७९

तिस वास्ते दुनी पैदा क री, दई दूर जुदागी जोर ।
हमें नजीक लिए सेहेरग से, यों इलमें देखाया मरोर ॥ १

महामति कहते हैं, श्री राजजीने अपने प्रेमके निरूपणके लिए ही इस नश्वर जगतकी रचना करवाई और हमें इस खेलमें भेज कर वियोग दिया. फिर तारतम ज्ञान देकर हमारी दिशाको बदल दी और हमें स्वयंको प्राणनलीसे भी निकट अनुभव करवाया.

अरस बका बीच ब्रह्माण्ड के, सुध चौदे तबकों नाहें ।
सो हमको नजीक सेहेरगसे, पट खोल दिए बका माहें ॥ २

इस ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंमें किसीको भी अखण्ड परमधामकी सुधि नहीं थी. श्री राजजीने हमें पारके द्वार खोल कर उसे प्राणनलीसे भी निकट दिखाया.

जाहेरियों नजर जाहेर, धरी ऊपर सात आसमान ।
हक छोड नजीक सेहेरग से, पूजी हवा तारीक मकान ॥ ३

इस नश्वर जगतमें बाह्यदृष्टिवाले मानवोंकी दृष्टि मृत्युलोकसे ऊपर सातवें लोक (वैकुण्ठ) तक ही सीमित है. वे लोग अपनी प्राणनलीसे भी निकट स्थित पूर्णब्रह्म परमात्माको छोड़ कर शून्य निराकारकी पूजा करते हैं.

रूहें अरस से उतरीं, बीच लैलत कदर ।
तिनमें रूहअल्लाह की, भेजी सिरदार कर ॥ ४

ब्रह्मात्माएँ भी इस नश्वर जगतका खेल देखनेके लिए परमधामसे अवतरित हुईं हैं. उनमें श्री श्यामाजीको शिरोमणि बनाकर सद्गुरुके रूपमें भेजा है.

ल्याए इलम लुदंनी, खोली हक हकीकत ।
खोले पट सब अरसों के, हक दिन मारफत ॥ ५

श्री श्यामाजी तारतम ज्ञान लेकर अवतरित हुईं. उन्होंने परब्रह्म परमात्माकी यथार्थताको प्रगट किया. उन्होंने क्षर, अक्षर और अक्षरातीतके द्वारको खोलकर ब्रह्मज्ञानरूपी प्रभातका प्रकाश विखेर दिया ।

उतरे खेल देखनको, रूहें जिनके इजन ।
सो ढूंढें हक सहूरसे, अरस रूहें मोमन ॥ ६

जिन परमात्माकी आज्ञासे परमधामकी आत्माएँ नश्वर जगतका खेल देखनेके लिए अवतरित हुई हैं, वे अब परस्पर विचार-विमर्श कर उन्हीं धामधनीको ढूँढ रहीं हैं.

लेवें सब साहेदियां, हदीसें महंमद ।
और आयतें कुरान की, सूरतें मगज सबद ॥ ७

ब्रह्मात्माएँ अपने धनीको खोजती हुई सभी धर्मग्रन्थोंकी साक्षियाँ लेतीं हैं. उन्होंने ही रसूल मुहम्मदके कुरानकी आयतें तथा हदीसोंमें छिपे हुए गूढ़ रहस्योंकी भी साक्षी ग्रहण की है.

लिख्या आयतों हदीसों, हक के सुकन ।
समझेगी सोई रूहें, जाके असल अरस में तन ॥ ८

इन आयतों तथा हदीसोंमें भी धामधनीके वचनोंकी ओर सङ्केत हैं किन्तु उन्हें वही आत्माएँ समझ सकेंगी जिनके मूल तन (परात्मा) परमधाममें विद्यमान हैं.

इसारतें और रमूजें, लिखे कै किसे निसान ।
सोए पाओ तुम हदीसों, और आयतों कुरान ॥ ९

उक्त धर्मग्रन्थोंमें परमधामके विषयमें अनेक सङ्केत तथा कथानक लिखे हैं. तुम हदीस और कुरानकी आयतोंमें भी उन सङ्केतोंको प्राप्त करोगी ?

करें किताबें जाहेर, और खुलासे पुकार ।
बिन मोमिन बिन लुदंनी, करे सो कौन विचार ॥ १०

ये सभी धर्मग्रन्थ परमधामके रहस्योंको प्रकट करते हैं किन्तु ब्रह्मात्माओं तथा तारतम ज्ञानके बिना इन रहस्योंको कौन समझ सकता है.

ए और कोई बूझे नहीं, बिना अरस के तन ।
जो नूर बिलंदसे उतरीं, दरगाही रूहें मोमन ॥ ११

परमधामकी आत्माओंके बिना अन्य कोई भी इन रहस्योंको समझ नहीं

सकता है. ये ब्रह्मात्माएँ तेजोमय दिव्य परमधामसे इस जगतमें अवतरित हुई हैं.

नूर कुंजी आए पीछे, ईसे का अमल ।
साल सतर ढांप्या रह्या, आगूं चल्या महंमदी मिल ॥ १२

तारतम ज्ञानरूपी प्रकाशमयी कुञ्जीके अवतरणके बाद सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजके ज्ञानका प्रभाव आरम्भ हुआ. वह सत्तर वर्ष पर्यन्त अधिक प्रसारित नहीं हुआ. वि. सं. १७४८ पर्यन्त श्री तारतम सागरके रूपमें वाणीका पूर्ण अवतरण होने पर वहाँसे प्रचार-प्रसारकी श्रृङ्खला तीव्र गतिसे आगे बढ़ी.

आए हुआ इत रोसन, ऊपर अपनी सरत ।
अव्वल आखरी इलमें, जाहेर करी क्यामत ॥ १३

अपने वचनोंके अनुसार पूर्णब्रह्म परमात्मा सद्गुरुके रूपमें प्रकट हुए जिससे इस जगतमें ब्रह्मज्ञानका प्रकाश फैल गया. उन्होंने ही ब्रह्मज्ञानके द्वारा वेद और कतेबका ज्ञान देकर आत्मजागृतिका समय प्रकट कर दिया.

एही बका अरस की, हक करें हिदायत ।
खुली खिलवत गैब की, हक की वाहेदत ॥ १४

यही परमात्मा दिव्य परमधामका ज्ञान लेकर ब्रह्मात्माओंका मार्ग दर्शन करेंगे. अब परमधामके अन्तरङ्ग रहस्य तथा एकात्मभाव स्पष्ट हो गए हैं.

लिख्या सिपारे आठमें, मोमिनों की हकीकत ।
हुई ढील फजर वास्ते, करी जाहेर गैब खिलवत ॥ १५

कुरानके आठवें सिपारेमें ब्रह्मात्माओंकी यथार्थताका वर्णन है. मारफत सागरके रूपमें कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट करनेमें इसीलिए विलम्ब हुआ कि इससे पूर्व (परिक्रमा, सागर, सिनगारके द्वारा) परमधामका विशद वर्णन कर ब्रह्मज्ञानका प्रभात करना था.

खोल बका अरस मोहोलात, और बाग हौज जोए ।
मोमिन देखें जिमी जंगल, पसू पंखी सोए ॥ १६

ब्रह्मात्माओंके लिए पारका द्वार खोलकर परमधामके भवन, वन-उपवन,

ताल, यमुनाजी, भूमि, पशु-पक्षी आदिका विशद वर्णन किया गया जिससे वे उनका प्रत्यक्ष अनुभव करने लगीं.

सूरत आतेना कलकौसर, लिखी आम सिपारे ।
सो आए देखो तुम महंमदी, खोले नूर पार द्वारे ॥ १७

कुरानके तीसवें (अम्म) सिपारेके आतयना कलकौसर नामक प्रकरणमें हौजकोसर तालका वर्णन है. रसूल मुहम्मदके अनुयायी अब आकर उसे स्पष्ट देख लें. सद्गुरुने प्रकट होकर अक्षरसे परे अक्षरातीतके द्वार खोल दिए हैं.

कह्या होसी जाहेर, अरस रूहें मोमन ।
उतरे नूर बिलंद से, करें सब अरस रोसन ॥ १८

कुरानमें यह भी उल्लेख है कि ब्रह्मात्माएँ इस जगतमें प्रकट होंगी. वे दिव्य परमधामसे अवतरित होंगी और परमधामकी सम्पूर्ण जानकारी प्रकट करेंगी.

जो कह्या महंमदें, लैल म्याराज माहीं ।
सोई कौल रूहअल्लाने, कहे रूहोंके ताईं ॥ १९

रसूल मुहम्मदने दर्शनकी रात्रिमें खुदाके साथ परिचर्चाकी जो बातें सङ्केतमें बताई थीं उनको सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजने प्रकट होकर ब्रह्मात्माओंके समक्ष स्पष्ट कर दिया.

जब इन दोऊ मरदों ने, मिल साहेदी दई ।
तब मेरे दिल अरस में, जरा सक ना रही ॥ २०

जब दोनों महापुरुषोंने मिलकर एक ही प्रकारकी साक्षी दी तो अब मेरे हृदय धाममें किसी भी प्रकारका सन्देह नहीं रहा.

तो इन रूहों मोमिनों, दिल अरस कहलाया ।
जो हक इलम लुदंनी, मेरे दिल आगूंही आया ॥ २१

ब्रह्मात्माओंके हृदयको इसीलिए परमधाम कहा है क्योंकि मेरा हृदय परमधाम होनेसे ही इसमें तारतम ज्ञानरूपी यह ब्रह्मज्ञान अवतरित हुआ है.

तब कह्या हुई फजर, ऊग्या हक बका दिन ।
तब सूरज मारफत के, करी गिरो रोसन ॥ २२

इस ब्रह्मज्ञानके अवतरित होने पर प्रभातका उदय होना अथवा अखण्ड ज्ञानका दिन प्रकट होना कहा गया है. ब्रह्मात्माओंने ही प्रकट होकर ब्रह्मज्ञानके सूर्यको प्रकट किया है.

कौल कहे सो सब हुए, और भी कह्या होत ।
रूहअल्ला ल्याए इलम, भरे जिमी आसमान जोत ॥ २३

रसूल मुहम्मदने जो भविष्यवाणी की थी वह सब सत्य सिद्ध हो गई. श्री श्यामाजी स्वयं प्रकट होकर जागृतबुद्धिका तारतम ज्ञान ले आई जिसके प्रकाशसे पृथ्वी और आकाश आलोकित हो गए.

रूहअल्ला अरस अजीमसे, नूर आला ले आए ।
सोए नूर कोई क्यों कर, सकेगा छिपाए ॥ २४

श्री श्यामाजी दिव्य परमधामसे सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मज्ञान (तेजोमय तारतम ज्ञान) लेकर सद्गुरुके रूपमें प्रकट हो गई. इस दिव्य ज्ञानके तेजको अब कौन छिपाकर रख सकेगा ?

हवा अंधेरी बीच रातके, ऊग्या मारफत सूर ।
भरे जिमी और आसमान, दुनियां पूर नूर ॥ २५

इस स्वप्नवत् जगतमें अज्ञानरूपी अन्धकार अथवा शून्य निराकारकी गहन रात्रिमें ब्रह्मज्ञानरूपी सूर्यका उदय हुआ है. जिससे भूमि और आकाश प्रकाशित हो उठे है.

ऐसी करी बीच आलम, रूहअल्ला के इलम ।
मार्‌या कुली दज्जालको, जो करता था जुलम ॥ २६

श्री श्यामाजी द्वारा अवतरित तारतम ज्ञानने ब्रह्माण्डको इस प्रकार प्रकाशित कर दिया. उसने कलियुगरूपी राक्षसको दूर भगा दिया जो लोगोंको पथभ्रष्ट कर रहा था.

फुरमाया सो सब हुआ, जो कछु कह्या महंमद ।
तो जो किया रूहअल्ला ने, दज्जालको रद ॥ २७

रसूल मुहम्मदने जो कुछ कहा था वे सभी बातें सत्य सिद्ध हुई. वास्तवमें श्री श्यामाजीने सद्‌गुरुके रूपमें प्रकट होकर इस नश्वर जगतमें फैले हुए अज्ञानरूपी अन्धकार (नास्तिकता) को दूर भगा दिया.

कुरान माजजा नबी नबुवत, साबित होए हुएं एक दीन ।
ईसा करसी हक इलमें, आवसी सबों यकीन ॥ २८

इस प्रकार ब्रह्मज्ञानका मार्ग (एक धर्म) प्रशस्त होने पर कुरानके रहस्य एवं पैगम्बरकी पैगम्बरी दोनों सत्य सिद्ध हो गए. रसूल मुहम्मदने इस प्रकार कहा था, सद्‌गुरु (रूहअल्लाह) प्रकट होकर जागृत बुद्धिके ज्ञानसे सबको एक परमात्माके प्रति विश्वास दिलाएँगे.

फुरमाया सो सब हुआ, ऊपर अपनी सरत ।
कौल रसूल के फिरवले, आई ए आखरत ॥ २९

इस प्रकार भविष्यवाणीके अनुरूप सारे कार्य अपने समय पर सिद्ध हो गए. अब आत्मजागृतिका अन्तिम समय आ जाने पर रसूल मुहम्मदके वचन सत्य सिद्ध हुए.

कौल किए हक हादीने, मांहे खिलवत रूहन ।
सो दिल महंमद मोमिनों, हुआ पूर रोसन ॥ ३०

श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंने मूलमिलावेमें बैठकर जो बातें कीं थीं उनका रहस्य श्री श्यामाजीने तारतम ज्ञानके द्वारा स्पष्ट कर दिया जिससे सभी ब्रह्मात्माओंका हृदय आलोकित हुआ.

एक गिरो रूहें अरस से, हुकमें आई जो इत ।
जिन ऊपर रसूल, ल्याए किताबत ॥ ३१

श्री राजजीके आदेशसे परमधामसे इस नश्वर जगतमें एक (ब्रह्मात्माओंका)

समुदाय अवतरित हुआ. उसीको परमधामकी साक्षी देनेके लिए रसूल मुहम्मद कुरानके रूपमें सन्देश ले कर आए हैं.

तिन रूहों के बीचमें, रूहअल्ला सिरदार ।
सोए लिखी माहें हदीसों, जो कही परवरदिगार ॥ ३२

इन ब्रह्मात्माओंमें श्री श्यामाजी शिरोमणि हैं. श्री राजजीने श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंके लिए जो बातें कही हैं उन्हींका सङ्केत हदीस आदि ग्रन्थोंमें लिखा है.

सोए करी जाहेर, रसूलें इत आए ।
सोई रूहअल्ला सुकन, ल्याए मोमिनों बताए ॥ ३३

रसूलने यहाँ आकर उन्हीं बातोंको प्रकट किया है. श्री श्यामाजीने भी सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर ब्रह्मात्माओंको वही रहस्य स्पष्ट किया है.

सो तो आया हक का, लुदंनी इलम ।
लिख्या दिल अरस पर, मोंमिनों बिना कलम ॥ ३४

इस जगतमें श्री देवचन्द्रजीके द्वारा श्री राजजीका ब्रह्मज्ञान आया एवं परमधामकी दिव्यतासे विभूषित ब्रह्मात्माओंके हृदय पर बिना लेखनी अङ्कित हो गया.

सोए लिख्या कुरान में, बाईसमें सिपारे ।
लिखियां आयतां जंजीरां, बयान न्यारे न्यारे ॥ ३५

कुरानके बाईसवें सिपारेमें यह प्रसङ्ग उल्लेखित है. वहाँ पर अलग-अलग आयतोंमें अलग-अलग कड़ी तथा भिन्न भिन्न कथानकका उल्लेख है.

जो देखेगा दिल दे, आयतां जंजीरां मिलाए ।
माएने मगज मुसाफ के, होसी नूर रोसन ताए ॥ ३६

जो इन आयतोंकी कड़ियोंको मिलाकर हृदयपूर्वक विचार करेंगे, उनको ही कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट होंगे.

ऐसा अब लग कबहूं, हुआ नहीं रोसन ।
सो हक हादी जानत, या जाने रूहें मोमन ॥ ३७

आज तक इस जगतमें कभी भी ऐसा ज्ञान प्रकट नहीं हुआ था. इस दिव्य ज्ञानको श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ ही जानते हैं.

जब हक का इलम, हुआ जाहेर ए ।
तिन इलमें कायम करी, दुनी फानी हुती जे ॥ ३८

श्री राजजीका यह ब्रह्मज्ञान जब प्रकट हुआ तब उसने इस नश्वर जगतके जीवोंको अखण्ड मुक्तिस्थलका सुख प्रदान किया.

ए सुकन बातून जिनकों, दिल बीच सोहाए ।
सो सुनके तबहीं, एक दीनमें आए ॥ ३९

ये गूढ़ रहस्य जिनको हृदयसे प्रिय लगते हैं वे इन वचनोंको सुनकर तत्काल एक धर्म (श्री कृष्ण प्रणामी धर्म) में आ जाते हैं.

बका अरस हक सूरत, हुआ नूर रोसन ।
सोए सरत जाहेर हुआ, फरदा रोज का दिन ॥ ४०

अब (तारतम ज्ञानके द्वारा) इस जगतमें अक्षरातीत परब्रह्म परमात्माका परमधाम तथा उनका स्वरूप प्रगट हो गया है. कुरानमें जिसको फरदा रोज (कलका दिन) कयामतका कहा है वह अपने समय पर(रसूल मुहम्मदके ११०० वर्ष बाद) प्रकट हो गया है.

जो कलाम अल्लाह में, फुरमाई फजर ।
सो खुली हक इलमें, रूह बातून नजर ॥ ४१

कुरानमें जिस ब्रह्मज्ञानको प्रभातके सूर्यके समान कहा है उस तारतम ज्ञानसे ब्रह्मात्माओंकी आत्मदृष्टि खुल गई है.

हुआ खासलखास जो, रूह मोमीनों मेला ।
बहतर से जुदा कह्या, नाजी फिरका अकेला ॥ ४२

अब इस जगतमें सर्वश्रेष्ठ आत्माओंका मिलन हो गया है. जिसको कुरानमें

रसूल मुहम्मदके बहत्तर फरकोंसे भिन्न तथा धर्मके प्रति समर्पित (नाजी) समुदाय कहा है.

जिनकों लिखी आयतों हदींसों, हिदायत हक ।
हकें इलम अपना, तिन कों दिया बेसक ॥ ४३

जिस समुदायके लिए खुदाने कुरान तथा हदीसोंके द्वारा अपना निर्देश दिया है वह यही समुदाय है. इसीको श्री राजजीने अपना जागृतबुद्धिका ज्ञान प्रदान किया है.

सोई मोमिन अरस के, उतरे नूर बिलंद ।
जाको टाली हक इलमें, झूठ फरेबी फंद ॥ ४४

ये वही ब्रह्मात्माएँ हैं जो दिव्य परमधामसे अवतरित हुई हैं. इस दिव्य ज्ञानने उनको छल-प्रपञ्चरूप मायावी बन्धनोंसे मुक्त किया है.

हुई मोमिनों को पूरन, तौहीद की मदत ।
सो लेवें दुनियां मिने, हक अरस लज्जत ॥ ४५

इन्हीं ब्रह्मात्माओंको श्रीराजजीकी ओरसे एकात्मभावका ज्ञानामृत प्राप्त हुआ है. इसलिए वे इस नश्वर जगतमें भी अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मा तथा दिव्य परमधामके अलौकिक आनन्दका अनुभव करतीं हैं.

नाहीं मोमिनों कबहूं, दुनियां का दिमाक ।
जाको हक इलमें, किए सबों कों पाक ॥ ४६

ऐसी ब्रह्मात्माओंके हृदयमें सांसारिक वैभवोंका मिथ्याभिमान नहीं रहता क्योंकि उनके हृदयको ब्रह्मज्ञानने पवित्र कर दिया है.

ए जो मोमिन हकीकी, सो कहे अरस दिल ।
सो तो पाक हमेसगी, रूहें अरस निरमल ॥ ४७

परमधामकी इन्हीं आत्माओंके हृदयको परमधामकी संज्ञा प्रदान की गई है. वे तो सर्वदा पवित्र रहतीं हैं. इन ब्रह्मात्माओंका हृदय सदैव निर्मल रहता है.

सिपारे सताईसमें, लिख्या नीके कर ।
सो लीजो तुम मोमिनों, बीच अरस दिल धर ॥ ४८

इसके विषयमें कुरानके सत्ताईसवें सिपारेमें स्पष्ट उल्लेख है. हे ब्रह्मात्माओ ! अपने हृदयधाममें विचार कर इस रहस्यको ग्रहण करो.

अरस में सूरत मोमिनों, जो कही हैं असल ।
तिन पाया बीच नासूत के, बका हाहूती फल ॥ ४९

इन ब्रह्मात्माओंका मूल तन (पर-आत्मा) दिव्य परमधाममें है. उन्होंने नश्वर जगतमें आकर भी परमधामके अखण्ड आनन्दका अनुभव प्राप्त किया.

और गिरो फिरस्तन की, मुतकी परहेजगार ।
ए भी आए लैलत कदरमें, तीनों तकरार ॥ ५०

दिव्य आत्माओंका दूसरा समुदाय ईश्वरीसृष्टिका है. वे नश्वर जगतमें संयमित रहकर चलतीं हैं. ये भी इस महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) के तीनों खण्डोंमें ब्रह्मात्माओंके साथ अवतरित हुई हैं.

आम खलक जो तीसरी, पैदा जो जुलमात ।
सो अटके वजूद में, पकडे पुल सरात ॥ ५१

तीसरा समुदाय जीवसृष्टिका है जिनकी उत्पत्ति शून्य निराकारसे हुई है. वे क्षणभङ्गुर शरीरको ही महत्व देकर कर्मबन्धनोंमें फँसे रहते हैं.

रूहें जो दिल हकीकी, कहे अरसमें तन ।
अरस जिनों के दिल कहे, सोई रूहें मोमन ॥ ५२

ब्रह्मात्माओंको सत्य हृदयवाली कहा है. उनका मूलतन (पर-आत्मा) परमधाममें है. जिनके हृदयको श्री राजजीने परमधामकी संज्ञा दी है, वे ये ही ब्रह्मात्माएँ हैं.

लिखी इनोंकी बुजरकी, मुसाफ माहें सिफत ।
बीच महंमद की हदीसों, लिखी बडी इजत ॥ ५३

कुरानमें इन्हीं ब्रह्मात्माओंकी महिमा लिखी है. रसूल मुहम्मदकी हदीसोंमें भी

इन ब्रह्मात्माओंका सम्मान पूर्वक उल्लेख हुआ है.

महामत कहे ऐ मोमिनो, तुमें करी हिदायत हक ।
और कहूं फिरके पैंगंमरों, जो चलाए हुए बुजरक ॥ ५४

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! इस प्रकार श्री राजजीने तुम्हें अपना निर्देशन दिया है. अब मैं अन्य सन्देशवाहकों (पैगम्बरों) तथा उनके समुदायोंका वर्णन करता हूँ जिन्होंने पन्थ, सम्प्रदाय चला कर स्वयंको श्रेष्ठ माना है.

प्रकरण २ चौपाई १३३

बाब फिरकों का

फिरके नारी तो कहे, ए ॅजो बीच कुरान ।
बहतर बांटे होए के, सबे हुए हैरान ॥ १

कुरानमें जिस समुदायको नारी (नरकगामी) कह कर उल्लेख किया है वह बहत्तर समुदायोंमें विभक्त हुआ जिससे वे लोग दुविधाग्रस्त हुए.

सिपारे चौबीसमें मिने, लिखी सूरत इबलीस ।
जल थल सबोंमें ए कह्या, याको पूजें कर जगदीस ॥ २

कुरानके चौबीसवें सिपारेमें शैतान (इब्लीस) के स्वरूपका वर्णन किया है. वहाँ पर इस प्रकार कहा है कि उसकी सत्ता जल, स्थल आदिमें सर्वत्र व्याप्त है. संसारके प्राणी इसीको जगतके स्वामी (जगदीश) समझकर इसकी पूजा करते हैं.

कह्या दरिया जंगल से, नेहेरें चलें दज्जाल ।
सो नेहेरें जंगलसे क्यों चलें, ए फिरके चलें इन हाल ॥ ३

कुरानमें ऐसा उल्लेख है कि वन-प्रदेशसे शैतान (दज्जाल)की नदियाँ बहने लगेंगी. वस्तुतः जङ्गलसे नदियाँ कैसे बहेंगी. उस कथानकका तात्पर्य यह है कि अज्ञानतारूपी जङ्गलसे विभिन्न सम्प्रदायरूपी नदियाँ बहने लगेंगी.

ए जो कहे बनी आदम, सब पूजत डाली हवा ।
कह्या निकाह इबलीस से, दुनियां जो दाभा ॥ ४

जिनको कुरानमें आदमके वंशज कहा है नश्वर जगतके ये मनुष्य शून्य-

निराकारकी पूजा करते हैं. इन्हींका सम्बन्ध इब्लीससे हुआ है. इसलिए दुनियाको पशुवृत्तिवाली कहा है.

कह्या गधा जो दजाल का, ऊंचा लग आसमान ।
एही हवा तारीकी सिर सबों, जासों पैदा ए जहान ॥ ५

कुरानमें दज्जाल गधेका उल्लेख है जो आकाशकी ऊँचाईको स्पर्श करता है. वस्तुतः यह माया (नास्तिकता)का ही स्वरूप है जो शून्य निराकारके रूपमें ऊँचे आकाश तक फैला हुआ है. इसीसे संसारकी सृष्टि हुई है.

तो दुनियां ताबे दजाल के, सोई पातसाह दिलों पर ।
दुनी सिफली इबलीस बिना, एक दम न सके भर ॥ ६

इसीलिए संसारके सभी प्राणी इस दज्जालके अधीन हैं और यह सबके हृदय पर बैठ कर साम्राज्य कर रहा है. नश्वर जगतके ये लोग इस इब्लीसके विना क्षण भर भी जीवित नहीं रह सकते हैं.

राह अंधेरी रात की, सब की चली सरीयत ।
बैठा दिल पर दुसमन, लेने न दे हकीकत ॥ ७

इस नश्वर जगतमें सर्वत्र अज्ञानरूपी अन्धकार व्याप्त है. यहाँके सभीलोग अपने-अपने कर्मकाण्डमें उलझे हुए हैं. सभीके हृदयमें इब्लीसका शासन है. इसलिए वह सबको वास्तविकतासे परिचित होने नहीं देता है.

ए जो बीच दनी के, जाहेर परस्त जेता ।
तिन फिरकों सबों का, खुलासा एता ॥ ८

इस नश्वर जगतमें जितने भी प्राणी हैं वे सभी बाह्यपूजा (कर्मकाण्ड) में ही उलझे हुए हैं. इन सब मत-मतान्तरोंकी स्थिति ही इस प्रकारकी है.

जो हुए पैगंमर रात के, सुरैया न उलंघी किन ।
जो जेते लग पोहोंचिया, सोई पैगाम दिए तिन ॥ ९

इस अन्धकारमयी रात्रिमें जितने अवतारी पुरुष हुए हैं उन्होंने भी ज्योति स्वरूपको पार नहीं किया. वे लोग जहाँ तक पहुँच सके हैं उन्होंने उसी प्रकारका ज्ञान दिया.

पैगंमर या और कोई, जो हुए रातमें बुजरक ।
किने नूर पार पोहोंच के, ले खबर न दई बका हक ॥ १०

इस नश्वर जगतमें जितने भी पैगम्बर हुए हैं वे अज्ञानके अन्धकारमें ही श्रेष्ठ कहलाए हैं. उनमें-से किसीने भी अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधाम पहुँच कर वहाँकी सुधि नहीं दी.

तरफ न कही किन ने, तो पट खोले क्यों कर ।
ए हुए जो बडे रात के, तिन सब की एह खबर ॥ ११

जब किसीने भी परमात्माकी दिशा तक नहीं बताई तो वे अज्ञानके आवरणको दूर कर पारका मार्गदर्शन कैसे कर पाते ? इस नश्वर जगतके मनीषियोंकी स्थिति ही इस प्रकारकी रही है.

मनसूख कही जो किताबें, रात में आईं जे ।
इन उमतें सब रानी कही, जिनों मांगे माजजे रात के ॥ १२

इस अज्ञानमयी रात्रिमें जितने भी धर्मग्रन्थोंका अवतरण हुआ है उनको निरस्त घोषित कर दिया. उन मनीषियोंके अनुयायियोंके समुदायको भी असत्य सिद्ध कर दिया जिन्होंने अज्ञानवश मात्र चमत्कारोंकी ही कामना की है.

एक करी किताबें मनसूख, वाही नाम की करी हक ।
तिन उमतें सब रानी गई, अब कहो क्यों भागे सक ॥ १३

जिन कतेब ग्रन्थोंको निरस्त कर दिया था उनको ही दूसरे नामोंसे प्रतिष्ठित किया गया. उन धर्मग्रन्थोंके अनुयायियोंको भी मात्र कर्ममाण्डके अन्धकारमें डूबे रहनेसे निरस्त कर दिया है. ऐसे लोगोंके संशय कैसे मिट सकेंगे ?

[श्री प्राणनाथजीने बाइबिल, जबूर, तौरात तथा कुरानको निरस्त कर उनके ज्ञानको क्रमशः रास, प्रकाश, कलश एवं सनन्धमें प्रतिष्ठित कर दिया.]

करी अगली किताबें मनसूख, आखर सोई पैगंमर ल्याए ।
नफा पाया तासों खलकों, आखर चारों किताब पढाए ॥ १४

उन पूर्व धर्मग्रन्थों (जबूर, तौरात, इंजील तथा कुरान) को निरस्त कर दिया गया और आत्मजागृतिके समय इन्हीं ग्रन्थोंको नये नामों (रास,प्रकाश,

कलश एवं सनन्ध) के साथ प्रकट किया गया. इससे समस्त संसारके प्राणियोंको लाभ प्राप्त हुआ. इस प्रकार अन्तिम धर्मगुरुने समस्त जगतको उक्त चारों धर्मग्रन्थोंका ज्ञान दिया.

देखो मनसूख कही किन माएनों, क्यों मोहोर करी कही हक ।
सो लिख्या कौल तौरेत में, जासों नफा लेसी खलक ॥ १५

विचारपूर्वक देखो, उत्तरकालीन पैगम्बरोंने पूर्वकालीन धर्मग्रन्थोंको किस अर्थमें निरस्त किया और अन्तिम समयमें उनको नयें नामकरणके साथ प्रमाणित किया. यह सम्पूर्ण वृत्तान्त कलश ग्रन्थमें है, जिसको पढ़कर जगतके लोग लाभान्वित होंगे.

अब कौन मनसूख को हक, ए दुनी सिफली क्यों समझाए ।
एक हरफ बिना लुदंनी, बिन वारस न बूझा जाए ॥ १६

कौन-से धर्मग्रन्थोंको निरस्त कर कौन-से धर्मग्रन्थ दिए गए हैं. इस रहस्यको मन्द बुद्धिवाले लोग कैसे समझ पाएँगे. तारतम ज्ञानके अभावमें इनका एक वाक्य भी समझा नहीं जा सकता. वस्तुतः इनकी उत्तराधिकारिणी ब्रह्मात्माओंके बिना यह रहस्य किसीके भी समझमें नहीं आता है.

याही नाम की किताबें, याही नामे ल्याए पैगंमर ।
ए जो कही बडाई इनोंकी, सो सब बीच आखर ॥ १७

निरस्त किए गए उन धर्मग्रन्थोंके नाममें ही दूसरे धर्मग्रन्थ लेकर अन्तिम पैगम्बर अवतरित हुए हैं. सर्वत्र इन्हीं पैगम्बरकी महिमा गाई गई है. यह सब आत्मजागृतिके समयके लिए कहा गया है.

जब पट खोल्या महंमदें, सो नूर बूंदें लई जिन ।
तिन दिए पैगाम हकके, सब में किया बका दिन ॥ १८

श्री श्यामाजीने सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर परमधामके द्वार खोल दिए. तदनन्तर जिन ब्रह्मात्माओंने परमधामके दिव्य ज्ञानके अंश मात्रको भी हृदयङ्गम किया उन्होंने ही इस जगतमें परमात्माका सन्देश फैला कर ब्रह्मज्ञानके प्रभातको प्रकट किया है.

जाकी बडाई लिखी कुरान में, किताबों और पैगंमर ।
जा पर मोहोर महंमद की, सो सबों देसी फल फजर ॥ १९

कुरान तथा कतेब ग्रन्थोंमें विभिन्न पैगम्बरोंके द्वारा जिनकी महिमाका गायन किया है एवं स्वयं रसूल मुहम्मदने जिनके लिए अनेक प्रमाण दिए हैं, वे ब्रह्मात्माएँ आत्मजागृतिके समयमें प्रकट हो गई हैं. अब वे जगतके समस्त जीवोंको अखण्ड मुक्तिका फल प्रदान करेंगी.

कै बडे कहे पैगंमर, पर एक महंमद पर खतम ।
कै फिरके हर पैगंमरों, गिरो सब कहें नाजी हम ॥ २०

इस जगतमें अनेक पैगम्बर बड़े-बड़े कहलाए किन्तु वे सभी रसूल मुहम्मदमें समाहित हुए हैं. उन सभी पैगम्बरोंके अनुयायियोंके विभिन्न समुदायने स्वयंको नाजी समुदाय (धर्मके प्रति समर्पित) होनेका दावा किया.

सबों एक हादी हिदायत, सबों गिरोमें नाजी एक ।
ए कौन जाने बिना अर्स दिल, ए नबी नाजी दोऊ नेक ॥ २१

सभी समुदायके लोगोंको उनके पैगम्बरोंका उपदेश प्राप्त है किन्तु उनमें मात्र एक ही समुदाय नाजी (धर्मनिष्ठ) कहलाया. धामहृदया ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त इस रहस्यको कौन समझ सकता है जिनके सद्गुरु एवं समुदाय दोनों ही महान हैं.

नेक सुनो तुम मोमिनों, बीच लिख्या तफसीर ।
सो देखो चौथे सिपारे, दिल पाक करो सरीर ॥ २२

हे ब्रह्मात्माओ ! ध्यानपूर्वक सुनो, तफ्सीर (हूसैनी) में इस प्रकार लिखा है. कुरानके चौथे सिपारेमें भी एक प्रसङ्गका उल्लेख है, उसे भलीभाँति देख कर अपने तन और मनको निर्मल करो.

रसूलें कह्या जालूत कों, तुम में पीछे मूसा के ।
कहो फिरके केते हुए, मोहे देओ खबर ए ॥ २३

रसूल मुहम्मदने जालूतसे पूछा, मूसा पैगम्बरके बाद तुम्हारा समुदाय कितने भागोंमें विभिक्त हुआ इसका वृत्तान्त सुनाओ.

तब कह्या जालूत ने, देखों मैं किताब ।
सोई देख के कहोंगा, करो जिन सिताब ॥ २४

तब जालूतने कहा, कुरान देखकर ही मैं इस सन्दर्भमें कुछ कह पाऊँगा, आप शीघ्रता न करें.

तब कह्या रसूलें किताब, जले या चोरी जाए ।
तब क्यों करो इमामत, देखो दिल सों ल्याए ॥ २५

तब रसूलने कहा, यदि किताब जल जाए या चोरी हो जाए तो धर्मका नेतृत्त्व किस प्रकार करोगे ? इस पर हृदयपूर्वक विचार करो.

ईसा के पीछे फिरके, पूछा रसूलें जानिक को ।
कहे फिरके पैंतालीस, कह्या जानिके रसूल सो ॥ २६

इसी प्रकार रसूल मुहम्मदने जानिकसे प्रश्न किया, ईसाके बाद उनके समुदायके लोग कितने समुदायोंमें विभिक्त हो गए. तब जानिकने रसूलसे कहा ईसाके बाद उनका समुदाय पैंतालीस भागोंमें विभिक्त हुआ.

फेर कह्या रसूल ने, ए सुध नहीं तुमें किन ।
ए नीके मैं जानत, माएने किताब इन ॥ २७

रसूल मुहम्मदने पुनः कहा, इस सन्दर्भमें तुम लोगोंमें-से किसीको भी सुधि नहीं है. इन धर्मग्रन्थोंके रहस्योंको मैं भलीभाँति जानता हूँ.

पीछे मूसा के इकहत्तर, तामें फिरका नाजी एक ।
और सत्तर नारी कहे, ए समझो विवेक ॥ २८

मूसा पैगम्बरके पश्चात् उनके अनुयायी इकहत्तर समुदायोंमें विभक्त हुए. उनमें-से एक समुदायको नाजी(धर्मके प्रति समर्पित) कहा गया एवं शेष सत्तर समुदाय नारी (नरकगामी) कहलाए. इस अन्तरको विवेकपूर्वक समझो.

बहत्तर ईसा के भए, नाजी एक तिन में ।
और नारी फिरके इकहत्तर, कह्या रसूलें जानिक सें ॥ २९

इसी प्रकार ईसा पैगम्बरके अनुयायी भी बहत्तर समुदायोंमें विभक्त हुए. उनमें

भी एक समुदाय नाजी कहलाया. शेष एकहत्तर समुदाय नारी कहलाए. इस प्रकार रसूलने जनिकसे कहा.

यों तिहत्तर मेरे होवहीं, नारी बहत्तर नाजी एक ।
ताकों हिदायत हक की, जो हुआ नेकों में नेक ॥ ३०

इसी प्रकार मेरे अनुयायी भी तिहत्तर समुदायोंमें विभक्त होंगें. उनमें-से बहत्तर नारी कहलाएँगे एवं एक नाजी कहलाएगा. उसीको परब्रह्मका ज्ञान प्राप्त होगा एवं वही श्रेष्ठोंमें भी श्रेष्ठ माना जाएगा.

मूसे ईसे रसूल के, सबों नारी कहे फिरके ।
कह्या एक नाजी तिनों में, खासलखास अर्स का जे ॥ ३१

इस प्रकार मूसा, ईसा तथा रसूल मुहम्मद सभीके समुदायोंमें नारी समुदायका उल्लेख है. उनमें-से एक समुदाय ही नाजी कहलाया. वही दिव्य परमधामकी ब्रह्मात्माओंका समुदाय है.

गिनती फिरके केते कहूं, कई हुए बीच जहूदान ।
कहे ताबें दजाल के, जलसी जो कुफरान ॥ ३२

ऐसे विभिन्न समुदायोंकी गणना कहाँ तक करें ? यहूदियोंमें ऐसे अनेक समुदाय हुए हैं. वे सभी दज्जालके अधीन कहे गए हैं. ऐसे अविश्वासी लोगोंको नरककी अग्निमें जलना पड़ेगा.

यों एक नाजी अव्वल से, पाया वाही ने फल आखरत ।
वास्ते नूर नबीय के, देखाए करी कयामत ॥ ३३

इस प्रकार आरम्भसे ही एक समुदाय धर्मके प्रति समर्पित होता आया है. उसीने अन्तिम समयमें भी लाभ प्राप्त किया. रसूल मुहम्मदकी भविष्यवाणीको सत्य सिद्ध करनेके लिए ब्रह्मात्माओंके इस समुदायने नश्वर जगतमें अवतरित होकर कयामतकी घड़ी प्रकट कर दी.

लिख्या सिपारे अठारमें, कुरान माजजा नबी नबुवत ।
एक दीन जब होएसी, तब होसी साबित ॥ ३४

अठारहवें सिपारेमें कुरानके गूढ़ रहस्य एवं पैगम्बरके उपदेशके सत्य सिद्ध

होनेका उल्लेख है. यह तभी सम्भव है जब सभी लोग एक ही धर्म (श्री कृष्ण प्रणामी धर्म)में आ जाएँगे.

कहे रसूल कौल हक के, सबे करों एक दीन ।
सोए कौल तोड्या दुनी, जिनों रह्या ना यकीन ॥ ३५

रसूल मुहम्मदने कहा, ये परमात्माके वचन हैं कि वे आत्मजागृतिके समयमें प्रकट होकर सभीको एक धर्ममें लाएँगे. इस नश्वर जगतमें जिन लोगोंमें विश्वास ही नहीं रहा, उन्हीं लोगोंने परमात्माके इन वचनोंको भङ्ग किया.

माएना ऊपर का पोहोंचे नहीं, बीच अर्स बका ।
नजर बांध फना मिनें, हुए जिद कर तफरका ॥ ३६

धर्मग्रन्थोंके मात्र बाह्य अर्थ ग्रहण करनेसे परममधाम तक पहुँचा नहीं जा सकता. जिनकी दृष्टि स्वप्नवत् जगतकी अनित्य वस्तुओं पर ही टिकी है वे अपनी हठधर्मिताके कारण भिन्न-भिन्न समुदायोंमें विभक्त हो गए हैं.

हुई हिदायत हक की, एक नाजी को बातन ।
खोल नजर रूह की, देखाए अर्स तन ॥ ३७

धर्मके प्रति समर्पित एक नाजी समुदायके लोगोंको ही परब्रह्म परमात्माका निर्देशन प्राप्त हुआ है. उनकी ही आत्मदृष्टिको खोलकर उन्हें परमधामके मूल तन (परात्मा) के दर्शन करवा दिए हैं.

कौल किए रूहों सों, उतरते हक ।
सो सिर लिए अपने, मजाजी खलक ॥ ३८

ब्रह्मात्माओंके इस जगतमें अवतरित होते समय श्री राजजीने उनको वचन दिया था (मैं आत्मजागृतिके समय स्वयं प्रकट होकर तुम्हें परमधाम बुला लूँगा). परमात्माके इन वचनोंको इस नश्वर जगतके लोगोंने अपने ऊपर ले लिया है.

बुजरकी अर्स रूहों की, सिर अपने लेवें ।
सिफत एक नाजीय की, सो बहत्तरों को देवें ॥ ३९

ऐसे अज्ञानी लोग ब्रह्मात्माओंके महत्त्वको अपने ऊपर समझने लगते हैं. इसी

प्रकार एक नाजी समुदायकी प्रशंसाको अन्य बहत्तर समुदायोंने अपना समझ लिया.

जबराईल जित अटक्या, आगूं पोहोंच्या नाहें ।
सो ए जाने दुनियां हम, पोहोंचे तिन ठौर माहें ॥ ४०

जिब्रील फरिश्ता भी जहाँ पर पहुँच कर रुक गया और आगे नहीं जा सका, ऐसे दिव्य परमधामके सन्दर्भमें नश्वर जगतके लोग यही समझते हैं कि हम वहाँ तक पहुँच जाएँगे.

दुनियां जो तिलसम की, आगूं होने चाहे तिन ।
जो ल्याया रूहलअमीन, कलाम अल्ला रोसन ॥ ४१

इस नश्वर जगतके लोग उन ब्रह्मात्माओंसे भी आगे होना चाहते हैं जिनके लिए जिब्रील फिरश्ता परमात्माके वचन लेकर आए.

राह न देखे उपले माएनों, बीच अंधेरी रात ।
सो ए रहे बीच नासूत के, घेरे पुलसरात ॥ ४२

जो लोग धर्मग्रन्थोंके मात्र बाह्य अर्थको ही ग्रहण करते हैं वे अज्ञानरूपी अन्धकारपूर्ण इस जगतमें परमात्माका मार्ग प्राप्त नहीं कर सकते. इसलिए वे कर्मके बन्धनोंसे घिरे हुए होनेसे स्वप्नवत् जगतमें ही रह जाते हैं.

ए देत देखाई दुनी फना, ए जो बीच नासूत ।
ऊपर फना सब फिरस्ते, ए जो कह्या मलकूत ॥ ४३

इस नश्वर जगतमें जो कुछ दिखाई देता है वह सब अनित्य है. यहाँ तक कि मृत्युलोकसे ऊपर वैकुण्ठ पर्यन्त सभी लोकोंके देवतागण भी अनित्य हैं.

ए खाली जो तिन ऊपर, ला हवा जो सुंन ।
ए जुलमत तिन बीचमें, चौदे तबक पलन ॥ ४४

वैकुण्ठके ऊपर शून्य-निराकारका विस्तार है. शून्य निराकारके मध्य चौदह लोकयुक्त यह ब्रह्माण्ड एक झूलेकी भाँति झूल रहा है.

ए लिख्या दूजे सिपारे, आयत कुरान के माहें ।
सक सुभे होवे जिन कों, सो देखे जाए ताहें ॥ ४५

कुरानके दूसरे सिपारेकी आयतोंमें इस प्रकारका उल्लेख है. जिनको इस विषयमें सन्देह हो वे वहाँ पर देख कर अपना सन्देह मिटा सकते हैं.

ए छल महंमद गिरो को, हकें देखाया ।
सोए खेल कुंन हुकमें, याही वास्ते बनाया ॥ ४६

श्री राजजीने श्री श्यामाजीकी अङ्गभूता ब्रह्मात्माओंको मिथ्या जगतका यह खेल दिखाया है. उन्होंने ही अपने आदेशके द्वारा 'हो जा' (कुन) कह कर इन ब्रह्मात्माओंके लिए यह खेल बनाया है.

ए छल फरेब तो कह्या, राह न सूझे रात ।
ए गुम हुए ढूंढे फना बीच, आडी हुई जुलमात ॥ ४७

इस स्वप्नवत् जगतको इसीलिए छल-प्रपञ्चपूर्ण कहा गया है कि यहाँ पर अज्ञानरूपी अन्धकारके कारण किसीको भी पारका मार्ग दिखाई नहीं देता है. यहाँके साधक भी यहीं पर खोज करते हुए इसी अन्धकारमें खो जाते हैं. शून्य-निराकारका आवरण ही उन सबको पार जानेके लिए व्यवधान रूप बन जाता है.

ढूँढ्या चौदे तबकों, पर पाई न किन तरफ ।
बका का बीच दुनियां, कोई बोल्या न एक हरफ ॥ ४८

अनेकों साधकोंने इन चौदह लोकोंमें परमात्माको खोजा परन्तु किसीको भी पारकी दिशा प्राप्त नहीं हुई. इस प्रकार इस नश्वर जगतमें अखण्ड धामके विषयमें कोई एक शब्दका भी उच्चारण नहीं कर पाया.

और सुरैया सितारा, कह्या उलंघी न किन ।
सो देखो सिपारे सोलमें, काहूं छोडी न सरे सुंन ॥ ४९

यहाँके कोई भी जीव ज्योतिस्वरूपको लाँघ कर आगे नहीं जा सका. कुरानके सोलहवें सिपारेमें देखो ! वहाँ पर यही कहा है, कोई भी जीव शून्यमण्डलको छोड़ कर आगे नहीं जा सका.

म्याराज हुआ महंमद पर, कई किए जाहेर बयान ।
और रखे छिपे हुकमें, वास्ते हादी गिरो पेहेचान ॥ ५०

रसूल मुहम्मदको परमात्माके दर्शन हुए. उन्होंने अनेक रहस्योंका स्पष्टीकरण किया तथापि परमात्माके आदेशसे कुछ रहस्य गुप्त रखे. यह सब श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंकी पहचानके लिए ही है.

तेहेतसरा से हवा लग, एक फिरस्ता खडा इन कद ।
ए बडका सबन का, तो पोहोंच्या हवा सिर हद ॥ ५१

उन्होंने कहा, पातालसे लेकर शून्य-निराकार तक एक विराटकाय फरिश्ता खड़ा है. यह इस जगतका ईश कहलाता है. उसका सिर शून्य निराकार तक पहुँचा हुआ है.

इन फिरस्ते के कई सिर, तिन सिर सिर कई मोंहों ।
मोंह मोंह कै जुबान कही, ए देखो इसारत फिरस्तों ॥ ५२

इस फरिश्तेके अनेक सिर हैं. प्रत्येक सिरमें अनेक मुख हैं और प्रत्येक मुखमें अनेक जिह्वाएँ हैं. इस फरिश्ताके विषयमें कहे गए इन सङ्केतोंको तो देखो.

[वैदिक (हिन्दू) धर्मग्रन्थोंमें विराट पुरुषको सहस्त्रशीर्ष, सहस्त्राक्ष बताया है. वे इस ब्रह्माण्डमें नारायणके रूपमें व्याप्त हैं एवं भगवान विष्णुके रूपमें चौदह लोकोंके प्राणियोंका पालन-पोषण करते हैं. उनका धाम वैकुण्ठ है. मनुष्योंसे हजारों गुना श्रेष्ठ होनेसे उनको सहस्त्रशीर्ष कहा है.]

एक इनसे बडे कहे, ऐसे जाएं जाकी नाकमें ।
तो भी उने सुध ना पडे, अंदर फिरके मोंह निकसें ॥ ५३

उन्होंने और कहा, इससे भी बड़ा एक और फरिश्ता है. जिसके नाकमें-से ऐसे अनेक फरिश्ते अन्दर घुस जाते हैं और घूमकर मुखसे बाहर निकल आते हैं. तथापि उसको उनकी सुधि नहीं होती है.

[शास्त्रोंमें भी ऐसा उल्लेख है कि महाविष्णुके रोम-रोममें अनेकों विष्णु समा जाते हैं.]

ए मसनंद मलकूत की, फिरस्ता एक पातसाह ।
कोई बुजरक पोहोंचे इनलों, और पांउ कटे पुलसरात राह ॥ ५४

जिसमें उक्त फरिश्ता (विष्णु भगवान) सम्राटके रूपमें है यह वैकुण्ठका साम्राज्य है. कोई-कोई समझदार व्यक्ति ही यहाँ पहुँच पाते हैं. शेष सभी लोग कर्मकाण्डके मार्ग पर चलते हुए उसीके बन्धनमें फँस कर जगतमें ही भटक जाते हैं.

जो आवत अरवा नासूतमें, पकडे वजूद नाबूद ।
सो ले सरीयत चढ ना सके, छूटे ना फना वजूद ॥ ५५

जो जीव इस नश्वर जगतमें आकर नश्वर तन धारन करते हैं वे भी कर्म मार्गको अङ्गीकार करनेके कारण वैकुण्ठ पर्यन्त नहीं जा सकते क्योंकि उनसे क्षणभङ्गुर शरीरका मोह भङ्ग नहीं होता है.

ले तरीकत पोहोंचे मलकूत, सो किन लई न जाए ।
करे बोहोत दौड आप वास्ते, ले निजस न ऊंचा चढाए ॥ ५६

कुछ साधक उपासना मार्गको अङ्गीकार कर वैकुण्ठ तक पहुँचते हैं. इस मार्ग पर भी सामान्य लोग नहीं चल सकते हैं. वे अपने उत्थानके लिए अनेक प्रयत्न करते हैं किन्तु इन्द्रियोंके वशीभूत होकर ऊँचे नहीं चढ़ सकते.

ए बीच फना के सब कहे, हवा समेत पलना ।
ए दिन रात आजूज माजूज, खाए सब करसी फना ॥ ५७

ये सभी लोग नश्वर जगतके कहे गए हैं यहाँ तक कि शून्य मण्डलमें स्थित यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही नश्वर है. याजूज और माजूजरूपी दिन रात इनकी आयुको क्षीण करते हुए अन्तमें सबको नष्ट कर देंगे.

मारफत सागर क्यों कहूं, करी सरे में पुकार ।
इन हक ठौर के नाम धर, पूज फिरके हुए बेसुमार ॥ ५८

एसी स्थितिमें ब्रह्मज्ञान (मारफत सागर) का वर्णन कैसे करूँ ? यहाँ पर सर्वत्र कर्मकाण्डका ही प्रचार-प्रसार है. यहाँके लोगोंने परमात्मा तथा परमात्माके स्थान परमधामका नाम लेकर विभिन्न देवी-देवताओंकी पूजा

आरम्भ की है जिससे अनेक सम्प्रदाय अस्तित्वमें आए.

कोई कहे विस्नु नारायन, कोई अरहंत बतावे ।
कोई देवी देव पथर, पानी आग पुजावे ॥ ५९

यहाँ पर कोई परमात्माको विष्णु, नारायण तथा कोई अरिहन्त कहते हैं. कोई देवी-दवताको ही परमात्मा समझकर उनकी मूर्ति तथा आग, पानी एवं पत्थरकी पूजा करवाते हैं.

कोई कहे बेचून है, और बेचगून ।
भी कहे बेसबी है, और बेनिमून ॥ ६०

कोई उसी परमात्माको बेचूँ, बैचगूँ बेसबी और बेनिमून कहते हैं.

कोई कहे निराकार है, और निरंजन ।
कोई कहे अहं बका, सबमें ब्रह्म निरगुन ॥ ६१

कोई उसीको निराकर, निरञ्जन तथा निर्गुण कहते हुए सर्व व्यापक मानते हैं, फिर स्वयंको ही ब्रह्म (अहं ब्रह्मास्मि) कहते हैं.

ए जो पैदा मोह तत्व, कही तारीकी जुलमात ।
कौल दूजा हवा ला मकान, जहां से पैदा रात ॥ ६२

शास्त्रोंमें जिसको मोहतत्त्व कहा है कतेब ग्रन्थोंमें उसीको जुलमत, तारिकी, ला मकान तथा हव्वा कहते हैं. इसी माया (रात्रि) से यह जगत उत्पन्न हुआ है.

ए जो उरझी दुनी रात की, न पावे तौहीद राह ।
तो लिख्या सिपारे उनईसमें, बनी आदम पूजे सब हवाए ॥ ६३

नश्वर जगतके लोग इसी अज्ञानमयी रात्रिमें उलझे हुए हैं. उन्हें अद्वैत ब्रह्मका मार्ग प्राप्त नहीं होता है. कुरानके उन्नीसवें सिपारेमें लिखा है कि आदमके वंशज शून्य निराकार (हवा) की ही पूजा करेंगे.

दिया हवा का कुलफ, ईमान के द्वारे पर ।
ए खोलेगा सोई सिरदार, याको पीठ देवें पैगंमर ॥ ६४

परमात्माके प्रति होनेवाली श्रद्धाके द्वार पर इसी नश्वर माया (अज्ञानरूपी

अन्धकार) का ताला लगा हुआ है. जो इस तालेको खोलेगा वह शिरोमणि कहलाएगा. वस्तुतः परमात्माका सन्देश देनेवाले पैगम्बर ही इसे पीठ देकर आगे जा सकते हैं.

चारों चीज पूजी रात की, पानी खाक पथर अगिन ।
आकास पूज्या कैयों नाम धर, निराकार हवा ला सुन ॥ ६५

इस नश्वर जगतमें अज्ञानरूपी अन्धकारके कारण मिट्टी, पानी, आग तथा पत्थरकी पूजा होती है. अनेक लोग आकाशकी भी पूजा करते हैं और उसे शून्य निराकारकी संज्ञा देते हैं.

ए हवा सुन जुलमत कही, एही हिजाब रात अंधेर ।
ऊपर तले बीच दुनियां, फिरवली गिरदवाए फेर ॥ ६६

यह शून्य निराकार ही अज्ञानरूपी अन्धकारके कारण आवरण स्वरूप कहलाता है. इसने इस नश्वर ब्रह्माण्डको ऊपर नीचे तथा चारों ओरसे घेर रखा है.

ए सबे बीच अंधेरी, किन तरफ न पाई हक ।
काहूं न पाया अरस बका, कै हुए रात बीच बुजरक ॥ ६७

इसलिए नश्वर जगतके सभी जीव अज्ञानरूपी अन्धकारमें पड़े हुए हैं. उनमें-से किसीने भी परमात्माकी दिशाको प्राप्त नहीं किया है. इस अज्ञानरूपी रात्रिमें जो कोई श्रेष्ठ हुए हैं उनको भी अखण्ड परमधामकी अनुभूति नहीं हुई है.

तिन पर नूर अक्षर, जो कायम जबरूत ।
तापर अरस अजीम, जो कह्या बका हाहूत ॥ ६८

निराकारके ऊपर तेजोमय अक्षरब्रह्म हैं. उनका अखण्ड धाम अक्षरधाम (जबरूत) कहलाता है. उससे परे सर्वश्रेष्ठ परमधाम है जो अखण्ड तथा शाश्वत कहलाता है.

ए जो ठौर दोऊ कायम, कहे अरस हक ।
सो ल्यावे फना बीच वजूद, ए जो फानी खलक ॥ ६९

ये दोनों धाम (अक्षरधाम तथा परमधाम) अखण्ड कहलाते हैं. इनको ही

परमात्माका धाम कहा है. नश्वर जगतके जीव इन दोनों धामोंको अपने नश्वर शरीरके अन्दर ही होनेका दम्भ करते हैं.

फिरस्ता जबराईल, पैगंमरों सिरदार ।
सो माहें पैठ ना सक्या, अरस अजीम द्वार ॥ ७०

कतेब ग्रन्थोंके अनुसार सभी पैगम्बरोंमें जिब्रील फरिश्ता शिरोमणि कहलाता है किन्तु वह भी दिव्य परमधामके द्वारमें प्रवेश नहीं कर सका.

ना तो महंमद की हिमायतें, आगूं चल्या एक कदम ।
तिन राह पांच सै साल की, काटी माहें दम ॥ ७१

अन्यथा रसूल मुहम्मदके साहससे वह एक कदम तो आगे बढ़ा था. उस समय उसने एक क्षणमें पाँच सौ वर्षका मार्ग तय किया.

आगूं चलते तिन यों कह्या, जल जाएं मेरे पर ।
सोए बीच जाए ना सक्या, ए जो अरस अकबर ॥ ७२

आगे बढ़ते हुए उसने यह कहा, मेरे पङ्ख जल रहे हैं. इस प्रकार जिब्रील फरिश्ता भी दिव्य परमधामके अन्दर प्रवेश नहीं कर सका.

ए साहेदी लिखी जाहेर, म्याराज नामें माहें ।
सरहद जबरूत की, फिरस्तें छोडी नाहें ॥ ७३

मेयराजनामामें इस प्रकारका प्रमाण दिया गया है कि जिब्रील फरिश्ता अक्षर धामकी सीमाको छोड़कर आगे नहीं बढ़ सका.

गुनाह पोहोंच्या तिन अरसमें, इन दरगाह रूहन ।
दिल हकीकी ए कहे, अरस कलूब मोमन ॥ ७४

कुरानके अनुसार ऐसे दिव्य परमधाममें रहनेवाली ब्रह्मात्माओं तक दोष (खेल माँगनेका) पहुँच गया. इन्हीं ब्रह्मात्माओंको सत्यहृदया कहा है और इनके हृदयको ही परमात्माका धाम कहा है.

खासों में खासे कहे, रबानी उमत ।
खिलवत हक हादी रूहें, अरस हक वाहेदत ॥ ७५

ब्रह्मात्माओंके इस विशिष्ट समुदायको श्रेष्ठसे भी श्रेष्ठ कहा है. अखण्ड

परमधाम, श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ एकात्मभाव (अद्वैत) स्वरूप हैं.

कह्या हदीसों आयतों, द्वार न खोल्या किन ।
अव्वल बीच या आखर, खुले ना रसूल बिन ॥ ७६

कुरानकी आयतों तथा हदीसोंमें इस प्रकार कहा है कि आज तक किसीने भी पारके द्वार नहीं खोले हैं. सृष्टिके आरम्भसे लेकर मध्य तथा अन्त पर्यन्त परब्रह्म परमात्माका सन्देश लेकर आनेवाले सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके बिना अन्य किसीसे भी ये द्वार नहीं खुले हैं.

जंजीर द्वार भिस्त की, अव्वल खोले महंमद ।
दिल साफ करो ए देखके, ले हदीस साहेद ॥ ७७

परब्रह्म परमात्मा द्वारा प्रशंसित (मुहम्मद) श्री श्यामाजीने सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर सर्वप्रथम अखण्ड मुक्तिस्थलके द्वार खोल दिए हैं. इस प्रकार हदीसोंमें दी गई साक्षियोंको लेकर अपने हृदयके सन्देहोंको दूर करो.

जेता कोई पैगंमर, रसूल नबी औलिए ।
गोस कुतब वली अंबीए, नबी नसीहत सिर सबके ॥ ७८

इस जगतमें जितने भी पैगम्बर, अवतार, नबी, वली, गोस, कुतूब आदि हुए हैं उन सभीके उपदेशोंमें रसूल मुहम्मदका उपदेश शिरोमणि कहा गया है.

कै बडे कहावें पीर फकीर, कै आरफ उलमा ।
यार असहाव कै खलीफे, हादी महंमद है सब का ॥ ७९

इस जगतमें बड़े-बड़े पीर, फकीर, आरिफ, उलमा, यार, असहाव, खलीफा आदि कहलाए हैं. उन सबके मार्गदर्शक रसूल मुहम्मद कहे गए हैं.

रसूलें बुजरकी अपनी, दै कै जहूदों कों ।
पर ओ छोड बडाई अपनी, आए नहीं कदमों ॥ ८०

रसूल मुहम्मदने अनेक यहूदियोंको अपना ज्ञान प्रदान किया. किन्तु वे अपनी प्रतिष्ठाको छोड़कर उनके चरणोंमें नहीं आए.

कै कहावें खावंद कलमे, कै साहेब सहीफे किताब ।
होए न काम महंमद बिना, जिन सिर आखरी खिताब ॥ ८१

अनेक पैगम्बर स्वयंको कलमाके स्वामी कहलाते हैं, अनके लोग छोटे-छोटे धर्मग्रन्थोंकी रचना कर साहेब कहलाते हैं. किन्तु जिनको अन्तिम समयके परमात्माकी शोभा प्राप्त हुई है ऐसे मेरे हृदयमें विराजमान श्यामाजी स्वरूप सद्गुरुके बिना सभी जीवोंको मुक्तिस्थलका सुख प्रदान करनेका कार्य अन्य किसीसे भी नहीं हुआ.

जहूद नसारे पैगंमर, कै केहेलाए रातके माहें ।
दिन ऊगे महंमद बुराक के, आगूं दौडे सब जाएं ॥ ८२

अज्ञानरूपी अन्धकारसे परिपूर्ण इस जगतमें यहूदियों तथा ईसाइयोंमें अनेक पैगम्बर कहलाए हैं. अब घोड़े पर आरूढ़ बुद्धनिष्कलङ्कके द्वारा ब्रह्मज्ञानका प्रभात होने पर वे सभी दौड़ कर उनकी शरणमें आने लगे.

देखो नामें म्याराजमें, किताब सिकंदर ।
अस्वार महंमदके जलेबमें, चलें प्यादे पैगंमर ॥ ८३

मेयराजनामा नामक श्रेष्ठ पुस्तकमें देखो. उसमें उल्लेख है कि अन्तिम समयके मुहम्मद सेनानायकके रूपमें अश्वारोहण करेंग और उनकी सेनामें सभी पैगम्बर ब्रह्मात्माओंके साथ पैदल चलते हुए जाएँगे.

बैठावें आठों भिस्तमें, छोटा बडा जो कोए ।
जो जैसा तैसी तिनों, महंमद पोहोंचावें सोए ॥ ८४

अन्तिम समयके मुहम्मद छोटे-बड़े सभी जीवोंको उनकी कर्तव्य निष्ठाके आधार पर आठों मुक्ति स्थलोंमें पहुँचाएँगे.

या दोऊ गिरो दोऊ अरसों की, जो बका ठौर हैं दोए ।
फिरस्ते रूहें उतरीं लैलमें, सो भी सूरत हकी से होए ॥ ८५

ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीसृष्टिके ये जो दो समुदाय हैं उनका मूलस्थान परमधाम तथा अक्षरधाम है. वे भी अपने-अपने स्थानोंसे इस जगतमें अवतरित हुई हैं. उनको अपने मूलस्थानोंमें पहुँचानेका कार्य भी इसी हकी स्वरूपके द्वारा

सम्पन्न होगा.

एही फजर दिन मारफत, सब आवें माहें दीन ।
तबहीं मुआ दजाल, आया सबों यकीन ॥ ८६

इसीको ब्रह्मज्ञानका प्रभात कहा गया है. इसी प्रभातमें जगतके सभी लोग एक ही धर्म (श्री कृष्ण प्रणामी धर्म) में आ जाएँगे. तब सबके हृदयमें स्थित नास्तिकतारूपी शैतान मर जाएगा और सभीको परब्रह्म परमात्माके प्रति विश्वास जागृत होगा.

एक कुरानका माजजा, और नबीकी नबुवत ।
अव्वल फुरमाया सब हुआ, तब होए साबित ॥ ८७

उस समय कुरानकी भविष्यवाणी एवं पैगम्बरके उपदेश सत्य सिद्ध होंगे. उन्होंने पहलेसे ही जो कहा था वे सभी बातें इस समय सत्य सिद्ध होंगी.

आयतें हदीसें सब कहें, खुदा एक महंमद बरहक ।
और न कोई आगे पीछे, बिना महंमद बुजरक ॥ ८८

कुरानकी आयतें एवं हदीसें स्पष्ट कहती हैं कि परब्रह्म परमात्मा ही विश्व ब्रह्माण्डके स्वामी हैं एवं रसूल मुहम्मदने जो कहा है वह सत्य है. इस प्रकार अन्तिम मुहम्मदके अतिरिक्त पूर्व या पर (बाद) के कोई भी पैगम्बर श्रेष्ठ नहीं कहलाएँगे.

ए जो कहे लाखों हो गए, रातमें पैगंमर ।
पैगाम ल्यावे कोई हक का, तो क्यों ना करे फजर ॥ ८९

कुरानमें उल्लेख है कि अज्ञानमयी रात्रिमें लाखों पैगम्बर हो गए हैं. यदि उनमें-से कोई परब्रह्म परमात्माका सन्देश लेकर आए हुए होते तो वे उसी समय ब्रह्मज्ञानका प्रभात क्यों नहीं कर देते ?

कहे लाखों पैगंमर हो गए, कै और लिखे बुजरक ।
किन बका पट ना खोलिया, दिए किनने किसे पैगाम हक ॥ ९०

कुरानमें लाखों पैगम्बर हो गए हैं ऐसा उल्लेख है और उनमें भी अनेक श्रेष्ठ कहलाए हैं किन्तु आज तक उनमें-से किसीने भी अखण्डका द्वार नहीं खोला

तो फिर परब्रह्म परमात्माका सन्देश किसको किसने दिया ?

बका तरफ न पाई काहूं ने, तो द्वार खोले क्यों कर ।
क्यों बका बिन बडे कहे रातमें, क्यों किन तरफ न कही पैगंमर ॥ ९१

आज तक किसीको भी अखण्ड परमधामकी दिशा प्राप्त नहीं हुई तो वे उसके द्वार कैसे खोल सकते. अखण्ड घरका सन्देश दिए बिना वे अज्ञामय रात्रिमें कैसे बड़े कहलाए ? उन्होंने परब्रह्म परमात्माके धामकी ओर क्यों सङ्केत नहीं किया ?

म्याराज एक महंमद पर, दूजे हुआ न किन ऊपर ।
म्याराज हुए बिना पैगंमरों, पैगाम दिए क्यों कर ॥ ९२

एक रसूल मुहम्मदको ही खुदाके दर्शन हुए. उनके अतिरिक्त अन्य किसीको भी यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ. जब उनको परमात्माके दर्शन ही नहीं हुए तो वे उनका सन्देश कैसे दे सकते.

अजूं खडियां इनोंकी उमतें, पूजें पानी आग पथर ।
सो तो कही सब रानियां, मांगे माजजे किया कुफर ॥ ९३

उन पैगम्बरोंके अनुयायी आज भी आग, पानी तथा पत्थरकी पूजा कर रहे हैं. इसीलिए उन सबको निरस्त कर दिया गया. क्योंकि उन्होंने नश्वर जगतके ही सुखोंकी कामना कर हेय कार्य किया है.

लिख्या सिपारे दूसरे, बखत नूह पैदास ।
तब कही सब कुफरान, इसलाम न गिरो कोई खास ॥ ९४

कुरानके दूसरे सिपारेमें उल्लेख है कि नूह पैगम्बरके समयमें भी परमात्माके प्रति अविश्वास रखनेवाले लोग उपस्थित थे. उस समय परमात्माके प्रति आस्थावान आत्माओंका समूह अवतरित नहीं हुआ था.

कह्या एक गिरो थी मोमिन, ले आदम लग तोफान ।
आगूं अमल इबराहीम के, हुती सबें कुफरान ॥ ९५

दूसरी ओर कुरानमें यह भी उल्लेख है कि ब्रह्मात्माओंका एक समुदाय था जो आदमसे लेकर नूह तूफानके प्रलय काल पर्यन्त उपस्थित था. तदुपरान्त

इब्राहीमके समय तक सर्वत्र अन्धविश्वास ही छाया रहा.

मोमिन गिरो एक नूह के, जिनों बीच था स्याम ।
सो पार हुई किस्ती चढ, जो चालीस जुफत तमाम ॥ ९६

नूह पैगम्बरके समय ब्रह्मसृष्टियोंके समुदायमें श्री कृष्णजीका अवतरण हुआ था. जिनके द्वारा योगमायाकी नौकामें चढ़कर चालीस जुत्थ सखियाँ पार हो गई.

कहे एही चालीस तूबे पर, जो दरखत जिमी बीच स्याम ।
यामे न होए कोई कम, जाकी सिफत लिखी अल्ला कलाम ॥ ९७

आत्माओंका यही चालीस जुत्थ योगमायाकी नावमें बैठकर श्यामसुन्दर श्री कृष्णकी भूमि नित्य वृन्दावनके वृक्षोंके नीचे पहुँचा. इन आत्माओंमें किसी भी प्रकारकी न्यूनता नहीं है जिनकी प्रशंसा कुरान आदि सभी धर्मग्रन्थोंमें की गईं.

आदम नूह तोफान लग, एक गिरोह थी नूह अमल ।
सो पार हुई किस्ती चढ, और काफर डूबे सब जल ॥ ९८

आरम्भसे लेकर नूह तूफानके समय तक ब्रह्मात्माओंका एक ही समुदाय ऐसा था जो योगमायाकी नौकामें बैठकर कालमायाके ब्रह्माण्डसे पार हुआ. शेष सभी अविश्वासी लोग प्रलयमें नष्ट हो गए.

सो भी गिरो कही महंमद की, लिखी हदीसों महंमद ।
आखर कह्या नूह गिरो की, महंमद देसी साहेद ॥ ९९

इसी समुदायको रसूल मुहम्मदने हदीसोंमें अन्तिम समयके मुहम्मदका समुदाय कहा है. उन्होंने यह भी कहा कि अन्तिम समयमें नूह पैगम्बरके समुदायकी साक्षी भी यही मुहम्मद देंगे.

इबराहीम के अमलमें, ना इसलाम गिरो दीन ।
कही एक लडकी निमरूद की, कछू ल्याई थी यकीन ॥ १००

इब्राहीम पैगम्बरके समयमें धर्मनिष्ठ लोगोंका समुदाय नहीं था. ऐसा कहा जाता है कि निमरूद सम्राटकी एक कन्याने ही धर्मके प्रति आस्था रखी थी.

लिख्या फलाने सिपारे, इबराहीम के अमलमें ।
और मुसलमान कोई ना हुता, तो लई वारसी जहुदोंने ॥ १०१

किसी एक सिपारेमें यह भी उल्लेख है कि इब्राहीमके समयमें कोई मुसलमान नहीं था इसलिए उनका उत्तराधिकार यहूदियोंने प्राप्त किया.

मगज देखो मुसाफ का, सबों महंमद हिदायत ।
आसमान जिमी के बीचमें, और न काहूं नसीहत ॥ १०२

कुरानके अप्रकट रहस्यों पर विचार करो. सर्वत्र अन्तिम समयमें अवतरित मुहम्मदके लिए निर्देशन प्राप्त है. पृथ्वी और आकाशके मध्य इस जगतमें अन्य कहीं भी ऐसा निर्देशन नहीं मिलता.

ए तीनों सूरत महंमद की, करें सब पर हिदायत ।
तो लिख भेज्या हक ने, क्यों हलाक होए उमत ॥ १०३

रसूल मुहम्मद निर्दिष्ट तीनों स्वरूपोंने सभीको परमात्माका निर्देश दिया. इसीलिए परब्रह्म परमात्माने उनके द्वारा अपना सन्देश भेजा. इसलिए ब्रह्मात्माओंका समुदाय इस मायामें व्याकुल क्यों हो.

जो बीच जिमी आसमान के, महंमद हिदायत सब पर ।
भाई महंमद अरस खिलवत, नसीहत और न इन बिगर ॥ १०४

पृथ्वीसे लेकर आकाश पर्यन्त इस जगतके सभी जीवोंको अन्तिम मुहम्मदका ज्ञान प्राप्त होगा. रसूल मुहम्मदने जिनको अपने भाई कहा है उन परमधामकी ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य किसीको भी परमधामकी अन्तरङ्ग लीलाका उपदेश प्राप्त नहीं हुआ है.

करी अगली किताबें मनसूख, कहे जमाने रद ।
ना नूह तोफान पीछे मोमिन, जोलों आए महंमद ॥ १०५

इसीलिए पूर्व समयमें अवतरित सभी धर्मग्रन्थोंको निरस्त कह दिया. नूह तूफानके बाद जब तक अन्तिम मुहम्मदके रूपमें सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीका आगमन नहीं हुआ तब तक इस जगतमें ब्रह्मात्माओंका अवतरण भी नहीं हुआ था.

कह्या तब ल्याए कै ईमान, कै रहे ईमान बिगर ।
केतेक पीछे ल्याए थे, ईमान ईस्माईल पर ॥ १०६

कुरानमें इस प्रकार कहा है, अनेक लोगोंने रसूल मुहम्मदकी इन बातों पर विश्वास किया एवं अनेक लोगोंने विश्वास नहीं किया. अनेक लोगोंने ईसाके पश्चात् ईस्माईलके प्रति भी विश्वास किया था.

सो ईमान तोलों चल्या, एहिया आया वखत जिन ।
तब मजाजी दुनी का, ईमान न रह्या किन ॥ १०७

ईस्माईलके प्रति तब तक लोगोंकी श्रद्धा रही जब तक उन्हें याहिया पैगम्बर प्राप्त नहीं हुए. तदुपरान्त भौतिक लाभ प्राप्त करनेकी कामना रखनेवाले किसी भी व्यक्तिमें विशेष श्रद्धा नहीं रही.

सो एहीया ईसे पर, पेहेले ल्याया ईमान ।
कायम किया तिन दीनकों, ए देखो दिलसे बयान ॥ १०८

उन यहिया पैगम्बरने भी सर्वप्रथम ईसाके प्रति विश्वास प्रकट किया और उनके चलाए हुए धर्मको आगे बढ़ाया. इस कथानक पर हृदयपूर्वक विचार करो.

दुनी कहे पैगंमर हो गए, लिखीं सिफतें इनों आखर ।
ए बका बातून क्यों बूझहीं, जो फंदे बीच माएनों ऊपर ॥ १०९

नश्वर जगतके लोग कहते हैं, ये सब पैगम्बर पहले हो गए हैं. वस्तुतः इनकी महिमा अन्तिम समयमें ही होनी है. इन अप्रकट सत्य रहस्योंको ये लोग कैसे समझ सकते हैं जो बाह्यदृष्टिके कारण बाह्य अर्थोंमें फँसे हैं.

[कुरानके इन कथानकोंको लोग बीती हुई घटना समझते हैं. वस्तुतः ये कथानक कयामतके समय होनेवाली घटनाके लिए हैं. जिस प्रकार याहियाने अपने पिताके प्रति श्रद्धा रख कर उनके मतको आग बढ़ाया उसी प्रकार श्री प्राणनाथजीने श्री देवचन्द्रके प्रति श्रद्धा रख कर उनके धर्मको आगे बढ़ाया.]

जेता माएना मुसाफका, किया नजूम और बातून ।
सो पढें कहें किसे हो गए, डालें बीच नाबूद दिन ॥ ११०

कुरानमें जितनी भी भविष्यवाणियाँ अथवा गूढ़ रहस्य छिपे हुए हैं उनको पढ़े-लिखे लोग कथानक समझकर बीती हुई घटना कहकर छोड़ दिया करते हैं.

किसे आखरी कलाम अल्लहके, जिन खोलें होसी हैयात ।
सो पढें कहें होए गए, जित दुनी रांनी बीच जुलमात ॥ १११

कुरानके ये सभी कथानक अन्तिम समयके लिए हैं जिनका रहस्य स्पष्ट होने पर कयामत होगी और जगतके सभी जीव अखण्ड होंगे. कुरानके पढ़े हुए लोग कहते हैं कि ये सारी घटनाएँ हो चुकी हैं. जबकि उस समय अज्ञानरूपी अन्धकारके कारण लोगोंकी बुद्धि निरस्त हो गई थी.

जो कहे किसे हो गए, कहे दाग देऊं तिन नाक ।
लिख्या सिपारे उनतीसमें, राह गुम हुआ नापाक ॥ ११२

जो लोग इन कथानकोंको बीती हुई घटना समझते हैं उनके लिए कहा गया है कि उनकी नासिकाको दाग दिया जाए अर्थात् उनको लज्जित कर दिया जाए. कुरानके उनतीसवें सिपारेमें लिखा है कि परमात्माके मार्गसे विचलित हुए लोग अपवित्र कहलाते हैं.

लिख्या नूरनामें मिने, रूह मुरग किया गुसल ।
पर झारे बूंदें गिरीं, सो खडे हुए पैगंमर मिल ॥ ११३

नूरनामा पुस्तकमें उल्लेख है, मुर्गरूप आत्माने मोहसागरमें स्नान किया (नश्वर शरीर धारण किया). उसके पङ्खको झटकनेसे जलकी जितनी बूँदें गिरी उसीसे ये सब पैगम्बर हुए हैं.

सो मुरग रूह महंमद की, तहां से बरसी बूंदे नूर ।
सो नूर से हुए पैगंमर, इनों दे पैगाम किया जहूर ॥ ११४

वस्तुतः यहाँ पर मुर्गका सङ्केत श्यामाजीकी आत्माके लिए है जिनके अङ्गोंसे बारह हजार ब्रह्मात्माएँ प्रकट हुई हैं. इन्हीं ब्रह्मात्माओंने परब्रह्म परमात्माका सन्देश देकर ब्रह्मज्ञानका प्रकाश फैलाया.

लाख ऊपर चौबीस हजार, कहे उठे बूंदों के ।
पैगाम दिए इनों आखर, जो बका पट महंमदें खोले ॥ ११५

कुरानमें इस प्रकार उल्लेख है कि उन बूँदोंसे एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर

उत्पन्न हुए. जब अन्तिम समयमें प्रकट होकर अन्तिम मुहम्मद (सद्गरु) ने पारके द्वारा खोल दिए तब इन पैगम्बरोंने ब्रह्मात्माओंके साथ मिल कर जगतके जीवोंको परब्रह्म परमात्माका सन्देश दिया.

जो हो गए एते पैगंमर, तो क्यों रही अबलों रात ।
तो तबहीं बका दिन कर, उडाए देते जुलमात ॥ ११६

यदि इतने पैगम्बर पहले ही हो गए होते तो अभी तक अज्ञानरूपी अन्धकार कैसे छाया रहता ? अन्यथा ये सभी उसी समय ब्रह्मज्ञानका प्रभात कर अज्ञानरूपी अन्धकारको अवश्य उड़ा देते.

एही गिरो पैगंमरों आखरी, कही जो खासल खास ।
जाकी सिफत आयतों हदीसों, पेड नूर बिलंद से पैदास ॥ ११७

इसी समुदायको अन्तिम समयमें प्रकट होनेवाले पैगम्बरका समुदाय कहा गया है और इन्हींको सर्वश्रेष्ठ आत्मा कहा है. कुरानकी आयतों तथा हदीसोंमें इनकी ही प्रशंसा है. ये स्वयं ज्योतिर्मय दिव्य परमधामकी सृष्टि हैं.

नूर अनामिन अल्ला तो कह्या, कुल सैयन मिन्नूरी ।
करे इनका दावा दिल मजाजी, देखो अकल इनों सहुरी ॥ ११८

इसलिए श्री श्यामाजीने इनको अपना तेजोमय अङ्ग तथा स्वयंको परब्रह्म परमात्माकी अङ्गना कहा है. किन्तु नश्वर जगतके लोग स्वयंको ऐसी दिव्य ब्रह्मात्मा होनेका दावा करते हैं. इनकी विवेक और बुद्धिको तो देखो.

महंमद नूर हक का, यों गिरो महमद का नूर ।
जिन किया दावा इनका, सो रहे दूर से दूर ॥ ११९

श्री श्यामाजी श्री राजजीके ही चिन्मय स्वरूपकी अङ्गभूता हैं एवं ब्रह्मात्माएँ श्री श्यामाजीकी तेजरूपा हैं. जगतके जिन जीवोंने स्वयंको ब्रह्मात्मा होनेका दावा किया है वास्तवमें वे सत्यसे अति दूर रहे हैं.

ताथें जो कछु कह्या मुसाफ में, सो सब आखरी सिफत ।
सो क्यों बूझे दिल मजाजी, जिनों पाई न हक मारफत ॥ १२०

इसलिए कुरानमें जो कुछ भी कहा है वह सब अन्तिम समयकी विशेषताके

लिए है किन्तु जिनका हृदय ही झूठ और कपटसे भरा हुआ है और जिनको परब्रह्मकी पूर्ण पहचान नहीं है, ऐसे लोग इस रहस्यको कैसे समझ सकते हैं ?

जोलों ले ऊपर का माएना, तोलों छोड ना सके फना ।
हक हादी पाए बिना, दुनी उड जात ज्यों सुपना ॥ १२१

जब तक ये लोग धर्मग्रन्थोंका मात्र बाह्यार्थ ग्रहण करते रहेंगे तब तक जगतकी नश्वरताको नहीं छोड़ सकेंगे. वस्तुतः पूर्णब्रह्म परमात्मा एवं उनकी अङ्गभूता श्री श्यामाजीकी पहचान हुए बिना नश्वर जगतके जीव स्वप्नकी भाँति मिटनेवाले कहलाते हैं.

महामत कहे मोमिनों पर, वरसत बदली नूर ।
हक बका अरस अजीम, पट खोल लिए हजूर ॥ १२२

महामति कहते हैं, ब्रह्मात्माओं पर परब्रह्म परमात्माकी अपार कृपाकी वर्षा हो रही है. उन्होंने ही पारके द्वार खोलकर उनको अपने चरणोंमें ले लिया है.

बाब तीनों गिरोंके फैल हाल मकान

जोलों पट न खोल्या बका का, तोलों फना दुनी बीच रात ।
मारफत दिल महंमद, करे दिन देखाए हक जात ॥ १

जब तक अखण्ड परमधामके द्वार नहीं खुले तब तक नश्वर जगतके जीव अज्ञानरूपी अन्धकारमें ही भटकते रहे. अन्तिम मुहम्मदके रूपमें प्रकट हुए सद्गुरुका हृदय ब्रह्मज्ञानसे आलोकित होनेसे उन्होंने ब्रह्मात्माओंके साथ अवतरित होकर कयामतका दिन प्रकट किया.

पेहेलें सरत करी महंमदें, हक हम आवेंगे आखर ।
द्वार खोलें तब हक बका, करें दिन सिफायत फजर ॥ २

कुरानमें उल्लेख है कि परब्रह्म परमात्माने पहलेसे ही रसूल मुहम्मदको यह वचन दिया था कि आत्मजागृतिके समयमें मैं इस जगतमें आऊँगा और अखण्डके द्वार खोलकर ज्ञानका प्रभात करूँगा.

तबहीं दुनी पाक होएसी, तबहीं होसी एक दीन ।
जब मुआ सबों का सैतान, तब आया सबों यकीन ॥ ३

तभी यह दुनियाँ पवित्र होगी और तभी समस्त जगतमें एक धर्म (श्री कृष्ण प्रणामी धर्म) स्थापित होगा जब सभीके हृदयसे दुष्टता मिट जाएगी. तब सभीको एक परमात्माके प्रति विश्वास होगा.

इत इमाम करें इमामत, हक बका सूरत देखाए ।
करें मोमिन मोमिनात सेजदा, कराए इसकें खुदी उडाए ॥ ४

इसी अन्तिम समयमें परब्रह्म परमात्माके स्वरूपकी पहचान करवा कर इमाम महदी धर्मका नेतृत्त्व करेंगे. वे परब्रह्मका प्रेम प्रदान कर सभीके हृदयके अहङ्कारको मिटाएँगे एवं ब्रह्मात्माओंको परमात्माके चरणोंमें नमन कराएँगे.

देखा देखी का सेजदा, किया होवे जिन ।
कह्या हाड पीठ का सींग ज्यों, पीठ नरम न होवे तिन ॥ ५

जिन्होंने मात्र देखादेखीमें परमात्माको नमन किया है उनकी पीठकी हड्डियाँ पशुओंके सींगकी भाँति कठोर हो जाएँगी. पीठ नरम न होनेसे वे नमन नहीं कर पाएँगे.

कह्या चमडी टूटे पीठकी, सिर ना नीचा होए ।
कही सेर छाती मुरग गरदन, ए पीठ हाड चमडी तोडत दोए ॥ ६

कुरानमें यह भी कहा है कि उनकी पीठकी चमड़ी भले फट जाए किन्तु वे सिर नहीं झुका सकेंगे. उनकी छाती सिंहके समान कठोर तथा गर्दन मुर्गेके समान अहङ्कारयुक्त होगी जिसके कारण उनके पीठ पर हड्डी तथा चमडी दोनों ही टूटने लगेगी (वे किसी भी प्रकार नमन नहीं कर सकेंगे).

हक इलमें पट खोल के, सबकों चिन्हाए करे दिन ।
अरसों भिस्तों हद अपनी, करें कयामत उठाए बका तन ॥ ७

ऐसी स्थितिमें इमाम महदी प्रकट होकर ब्रह्मज्ञानके द्वारा पारके द्वार खोल कर सबको परब्रह्म परमात्माकी पहचान करवाएँगे एवं कयामतका दिन प्रकट करेंगे. नश्वर जगतके जीवोंको उनके कर्मानुसार अखण्डमुक्ति स्थलोंमें स्थान दिलाकर ब्रह्मात्माओंको परमधाममें जागृत करेंगे.

लिख्या बीच कुरान के, हक करें आप जो चाहे ।
दई पातसाही बनी इस्माईल को, लई बनी असराईल से छिनाए ॥ ८

कुरानमें यह भी उल्लेख है कि परमात्मा जो चाहे वह कर सकते हैं. उन्होंने इब्राहीमके छोटे पुत्र इसहाकके पुत्र याकूब, जो इस्त्राईलके नामसे प्रसिद्ध थे, से साम्राज्य छीन कर उनके बड़े बेटे इस्माईलके पुत्रको प्रदान किया.

[तात्पर्य यह है कि श्री देवचन्द्रजीका सम्पूर्ण उत्तराधिकार श्री प्राणनाथजीको प्राप्त था. श्री प्राणनाथजीने चाकला मन्दिरकी बाह्यगादीकी शोभा श्री विहारीजीको प्रदान की.]

और लिख्या हदीसों आयतों, ले माएने मुसाफ बातन ।
सोई होसी हक नजीकी, जो दिल मोमिन अरस तन ॥ ९

कुरानकी आयतों तथा हदीसोंमें और भी लिखा है जिन ब्रह्मात्माओंके हृदयको परमधामकी संज्ञा दी है एवं जिनके मूल तन परमधाममें हैं वे ही परमात्माके निकट माने जाएँगे एवं कुरानके गूढ़ रहस्योंको समझेंगे.

जेता कोई हक अरस दिल, सो कहे मरद मोमन ।
सो देखो हक इलम से, खोल रूह नजर बातन ॥ १०

जिनके हृदयको परमात्माने अपना धाम बनाया है वे ब्रह्मात्माएँ समर्थ कही गईं हैं.ब्रह्मज्ञानसे अपनी आत्मदृष्टिको खोल कर इस रहस्यको समझो.

रूहें हजूर लई पट खोल के, बीच अरस बका वतन ।
याद हादी सोई देत हैं, जो कहें हकें सुकन ॥ ११

स्वयं परमात्माने सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर ब्रह्मज्ञानके द्वारा पारके द्वार खोलकर इन ब्रह्मात्माओंको दिव्य परमधाममें अपने चरणोंमें ले लिया है. इस प्रकार परमात्माने अपने आगमनके लिए जो वचन दिए थे उन्हीं वचनोंको सद्गुरु याद दिला रहे हैं.

कहे अव्वल उतरते रूहों को, रद बदल है जेह ।
सो लिखी हदीसों आयतों, सूरतें देत साहेदियां एह ॥ १२

इस जगतमें अवतरणके समय परमात्माके साथ ब्रह्मात्माओंकी जो परिचर्चाएँ

हुई हैं वे कुरानकी आयतों तथा हदीसोंमें लिखीं हैं. उन्हींकी साक्षी ये सूरतें (प्रकरण) दे रहीं हैं.

खोल्या नूर पार इमामें, अरस अजीम बका द्वार ।
कराया सेजदा हजूर, इसक पूरा दे प्यार ॥ १३

अन्तिम समयमें प्रकट हुए सद्गुरु (इमाम) ने अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधामके द्वार खोल दिए एवं ब्रह्मात्माओंको पूर्ण प्रेम प्रदान कर परमात्माके समक्ष नमन करवाया.

हक हजूर रूहों ने, लै सेजदे बडी लजत ।
किया रूहों हैयाती सेजदा, ए आखरी इमामत ॥ १४

ब्रह्मात्माओंने परमात्माको नमन कर उनके सान्निध्यमें अपार सुख प्राप्त किया. इस प्रकार अन्तिम इमामने ब्रह्मात्माओंको अखण्ड परमधामके प्रति नमन करवाकर अपना नेतृत्त्व सिद्ध किया.

देखो साहेदी हदीसों आयतों, उन्तीसमें सिपारे ।
उमतें किया सेजदा, खोल अरस बका द्वारे ॥ १५

कुरानके उनतीसवें सिपारेकी आयतों तथा अन्य हदीसोंमें इस बातकी साक्षी है. वहाँ पर इस प्रकार उल्लेख है, ब्रह्मात्माओंने अखण्ड परमधामके द्वार खोलकर परमात्माके चरणोंमें नमन किया.

कहूं हुकमे साहेदी, जो हकें फुरमाई ।
सो देखो आयतों हदीसों, ज्यों दिल होवे रोसनाई ॥ १६

परब्रह्म परमात्माके आदेशसे ही मैं यह साक्षी दे रहा हूँ. तुम उन आयतों एवं हदीसोंको देखो जिससे तुम्हारे हृदयमें ज्ञानका प्रकाश छा जाए.

सेजदा कराया इमामें, ऊपर हक कदम ।
ए आसिक रूहों सेजदा, करें खासल खास दम दम ॥ १७

इस प्रकार सद्गुरुने प्रकट होकर आत्माओंको परमात्माके चरणोंमें नमन

करवाया. ये सर्वश्रेष्ठ आत्मा परब्रह्म परमात्माकी अनुरागिणी हैं. इसलिए वे प्रतिपल उनके चरणोंमें नमन करती रहतीं हैं.

एते दिन अरस अजीम का, किन कह्या न एक हरफ ।
अबलों चौदे तबक में, पाई न काहूं तरफ ॥ १८

आज तक किसीने दिव्य परमधामके सन्दर्भमें एक वाक्य मात्रका भी उच्चारण नहीं किया. इसलिए इन चौदह लोक ब्रह्माण्डमें आज तक किसीको भी परमधामकी दिशा प्राप्त नहीं हुई.

ए हरफ सो केहेवहीं, जो रूह बका की होए ।
नूर बूंदें महंमद की, और क्यों कर लेवें कोए ॥ १९

जो आत्माएँ अखण्ड परमधामकी होंगी वे ही वहाँकी चर्चा करेंगी. ये ब्रह्मात्माएँ श्री श्यामाजीके अङ्गकी तेजरूपा हैं इसलिए इनके अतिरिक्त अन्य कौन अखण्डका ज्ञान प्राप्त कर सकता है.

देखो दिल विचार के, हदीसें कुरान ।
दिल हकीकी अरस तन बिना, होए नहीं पेहेचान ॥ २०

कुरान तथा हदीसोंके इन प्रसङ्गों पर हृदयपूर्वक विचार कर देखो. जिनका हृदय ही परमधाम है तथा जिनके मूल तन परमधाममें हैं ऐसी ब्रह्मात्माओंके बिना अन्य किसीको भी इसकी पहचान नहीं हो सकती है.

लिख्या सबों किताबों, हद ऊपर सुकन ।
ए जाने सब अरस दिल, जो लुदंनिएं किए रोसन ॥ २१

सभी धर्मग्रन्थोंमें नश्वर जगतसे परेकी बातें लिखीं हैं. किन्तु धामहृदया ब्रह्मामात्माएँ ही उन रहस्योंको समझ सकतीं हैं क्योंकि उनके हृदयको तारतम ज्ञानने प्रकाशित किया है.

तीन ठौर गिरो तीन के, बेवरा देखो दिल ल्याए ।
एक आम दूजे नूरी फिरस्ते, गिरो जित महंमद पोहोंचे जाए ॥ २२

धर्मशास्त्रोंमें तीन प्रकारकी सृष्टि तथा उनके मूल तीन स्थानोंका विवरण दिया है. उसे हृदयपूर्वक विचार करो. उनमें एक जीवसृष्टि है, दूसरी ईश्वरीसृष्टि

तथा तीसरी ब्रह्मसृष्टि है. यही ब्रह्मसृष्टिका समुदाय परमधाममें रहता है, जहाँ रसूल मुहम्मदकी सुरता पहुँची थी.

सरीयत तरीकत हकीकत, और हक मारफत ।
इन चारों की बिने इसलाम, जुदी जुदी कही जुगत ॥ २३

कुरानमें शरीअत, तरीकत, हकीकत एवं मारफत इस प्रकार ज्ञानके चार सोपान कहे गए हैं. इस्लाम धर्ममें इन चारोंके लिए अलग-अलग नियम तथा रीति बतलाई गई है.

इन चारों की बिने इसलाम, जोलों हादी न देवें बताए ।
तब लग अपने मकान कों, क्यों कर पोहोंचें जाए ॥ २४

इस्लाम धर्ममें वर्णित इन चारोंके भिन्न-भिन्न नियमोंका रहस्य जब तक सद्गुरु स्पष्ट नहीं करेंगे तब तक ये तीनों सृष्टियाँ अपने-अपने मूल स्थानमें कैसे पहुँच सकतीं हैं ?

सरीयत बीच रात के, अमल चलाया नेक ।
मुसरक होने ना दिया, हक कह्या एक का एक ॥ २५

रसूल मुहम्मदने प्रकट होकर अज्ञानमयी रात्रिमें कर्मकाण्ड (शराअ) का मार्ग प्रशस्त किया और लोगोंको एक परमात्माकी बात कहकर अनेक देवी-देवताओंकी उपासना करनेसे रोका.

पांच बिने इसलाम की, दुनी सिर करी फरज ।
दिल मजाजी यों जानत, हम देत पीछला करज ॥ २६

उन्होंने दुनियाँको कर्तव्य पालन करवानेके लिए धर्मके पाँच नियम बताए किन्तु भ्रमित हृदय वाले (दिल मजाजी) लोग इन नियमोंका पालन कर हम पूर्वका ऋण चुका रहे हैं ऐसा समझते हैं.

किन किन लई तरीकत, पर कोई जाए न सक्या बीच दिन ।
ना खुले हकीकत मारफत, तो क्यों पावे फजर रोसन ॥ २७

ऐसे लोगोंमें-से किसी-किसीने उपासनाका मार्ग ग्रहण किया. किन्तु वे भी ज्ञानके प्रकाश (दिन) तक नहीं पहुँच सके. जब तक कुरानके गूढ़ रहस्य

स्पष्ट हो कर परमात्माकी पहचान नहीं हो जातीं तब तक वे ब्रह्मज्ञानके प्रभातका प्रकाश कैसे देख सकते ?

सरीयत बिने इसलाम की, पाक करे वजूद ।
तरीकत पोहोंचावे मलकूत लों, आगे होए न बका मकसूद ॥ २८

इस्लाममें कहे गए कर्मकाण्डके नियम शारीरिक शुद्धिके लिए हैं. वहाँ पर निर्दिष्ट उपासनाके द्वारा वैकुण्ठकी प्राप्ति हो सकती है किन्तु इससे आगे अखण्डकी प्राप्ति निश्चय ही नहीं हो सकती.

बिने इसलाम हकीकत, सो खोले बातून रूह नजर ।
पोहोंचे बका नूर मकान, खास गिरो फिरस्तों फजर ॥ २९

इस्लाममें यथार्थ ज्ञानके लिए जो कुछ कहा गया है उसीसे आत्माकी अन्तर्दृष्टि खुल जाती है. इससे अखण्ड अक्षर धाम तक पहुँचा जा सकता है जहाँ पर ज्ञानके प्रभात होने पर ईश्वरीसृष्टिका समुदाय पहुँच सकता है.

इसलाम बिने हक मारफत, पोहोंचावे तजल्ला नूर ।
ए मकान आसिक रूहों का, गिरो खासलखास हजूर ॥ ३०

इसी प्रकार पूर्ण पहचानके सम्बन्धमें जो कुछ कहा गया है वह ब्रह्मज्ञान अखण्ड परमधाममें पहुँचाता है. यह धाम अनुरागिणी आत्माओंका है. ये सर्वश्रेष्ठ आत्माएँ पूर्णब्रह्म परमात्माके चरणोंमें रहतीं हैं.

इत इसक बिना पोहोंचे नहीं, बिना हक हादी निसबत ।
इलम लुदंनी फुरमाए से, पोहोंचे अरस बका खिलवत ॥ ३१

इस दिव्य परमधाममें प्रेमके बिना तथा श्री राजजी एवं श्री श्यामाजीके सम्बन्धके बिना पहुँचा नहीं जा सकता. ब्रह्मात्माएँ दिव्य तारतम ज्ञान प्राप्त कर दिव्य परमधामके एकान्तस्थल मूलमिलावामें जागृत होतीं (पहुँचतीं) हैं.

मोमिन मुसलिम मुनाफक, बिना ईमान सोई हैवान ।
ए आखर हिदायत हादी बिना, पोहोंचे न अपने मकान ॥ ३२

इस प्रकार ब्रह्मसृष्टि (मोमिन), ईश्वरीसृष्टि (मुस्लिम) तथा जीवसृष्टि

(मुनाफक) की स्थितिका वर्णन हुआ है. परमात्माके प्रति विश्वासके बिना उनका जीवन पशुतुल्य कहा गया है. ये सभी सृष्टियाँ अन्तिम समयमें प्रकट हुए सद्गुरुके उपदेशोंके बिना अपने-अपने स्थानोंमें नहीं पहुँच सकतीं हैं.

खासलखास गिरो रूहें, अरस अजीम सूरत हक ।
और गिरो खास फिरस्तों, रहें नूर मकान बुजरक ॥ ३३

इनमें ब्रह्मात्माओंका समुदाय सर्वश्रेष्ठ कहा गया है. वे पूर्णब्रह्म परमात्माकी अङ्गभूता हैं एवं परमधाममें रहतीं हैं. इसी प्रकार दूसरा श्रेष्ठ समुदाय ईश्वरीसृष्टियोंका है वे भी श्रेष्ठ अक्षरधाममें रहतीं हैं.

कुंन केहेते पैदा हुई, ए जो खलक आम ।
जो कही जुलमत से, तीसरी दुनी तमाम ॥ ३४

किन्तु जो तीसरी जीवसृष्टि है वह खुदाके द्वारा 'हो जा' (कुन) कहने मात्रसे उत्पन्न हुई है. इस सृष्टिको निराकारसे उत्पन्न कहा गया है. यह सम्पूर्ण दुनियाँ इसी सृष्टिके अन्तर्गत है.

जेता पैदा जुलमत से, ए जो मजाजी दिल ।
सो दिल हकीकी मोमिन मिने, कबहूं ना सके मिल ॥ ३५

निराकारसे उत्पन्न जितनी जीवसृष्टि हैं उनका हृदय मोहग्रस्त है. वे सत्यनिष्ठ ब्रह्मात्माओंके साथ कभी भी नहीं मिल सकतीं हैं.

सिपारे इकईसमें, लिख्या जाहेर बंदगी बयान ।
पर हादी देखाएं देखिए, मोमिन करें पेहेचान ॥ ३६

कुरानके इक्कीसवें सिपारेंमें इस प्रकारकी उपासनाओंका उल्लेख है. किन्तु सद्गुरुके मार्गदर्शन पर ही ब्रह्मात्माएँ इस रहस्यको समझ सकतीं हैं.

राह रूहांनी बिने बातून, न पाइए बिना हकीकत ।
सो हादी देखाएं देखिए, गुझ साहेदी बका मारफत ॥ ३७

सद्गुरुके यथार्थ ज्ञानके बिना धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्य एवं आत्माओंके प्रेममार्गकी जानकारी नहीं हो सकती है. इसलिए ब्रह्मात्माएँ भी सद्गुरुके

मार्गदर्शन प्राप्त करने पर ही अखण्ड परमधामके गूढ़ रहस्योंको समझ सकतीं हैं.

कही निमाज करे छे विध की, दो सरीयत एक तरीकत ।
आगूं एक हकीकत, दोए बका मारफत ॥ ३८

कुरानमें छः प्रकारकी नमाजका वर्णन है. उनमें दो प्रकारकी नमाजकी विधि कर्मकाण्डके नियमोंमें बद्ध है. एक विधि उपासना (तरीकत) की है एवं एक विधि यथार्थ ज्ञान(हकीकत) की है. इससे आगे दो विधियाँ आत्मिक अनुभूति (मारिफत)के लिए कही गईं हैं.

तिन तीन निमाजका बेवरा, एक कही नफसानी ।
दूजी पाक करत है, वजूद जिसमानी ॥ ३९

नमाजककी इन विधियोंमें प्रथम तीन प्रकारकी विधियोंका निरूपण इस प्रकार है. उनमें एक इन्द्रियोंके संयमसे और दूसरी शारीरिक पवित्रतासे सम्बन्धित है.

दिल बंदगी तरीकत तीसरी, मलकूत पोहोंचे पाक होए ।
दिल मजाजी जुलमत लों, आप अकल न छोडें कोए ॥ ४०

तीसरी नमाजका सम्बन्ध अन्तःकरणसे है. जिसको पवित्र बनाकर वैकुण्ठ पहुँचा जा सकता है. मोहग्रस्त जीव शून्य-निराकार पर्यन्त पहुँचते हैं. इसी प्रकार कोई भी अपनी-अपनी बुद्धिकी सीमाको छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकते.

अब बेबरा तीन निमाजका, खोलें भेद की हकीकत ।
करत निमाज जबरूत में, बीच बका फिरस्ते पोहोंचत ॥ ४१

अब शेष तीन नमाजकी विधिका यथार्थ निरूपण करते हैं. यथार्थ ज्ञानयुक्त इस विधिको अङ्गीकार करनेवाली आत्माएँ (ईश्वरीसृष्टि) अखण्ड धाम (अक्षरधाम) में पहुँचतीं हैं.

बंदगी रूहानी और छिपी, जो कही साहेदी हजूर ।
ए दोऊ बंदगी मारफत की, बीच तजल्ला नूर ॥ ४२

आत्मभावसे तथा गुप्तभावसे की जानेवाली उपासना परब्रह्म परमात्माके

सान्निध्यकी कही जाती है. ये दोनों प्रकारकी उपासना आत्म-अनुभव अथवा परमधामकी पूर्ण पहचानकी है.

ए आसिक रूहें गिरो रबानी, बीच नूर तजल्ला माहें ।
दै साहेदी महंमदें म्याराजमें, जो हकें केहेलाई मसी जुबांएं ॥ ४३

परब्रह्म परमात्माकी अनुरागिणी आत्माएँ दिव्य परमधाममें रहतीं हैं. उनकी ही यह उपासना है. रसूल मुहम्मदने मेयराजनामामें इसकी साक्षी दी है. तारतम ज्ञान देकर श्री राजजीने श्री श्यामाजीसे भी इसकी साक्षी दिलवाई है.

एही कुंजी कलाम हक इलम, खोले सब मगज किताब ।
आगूं अरस दिल मोमिनों, सो खोले जिन हादी खिताब ॥ ४४

ब्रह्मज्ञान-तारतम ज्ञान ही कुरान आदि धर्मग्रन्थोंके रहस्योंको स्पष्ट करनेवाली कुञ्जी है. जिनको सद्गुरुकी शोभा प्राप्त हुई है ऐसे श्री देवचन्द्रजी महाराजने ब्रह्मात्माओंके समक्ष इन रहस्योंको स्पष्ट किया है.

कहे हदीस निमाज का, भेद न पाया किन ।
हादी तीन सूरत आए बिना, काहूं खोली नहीं बातन ॥ ४५

हदीस ग्रन्थोंमें वर्णित उक्त नमाजके प्रकारोंका रहस्य आज तक कोई भी समझ नहीं पाया. रसूल मुहम्मद निर्दिष्ट तीनों स्वरूपोंसे समन्वित सद्गुरुके आगमनके बिना किसीने भी इस रहस्यको स्पष्ट नहीं किया.

अग्यारैं सदी दस साल कम, तोलों खोल्या न पट कुरान ।
पाक बिना मत छूइयो, ए दिल दे करो बयान ॥ ४६

ग्यारहवीं सदी पूर्ण होनेसे दस साल पूर्व तक कुरानके रहस्य स्पष्ट नहीं हुए थे. कुरानमें कहा गया है कि पवित्र हुए बिना मुझे मत छूना. इस रहस्य पर हृदय पूर्वक विचार करो.

सिपारे सताईसमें, लिख्या बीच फुरमान ।
पाक बिना मत छूइयो, यों कहे हजरत कुरान ॥ ४७

इसी प्रकार कुरानके सत्ताईसवें सिपारेमें भी लिखा है कि पवित्र हुए बिना मुझे मत छूना.

अब लग दुनी यों जानिया, माएने न पाए किनने ।
तो बोले जुदे जुदे आरफ, जो सक है सबोंमें ॥ ४८

आज तक जगतके लोगोंने कुरानके बाह्यार्थको ही समझा था कोई भी इसके गूढ़ रहस्योंको समझ नहीं पाया. इसलिए विद्वानोंने अपने-अपने मत प्रकट किए. क्योंकि इस सन्दर्भमें सभीके अन्दर सन्देह बना रहा.

और किए मुहककों माएने, जुदे जुदे दिल ल्याए ।
तिन सबों से तेहेकीक, माएने गुझ क्यों समझाए ॥ ४९

खोज करनेवाले लोगोंने भी अपनी-अपनी भावनाके अनुरूप इस प्रसङ्गका अर्थ किया है. इसलिए उन सभीके विचारोंसे कुरानका निश्चयात्मक अर्थ कैसे स्पष्ट हो सकता था !

कह्या याही के तरजुमें, जो दिल घसे न छाती से ।
अब लों छिपा मता ए तो रह्या, जो जाहेर न किया किनने ॥ ५०

इसी प्रसङ्गका अर्थ करते हुए कुछ विद्वानोंने कहा, जब तक छातीको घसकर हृदयसे न लगाया जाए (पूर्ण परिश्रम न किया जाए) तब कुछ नहीं होगा. तथापि आज तक यह रहस्य रहस्य ही बना रहा है. किसीने भी इसे प्रकट करनेका प्रयास नहीं किया.

तब से परदा मोंह पर, रह्या हजरत मुसाफ के ।
सो सदी अग्यारहीं लग, किन दीदार न पाया ए ॥ ५१

इसीलिए लिखा है कि ग्यारहवीं सदी तक कुरानके मुख पर परदा पडा रहा. यही कारण है कि ग्यारहवीं शताब्दी तक किसीने भी इन गूढ़ रहस्योंको आत्मसात् नहीं किया.

पाक न होए पानी खाक से, और इलाज न पाकी कोए ।
बिन पाक न हुकम छूए का, एक पाक हक से होए ॥ ५२

नश्वर जगतके पानी एवं मिट्टीसे हृदय पवित्र नहीं हो सकता और इसके लिए अन्य कोई उपाय भी नहीं है. पवित्र हुए बिना कुरानको छूनेका आदेश नहीं है. वस्तुतः परब्रह्म द्वारा प्रदत्त ज्ञानसे ही पवित्रता आ सकती है.

कह्या मुसाफ नजीक हक के, सो हक नजीक खोलाए ।
नापाक इत आए ना सके, ए इन पाकी खोल्या जाए ॥ ५३

कुरानके ज्ञानको परमात्माके निकट पहुँचानेवाला कहा गया है. इसलिए इसके रहस्यको भी परमात्माके निकट रहनेवाली ब्रह्मात्माएँ ही स्पष्ट कर सकतीं हैं. अपवित्र (शङ्कित) हृदयवाला व्यक्ति यहाँ तक पहुँच नहीं सकता. इसलिए पवित्र आत्माओंसे ही यह स्पष्ट होता है.

हादी मोमिनों बीचमें, पाइए हक इसक ईमान ।
ए पाकी हैं मोमिनों, होए खाली सोर जहान ॥ ५४

श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंमें परब्रह्म परमात्माका ज्ञान एवं प्रेम है. इसलिए इन ब्रह्मात्माओंको पवित्र कहा गया है. शेष सभी जीव मात्र शोर मचानेवाले प्रेम एवं ज्ञान विहीन कहे गए हैं.

पेहेला दीदार होए मोमिनों, बीच आखरी पैगंमर ।
ए मुसाफ कह्या आखरी, देवे दीदार आखर ॥ ५५

कुरानमें कहा है, आत्मजागृतिके समयमें सर्वप्रथम ब्रह्मात्माओंको ही सद्गुरु (अन्तिम पैगम्बर) का ज्ञान प्राप्त होगा. तत्पश्चात् समस्त जगतके लोग यह ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे.

बखत महंमद के उठने, और आवें असहाब ।
तब सो खोलें मुसाफ कों, पोहोंचे लग कोसे नकाब ॥ ५६

सद्गरु श्री देवचन्द्रजी महाराजके आगमनके समय रसूल मुहम्मदके पुनः आगमन होने पर श्री श्यामजीकी अङ्गभूता ब्रह्मात्माएँ भी अवतरित होंगी. तब वे परदेके निकट पहुँच कर (उसे दूरकर) कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेंगी. इसीको कुरानसे परदा उठाना कहा गया है.

ए पट खोल करें जाहेर, तब हुई तौहीद मदत ।
दिल पाक करो इन आबसों, मुसाफ तब मोंह देखावत ॥ ५७

जब कुरान पर पड़े आवरणोंको दूर कर उसके रहस्योंको स्पष्ट करेंगे तब

उन ब्रह्मात्माओंको अद्वैत स्वरूप परब्रह्म परमात्माकी कृपाका अनुभव होगा. जब इस दिव्य ज्ञान एवं प्रेमरूपी जलसे अपने हृदयको पवित्र करोगे तभी कुरान अपना मुख दिखाएगा अर्थात् तभी उसका रहस्य स्पष्ट होगा.

कह्या हक सेहेरग से नजीक, हक अरस मोमिन दिल ।
ना ऊपर तले दाएं बाएं, ए बतावें मुरसद कामिल ॥ ५८

कुरानमें परमात्माके लिए कहा गया है कि वे प्राणनलीसे भी अति निकट हैं. वे स्वयं ब्रह्मात्माओंके हृदयमें हैं इसलिए उन्हें निकट कहा गया है. कुरानको पढ़नेवाले कहते हैं कि परमात्मा ऊपर, नीचे, दायेंसे बायें कही भी नहीं हैं. इसका तात्पर्य है कि वे ब्रह्मात्माओंके हृदयमें हैं.

जब पट अपने मोंह से, किया मुसाफें दूर ।
तब नूर बका जाहेर हुआ, और तजल्ला नूर ॥ ५९

जब कुरानके मुखसे परदा उठ गया तब अखण्ड परमधाम एवं परब्रह्म परमात्माकी पहचान हुई.

जब मोंह मुसाफें खोलिया, तब पट न आडे हक ।
तब दीदार पावें दुनियां, जब हक इलमें हुई बेसक ॥ ६०

जब कुरानके रहस्य स्पष्ट हो गए तब परब्रह्म परमात्माकी अनुभूतिका व्यवधान भी हट गया. तब ब्रह्मज्ञान (तारतम ज्ञान)से नश्वर जगतके जीव भी सन्देह रहित हो गए और परब्रह्म परमात्माके दर्शन करने लगे.

दुनी तरफ न पावें हक की, और मुसाफ हुआ पास हक ।
हक मुसाफ आडे ए पट, सो पट उडे देखे खलक ॥ ६१

नश्वर जगतके जीवोंको परमात्माकी दिशाकी सुधि नहीं है. जबकि कुरान परमात्माके निकटका ज्ञान करवाता है. इसलिए परब्रह्म परमात्मा तथा कुरानके बीच अज्ञानका ही आवरण व्यवधानरूप बना रहा. जब तारतम ज्ञानके द्वारा यह आवरण दूर हो गया तब जगतके सभी लोग परमात्माके दर्शन करने लगे.

हक नजीक सेहेरग से, पर तरफ न पावे कोए ।
ढूंढ्या अव्वल से अब लग, पर किन बका न रोसन होए ॥ ६२

परमात्माको प्राणनलीसे भी निकट कहा गया किन्तु कोई भी उनकी दिशा तकको नहीं जान सका. सृष्टिके आरम्भसे लेकर आज तक सभी लोग खोजते ही रहे किन्तु किसीको भी अखण्डकी पहचान नहीं हुई.

सब सय फना कही, क्यों बका कह्या ढिग तिन ।
जिमी बका अरस ढिग फना, ए सकसुभे रही सबन ॥ ६३

इस स्वप्नवत् जगतकी सभी वस्तुएँ नश्वर कही गई हैं. इसलिए परमात्माको नश्वर तनके निकट कैसे कहा जा सकता है ? परमधामकी सम्पूर्ण भूमि अखण्ड है वह नश्वर शरीरके निकट कैसे हो सकती है सभीको यह संशय बना रहा.

ए मुरसद कामिल बिना, और न काहूं खोलाए ।
अब हादीएं ए पट तो खोल्या, जो गिरो सरतें पोहोंची आए ॥ ६४

समर्थ सद्गुरुके बिना इन रहस्योंको कोई भी स्पष्ट नहीं कर सकता है. सद्गुरुने यह आवरण इसीलिए दूर कर दिया कि ब्रह्मात्माओंका समुदाय निश्चित समय पर अवतरित हो गया है.

मुसाफ उठ्या तो उत से, जो बिकर रही फुरकान ।
याके वारस मसी मोमिन, जो कहे एहेल फुरमान ॥ ६५

मक्कामें अराजकता फैलने पर जिब्रील फरिश्ता वहाँसे कुरानकी पुस्तकको उठाकर इसलिए भारतवर्ष ले आया कि वह कुँआरी रह गई थी. श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंने ही इसके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट किया है इसलिए इनको इसके उत्तराधिकारी कहा गया है.

[कुरानका गूढ़ रहस्य स्पष्ट न होनेके कारण आज तक वह पुस्तक कुँआरी रह गई थी. श्री प्राणनाथजीने उसके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर उसे आसमानी दुलहन बना दिया.]

तो जुदे जुदे कहे जंजीरों, देखो दाखले मिलाए ।
पेहेचान जंजीर जंजीरों, ज्यों दिल पाक होवे ताए ॥ ६६

इसीलिए यह प्रसङ्ग कुरानमें विभिन्न आयतोंमें लिखा गया है. उनकी एक-एक कड़ीको मिलाकर इसे देखो. उनकी एक-एक कड़ियोंको पहचानने पर हृदय पवित्र हो जाता है.

मुईनुदीन ने भेजी हदीसें, देने मुरीद यकीन ।
तालिब होए सो देखियो, करी जाहेर कुतब दीन ॥ ६७

कुरानमें उल्लेख है कि मोइनुद्दीन चिस्तीने अपने शिष्यको विश्वास दिलाने हेतु कुछ हदीसें लिख कर भेजी. जिससे कुतुबुद्दीन शासकने समझा और उसे प्रकट भी किया. जो इस सत्यताको जाननेके इच्छुक हो वे इन हदीसोंको देख सकते हैं.

कह्या हदीस में रसूलें, स्वाल किया उमर ।
सरा तरीकत हकीकत, तीनों की देओ खबर ॥ ६८

हदीसोंमें ऐसा उल्लेख है कि रसूल मुहम्मदसे एक बार खलिफा उम्मरने पूछा, शरीयत, तरीकत एवं हकीकत इन तीनोंसे आपका क्या अभिप्राय है ? इसे समझाएँ.

पांच बिने कही तीनों की, जाहेर किए बयान ।
निसां होए तालिब की, देखो अरस दिल पेहेचान ॥ ६९

तब रसूल मुहम्मदने इन तीनोंके लिए स्पष्ट रूपसे पाँच नियम बताए. इनकी जानकारीके इच्छुक व्यक्ति विचार करें, धामहृदया आत्माओंको इनकी पहचान है.

कह्या उठें पैगंमर असहाब, एही आखरी किताब ।
खोलें बीच आखरी उमत, जिन सिर आखरी खिताब ॥ ७०

कुरानमें यह भी कहा है कि अन्तिम समयमें सभी पैगम्बर तथा उनके अनुयायी जागृत होंगे. उस समय इमाम महेदी, जिनको अन्तिम समयके धर्मगुरुकी शोभा प्राप्त है, अपनी ब्रह्मात्माओंके समुदायके समक्ष कतेब

ग्रन्थोंमें अन्तिम ग्रन्थ कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेंगे.

नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी दिन ।
रात गुमराही कुफर मेटके, करे चौदे तबक रोसन ॥ ७१

श्री राजजीके दिव्य तेजरूपी सागरसे उदय हुआ यह ब्रह्मज्ञानका सूर्य सभीके हृदयको प्रकाशित करेगा और सभीके हृदयसे अज्ञानरूप अन्धकारको मिटाकर चौदह लोकोंमें ज्ञानका प्रकाश फैलाएगा.

हक मारफत दिन होएसी, दिल महंमद सूर नूर ।
हक बका अरस जाहेर किए, मिटी हवा तारीक देख जहूर ॥ ७२

तब अन्तिम समयके धर्मगुरुके हृदयरूपी सागरसे उदय हुए सूर्यके समान प्रकाशमय तारतम ज्ञानसे ब्रह्मज्ञानरूपी दिनका उदय होगा. इससे परब्रह्म परमात्मा एवं अखण्ड परमधामकी पहचान होगी तथा इस ब्रह्मज्ञानके प्रकाशको देखते ही अज्ञानरूपी अन्धकार मिट जाएगा.

तो कलाम अल्ला की आएतें, और हदीसें महंमद ।
ए मोमिन देखें दिल अरस में, ले मुसाफ मगज साहेद ॥ ७३

तब ब्रह्मात्माएँ कुरानकी आयतें तथा हदीसोंके रहस्यको अपने धामहृदयमें साक्षीरूपमें ग्रहण करेंगी.

कहूं बेवरा आदम औलाद, तिनमें कही विध तीन ।
सोई समझे हक इलमें, जिनमें इसक यकीन ॥ ७४

अब मैं आदमके वंशजोंका निरूपण करता हूँ. वे तीन प्रकारके हैं. जिनके हृदयमें प्रेम और विश्वास परिपूर्ण होगा वे ही तारतम ज्ञानके द्वारा इस रहस्यको समझेंगे.

कही एक गिरो पैदा जुलमत से, तिन के फैल हाल जुलमत ।
सो दुनी बिन कछु न देखहीं, दुसमन दिल पर सखत ॥ ७५

जीवसृष्टियोंका एक समुदाय शून्य-निराकारसे उत्पन्न हुआ है. इसलिए उनकी करनी (कर्म) एवं रहनी (मन) अज्ञानरूपी अन्धकारसे परिपूर्ण रहतीं हैं. वे नश्वर जगतके अतिरिक्त कुछ भी देख नहीं सकते हैं क्योंकि उनके हृदय पर मायाका अङ्कुश है.

दूजी गिरोह फिरस्तन की, भई पैदा नूर मकान ।
उतरी लैलत कदर में, सो ताबें न होए सैतान ॥ ७६

दूसरा समुदाय ईश्वरी सृष्टियोंका है जो अक्षरधामसे आया हूआ है. ये आत्माएँ महिमामयी रात्रिमें अवतरित हुई हैं तथापि मनकी दुष्टताके अधीन नहीं रहीं हैं.

गिरो तीसरी नूर बिलंद से, ताको कौल फैल हाल नूर ।
रूहें अरस दिल उतरी लैल में, करें हमेंसा हक जहूर ॥ ७७

तीसरा समुदाय ब्रह्मसृष्टियोंका है. वे अक्षरातीत परमधामसे अवतरित हुई हैं. उनके मन, वचन एवं कर्म ज्ञानमय हैं. ये धामहृदया ब्रह्मात्माएँ भी इस महिमामयी रात्रिमें अवतरित हुई हैं तथापि वे सर्वदा परब्रह्म परमात्माके नामको ही प्रकाशित करतीं हैं.

कहे मोमिन नूर सूरत में, जो बीच अरस हमेसगी ।
एक तन मोमिन अरस में, दूजी सूरत सुपन की ॥ ७८

इन ब्रह्मात्माओंका मूल स्वरूप (पर-आत्मा) दिव्य परमधाममें है. इनका एक शरीर परमधाममें है तो इनकी सुरताओंने धारण किया हुआ दूसरा तन स्वप्नवत् जगतमें है.

तो कहे सेहेरग से नजीक, खासलखास बंदे हकके ।
किए अरस तन से रूबरू, जो नूर बिलंद से उतरे ॥ ७९

इसीलिए परब्रह्म परमात्मा इन ब्रह्मात्माओंसे प्राणनलीसे भी निकट कहे गए है क्योंकि ये विशिष्ट आत्माएँ उनकी अङ्गस्वरूपा हैं. परमधामसे अवतरित इन ब्रह्मप्रियाओंको तारतम ज्ञान द्वारा पहचान करवाकर उनके मूल तन (पर-आत्मा) के अभिमुख करवा दिया है.

जाकी न असल अरसमें, सो सेहेरग से नजीक क्यों होए ।
वह फना बका को क्यों मिले, वाकी अकल में न आवे सोए ॥ ८०

जिनका मूल तन परमधाममें नहीं है, उन जीवोंसे परब्रह्म परमात्मा प्राणनलीसे भी निकट कैसे हो सकते हैं. नश्वर जगतके वे जीव शाश्वत

परमात्मासे कैसे मिल सकते हैं. यह बात उनकी समझमें ही नहीं आ सकती.

हकें कह्या छबीसमें सिपारे, मैं मेरे बंदों से अकरब ।
वे मोमिन एक तन अरसमें, ताए सेहेरग से नजीक रब ॥ ८१

कुरानके छब्बीसवें सिपारेमें खुदाने उद्‌घोष किया है, 'मैं अपनी प्रिय आत्माओंके अत्यन्त निकट हूँ.' इन ब्रह्मात्माओंका एक तन परमधाममें है इसीलिए परब्रह्म परमात्मा उनसे प्राणनलीसे भी अति निकट है.

रूबरू होना अरस तन से, इन फना वजूद नासूत ।
नजीक न होए बिना अरस तन, नूर लाहूत परे हाहूत ॥ ८२

इस नश्वर जगतके मिथ्या शरीरके द्वारा दिव्य परमधामके चिन्मय स्वरूपके सम्मुख होना सम्भव नहीं है. अक्षरसे परे अक्षरातीत दिव्य परमधाममें मूल तन (पर-आत्मा) न होते तो ब्रह्मात्माएँ परब्रह्म परमात्माके निकट नहीं हो सकती.

दुनी असल जिनों तारीकी, सो इलमें करो पेहेचान ।
ताको नजीक सेहेरगसे, खाली हवा ला मकान ॥ ८३

इस नश्वर जगतके जीवोंका मूल तो मोहतत्त्व अथवा शून्य निराकार है. तारतम ज्ञानके द्वारा इस रहस्यको समझ लो. उनके लिए तो प्राणनलीसे निकट शून्य निराकार ही हो सकता है.

नाहीं करे बराबरी है की, क्यों मिले दाखला ताए ।
बका नींद उडे उठें अरस में, फना नींद उडे उड जाए ॥ ८४

मिथ्या जगतके जीव सत्य ब्रह्मात्माओंके समकक्ष नहीं हो सकते हैं. सत्यके साथ उनका उदाहरण ही नहीं दिया जा सकता. ब्रह्मात्माएँ सत्य होनेसे नींदका आवरण दूर होते ही परमधाममें जागृत होतीं हैं जबकि नश्वर जगतके जीव नींद समाप्त होने पर अस्तित्वहीन हो जाते हैं.

सुपन उडे जब मोमिनों, उठ बैठें अरस वजूद ।
कहे खासे बंदे दरगाही रूहें, कदमों हमेसा मौजूद ॥ ८५

ब्रह्मात्माओंकी नींद उड़ जाने पर वे परमधामके चिन्मय शरीरमें जागृत हो

जातीं हैं. ये ब्रह्मात्माएँ परब्रह्म परमात्माकी विशिष्ट अङ्गनाएँ कहलातीं हैं इसलिए सदा सर्वदा उनके ही श्रीचरणोंमें रहतीं हैं.

लिख्या है हदीसमें, मोमिन असल अरस माहें ।
ताको मोमिन जिन कहो, जाकी असल अरस में नाहें ॥ ८६

हदीस ग्रन्थोंमें उल्लेख है कि ब्रह्मात्माओंका मूलतन (पर-आत्मा) परमधाममें ही अधिष्ठित है. जिनका मूल तन परमधाममें नहीं है उनको ब्रह्मात्माएँ कैसे कह सकते हैं ?

ए वेद कतेब पुकारहीं, कोई पोहोंच्या न अपनी अकल ।
बिना हादी गोते खावहीं, जो तन मोमिन अरस असल ॥ ८७

इस प्रकार वेद तथा कतेब ग्रन्थोंमें स्पष्ट उल्लेख किया है किन्तु नश्वर जगतका कोई भी जीव अपनी बुद्धिसे वहाँ तक नहीं पहुँच सकता है. जिनके मूलतन दिव्य परमधाममें हैं ऐसी ब्रह्मात्माएँ भी सद्गुरुके मार्गदर्शनके बिना गोते खा रहीं हैं.

तो क्यों पोंहोंचे दिल मजाजी, जाकी पैदास कही जुलमत ।
सो चाहे बिना हादी असल, जबराईल न पोहोंच्या जित ॥ ८८

तो फिर नश्वर जगतके जीव वहाँ तक कैसे पहुँच सकते हैं जिनकी उत्पत्ति ही शून्य निराकारसे हुई हैं. जहाँ जिब्रील फरिश्ता भी नहीं पहुँच पाया. वहाँ पर वे सच्चे सद्गुरुके मार्गदर्शनके बिना ही पहुँचना चाहते हैं.

तो कही रात दुनी इन वास्ते, दिए बंदगी फरज लगाए ।
ले तरीकत चल कोई न सक्या, गए पांउ पुल सरातें कटाए ॥ ८९

इसीलिए इस नश्वर जगतको अज्ञानमयी रात्रिकी संज्ञा दी गई है और यहाँके जीवोंके लिए कर्मका विधान बनाया गया कि यहाँके जीव उपासनाके मार्गको भी अंगीकार कर आगे नहीं बढ सकते हैं. उनके पाउ पुलेसिरात (कर्मकाण्डके मार्ग)में ही कर जाते हैं.

तरीकत भी ले ना सके, सो रातै की बरकत ।
जो तरीकत ले पोहोंचे मलकूत, तो भी आडी हवा जुलमत ॥ ९०

इन जीवोंमें अज्ञानताका ही प्रभाव अधिक होता है इसलिए वे उपासनाके मार्गको भी अङ्गीकार नहीं कर सकते हैं. इनमें-से यदि कोई उपासनाका मार्ग ग्रहण कर वैकुण्ठ तक पहुँच भी जाते हैं तो भी उनके लिए उससे आगे शून्य निराकारका आवरण व्यवधान स्वरूप बन जाता है.

ले हिसाब दई हैयाती, कह्या वास्ते महंमद नूर ।
भिस्त तो कही तले नूर के, रखे दिल बीच बका जहूर ॥ ९१

हदीसोंमें कहा गया है कि आत्मजागृतिके समयमें जब स्वयं परब्रह्म परमात्मा श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंके लिए इस जगतमें प्रकट होंगे उस समय वे इन जीवोंको भी उनके कर्मके अनुसार अखण्ड मुक्तिस्थलका सुख प्रदान करेंगे. यह अखण्ड मुक्तिस्थल अक्षरब्रह्मके हृदयके अन्तर्गत कहा गया है.

खास गिरो फिरस्तन की, ए जो पैदा नूर मकान ।
सो पोहोंचे बका बीच नूर के, ले हक इलम ईमान ॥ ९२

ईश्वरीसृष्टिका विशेष समुदाय अक्षरधामसे अवतरित हुआ है. वे तारतम ज्ञानके प्रति विश्वास कर अपने मूल स्थान अखण्ड अक्षरधाम पहुँचेंगे.

हक हकीकत मारफत, रूहें इसकें राह लई जाए ।
सो बिन चलें पांउ हक बका, दै सेहेरग से नजीक बताए ॥ ९३

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ दिव्य प्रेमको अङ्गीकार कर यथार्थ ज्ञान एवं पूर्ण पहचानका मार्ग ग्रहण करेंगी. वे बिना पाँव चलकर (कर्मकाण्डके मार्गका अनुसरण किए बिना ही) अपने अखण्ड परमधाम पहुँच जाएँगी. इनके लिए ही परब्रह्म परमात्माको प्राणनलीसे भी निकट कहा गया है.

हक खासलखासों को, खेल देखावें लैल का ।
नूर तजल्ला बीच में, खेल देखें बैठे बीच बका ॥ ९४

अक्षरातीत परमात्मा इन्हीं विशिष्ट ब्रह्मात्माओंको यह नींदका खेल दिखा रहे हैं. ये ब्रह्मात्माएँ अक्षरातीत दिव्य परमधाममें ही बैठे-बैठे नश्वर जगतका यह खेल देख रहीं हैं.

ए क्या जाने मजाजी दुनियां, जो तारीकी से पैदास ।
वाके दाखले मिलावे आप में, जो अरस रूहें खासलखास ॥ ९५

शून्य निराकारसे उत्पन्न स्वप्नवत् जगतके जीव इस रहस्यको कैसे समझ सकते हैं ? वे व्यर्थ ही इन विशिष्ट आत्माओंके साथ अपनी तुलना करते हैं.

आयतों हदीसों माएने, जो देखो हक इलम ले ।
तो खासलखास खासे आम की, तीनों जाहेर देखाई दे ॥ ९६

तारतम ज्ञानके द्वारा कुरानकी आयतों एवं हदीसोंके रहस्योंका अवलोकन किया जाए तो विशिष्ट आत्माएँ (ब्रह्मात्माएँ), ईश्वरीसृष्टि (खास) तथा सर्वसाधारण जीवसृष्टि(आम) इन तीनोंकी पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकेगी.

हुकम हुआ तीनों गिरोह को, कर महंमद हिदायत ।
हकीकत और तरीकत, तीसरी जो सरीयत ॥ ९७

अन्तिम मुहम्मदको परमात्माका आदेश प्राप्त हुआ कि तुम तीनों प्रकारके समुदायको यथार्थ ज्ञान, उपासना तथा कर्मकाण्डके द्वारा मार्गदर्शन करो.

खासलखासों दे हिकमत, ज्यों रहे न सुभे सक ।
बिगर वास्ते पोहोंचे बीच, अरस अजीम बका हक ॥ ९८

सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मात्माओंको ऐसी युक्ति प्रदान करना जिससे उनमें किसी भी प्रकारके सन्देह न रहे. और किसी भी प्रकारके व्यवधानके बिना वे दिव्य परमधाममें अपने धनीके सम्मुख पहुँच सकें.

तरीकत देखाओ खास दूजी कों, केहे मिठी हलीमी जुबान ।
तेरा हुकम न फेरे ए गिरो, पोहोंचाओ बका नूर मकान ॥ ९९

दूसरी विशेष सृष्टि जो ईश्वरीसृष्टि कहलाती है उनको मधुर तथा विनम्र वाणीसे उपासनाका मार्ग दिखाना. यह समुदाय तुम्हारे आदेशकी अवहेलना नहीं करेगा. इसको शाश्वत अक्षरधाममें अधिष्ठित करना.

और जिद कर आम खलकसों, वे तेरे सामी ल्यावें हुजत ।
ताए समझाओ जिद सों, जो जाहेरी चलें सरीयत ॥ १००

तीसरी सृष्टि सर्वसामान्य जीवोंको हठपूर्वक समझाना क्योंकि वे हठ करेंगे. वे बाह्य कर्मकाण्डके आधार पर ही चलना चाहेंगे इसलिए उनको हठपूर्वक समझाना चाहिए.

लिखी तीनों की अकलें, और तासों पाए जो फल ।
सो लिखी बीच आयतों मुसाफ, सो देखो मोमिन अरस दिल ॥ १०१

इस प्रकार तीनों प्रकारकी सृष्टियोंकी समझदारी तथा उससे उनको प्राप्त होनेवाले फलके सम्बन्धमें कतेब ग्रन्थोंमें समझाया है. हे ब्रह्मात्माओ ! अपने धामहृदयमें विचारकर इस रहस्यको समझो.

सरीयत तरीकत हकीकत, ए तीनों एहेल कुरान ।
जिन जो पाई अकल, तिन तैसी हुई पेहेचान ॥ १०२

कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड तथा ज्ञानकाण्ड इन तीनों रीतिसे चलनेवाले लोग स्वयंको कुरानके उत्तराधिकारी समझते हैं. उनमें जिनको जैसी बुद्धि प्राप्त हुई है उनको उसीके अनुरूप पहचान हुई है.

ए आयत हबूनी हबहुंम, तिन किए तरजुमें तीन ।
पेहेचान जैसी तैसी मजल, फल सोई देवे यकीन ॥ १०३

कुरानकी 'हब्बूनी हब हुम'नामक आयतका तीन प्रकारसे अनुवाद हुआ है. जिनको जितनी पहचान होती है उनको अपनी बुद्धिके अनुसार उसी प्रकारका गन्तव्य स्थल प्राप्त होता है एवं अपने विश्वासके अनुरूप फल प्राप्त होता है.

बीच लिख्या हदीसों आयतों, हक खिलवत के सुकन ।
सो क्यों पावें दिल दुसमन, बिना अरस दिल मोमन ॥ १०४

कुरानकी आयतों तथा हदीसोंमें परमधाम मूलमिलावेमें श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंके मध्य हुई परिचर्चाका भी उल्लेख है किन्तु धामहृदया ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त जिन जीवोंके हृदय पर दुष्ट इब्लीसका

वास है वे इस रहस्यको कैसे समझ सकते हैं ?

बिना हक हादी निसबत, कोई होए न सके दाखिल ।
मारफत पाइए मुसाफ की, जो हक दें कुल अकल ॥ १०५

जिनका सम्बन्ध श्री राजजी तथा श्री श्यामजीके साथ नहीं है वे नश्वर जगतके जीव कोई भी उस परमधाममें प्रवेश नहीं कर सकते. इस प्रकार जब परब्रह्म परमात्मा अपनी जागृतबुद्धि प्रदान करते हैं तभी कुरानके गूढ़ रहस्य समझे जाते हैं.

लिख्या सिपारे तीसरे, इबराहीम पूछा हक से ।
ए जो मरत है दुनियां, क्यों कर मुरदे उठे ॥ १०६

कुरानके तीसरे सिपारेमें उल्लेख है, इब्राहीमने खुदासे पूछा, ये नश्वर जगतके प्राणी मरते जा रहे हैं. ये मूर्दे अपनी-अपनी कब्रोंसे कैसे उठेंगे ?

तब लिख्या आया आयत में, बाजे पैदा कलमें कुंन ।
एक कहे एक हाथ से, कहे बाजे दो हाथन ॥ १०७

उस समय ऊपरसे आयत उतरी. उसमें सृष्टिकी उत्पत्तिका उल्लेख था. सामान्य जीव खुदाके 'कुन' कहनेसे पैदा हुए हैं. कोई उनके एक हाथसे तो कोई दोनों हाथसे उत्पन्न हुए हैं.

एक गिरो इमदाए से, मौजूद से ले आए ।
दूजी गिरो खिलकत और से, इनों वास्ते करी पैदाए ॥ १०८

एक समुदाय ऐसा है जो प्रारम्भसे ही है. उसे अखण्ड परमधामसे इस जगतमें अवतरित किया गया है. दूसरा समुदाय अक्षर धामसे है. उसको ब्रह्मात्माओंके लिए उत्पन्न किया है.

ए तीनों गिरो का बेवरा, देखो दाखले मिलाए ।
एक कुंन दूजे पाक फिरस्ते, तीसरी असल खुदाए ॥ १०९

इस प्रकार तीनों प्रकारके समुदायका निरूपण किया गया है. उनके लिए दिए गए उदाहरणोंको मिलाकर इस पर विचार करना. एक जीवसृष्टि है जो

'होजा' कहने मात्रसे उत्पन्न हुई है. दूसरी पवित्र सृष्टि ईश्वरीसृष्टि है और तीसरी ब्रह्मसृष्टि परब्रह्मकी ही अङ्गस्वरूपा है.

एक हाथ सूरत महंमदकी, दूजे दो हाथ सूरत दोए ।
एक तीनों कही हाथसे, ए दोए तीन एक सोए ॥ ११०

खुदाने एक हाथसे रसूल मुहम्मदको बनाया. दूसरी बार दोनों हाथोंसे उनके अन्य दो मलकी एवं हकी स्वरूपको बनाया. इन तीनों स्वरूपोंको खुदाने अपने हाथसे बनाया है इसलिए ये तीनों मिलकर एक ही स्वरूप हैं.

कोई कहे कहां कह्या हाथसे, देखो सिपारे तेईसमें ।
देखो सहूर कर मोमिनों, कह्या आदम पैदा हाथसे ॥ १११

कोई कहना चाहे कि खुदाने अपने हाथसे सृष्टि की है इसका उल्लेख कहाँ है ? तो उनको कुरानके तेईसवें सिपारेमें देखना चाहिए. हे ब्रह्मात्माओ ! विचारपूर्वक देखो. वहाँ पर यह स्पष्ट उल्लेख है कि खुदाने अपने हाथोंसे आदमको उत्पन्न किया है.

महामत कहें हक इलमें, बेवरा कह्या नेक ए ।
दो गिरो पोहोंचाई दो अरसोंमें, औरों पट खोले भिस्त आठों के ॥ ११२

महामति कहते हैं, परब्रह्म परमात्मा द्वारा प्रदत्त तारतम ज्ञानके द्वारा ही संक्षिप्त रूपमें यह विवरण दिया है. इस ब्रह्मज्ञानके द्वारा ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीसृष्टि दोनों समुदायोंको परमधाम तथा अक्षरधाम पहुँचा दिया है. शेष सभी जीवोंके लिए आठों मुक्तिस्थलोंके द्वार खोल दिए गए हैं.

बाब तीनों फिरस्तों का बयान

तीनों फिरस्तों का बेवरा, लिख्या बीच कुरान ।
सो खोल हकीकत मारफत, हादी मोमिनों देवें पेहेचान ॥ १

कुरानमें प्रमुख तीन फरिश्तोंका विवरण है. सद्गुरु उनकी यथार्थताका परिचय करवाकर ब्रह्मसृष्टियोंको परमधामकी पूर्ण पहचान करवा रहे हैं.

बयान बडे बोहोत निसान, ताथें जुदे जुदे लिखे जात ।
एक दूजे के आगे जो कहीए, तो कागद में न समात ॥ २

इन तीनों फरिश्तोंका विवरण विशद होनेसे उनके लिए दिए गए अनेक सङ्केतोंको अलग-अलग स्थानोंमें वर्णन किया है. इनकी यशोगाथाको उत्तरोत्तर बढ़ा कर व्यक्त किया जाए तो वह पुस्तकमें भी नहीं समाएगी.

जुदी जुदी सनंधों साहेदी, हकें भेजी कै किताब ।
जासों पढा या अनपढा, सब रोसन होए सिताब ॥ ३

परब्रह्म परमात्माने विभिन्न धर्मग्रन्थोंमें भिन्न-भिन्न स्थानों पर इनके प्रमाण एवं साक्षियाँ भेजीं हैं. जिससे पठित या अपठित सभी लोगोंको तत्काल जानकारी प्राप्त हो सकती है.

छिपाया देखाऊं जाहेर, जो हकें फुरमाए ।
त्यों देखाऊं कर माएने, ज्यों छोटे बडे समझी जाए ॥ ४

कुरान आदि धर्मग्रन्थोंमें परब्रह्म परमात्माका सन्देश अभी तक गुप्त रहा था. उनके रहस्योंको स्पष्ट कर उसे व्यक्त कर देता हूँ जिससे छोटे बड़े सभीको इसका ज्ञान प्राप्त हो जाए.

हलाल हराम दोऊ छिपे हुते, सो बयान किए हुकम ।
ले अकल असराफील, नबी कदमों धरे कदम ॥ ५

कुरानमें अभी तक धर्मसम्मत तथा निषिद्ध विधानका भावार्थ छिपा हुआ था. अब श्री राजजीके आदेशसे इस्त्राफील फरिश्ताने प्रकट होकर नबीके पदचिन्हों पर चलते हुए (उनके कथनानुसार) उसका विवरण स्पष्ट कर दिया है.

हक साथ मैं आऊंगा, असराफील ईसा इमाम ।
लिखे फैल सबन के, जासों पेहेचानिए तमाम ॥ ६

रसूल मुहम्मदने कहा था, मैं अन्तिम समयमें परमात्माके साथ पुनः आऊँगा. उस समय हमारे साथ इस्त्राफील, ईसा तथा इमाम तीनों होंगे. कुरानमें इन

सबके आचरणका उल्लेख है जिससे सभीको उनकी पहचान हो जाए.

यों केती कहूं निसानियां, हैं हिसाब बिन ।
पर ए मीठा लगसी मोमिनों, औरों लगसी सखत सुकन ॥ ७

इस प्रकार कितने सङ्केतोंको स्पष्ट करूँ ? वे तो असंख्य हैं. ये वचन ब्रह्मसृष्टियोंको अति प्रिय लगेंगे एवं अन्य लोगोंको अत्यन्त कठोर लगेंगे.

ए कह्या आयतों हदीसों, जिन सिर आखरी खिताब ।
जाहेर देखावें दिन कर, खोल माएने मगज किताब ॥ ८

कुरानकी आयतों तथा हदीसोंमें कहा है, जिनको अन्तिम समयके सद्गुरुकी शोभा प्राप्त हुई है वे ही इन रहस्योंको स्पष्ट कर ब्रह्मज्ञानमय दिनको प्रकट करेंगे.

यों दिन बका जाहेर हुआ, तब देखसी सब निसान ।
नजरों आवसी कयामत, होसी रोसन सबों पेहेचान ॥ ९

इस प्रकार जब अखण्ड ज्ञानका प्रकाश प्रकट होगा तब सभीको आत्मजागृतिके समयके चिन्ह स्पष्ट दिखाई देंगे. आत्मजागृतिकी इस पावन वेलामें सर्वत्र ब्रह्मज्ञानका प्रकाश छा जाएगा एवं सभीको परब्रह्म परमात्माकी पहचान होगी.

कहे बिगर ना रेहे सकों, जो हक हादी फुरमाए ।
हक बका के अरसों का, पट महंमद मसी खोलाए ॥ १०

श्री राजजी तथा श्री श्यामजीने अपने आगमनके विषयमें जो सङ्केत दिए हैं उनको स्पष्ट किए बिना मैं नहीं रह सकता. अन्तिम समयमें स्वयं श्री श्यामाजीने सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर धाम व परमधामके द्वार खोलकर परब्रह्म परमात्माकी पहचान करवाई है.

ए इसारतें कोई न समझ्या, ना तो जाहेर दई बताए ।
कह्या गुनाह किया अजाजीलें, सो सब दिलों करी खताए ॥ ११

कुरानके इन सङ्केतोंको कोई भी समझ नहीं पाया. अन्यथा उन्होंने तो स्पष्ट

समझानेका प्रयत्न किया है. वहाँ पर ऐसा उल्लेख है कि अजाजील फरिश्ताने अपराध किया किन्तु उसके अभिशापका फल सभी मानवोंको भोगना पड़ा.

अव्वल आए कही महंमदें, कह्या आगूं होसी बडे निसान ।
सो भी वास्ते रूह मोमिनों, देख के ल्यावें ईमान ॥ १२

रसूल मुहम्मदने पूर्वमें ही यह सङ्केत दिया था कि भविष्यमें आत्माजागृतिके समयमें परब्रह्म परमात्माके आगमनकी साक्षीके लिए बड़े-बड़े प्रतीक (सङ्केत) प्रकट होंगे. वे सब ब्रह्मात्माओंके लिए हैं जिससे वे इनको देख कर परमात्माके प्रति विश्वास कर सकें.

जबराईल साथ रसूल के, आया बीच अव्वल ।
कुरान ल्याया बीच रात के, चलाया सरा अमल ॥ १३

रसूल मुहम्मदके साथ आरम्भसे ही जिब्रील फिरश्ता था. अज्ञानमयी रात्रिमें वह कुरानका ज्ञान ले आया. इससे कर्मकाण्ड (शराअ) का मार्ग चलाया गया.

एक जबराईल फिरस्ता, और महंमद पैगंमर ।
राह देखाई मोमिनों, अरस चढ उतर ॥ १४

एक जिब्रील फरिश्ता दूसरे रसूल मुहम्मद दोनोंने परमधामके लिए उड़ान भरी. उनमें रसूलने वहाँ पहुँच कर एवं वहाँसे लौट कर ब्रह्मात्माओंको पारका मार्ग प्रशस्त किया.

जबराईल नूर मकान लग, आगूं न सक्या चल ।
ना तो ल्यावने वाला मुसाफ का, कहे आगे जाऊं तो जाए पर जल ॥ १५

स्वयं जिब्रील फरिश्ता भी अक्षर धाम तक ही पहुँच सका, उससे आगे नहीं जा सका. अन्यथा कुरानका ज्ञान लानेवाला भी कहने लग जाए कि इससे आगे जाऊँगा तो मेरे पङ्खजल जाएँगे.

जबराईल जबरूत से, याकी असल नूर मकान ।
सोहबत करी महंमद की, तो ल्याया हक फुरमान ॥ १६

जिब्रील फरिश्ता अक्षर धामसे अवतरित हुआ है. जिसका मूल स्थान अक्षर धाम है. उसने रसूल मुहम्मदकी सङ्गतिसे जगतमें परब्रह्म परमात्माका सन्देश प्रकट किया.

जो रूह अरस महंमद की, तिन को न सक्या पेहेचान ।
तो न आया बडे नूर में, छोड्या न नूर मकान ॥ १७

यह जिब्रील फरिश्ता भी रसूल मुहम्मदकी पहचान नहीं कर सका कि इनकी आत्मा परमधामकी है. इसलिए वह अक्षर धामको छोड़ कर परमधामकी ओर जा नहीं सका.

चल न सक्या जबराईल, रह्या हद जबरूत ।
मासूक कह्या महमद कों, तो पोहोंच्या बका हाहूत ॥ १८

इस प्रकार जिब्रील फरिश्ता अक्षरधामकी सीमामें रह गया, उससे आगे नहीं बढ़ सका. श्री राजजीने श्री श्यामाजीको अपनी प्रियतमा कहा है. उनकी शक्तिस्वरूप मुहम्मद अक्षर धामको पारकर परमधाम मूल मिलावामें पहुँचे.

सोए वतन रूह मोमिनों, जित पोहोंच्या न जबराईल ।
एक महंमद संग आखरी, बीच पोहोंचिया असराफील ॥ १९

ब्रह्मात्माओंका मूल घर दिव्य परमधाम है जहाँ पर जिब्रील फरिश्ता जैसे भी नहीं पहुँच सकते हैं. अन्तिम समयमें प्रकट हुए मुहम्मद (मेरे) के साथ मात्र इस्राफील फरिश्ता ही वहाँ पर पहुँचनेमें सफल हुआ है.

इत और न कोई पोहोंचिया, ए हक हादी मोमिनों वतन ।
तो असराफील आइया, करने बका सबन ॥ २०

यह दिव्य परमधाम श्री राजजी, श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंका घर है. यहाँ पर उनके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं पहुँच सकता है. इस्राफील फरिश्ता यहाँ तक इसीलिए आ सका कि उसके माध्यमसे अन्तिम समयमें अवतरित मुहम्मद (मुझ) द्वारा सम्पूर्ण जगतको अखण्ड करना था.

महंमद सिफायत सब कों, कुल सेयन महंमद नूर ।
सो बिन फिरस्ते क्यों होवहीं, तो लिया बीच रूह हजूर ॥ २१

कुरानमें उल्लेख है कि अन्तिम समयमें सभी ब्रह्मात्माओंको इन अन्तिम मुहम्मदकी अनुशंसा प्राप्त होगी. क्योंकि वे सभी उन्हींके दिव्य तेजकी अंश स्वरूपा हैं. यह कार्य इस्राफील फरिश्ताके सहयोगके बिना सम्भव नहीं था.

इसलिए अन्तिम मुहम्मदने उसे अपने अन्तस्में स्थान दिया.

तो अव्वल आखर महंमद, महंमद सब अवसर ।
सब नूर इन का कह्या, कोई बखत न इन बिगर ॥ २२

इसीलिए कहा गया है कि महिमामयी रात्रि (लैल-तुल-कद्र) के आरम्भसे लेकर अन्तिम(कयामतके) समय तक सर्वत्र मुहम्मदका ही प्रभुत्व रहा है. सभी स्थान इन्हींके प्रकाशसे प्रकाशित हुए हैं. कोई भी समय ऐसा नहीं है जब इनका अस्तित्व न रहा हो.

साथ महंमद मेहेदी असराफील, ले मगज मुसाफी बल ।
तो आया बीच अरस अजीमके, पोहोंच्या बडे नूर असल ॥ २३

अन्तिम समयके सद्गुरु (महदी मुहम्मद)के साथ इस्त्राफील फरिश्ता भी ब्रह्मज्ञानके प्रतापसे परमधाममें परिभ्रमण कर सका.

ना तो असराफील है नूर का, क्यों फिरस्ता सके आगे जाए ।
पर मगज मुसाफी नूरमें, रूह महंमद लिया मिलाए ॥ २४

अन्यथा इस्त्राफील फरिश्ता अक्षर धामका है. वह उससे आगे परमधाम तक कैसे पहुँच सकता ? किन्तु समस्त धर्मग्रन्थोंके गूढ़ अर्थोंको स्पष्ट करनेके लिए अन्तिम समयमें अवतरित मुहम्मदने उसे अपने अन्तस्में ले लिया.

ए नूरी तीनों फिरस्ते, इनोंकी असल एक ।
ए किया महंमद मोमिनों वास्ते, हक इलमें पाइए विवेक ॥ २५

इन तीनों (इस्त्राफील, जिब्रील तथा अजाजील) दिव्य फरिश्तोंका मूल एक (आक्षरधाम) ही है. श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्मओंको नश्वर जगतका खेल दिखानेके लिए ही इन तीनोंको अलग-अलग प्रकट किया है. तारतम ज्ञानके द्वारा इसकी यथार्थता ज्ञात होती है.

कह्या सेजदा कर आदम पर, जो सबके अव्वल आदम ।
अजाजीलें देख्या आपको, तो न पकडे रसूल कदम ॥ २६

कुरानमें उल्लेख है कि परमात्माने प्रथम मानव (आदम) को नमन करनेके लिए अजाजील फरिश्ताको आदेश दिया. उस समय अजाजीलने स्वयं

अपनी ओर देखा फिर मानवके रूपमें उपस्थित उस रसूल (आदम) के चरण नहीं पकड़े.

हकें आप पढाइया, अंगुली से आदम को ।
दे इलम नाम पढाए, सक न सुभे इनमों ॥ २७

खुदाने स्वयं अङ्गुलीनिर्देशसे उस आदमको ज्ञान दिया. उन्होंने अपना ज्ञान देकर उसे सभी नामोंसे अवगत कराया. इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है.

हुकम हुआ आदम कों, कहे फिरस्तों आगे नाम ।
करें तुझ पर सेजदा हैयाती, मिल कर सब तमाम ॥ २८

पुनः आदमको खुदाका आदेश प्राप्त हुआ कि तुम सभी फरिश्तोंके समक्ष मेरे बताए हुए नाम व पहचान बता दो. तब ये सभी फरिश्ते मिलकर तुम्हें अखण्ड नमन करेंगे.

सो पढे कहें नाम आदमें, जाहेर किए सब पर ।
तब फिरस्तों किए सेजदे, एक इबलीस बिगर ॥ २९

कुरानको पढ़ने वाले कहते हैं कि आदमने सभी नामोंको प्रकट कर दिया. तब सभी फरिश्तोंने उसको नमन किया. मात्र एक इब्लीसने ही उसे नमन नहीं किया.

जो किए होते एते सेजदे, ऊपर उस आदम ।
जाको हक करें एता बडा, सो क्यों रद करे हुकम ॥ ३०

यदि उन सभी फरिश्तोंने आदमको इस प्रकार नमन किया होता तो जिसको खुदाने सब फरिश्तोंमें श्रेष्ठ बनाया है वह अजाजील उनके आदेशको कैसे अस्वीकार करता ?

हैयात हुए के होसी आखर, जो हुए नाम जाहेर सब पर ।
तो बूझ हैयाती दुनियां, ए सरे से छिपी रही क्यों कर ॥ ३१

जिन फरिश्तोंका नाम आदमने प्रकट किया है क्या वे अखण्ड हो गए या अन्तिम समयमें अखण्ड होंगे ? यदि वे सब अखण्ड हो गए तो कर्मकाण्डके उपदेशक लोगोंसे यह बात कैसे अज्ञात रही ?

ए किसे आखरत के, पढे डारें गुजरों में ।
काम कयामत का रोसन, होसी इन किसों सें ॥ ३२

कुरानकी यह घटना भविष्यमें घटने वाली है जिसके लिए कुरानको पढ़नेवाले कहते हैं कि यह घट चुकी है. वस्तुतः इन घटनाओंके सम्पन्न होने पर ही कयामतके समय होनेवाले कार्य प्रकट होंगे.

जो हक के सब फिरस्ते, किया सेजदा आदम पर ।
तो अबलों तिन हुकम से, सरा होत नहीं मुनकर ॥ ३३

यदि परमात्माके आदेशानुसार सभी फरिश्तोंने आदमको नमन किया होता तो कर्मकाण्डको मुख्यता देनेवाले लोग अभी तक परमात्माके इस आदेशसे विपरीत कैसे चल सकते.

कहूं हकीकत फिरस्तों, मोमिनों करो पेहेचान ।
तबक चौदे फिरस्ते, तिल जेता न खाली मकान ॥ ३४

हे ब्रह्मात्माओ ! अब मैं सभी फरिश्तोंकी यथार्थतासे अवगत कराता हूँ. इस तथ्यको भलीभाँति समझ लो. इस ब्रह्माण्डके चौदह लोकोंमें सर्वत्र इन फरिश्तोंकी सत्ता व्याप्त है. तिलके समान भी कोई ऐसा स्थान नहीं है जो नितान्त खाली हो.

जेता कोई फिरस्ता, बीच हैवान या इनसान ।
बिन फिरस्ते जरा नहीं, बीच जिमी या आसमान ॥ ३५

इस ब्रह्माण्डमें जितने भी देवी-देवता हैं चाहे वे मानवके रूपमें अथवा पशुके रूपमें अवतरित हुए हों किन्तु पृथ्वीसे लेकर आकाश पर्यन्त सर्वत्र उनकी ही सत्ता व्याप्त रहती है.

एक छोटी बडी बूंद पानी की, सो भी फिरस्ता सब ल्यावत ।
या जडों दरखतों फिरस्ते, या पर पेट पांउ चलत ॥ ३६

इस जगतमें पानीकी छोटी-सी बूँदसे लेकर बड़ी-बड़ी सभी वस्तुएँ इन्हीं देवताओंसे प्राप्त होतीं है. इस जगतमें वृक्षोंके जड़-मूलसे ले कर पाँव और पेटके बलसे चलनेवाले सभी सचराचर प्राणीमें इन्हीं देवताओंकी सत्ता व्याप्त है.

देखो सहूर कर मोमिनों, हक के सब फिरस्ते ।
ए बखत करसी आखर, किन नबी पर किये सबों सेजदे ॥ ३७

हे ब्रह्मात्माओ ! विवेकपूर्वक विचार करो. परमात्माकी शक्ति प्राप्त इन सभी देवी-देवताओंने अन्तिम समयमें प्रकट हुए परमात्माको किसी न किसी रूपमें अवश्य नमन किया.

पेहेचानो अजाजील कों, सेजदा न किया आदम पर ।
दूर हुआ ले लानत, सो सबों लगी क्यों कर ॥ ३८

तुम उस अजाजीलको भी पहचानो जिसने अपने देवत्वके दम्भमें परमात्माके आदेशका उल्लंघन कर आदमको नमन नहीं किया. इस अवज्ञाके कारण वह धिक्कारा गया और बहिश्तसे दूर हो गया. किन्तु उसको लगे इस अभिशापसे अन्य सभी लोग कैसे ग्रस्त हुए हैं ?

फिरस्तों अजाजील सिरदार, इबलीस जिनों वकील ।
पोहोंचाया सबों सय दिलों, पलक न करी ढील ॥ ३९

सभी देवताओंमें अजाजील शिरोमणि है. उसके अधिवक्ता (वकिल) के रूपमें इब्लीस कार्य करता है. जैसे ही अजाजीलको धिक्कारा गया उसी समय विलम्ब किए बिना ही इस इब्लीसने सभी मानवोंके हृदयमें शङ्काएँ उत्पन्न कर दी.

ना किया अजाजीलें सेजदा, तो सब रहे सेजदे बिन ।
सब दुनियां तार्बे तिन के, ताथें किया न सेजदा किन ॥ ४०

जब अजाजीलने आदमको नमन नहीं किया उस समय शेष सभी मानव भी इस इब्लीसके कारण नमनसे वञ्चित रह गए. क्योंकि सारी दुनियाँ उसीके अधीन है. इसलिए उनमें-से किसीने भी नमन नहीं किया.

तो लानत हुई तिन कों, वजूद देख गया भूल ।
देख्या न तरफ रूह की, वह तो हक का नूरी रसूल ॥ ४१

अजाजीलको इसीलिए धिक्कारा गया कि वह आदमको मात्र मानव समझने लगा. उसने उसकी आत्माकी ओर दृष्टि ही नहीं की कि वह तो परब्रह्म परमात्माके तेजोमय अङ्गस्वरूप पैगम्बर है.

हकें आदम कह्या रसूल कों, वह तो इबलीसें किया ख्वार ।
गेहूं खिलाए काढ्या भिस्त से, करके गुन्हेगार ॥ ४२

खुदाने तो पैगम्बरको आदम कहा है. कुरानके अनुसार आदमको इब्लीसने (गेहूँ खिलाकर) भ्रष्ट किया, जिससे वह मुक्तिस्थल (बहिश्त) से दोषारोपणके साथ बाहर निकाला गया.

हिरस हवा मोर सांप जिद, साथ निकस्या इबलीस ले ।
क्यों हकें इन आदम पर, नूरी पें कराए सेजदे ॥ ४३

आदमके साथ-साथ दुष्ट इब्लीस भी भौतिक चाहना तथा हठधर्मिता सहित मोर और सापके साथ बहिश्तसे निकाला गया. इस प्रकार दोषारोपित आदम पर नमन करनेके लिए खुदा अपने नूरी फरिश्तेको क्यों लगाते ?

जिन सब जिमी पर सेजदे, किए हक पर बेसुमार ।
उन आदमके वास्ते, क्या हक नूरी को देवें डार ॥ ४४

जिस अजाजीलने खुदाके नाम पर पूरी भूमिमें अनेक बार नमन किया, ऐसे फरिश्तेको मात्र आदमको नमन न करने पर खुदा क्यों अपराधी मानते ?

एता देखाया जाहेर कर, दई नूरी कों लानत ।
दुनी तो न खोले आंख दिल, जो असल पैदा जुलमत ॥ ४५

कुरानके प्रसङ्गके आधार पर यह बात स्पष्ट दिखाई देती है कि नूरी फरिश्ते पर दोषारोपण हुआ है. शून्य निराकारसे उत्पन्न इस नश्वर जगतकी दुनियाँ अपनी अन्तर्दृष्टिको खोलकर इस बातको नहीं समझती है.

जोलों ले ऊपर के माएने, दुनी छूटे न उपली नजर ।
तो भी न लेवें बातून, जो यों लिख्या जाहेर कर ॥ ४६

जब तक इन धर्मग्रन्थोंके मात्र बाह्य अर्थ ही करते रहेंगे तब तक नश्वर जगतके जीवोंकी बाह्य दृष्टि नहीं छूटेगी. इस प्रकार धर्मग्रन्थोंमें स्पष्ट उल्लेख होने पर भी वे लोग उसके गूढ़ अर्थको समझ नहीं पाते.

तो कह्या मजाजी दिल को, गोस्त का टुकडा ।
तिन दिलों पातसाह दुसमन, और दिल तो कह्या मुरदा ॥ ४७

इसीलिए मायासे उत्पन्न जीवोंके हृदयको मात्र मांसपिण्डकी संज्ञा दी गई है. ऐसे हृदय पर उनका शत्रु इब्लीस अपना साम्राज्य जमाकर बैठा हुआ है. इसीलिए इनके हृदयको मृततुल्य माना गया है.

कही लानत अजाजील कों, सो लगी सब दुनियां कों ।
एती फिरस्ते की पाक बंदगी, क्यों दुनी मारी जाए इनसों ॥ ४८

कुरानमें तो अजाजील फरिश्ताकी भर्त्सनाकी बात हुई है जो सभी जीवोंके ऊपर अभिशाप बन गई. अन्यथा जिस फरिश्ताने इतनी पवित्र वन्दना की हो उसके कारण जगतके जीवों पर क्यों दोषारोपण होता ?

गुनाह एक अजाजील के, क्यों सब दुनी मारी जाए ।
पाक सरा हक अदल, सो ऐसे क्यों फुरमाए ॥ ४९

यदि एक अजाजीलने ही अपराध किया तो सारी दुनियाँको क्यों दण्डित किया जाए ? खुदाका न्याय तो सत्य होता है वे इस प्रकारके दण्डका विधान कैसे करते ?

पाक फिरस्ते पाक सेजदे, बेसुमार किए हक पर ।
तिन बदले दुनी को दोजक, क्यों देवें कादर ॥ ५०

अजाजील फरिश्ता भी स्वयं पवित्र है. उसने खुदाके चरणोंमें नमन किया वह भी पवित्र है. उसके परिणाम स्वरूप खुदा संसारके प्राणियोंको नरक भोगनेका दण्ड क्यों देते ?

जो न लेवें हकीकत, नजर खोल बातन ।
तोलों अंधेरी ना मिटे, दिल होए नहीं रोसन ॥ ५१

जब तक अन्तर्दृष्टिको खोलकर इस कथानकके मर्मको समझा न जाए तब तक अज्ञानरूपी अन्धकार दूर नहीं होगा और हृदयमें ज्ञानका प्रकाश नहीं आएगा.

ए कलाम नजूम और बातून, मांहे हक हकीकत ।
हक इलमें खोले रूह नजर, तब दिन ऊगे बका मारफत ॥ ५२

इस कथानकमें परमात्माकी यथार्थताके गूढ़ एवं भविष्य परक रहस्य छिपे हुए हैं. जब परमात्मा प्रदत्त तारतम ज्ञानसे आत्मदृष्टि खुलेगी तभी ब्रह्मज्ञानके सूर्योदयके दर्शन होंगे.

ए तीनों फिरस्ते नूर से, हुए पैदा तीनों तालब ।
जिन जैसा चिन्ह्या महंमद को, तिन तैसा पाया मरातब ॥ ५३

ये तीनों फरिश्ते अक्षरब्रह्मसे हैं. ब्रह्मात्माओंकी खेल देखनेकी इच्छाके कारण ही इन तीनोंकी उत्पत्ति हुई है. इस जगतमें आने पर जिन्होंने मुहम्मदको जिस रूपमें पहचान उसीके अनुरूप उन्हें गौरव प्राप्त हुआ है.

जिन जैसी करी दोस्ती, तिन तैसी पाई बखसीस ।
दूर नजीक या अन्दर, देखो माएने आयत हदीस ॥ ५४

इन तीनोंमें मुहम्मदसे जिसने जिस प्रकारकी मित्रता की उसको उसी प्रकार दूर, निकट या अन्तरङ्गके रूपमें रहनेका फल प्राप्त हुआ. इस सन्दर्भमें कुरानकी आयतें तथा हदीसोंके रहस्योंको देखो.

[तीनोंको अपने-अपने कर्तव्योंके आधार पर इस प्रकार फल प्राप्तत हुए: आजाजीलको दूरी मिली. जिब्रीलको निकटता मिली एवं इस्राफीलको परमधामके अन्दर प्रवेश मिला.]

बंदगी का फल मांगिया, नूरी फिरस्ते हक पें ।
तिन बदले दुनी सब दोजक, क्यों डारी जाए आगमें ॥ ५५

नूरी फरिश्ता अजाजीलने खुदासे अपने नमनका फल माँगा. मात्र इतने अपराधके फल स्वरूप सभी दुनियाँको नरकाग्निमें डाल कर क्यों जलाया जाए ?

ए इन्साफ सरा ना करे, दुरुस्त माएने बातन ।
उपले माएने ले आप सिर, सिफत जो मोमन ॥ ५६

परमात्माका न्याय इस प्रकार मात्र बाह्य दृष्टिसे देखा नहीं जा सकता. उसके कुछ अप्रकट अर्थ होते हैं. सामान्य मनुष्य इन्हें बाह्यदृष्टिसे देखते हुए

ब्रह्मात्माओंकी महिमाको अपना गौरव समझते हैं.

ना तो अजाजील भी नूर से, दे गुमाने डार्‌या दूर ।
एक रह्या दरम्यानमें, एक मांहें आया हजूर ॥ ५७

अन्यथा अजाजील फरिश्ता भी अक्षरब्रह्मका ही अङ्ग स्वरूप है. मात्र अभिमानके कारण उसे दूर कर दिया गया. एक जिब्रील फरिश्ता उनके निकट रहा और तीसरा इस्त्राफील फरिश्ता परमात्माकी चरणों तक पहुँच पाया.

हकें महंमद मोमिनों वास्ते, कै मेहेर कर खेल देखाए ।
एक दूर किये इनों वास्ते, एक नजीक लिये बोलाए ॥ ५८

परब्रह्म परमात्माने श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओं पर कृपा करते हुए उन्हें यह नश्वर खेल दिखाया है. इनको खेल दिखानेके लिए ही एक (अजाजील) फरिश्तेको दूर किया और दूसरे (जिब्रील) को अपने निकट बुला लिया.

मोमिनों की सरीयत में, आया मेकाईल बुध बल ।
पीछे बीच हकीकत, आया जबराईल सामिल ॥ ५९

इस नश्वर जगतमें आने पर ब्रह्मात्माओंके क्रिया-ककर्ममें भी मेकाइल फरिश्ता (ब्रह्माजी) की बुद्धि एवं ज्ञान सक्रिय होने लगे. तत्पश्चात् उन्हें यथार्थ बोध करवानेके लिए जिब्रील फरिश्ता आकर उनसे मिला.

आखर आए असराफीलें, खोले मुसाफ मारफत द्वार ।
दिन बका किया जाहेर, खोले अरस अजीम नूर पार ॥ ६०

आत्मजागृतिके अन्तिम समयमें अवतरित होकर इस्त्राफील फरिश्ताने धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर परमधामके द्वार खोल दिए. उसने ब्रह्मज्ञानका प्रभात कर अक्षरसे परे अक्षरातीतका मार्ग प्रशस्त किया.

महामत कहे ऐ मोमिनो, कही हकीकत फिरस्तों ।
अब कहूं कजा और फितना, जो उठ्या बरारबमों ॥ ६१

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! मैंने तुमको फरिश्तोंकी यथार्थतासे

परिचित करवाया है. अब मैं न्यायकी चर्चा कर बराबरमें आरम्भ हुए उपद्रवकी बात करूँगा.

प्रकरण ५ चौपाई ४२८

बाब कजाका

जैसा अमल रात का, चाहिए ज्यों चलाया ।
बीच सरे जबराईलें, किया हकका फुरमाया ॥ १

अज्ञानरूपी अन्धकारमयी रात्रिमें रसूल मुहम्मदने इस जगतमें आकर आवश्यकतानुसार कर्मका विधान प्रचलित किया इसी समय जिब्रील फरिश्ताने आकर उनको खुदाका आदेश सुनाया.

रसूलें सरा रात का, चलाया हक अदल ।
जब रसूल जबराईल ले चले, तब क्यों चले अदल अमल ॥ २

रसूल मुहम्मदने अज्ञानरूपी अन्धकार युक्त इस जगतमें कर्मके विधानके साथ सत्य न्यायकी बात की. जब रसूल और जिब्रील दोनों ही चले गए तो उनके बाद सच्चा न्याय कैसे चल सकता ?

कजा कही तीन सकस की, एक भिस्ती दोए दोजक ।
भिस्ती हक को चीन्ह के, अदल कजा करी हक ॥ ३

कुरानमें तीन लोगोंके न्यायका वर्णन है. जिनमें-से एक (अब्दुल्ला नामक व्यक्ति) को बहिश्तका सुख प्राप्त हुआ और शेष दो (जालूत और जनिक) को नरककी यातना मिली. जिसको बहिश्त मिली उसने सत्यको पहचान कर सच्चा न्याय किया.

कही कजा दूजे सकस की, हक से करी चिन्हार ।
पर अदल कजा तो भी ना हुई, तो लिख्या बीच नार ॥ ४

दूसरे व्यक्ति जनिकके सम्बन्धमें कहा गया है कि उसने सत्यकी पहचान तो की किन्तु उससे सच्चा न्याय नहीं हो सका. इसलिए वह नर्कगामी बना.

तीसरे जो कजा करी, अपनी जाहिल अकल ।
सो तो कह्या दोजकी, आगे कजा न सकी चल ॥ ५

तीसरा व्यक्ति जालूतने अपनी तुच्छ बुद्धिके कारण मूर्खतावश न्याय किया.

इसलिए उसे भी नरकाग्निमें जलना पड़ा. तत्पश्चात् सत्य पर आधारित न्यायका मार्ग ही अवरुद्ध हो गया.

कह्या साहेदी भी रवा नहीं, जिन को नहीं ईमान ।
और रवा नहीं खूनी की, ना रवा खुदी गुमान ॥ ६

कुरानमें इस प्रकार उल्लेख है, जिसके हृदयमें विश्वास ही नहीं है उसको साक्षी देनेका अधिकार भी नहीं होता है. इसी प्रकार हत्यारे एवं मिथ्याभिमानी लोगोंकी साक्षी भी सत्य नहीं मानी जाती है.

कही अदल यों साहेदी, कहां साहेद पाइए सोए ।
इन जमाने नुकसानमें, अदल कजा क्यों होए ॥ ७

कुरानमें न्याय और साक्षीके विषयमें इस प्रकारका विवरण है. किन्तु अब उस प्रकारके सत्यप्रिय साक्षी कहाँ प्राप्त हो सकते हैं. इसलिए इस मिथ्या समयमें सत्य न्यायकी अपेक्षा कैसे की जा सकती है ?

अब्दुल्ला बिन उमरें, छोड कजा दिया जवाब ।
सोए लिख्या बीच हदीसों, सुनो तिनों का सवाब ॥ ८

हदीसोंमें इस प्रकार उल्लेख है कि उमरके पुत्र अब्दुल्लाने न्यायधीशका पद छोड़ते हुए यह कहा कि अब मुझसे सत्य न्याय नहीं हो सकेगा. उसको प्राप्त लाभके विषयमें हदीसोंमें जो कुछ लिखा है उसे भी सुनो.

कहे उसमान सुन अब्दुल्ला, कजा करता था उमर ।
सो तो तेरी वारसी, तूं छोडे क्यों कर ॥ ९

हजरत उसमानने अब्दुल्लाहसे कहा, तुम्हारे पिता उमर सच्चे न्यायधीश थे. तुम भी उन्हींके उत्तराधिकारी हो. अब तुम इस कार्यको क्यों छोड़ना चाहते हो ?

कहे अब्दुल्ला उसमान कों, कजा न मुझसे होए ।
मैं पाई खबर रसूल से, कर सकसी ना अदल कोए ॥ १०

इसके उत्तरमें अब्दुल्लाने उस्मानको कहा, अब मुझसे न्याय नहीं हो सकेगा.

मुझे रसूलसे ज्ञात हुआ कि अब कोई भी सच्चा न्याय नहीं कर सकेगा.

कजा करते उमर कों, कदी सूझत नाहीं सुकन ।
तो पूछत जाए रसूल कों, सो सब करत रोसन ॥ ११

मेरे पिता उमरको न्याय करते समय यदि कुछ बातें समझ नहीं आतीं तो वे रसूलके पास जाकर पूछते थे और रसूल उन्हें सच्ची बात बता दिया करते थे.

रसूल अदल कछू चाहते, तब जबराईल ल्यावत खबर ।
तो कजा करता था उमर, जो रसूल थे सिर पर ॥ १२

जब रसूल मुहम्मद न्यायके सम्बन्धमें कुछ पूछना चाहते थे तो जिब्रील फरिश्ता खुदाके पास जाकर समाचार ले आता था. इस प्रकार जब तक रसूल मुहम्मदकी कृपा बनी रही तभी तक मेरे पिता उमर न्याय करते रहे.

बोहोत कही उसमानने, कजा न करी कबूल ।
मैं इन्साफ अदल कर ना सकों, तो कहां पांऊं जबराईल रसूल ॥ १३

उस समय उस्मानने अब्दुल्लाको बहुत समझाया किन्तु वह न्याय करनेका कार्य स्वीकार नहीं कर सका. उसने कहा, यदि मैं किसी समय उचित न्याय नहीं कर सका तो उस समय पूछनेके लिए रसूल मुहम्मद तथा जिब्रील फरिश्ताको मैं कैसे प्राप्त कर सकूँगा ?

कजा अदल कही हक की, सो इत चली एते दिन ।
कही साहेदी इन भांत की, आगे क्यों चले रसूल बिन ॥ १४

इस प्रकार सत्य पर आधारित न्यायका कार्य यहीं तक चलता रहा. जब उक्त प्रकारके साक्षीकी बात कही गई है तो अब रसूलके बिना यह न्याय कार्य कैसे आगे चल सकता ?

और भी देखो साहेदी, जो रसूलें फुरमाए ।
जब हक ईमान तरफ देखिए, तो अब क्यों कजा करी जाए ॥ १५

इस प्रकारकी और भी अनेक साक्षियाँ हैं जिनका उल्लेख रसूल मुहम्मदने किया है. किन्तु जब सच्चे न्यायकी ओर दृष्टिपात करते हैं तो ऐसा प्रतीत

होता है कि अब इस प्रकारका न्याय कैसे हो सकेगा ?

कह्या रसूलें माजकों इमन, अदल कजा करो जाए ।
क्यों कर करेगा अदल, सो मोकों कहो समझाए ॥ १६

रसूल मुहम्मदने जबलके पुत्र माजको आदेश दिया, तुम यमनमें जाकर वहाँ न्यायका कार्य करो. तब उन्होंने पुनः उससे पूछा, मुझे बताओ कि तुम कैसे न्याय करोगे ?

तब कह्या माज बिन जबलें, करूं कजा देख मुसाफ ।
कहे रसूल जो तूं अटके, तो क्यों करे इनसाफ ॥ १७

तब जबलके पुत्र माजने उत्तर दिया, मैं कुरान देखकर न्याय करूँगा. तब रसूलने पुनः कहा, यदि तुम किसी सन्दर्भमें कुरानमें अटक गए तो किस प्रकार फैसला करोगे.

सुंनत जमात राह लेय के, करूं कजा अदल ।
कहे रसूल जो इत अटके, कहे करूं अपनी अकल ॥ १८

प्रत्युत्तरमें माज़ने कहा, तब मैं धर्मके आधार पर चलनेवाले लोगोंसे परामर्श कर न्याय करूँगा. इस पर रसूलने पुनः कहा, यदि इसमें भी कोई बाधा आ गई तो कैसे करोगे ? तब माज़ने उत्तर दिया, तब मैं अपनी बुद्धिसे निर्णय करूँगा.

तब मार्‌या रसूलें छाती मिने, केहे के अलहमदो लिल्लाह ।
कही रजामंदी खुदाए की, है सिर रसूल अल्लाह ॥ १९

तब रसूलने छाती पीटते हुए कहा, अब तो खुदा ही सबका ध्यान रखें (अलहम्दो लिल्लाह). सब कुछ उनकी कृपा पर ही निर्भर है. अल्लाहके रसूल पर भी उनकी छत्रछाया बनी रहे.

ताथें अव्वल कजा महंमद लग, पीछे अदल क्यों होए ।
हक तरफ का सिलसिला, क्यों कर पाइए सोए ॥ २०

इस प्रकार सत्यप्रिय न्यायकी श्रृङ्खला रसूल मुहम्मद तक ही सीमित रही. उनके पश्चात् इस प्रकारका न्याय कैसे हो सकता था. जिब्रील फरिश्ताके द्वारा खुदाकी ओरसे प्राप्त सन्देशका क्रम पुनः किस प्रकार उपलब्ध हो सकता था.

जबराईल साथ महंमद, सो तो हुए बीच परदे ।
अब अदल कजा बीच दुनी के, कौन चलावे ए ॥ २१

जिब्रील फरिश्ता भी रसूल मुहम्मदके साथ ही अदृश्य हो गया. अब इस नश्वर जगतमें सत्यनिष्ठि न्यायके क्रमको आगे कौन चलाए !

रह्या अदल इस दिनलों, कहे हदीस महंमद ।
आगे अदल ना चल सके, याही लग थी हद ॥ २२

इसीलिए रसूल मुहम्मदने हदीसमें कहा, न्यायका यह क्रम यहीं पर पूर्ण हो गया. यह क्रम आगे नहीं चल सका. इस प्रकार यहीं तक न्यायका क्रम सीमित रहा.

पीछे जमाना रसूल के, पैदा होसी बलाए बतर ।
अदल न चलें तिनमें, एक रसूल बिगर ॥ २३

वहाँ पर यह भी कहा, रसूल मुहम्मदके पश्चात् परिस्थिति अधिक खराब होगी. इसलिए रसूल मुहम्मदके अभावमें न्यायका यह क्रम आगे नहीं चल सकेगा.

कह्या जमाना आवसी, झूठा और नुकसान ।
यार असहाबों कतल, तरवार उठसी जहान ॥ २४

रसूलने कहा था, भविष्यमें असत्यके कारण भारी हानि होगी. मेरे मानने वालोंमें मित्र भी परस्पर शत्रु बन जाएँगे. विश्वमें तलवार चलेगी और परस्पर हत्याएँ होंगी.

जब रसूल आवें फेर कर, खोलसी द्वार हकीकत ।
खतम है याही पर, होवे तबहीं अदालत ॥ २५

जब रसूल मुहम्मद पुनः प्रकट होंगे तभी तारतम ज्ञानके द्वारा वास्तविकताका बोध कराएँगे. उस समय कर्मकाण्ड (शराअ) के कालकी इतिश्री मानी जाएगी. तब जगतके जीवोंको सच्चा न्याय प्राप्त होगा.

सब बखतों कहे रसूल, अव्वल बीच आखर ।
कही कजा रसूल जुबांएं, करे सांच सबों पैगंमर ॥ २६

इस प्रकार सृष्टिके आरम्भसे लेकर मध्य तथा अन्त तक सभी अवसरों पर रसूलका होना बताया गया है. अन्तिम समयमें भी उन्हींके श्रीमुखसे न्यायकी बात होगी और वे सभी पैगम्बरों द्वारा कही हुई बातोंको सत्य सिद्ध करेंगे.

[इस सृष्टिमें परमात्माका सन्देश सदैव जगतमें आया है.. कयामतकी घड़ीमें यह सन्देश लेकर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी आए एवं उनके निर्देशानुसार श्री प्राणनाथजीने जगतके जीवोंको न्याय दिया.]

देखावें खोल मुसाफ दिल, सक कुफर उडावे सबका ।
कर कजा साफ अदल, सो पावे तौहीद राह ॥ २७

उस समय वे कुरानके सम्पूर्ण रहस्योंको स्पष्ट करेंगे एवं सबके हृदयकी भ्रान्तिको दूर करेंगे. सभीको सत्य पर आधारित न्याय प्रदान करेंगे जिससे सबको अद्वैत ब्रह्मकी प्राप्तिका मार्ग प्राप्त हो जाएगा.

कजा करे फजर कर, हकीकी अदालत ।
सबों दिलों करे अदल, दिल सूर महंमद मारफत ॥ २८

वे ब्रह्मज्ञानका प्रकाश फैला कर सत्य न्यायालयमें सबका न्याय करेंगे. इस प्रकार अन्तिम मुहम्मदके हृदयमें स्थित ब्रह्मज्ञानका सूर्य सब मनुष्योंके हृदयके अन्धकारको दूर कर उन्हें ब्रह्मधामका मार्ग प्रशस्त करेगा.

सब सय सिर महंमद की, आखर कही हिदायत ।
और छोटा बडा जो कोई, कही महंमद इमामत ॥ २९

इन अन्तिम मुहम्मदका उपदेश सबके लिए शिरोमणि अर्थात् मान्य माना जाएगा. इस नश्वर जगतमें छोटे बड़े सभी व्यक्तिको उनका ही मार्गदर्शन प्राप्त होगा.

नबियों सिर नबी कह्या, सिर पैगंमरों पैगंमर ।
आगे होए लेसी सब को, बीच बका पट खोल कर ॥ ३०

उनको ही नबियोंके शिरोमणि नबी तथा पैगम्बरोंके शिरोमणि पैगम्बर कहा

गया है. वे ही अग्रसर होकर अखण्डके द्वार खोलकर सबको परमधामकी पहचान कराएँगे.

पेहेले कबर से मैं उठूं, मेरे भाइयों की खातर ।
ज्यों काम करता हों अव्वल, त्यों करोंगा उठ आखर ॥ ३१

रसूल मुहम्मदने कहा था, मैं सर्वप्रथम मेरे भाइयोंके लिए कब्रसे उठूँगा अर्थात् शरीर धारण करूँगा. जैसे मैं अभी कार्य कर रहा हूँ उसी प्रकारके कार्य अन्तमें भी करूँगा.

मैं नजूम कह्या भाइयों वास्ते, पीछे कूच किया दूनी सें ।
सोई भाईयों आगे नजूम, आए खोलों मेरा मैं ॥ ३२

उन्होंने कहा, मैंने यह भविष्यवाणी अपने भाइयोंके लिए सङ्केतके रूपमें की है. अन्तमें आकर उन्हीं भाइयोंके लिए मेरे साङ्केतिक गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करूँगा. तदुपरान्त उन्होंने जगतसे प्रयाण किया.

रसूलें कह्या अबीजर कों, कहां रेहेता मेरा गम ।
कह्या मैं नहीं जानत, कहो रसूल अल्ला के तुम ॥ ३३

एक बार रसूल मुहम्मदने अपने हितैषी अबूजरसे पूछा, मैं किसकी चिन्तामें रहता हूँ ? तब अबूजरने उत्तर दिया, मुझे इसका ज्ञान नहीं है. आप अल्लाहके रसूल हैं, स्वयं यह बताएँ.

फेर कह्या रसूल ने, मेरा गम है भाइयों माहें ।
कहे अबीजर ऐसे भाई, सो क्या अब इत नाहें ॥ ३४

तब रसूलने पुनः कहा, मुझे मेरे भाइयोंकी चिन्ता है. तब अबूजरने पूछा, क्या आपके भाई इस समय यहाँ उपस्थित नहीं है ?

रसूल कहे आखर आवसी, कह्या क्यों पेहेचानों तिन ।
कहे बडी सिफत है तिन की, वाकी पेसानी रोसन ॥ ३५

इसके उत्तरमें रसूलने कहा, वे अन्तिम समयमें इस जगतमें अवतरित होंगे. तब अबूजरने पुनः पूछा, उनकी पहचान क्या होगी ? रसूलने उत्तर दिया, उनकी महिमा अद्भुत है. उनके मुख मण्डलमें अत्यधिक प्रकाश होगा.

तब अबूबकर यारों कह्या, क्या भाई न तुमारे हम ।
रसूल कहे भाई और हैं, यार हमारे तुम ॥ ३६

तब अबूबकर और उनके अन्य मित्रोंने रसूल मुहम्मदसे पूछा, क्या हम आपके भाई नहीं हैं ? उस समय रसूलने उत्तर दिया, मेरे भाई तो और ही हैं तुम मेरे मित्र हो.

जो हके इलम मोहे दिया, सो देसी इमाम भाईयों कों ।
बलाए दफे दुनी रिजक, सो भी हक करें वास्ते इनों ॥ ३७

रसूल मुहम्मदने यह भी कहा, खुदाने मुझे जो ज्ञान दिया है अन्तम समयमें इमाम प्रकट होकर मेरे भाइयोंको उसी प्रकारका जागृत बुद्धिका ज्ञान प्रदान करेंगे. वे दुनियाके दु:खों और विपत्तियोंका हरण कर उन्हें आत्मिक सम्पदा प्रदान करेंगे. परमात्मा मेरे इन भाइयोंके लिए ही यह व्यवस्था करेंगे.

बिन खुदी बिन गुमान, और साफ दिल ईमान ।
सरे दो साहेद चाहिए, ऐसे सिदक मुसलमान ॥ ३८

उनके अन्दर अहङ्कार तथा अभिमान नितान्त नहीं होगा. उनका हृदय पवित्र होगा एवं वे निष्ठावान होंगे. न्यायके समय जिन दो साक्षियोंकी आवश्यकता होती है वे मेरे भाई उसके लिए योग्य एवं सच्चे निष्ठावान माने जाएँगे.

ऐसे तो पाइए बीच फजर, जो अरस दिल कहे मोमिन ।
करें कजा मुसाफ ले, सो भी बीच गिरो इन ॥ ३९

ऐसे सत्यनिष्ठ मेरे भाई आत्मजागृतिके समयमें अवतरित होंगे. उनके हृदयको ही परमात्माका धाम कहा गया है. उस समय इसी समुदायके बीच प्रकट होकर परमात्मा सबका न्याय करेंगे.

तो कजा उतलों अटकी, ताही दिन बदल्या बखत ।
रसूल खडे थे ले सिदक, पीछे उठे फितुए आखरत ॥ ४०

रसूल मुहम्मदके पश्चात् न्यायका यह कार्य अब तक अवरुद्ध रहा. अब समय परिवर्तित होकर वही अवसर प्राप्त हुआ है. रसूल मुहम्मदने तो सत्यको ही शिरोधार्य किया था किन्तु उनके पश्चात् कयामत तक उपद्रवकी आग भड़क उठी.

पिछले सरे दीन मनसूख, सबों किए जो थे बीच रात ।
आए पैगंमर सब इत, कर दिन उडाई जुलमात ॥ ४१

रसूल मुहम्मदने अज्ञानमयी रात्रिमें जो कर्मके विधान बनाए थे उनको उन्होंने अन्तिम समयमें पुनः प्रकट होकर निरस्त कर दिया. अब सभी पैगम्बर ब्रह्मात्माओंके साथ प्रकट हो गए हैं. अन्तिम मुहम्मदने अज्ञारूपी अन्धकारको मिटा कर ब्रह्मज्ञानका प्रभात कर दिया.

ए सिपारे उनतीसमें, सब लिखे हैं सुकन ।
ए बेवरा करे लुदंनी, वारस जो अरस तन ॥ ४२

कुरानके उनतीसवें सिपारेमें इस प्रकारके वचनोंका उल्लेख है. कुरानके उत्तराधिकारी ब्रह्मात्माएँ ही तारतम ज्ञानके द्वारा इस प्रसङ्गका निरूपण कर सकतीं हैं.

सांचे साहेद इन उमतें, हक की कजा अदल ।
यों कजा महंमद जुबांएं, करें सिफायत अरस दिल ॥ ४३

इन्हीं ब्रह्मात्माओंके समुदायमें सच्चे साक्षी प्राप्त होंगे जिससे सच्चा न्याय कार्य सम्पन्न हो सकेगा. इस प्रकार अन्तिम समयमें अवतरित मुहम्मदकी वाणीसे सच्चा निर्णय होगा. वे ही धामहृदया ब्रह्मात्माओंकी अनुशंसा करेंगे.

एक दीन होसी याही से, द्वार खोले हकीकत ।
दिन देख सिपारे तीसरे, डूबी खुदी रात जुलमत ॥ ४४

वे स्वयं पारके द्वार खोलेंगे, तभीसे सभी लोग एक ही धर्ममें सम्मिलित होंगे. कुरानके तीसरे सिपारेमें इस प्रकार न्यायके दिनका वर्णन किया है. ब्रह्मज्ञानके इस दिनके प्रकट होने पर अज्ञान एवं भ्रमकी रात्रि तत्काल समाप्त हो जाएगी.

मैं मैं करता रात का अमल, कह्या गैर हक था नाबूद ।
सूर उगें मारफत सब मिले, हुआ सबों मकसूद ॥ ४५

कुरानके अनुसार स्वयंको सर्वश्रेष्ठ समझकर अज्ञानरूप अन्धकारमें

भटकनेवाले लोग वस्तुतः अस्तित्वहीन थे. अब ब्रह्मज्ञानके सूर्यका उदय होने पर वे सभी मिलकर अन्तिम मुहम्मदके पास चले आए. जिससे उन सबकी अभिलाषाएँ पूर्ण हुईं.

मोमिन नजीकी हक के, जाकों हकें दई विलायत ।
नूर पार जाकों वतन, करें आखर अदालत ॥ ४६

ब्रह्मात्माएँ परमात्माके अत्यन्त निकट हैं. उनको ही परमात्माने परमपद प्रदान किया है. जिनका मूल घर अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधाम है. वही ब्रह्मात्माएँ अन्तिम समयमें प्रकट होकर न्यायका कार्य करेंगी.

विलायत दई हकें इनको, यासों चीज पाइए इसलाम ।
तो हिजाब न आडे वजूद, हिजाब न आडे काम ॥ ४७

इन्हीं ब्रह्मात्माओंको परमात्माने परमपद प्रदान किया है. इनसे ही धर्मके प्रति होनेवाली निष्ठा प्राप्त होगी. इनके और परब्रह्म परमात्माके बीच न शरीरका और न ही अन्य व्यवहारका व्यवधान है.

हिजाब न रह्या बीच फकीरी, ऐसा हक इलम बेसक ।
यों नजीक खुदाए के, अदल कजा करे हक ॥ ४८

इन समर्पित ब्रह्मात्माओंको परमात्माने ऐसा सन्देह रहित ज्ञान प्रदान किया है कि उनके तथा परमात्माके बीच कोई भी आवरण नहीं रहा है. इस प्रकार ये ब्रह्मात्माएँ परमात्माके निकट रहकर सत्य पर आधारित न्याय करेंगी.

महामत कजा अदल, करें रसूल तीन सूरत ।
बसरिएं मांग्या जिदंनी इलम, कजा हकी सूरत जुबां कयामत ॥ ४९

महामति कहते हैं, इस प्रकार रसूल मुहम्मद द्वारा निर्दिष्ट ती स्वरूप ही जगतको सच्चा न्याय प्रदान कर सकेंगे. उनके अनुसार बशरी स्वरूपने जगतके न्यायके लिए ब्रह्मज्ञानकी माँग की तो हकी स्वरूपके ज्ञानसे नश्वर जगतके जीवोंको मुक्ति स्थलका सुख प्राप्त हुआ.

प्रकरण ६ चौपाई ४७७

मांगी रसूले रेहेमत, जिमी स्याम इमन ।
तब अरज करी आरबों, नबी दिया न जवाब तिन ॥ १

जब अरब देशमें विपत्तियाँ आने लगीं तब रसूल मुहम्मदने शाम और यमनकी ओर मुख कर खुदासे प्रार्थना की. हे परवरदिगार ! इस भूमिके प्रति कृपा करना. तब अरब वासियोंने पूछा, अरबमें क्या होने वाला है ? रसूलने इसका कोई उत्तर नहीं दिया.

फेर मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन कों ।
तब फेर अरज करी आरबों, क्या है बरारब मों ॥ २

रसूल मुहम्मदने पुनः शाम और यमनके लिए खुदासे दया माँगी. तब आरबोंने रसूलसे पुनः विनती की, अरबमें क्या होने वाला है जिससे आप वारंवार खुदासे कृपा माँग रहे हैं.

तब फुरमाया रसूलने, है फितना सोर तुम माहें ।
स्याम इमन जिमी बचोगे, और खैर काहूं नाहें ॥ ३

तब रसूलने कहा, अब तुम्हारे बीच उपद्रव होनेवाला है. उस समय शाम और यमनमें ही तुम्हारा जीवन सुरक्षित रहेगा इनके अतिरिक्त कोई भी स्थान भयमुक्त नहीं रहेगा.

सोए देखोगे जाहेर, मेरे पीछे बीच करन ।
सोई पातसाही यारों की, होसी फितना बीच खलीफन ॥ ४

मेरे जानेके बाद तुम प्रत्यक्ष देखोगे कि सङ्कटोंने तुम्हें घेर लिया है. मेरे मित्र कहलानेवाले खलीफाओंमें भी साम्राज्यके नेतृत्वके लिए कलहकी भावना उत्पन्न होगी.

रसूल खडे टेकरी पर, कह्या देखत यारो तुम ।
कह्या हक जाने या रसूल, जानत नाहीं हम ॥ ५

रसूल मुहम्मदने टेकरी पर खड़े होकर अपने मित्रोंसे कहा, अरे मित्रो ! तुम्हें

कुछ दिखाई दे रहा है. इसके प्रत्युत्तरमें उनके मित्रोंने कहा, हमें कुछ समझमें नहीं आ रहा है. आप जो पूछ रहे हैं इसे या तो खुदा ही जानते हैं या उनके सन्देशवाहक आप स्वयं जानते हैं.

कह्या रसूलें हदीसमें, ए जो सैतान का फितना ।
सो आवत बीच बरारब, मैं देखत हों इतना ॥ ६

हदीसोंमें ऐसा उल्लेख है कि तब रसूल मुहम्मदने कहा अब अरबमें दुष्टोंका कलह तीव्र गतिसे आ रहा है. मैं अभी यही देख रहा हूँ.

आवेगा वरसात ज्यों, छोडे ना कोई घर ।
मैं केहेता हों तुम देखियो, ऐसा होसी मुझ बिगर ॥ ७

यह कलह वर्षाकी भाँति आएगा. इससे कोई भी घर नहीं बचेंगे. मैं तुम्हें कह रहा हूँ. देखना, मेरी अनुपस्थितिमें ऐसी परिस्थिति आ जाएगी.

कह्या मेरी उमत में, उठेगी तरवार ।
सो रहेसी लग आखर, ऐसा होसी बखत ख्वार ॥ ८

उन्होंने पुनः कहा, मेरे ही समुदायके लोगोंमें परस्पर तलवारें चलेंगी. ऐसा कठिन समय आएगा कि वह कलह कयामतके समय तक बना रहेगा.

और कह्या बीच हदीस के, मेरे पीछे होसी इमाम ।
मैं डरता हों तिन से, गुम करसी गिरो तमाम ॥ ९

हदीसमें यह भी उल्लेख है कि रसूलने पुनः और भी कहा, मेरे पीछे धर्मका नेतृत्त्व करने वाले जितने भी इमाम आएँगे वे सभी लोगोंको धर्ममार्गसे विचलित करेंगे. मुझे उनसे बड़ा डर लग रहा है.

दुनियां भी ऐसी होएसी, दिल इबलीस सैतान ।
वजूद होसी आदमी, दिल कहूं न पाइए ईमान ॥ १०

जगतके लोग भी एसे होंगे जिनके हृदयमें दुष्ट इब्लीसका साम्राज्य होगा. मात्र उनकी आकृती ही मनुष्यकी भाँति दिखाई देगी, उनके हृदयमें लेश मात्र भी विश्वास नहीं होगा.

नाम मेरा चलावसी, कहेंगे तरीका महंमद ।
सुंनत जमात कौल तोड के, जुदे पडसी कर जिद ॥ ११

वे मेरे ही नामकी आड़में अपना मत चलाएँगे और कहेंगे कि यही मुहम्मदका मार्ग है. ऐसे प्रतिकूल समयमें धर्मनिष्ठ कहलानेवाले लोग भी मेरे वचनोंसे हटकर हठपूर्वक अलग हो जाएँगे.

केहेसी हम सुंनत जमात हैं, राह छोडसी बीच की असल ।
मेरा तरीका छोड के, चलसी अपनी अकल ॥ १२

उस समय वे लोग यही कहेंगे कि हम ही धर्मनिष्ठ समुदायमें हैं. किन्तु वे मूलमार्गसे विचलित होंगे एवं मेरी रीतिको छोड़कर अपनी ही बुद्धिके अनुसार चलेंगे.

जब हुए हिजाबमें रसूल, तबहीं खतरा पड्या बीच यार ।
तबहीं आया बीच फितना, पडी जुदागी बीच चार ॥ १३

इस प्रकार जब रसूल मुहम्मदने अपना शरीर छोड़ा तभीसे उनके चारों मित्रों(अली, अबूबकर, उमर, और उस्मान) के बीच सङ्कट छा गया. उसी समय उपद्रव आरम्भ हुआ जिससे चारों मित्र अलग-अलग हो गए.

सफर बखत रसूल के, तीन हुए न खबरदार ।
बखत गये आए खडे, लगे करने और बिचार ॥ १४

रसूल मुहम्मदके शरीर छोड़नेके समयमें अलीको छोड़कर अन्य तीन मित्र सावचेत(उपस्थित) नहीं रहे. समय बीत जाने (रसूल मुहम्मदके शरीर छोड़ने) पर वहाँ पर उपस्थित हुए और विचार करने लगे.

अली आए खडा कबर पर, काढ के जुल्फिकार ।
कह्या न छोडोंगा किनको, आइयो होए हुसियार ॥ १५

उन तीन मित्रोंको रसूल मुहम्मदकी कब्रकी ओर आते देखकर अली तलवार निकालकर खड़ा हो गया. उसने कहा, मै किसीको जीवित नहीं छोडूँगा. सावधान होकर इस ओर चले आना.

तब चारों अपने हुए, हुआ फितना बीच जोर ।
सफर पीछे रसूल के, दिन दिन बाढ्या सोर ॥ १६

तब ये चारों अभिन्न मित्र परस्पर कलह करने लगे जिससे बड़ा उपद्रव आरम्भ हुआ. इस प्रकार रसूल मुहम्मदके जानेके बाद दिनों-दिन झगडा बढ़ता गया.

अब देखो दिल विचार के, कैसा बीच पड्या इनमें ।
ऐसी दुनी दोस्ती भी ना करे, जैसी हुई जमात सें ॥ १७

अब हृदयपूर्वक विचार करके देखो. रसूल मुहम्मदके इन मित्रोंमें ही परस्पर कैसा कलह आरम्भ हो गया है. नश्वर जगतके मित्र भी परस्पर ऐसा व्यवहार नहीं करते जैसा रसूल मुहम्मदके अनुयायी मित्रोंने किया है.

तीन यारों के जुदे हुए, करके बीच करार ।
हमहीं सुंनत जमात हैं, खासी उमत खासे यार ॥ १८

तीनों मित्र अलग-अलग हो गए और सबने अलग समुदाय बनाया एवं कहने लगे, हम ही धर्मनिष्ठ समुदायमें है और हम ही रसूलके सच्चे मित्र हैं.

इतथें अली के जुदे हुए, बैठे फितने किया पसार ।
कै हुइयां लडाइयां जमातमें, कै कतल किए तरवार ॥ १९

अब यहींसे अलीको मानने वाला समुदाय भी अलग हो गया. उसके समुदायमें भी दुष्ट इबलीसने इतना उपद्रव मचाया कि परस्पर अनेक झगड़े हुए और तलवारके द्वारा अनेक हत्याएँ हुई.

लेने कों बुजरकियां, जमात मारी समसेर ।
मारे मराए यार असहाबों, ऐसा फितने किया अंधेर ॥ २०

समाजमें प्रतिष्ठा प्राप्त करनेके लिए अपने ही समुदायके लोगोंको युद्धकी आगमें झोंककर मौतके घाट उतार दिया. इस प्रकार रसूल मुहम्मदके मित्रोंने ही दूसरेको मारा अथवा मरवाया. ऐसा उपद्रव हुआ कि चारों ओर अन्धकार छा गया.

कोई न छोड्या घर आरब, बीच फितना हुआ सबमें ।
कह्या हदीसों सोई हुआ, सबुर न किया किननें ॥ २१

इतने बड़े उपद्रव हुए कि इनकी आगकी लपेटसे अरबके कोई भी घर नहीं बचे. हदीसोंमें रसूल मुहम्मदने जैसा कहा था वैसा ही हुआ उनके अनुयायियोंमें किसीने भी धैर्य धारण नहीं किया.

ए सब फुरमाया हुआ, देखो आयतों हदीसों विचार ।
सो आए सदी लग आखरी, आई किबले से पुकार ॥ २२

कुरानकी आयतों तथा हदीसोंमें विचारपूर्वक देखो, जिस प्रकार रसूल मुहम्मदने भविष्यवाणी की थी उसी प्रकारकी घटनाएँ घटती गई. यह उपद्रव ग्यारहवीं सदी तक चलता रहा. इसी समय उनके पूज्य स्थान मक्कासे पुकार आई अर्थात् चार वसीयतनामे भारत वर्षमें आए.

ए नीके दिल विचारियो, माएना हदीसों आखरत ।
फसल आई अरसों भिस्तों की, हुआ दिन हक बका मारफत ॥ २३

हदीसमें निर्दिष्ट अन्तिम समयके इन वचनोंको हृदयपूर्वक विचार करो. अब अन्तिम समयमें ब्रह्मज्ञानका सूर्य उदय होने पर सभी जीवोंको मुक्तिस्थलोंका सुख प्राप्त होनेका अवसर उपस्थित हुआ है.

महामत कहें ऐ मोमनों, कही फितने की हकीकत ।
अब कहूं सातों निसान, जिन पर मुदा क्यामत ॥ २४

महामति कहते हैं, है ब्रह्मात्माओ ! मैनें तुम्हें उपद्रवकी बातें बताई है. अब मैं सात सङ्केतोंका वर्णन कहता हूँ. जिन पर आत्मजागृतिके समयका दायित्त्व है.

प्रकरण ७ चौपाई ५०१

बाब चारों निसानका-दाभातल अर्ज

आए लिखे बडी दरगाहसे, इसलाम के खलीफों पर ।
उठी बरकत मुसाफ सफकत, दुनी हुई ईमान बिगर ॥ १

मुस्लिमोंके विशेष पूज्य स्थल (मक्का) से वहाँके काजियोंने इस्लामधर्ममें

प्रतिष्ठित औरङ्गजेबके पास कुछ वसीयतनामे भेजे. उनमें यह उल्लेख था कि मक्कासे बरकत, कुरान, फकीरोंकी दुआएँ (शफकत) तथा विश्वास उठ गया है. यहाँके सभी लोगोंमें कुरानके प्रति श्रद्धा नहीं रही है.

बाकी रह्या क्या इसलाममें, जब हक मता लिया छीन ।
सो लिखे सखत सौं खाएके, उठ्या हमसे नूर झंडा यकीन ॥ २

जब इस्लामकी ये सारी सम्पदा उठा ली गई तो मक्कामें शेष क्या बचा ? उन्होंने कसम खाकर यह भी लिखा कि मक्कासे श्रद्धा और विश्वासका प्रकाशमय ध्वज भी उठ गया है.

निसान लिखे क्यामत के, होसी जाहेर दाभा जिमी सें ।
जब नूर झंडा हादी ले गए, बाकी रही हैवानी जिमीमें ॥ ३

हदीस ग्रन्थोंमें कयामतके समयके सङ्केतोंमें इस प्रकार उल्लेख है कि उस समय दाभातुलअर्ज नामक एक पशु प्रकट होगा.. वस्तुतः वह समय आ गया है. जब श्रद्धा और विश्वासका प्रकाशमय ध्वज ही जिब्रील फरिश्ता भारत ले आया तो उस भूमिमें केवल पाशविक प्रवृति ही शेष रह गई.

ए निसान बातून अव्वल कहे, सो मिले सब आए ।
पर मुसाफ हकीकत जो खुले, तो आंखों देख्या जाए ॥ ४

रसूल मुहम्मदने आरम्भमें ही कयामतके जिन सङ्केतोंका उल्लेख किया था वे सब प्रत्यक्ष दिखाई देने लगे. किन्तु कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट होने पर ही ये सङ्केत आँखोंसे देखे जा सकते हैं.

सेर छाती पीठ गीदड, मुरग गरदन हाथी कान ।
सिर सींग तीखे आंखें सुअर, ए कह्या मुंह आदमी बिना ईमान ॥ ५

दाभातुलअर्ज नामक पशुके सम्बन्धमें इस प्रकारका उल्लेख है कि उसका वक्षस्थल सिंहकी भाँति (निर्दयी) होगा, पीठ गीदड़की भाँति (कमजोर) होगी, ग्रीवा(गर्दन) मुर्गकी भाँति (न झूकने वाली, अभिमानी) होगी, कान हाथीकी भाँति (किसीकी भी बात न सुनने वाले) होंगे, उसके तीक्ष्ण सींग (कठोर वाणी) होंगे, आँखों सुअरकी भाँति (मात्र दोषोंको ही देखने वाली) होंगी, मात्र उसकी आकृति ही मनुष्यकी जैसी होगी किन्तु उसमें नाम मात्रका

भी विश्वास नहीं होगा.

[कुरानमें उल्लेख है कि कयामतकी घड़ीमें दाभातुल अर्ज नामक पशु प्रकट होगा जिसके उक्त प्रकारके लक्षण होंगे. मात्र आकृतिसे ही वह मनुष्य जैसा होगा. इसका स्पष्टीकरण करते हुए श्री प्राणनाथजीने कहा, वस्तुतः ऐसा पशु प्रकट नहीं होगा. अधर्मके बढ़ जाने पर मनुष्योंकी वृत्ति पशुओंकी जैसी होगी वे मात्र मनुष्यकी आकृतिमें होंगे किन्तु उनका स्वभाव नितान्त पशु जैसा होगा.]

सब अंग कहे हैवान के, और मुंह कह्या इनसान ।
होसी गए यकीन ए तबीयतें, ए देखो खुलासे निसान ॥ ६

इस प्रकार दाभातुलअर्जके सभी अङ्ग पशुके बताए गए, मात्र मुखाकृति ही मनुष्यकी कही गई. कुरानके इन गूढ़ रहस्योंको तो देखो. जब मनुष्यके हृदयसे श्रद्धा एवं विश्वासका लोप हो जाएगा तभी उसमें इस प्रकारके गुण आ जाएँगे.

दाभातल का निसान, ए देखो दिल धर ।
इनका तालिब न देखे इने, माएने खोले बिगर ॥ ७

दाभातुलअर्जके ये चिन्ह हैं, इनको हृदयपूर्वक विचार करके देखो. हदीसोंमें वर्णित इस कथानकके रहस्यको समझे बिना इसके अर्थके जिज्ञासु मुसलमान भी इसका तात्पर्य समझ नहीं पाएँगे.

जानवर तो ए है नहीं, लिखी हैवानी तबीयत ।
तो कह्या तालिब न देखसी, दुनी दाभा आखरत ॥ ८

वास्तवमें इस प्रकारका कोई पशु तो हो ही नहीं सकता. यह तो मनुष्यके पाशविक स्वभावके लिए लिखा गया है. इसीलिए सामान्य लोग इस तात्पर्यको समझ नहीं पाएँगे कि आत्मजागृतिके समय तक संसारके लोगोंकी वृत्ति पशुतुल्य होगी.

दाभा गधासों निसबत, एहेल जिमी दुनी जे ।
बिन यकीन बिन मुसाफ, कही जिमी जाहेर दाभा ए ॥ ९

दाभा नामके इस पशुका सम्बन्ध गधेसे है. ऐसे पशुवृत्तिवाले मनुष्य इस

पृथ्वीके उत्तराधिकारी हैं. धर्मग्रन्थ तथा परमात्माके प्रति विश्वास न रखनेवाले ऐसे पशुतुल्य मनुष्य ही यहाँ पर प्रकट रूपमें दिखाई दे रहे हैं.

हैवान अकल दाभा जिमी, होसी लोक जाहेर सिफली के ।
सो दाभा ताबें दजाल के, देखो निसान खुलासे ॥ १०

इस पृथ्वी पर परमात्माके प्रति विश्वास न रखनेवाले मनुष्योंकी बुद्धि इस दाभाकी जैसी पाशविक हो जाएगी. वह दाभा भी दज्जालके अधीन रहेगा. इस प्रकार कुरानआदि धर्मग्रन्थोंमें स्पष्ट उल्लेख किया है.

दुनी कही सिफलीय की, तिन जिमी न छोडी जाए ।
ज्यों जीव खारे का खारे जल, त्यों मीठे का मीठे समाए ॥ ११

इस नश्वर जगतके मिथ्याभिमानी मनुष्य जगतकी नश्वरताको छोड़ नहीं सकते हैं. जिस प्रकार खारे जलके जीव खारे जलको एवं मीठे जलके जीव मीठे जलको छोड़ नहीं सकते हैं.

बांएं हाथ आसा मूसे का, हाथ दांहिने मोहोर सलेमान ।
मोहोर करसी पेसानी जिनकी, मुंह उजल तिन रोसन ॥ १२

कुरानमें यह भी उल्लेख है कि अन्तिम समयमें जब इमाम महदी प्रकट होंगे तब उनके बायें हाथमें मूसा पैगम्बरकी लाठी होगी एवं दायें हाथमें सुलेमानके नामकी मुद्रा होगी. जिनके मस्तक पर वे इस मुद्रासे स्पर्श कर देंगे उसका ललाट उज्ज्वल होगा एवं मुखमण्डल प्रकाशित होगा.

स्याह मुंह होसी तिन का, आसा चुभावे जिन ।
उज्जल स्याह मुंह अपने, केहेसी रात और दिन ॥ १३

जिसके मुख पर वे मूसा पैगम्बरकी लाठीसे स्पर्श करेंगे उसका मुख काला होगा अर्थात् उसके हृदयकी कलुषता मुख पर झलकने लगेगी. यह उज्ज्वलता ज्ञानरूपी प्रकाशयुक्त दिनके भावको प्रकट करेगी एवं कलुषता अज्ञानमयी रात्रिके भावको प्रकट करेगी.

स्वाल किए इत जाहेरी, मोहोर आसा होसी दिल रूए ।
बाहेर स्याह मुंह उजले, क्यों कर देखे कोए ॥ १४

बाह्यार्थ ग्रहण करने वाले लोगोंने रसूल मुहम्मदसे प्रश्न किया, इस प्रकार

मुद्रा एवं दण्डका स्पर्श होने पर उनके हृदयमें उज्ज्वलता या कलुषता होगी तो उससे उनके बाह्यामुखकी उज्ज्वलता या मलीनताको कैसे देखा जा सकेगा ?

मोमिन कहे सुन मुसलिम, भिस्त दोजक होसी सो भी दिल ।
आग भिस्त ना इस्मतें, बाहेर मुंह छिपे स्याह उजल ॥ १५

इसके उत्तरमें रसूल मुहम्मद (मोमिन)ने कहा, हे मुस्लिमो ! सुनो, उज्ज्वल मुख वालोंको बहिश्त मिलना और मलीन मुख वालोंको नरक प्राप्त होना यह भी उनके हृदयके भावसे ही ज्ञात होता है. नरककी अग्नि एवं बहिश्तोंका सुख नामके द्वारा नहीं जाने जाएँगे. अन्तर्हृदयकी उज्ज्वलता या मलीनता दोनों ही (बाह्य) मुखके भावमें छिपी रहतीं हैं.

कह्या सूरत बाहेर बदले, जब दिल दई आग लगाए ।
सो बाहेर फैल करे कै विध, सके न कोई छिपाए ॥ १६

जब हृदयमें पश्चातापकी अग्नि लग जाती है तो बाहरकी मुखाकृति स्वतः बदल जाती है. बाह्यरूपमें भला अनेक प्रकारसे दिखावा क्यों न करें किन्तु अन्तरके भावको छिपाया नहीं जा सकता.

अपनें हाथ मुंह अपना, मोहोर करे क्यों कर ।
स्याह मुंह भी कहे हाथ इन, क्यों सब मुदा कह्या इन पर ॥ १७

वे अपने ही हाथसे अपने मुख पर मुद्रा अङ्कित कर उसे कैसे उज्ज्वल बनाएँगे तथा दण्ड स्पर्श कर उसे कैसे मलीन बनाएँगे ? सब कुछ इन्हीं पर कैसे निर्भर हो सकता है ?

छिपी बातें थी दिलमें, ए देखो जाहेर करी पुकार ।
जोस दे न हादी का छिपने, या जीत या हार ॥ १८

बाह्य दृष्टिवाले लोगोंके हृदयमें जो भाव छिपे हुए थे उनको अन्तिम समयमें प्रकट हुए परमात्माने अपने जोश द्वारा प्रकट कर दिया है. सद्गुरुका ज्ञान ऐसे लोगोंके हृदयके भावको छिपने नहीं देगा भले उनकी जगतमें जीत हो या हार हो.

एही दाभा दुनी सिफली, सब केहेसी अपने मुख ।
जो जैसा तैसा तिनों, छिपे न आखर दुख सुख ॥ १९

स्वयंको चतुर माननेवाले लोगोंकी पशुवृत्ति यही है कि वे अपने अन्तरकी बातें स्वयं प्रकट करेंगे. जिन्होंने जैसा किया है वे अपने सुख-दुःखकी बातें स्वयं कहेंगे क्योंकि अन्तिम समयमें कोई भी अपने भावोंको छिपा नहीं पाएगा.

जब एही बातून जाहेर हुआ, पेहेचान पोहोंची माहें सब ।
सब एक हैयातीय का, करसी सेजदा तब ॥ २०

जब ये गूढ़ रहस्य स्पष्ट हो जाएँगे तब सभीको परब्रह्म परमात्माकी पहचान हो जाएगी. उस समय सभी लोग एक अद्वैत परमात्माको ही नमन करेंगे.

दजाल का निसान

कह्या दजाल अस्वार गधे पर, काना आंख न एक ।
हक को न देखे आंख जाहेरी, रूह नजर न बातून नेक ॥ २१

हदीसोंमें उल्लेख है, अन्तिम समयमें गधे पर सबार होकर दज्जाल आएगा. जिसकी एक आँख नहीं होगी. इसका तात्पर्य यह है कि नास्तिकतारूपी दज्जाल लोगोंके हृदयमें प्रकट होगा. जिससे परमात्माको देखने वाली मनुष्यकी आँख(आत्मदृष्टि) नहीं होगी. उनकी मात्र बाह्यदृष्टि ही होगी.

अजाजील काना तो रानीया, जो बातून नजर करी रद ।
देख्या उपली आंख सों, आदम वजूद गलद ॥ २२

अजाजील फरिश्ताको एकाक्ष (काना) कह कर इसलिए तिरस्कृत किया कि उसकी आत्मदृष्टि नहीं थी. उसने मात्र बाह्यदृष्टिसे ही आदमके पाञ्चभौतिक शरीरको देखा.

गधा बडा दजाल का, कह्या ऊंचा लग आसमान ।
पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रांन ॥ २३

कुरानमें दज्जालके वाहन गधेको इतना बड़ा एवं ऊँचा बताया है कि वह ऊँचे आकाशको भी स्पर्श करता है. सात समुद्रोंका जल भी उसकी जाँघ

तक नहीं पहुँचता है.

गधा एता बडा तो है नहीं, कह्या हवा तारीक मकान ।
ए जो कुंन केहेते पैदा हुई, सिफली दुनी जहान ॥ २४

वास्तवमें गधा तो इतना बड़ा हो नहीं सकता. शून्य-निराकारसे उत्पन्न हुई अज्ञानमय सृष्टि ही इस रूपमें कही गई है जो परमात्माके द्वारा 'हो जा' (कुन) कहने मात्रसे उत्पन्न हुई है. इसलिए इस जगतके जीवोंकी मात्र बाह्यदृष्टि है अर्थात् वे एकाक्ष हैं.

नातो एता बडा गधा, होसी कैसा कद दजाल ।
सो दजाल गधा जब गिर पडे, तले दुनी रेहेसी किन हाल ॥ २५

अन्यथा इतना बड़ा गधा होता तो उस पर आरोहण करनेवाले दज्जालका कद कितना बड़ा होना चाहिए. यदि दज्जाल एवं गधा दोनों जमीन पर गिर पड़ेंगे तो उस समय इस दुनियाँकी स्थिति कैसी होगी ?

लानत जो अजाजील की, ले इबलीस बैठा दिल ।
सो राह न लेने देवे बातून, जो जोर करें सब मिल ॥ २६

एक अजाजील धिक्कारा गया था. किन्तु उसके फलस्वरूप सभी लोगोंके हृदयमें दुष्ट इब्लीसने अपना साम्राज्य जमाया है. इसीलिए वह इन लोगोंको सन्मार्ग पर चलने नहीं देता. चाहे वे सब मिलकर अनेकों प्रयत्न क्यों न करें.

सोई दाभा या गधा दजाल, इबलीस दिलों पातसाह ।
सो दुनी आंख फोडी दुसमने, लेने देवे न बातून राह ॥ २७

इस जगतके सभी मनुष्योंके हृदय पर दुष्ट इब्लीस साम्राज्य जमा रहा है. उसे दाभा कहें अथवा दज्जालका गधा कहें, इस दुष्ट इब्लीसने दुनियाँकी एक आँख फोड़ दी है जिससे (अन्तर्दृष्टिके अभावमें) वे गूढ़ रहस्योंको समझ नहीं पाते हैं.

नातो लानत जो अजाजील की, सो दुनी को लगे क्यों कर ।
सो वास्ते ताबे दजाल के, हुई बातून आंख बिगर ॥ २८

अन्यथा भर्त्सना तो अजाजीलकी हुई है उसके फल स्वरूप जगतके सभी

प्राणियोंको क्यों धिक्कारा जाए ? उसका कारण यही है कि वे सब दज्जालके अधीन होनेसे आत्मदृष्टिसे रहित हैं.

दुनी सेजदा न किया, रूह महंमद आदम पर ।
इन भी देख्या वजूद को, ना खोले बातून नजर ॥ २९

इसीलिए इस जगतके मानवोंने भी मनुष्यके रूपमें अवतरित श्री श्यामाजीकी आत्माको नहीं पहचाना और उन्हें प्रणाम नहीं किया. उनकी अन्तर्दृष्टि खुली हुई न होनेके कारण उन्होंने मात्र उनके बाह्य शरीरको ही देखा.

तो हुआ दिलों पर पातसाह, सोई राह चलावत ।
जिन राह चलते इबलीस कों, दूर किया दे लानत ॥ ३०

ऐसा इसीलिए हुआ कि सभी लोगोंके हृदय पर दुष्ट इब्लीसका साम्राज्य है. वही उनको पथभ्रष्ट कर उस मार्ग पर चलाता है जिस पर चलते हुए उसे भर्त्सना मिली थी और वह निकाला गया था.

इन विध लगी लानत, अजाजील की दुनी कों ।
जैसी हुई सिरदार से, हुई तैसी ताबे हुए सों ॥ ३१

इसी कारण नश्वर जगतके जीवोंको भी अजाजीलको मिली हुई भर्त्सना प्राप्त हुई. उनके शिरोमणि अजाजीलकी जो स्थिति हुई है उसके अधीन रहनेवालोंकी भी वही दशा हुई है.

सिपारे उनईस में, कह्या निकाह आदम हवा ।
सो पसरी बीच दुनीमें, इत इबलीस जो पैदा ॥ ३२

कुरानके उन्नीसवें सिपारेमें आदम और हव्वाके वैवाहिक सम्बन्धका उल्लेख है. सबके हृदयमें इब्लीसके उत्पन्न होनेके कारण यह प्रथा सर्वत्र फैल गई अर्थात् सभी लोग माया (हव्वा) से सम्बन्ध रखने लगे.

जेता कोई बुनी आदम, कह्या निकाह इबलीस सें ।
कह्या दुनी बीच इबलीस, लोहू ज्यों तनमें ॥ ३३

इस जगतमें जितने भी आदमके वंशज हैं उन सबका सम्बन्ध दुष्ट इब्लीसके

साथ हो गया है. इसीलिए कुरानमें यह कहा गया है कि शरीरमें रक्तकी भाँति इस नश्वर जगतमें इब्लीस व्याप्त है.

कह्या वजूद होसी आदमी, सैतान अमल दिल पर ।
दुनी होसी इन विध की, कहे बीच हदीस पैगंमर ॥ ३४

इस नश्वर जगतके लोगोंकी यह स्थिति है कि उनका शरीर तो मनुष्यका है किन्तु हृदय पर दुष्टका शासन है. रसूल पैगम्बरने हदीसमें यह बात कही थी कि दुनियाँकी यह स्थिति होगी.

दोऊ तरफों कह्या पेटमें, और दुनी हाथ बीच दोए ।
इन विध रहे बीच आदम, याको किन विध मारे कोए ॥ ३५

यह भी कहा है कि यह दुष्ट इब्लीस दुनियाँके पेटमें घुस गया है और अन्दर एवं बाहर दोनों ओरसे उनको अधीनस्थ कर बैठा है. मनुष्यके अन्दर इस प्रकार पैर जमाए हुए इब्लीसको मार कर कौन भगा सकता है?

[मनुष्यके अन्दर घुसा हुआ इब्लीसका तात्पर्य है कि मानवोंके हृदयमें स्थित नास्तिकता अन्दरसे विचारोंके रूपमें तथा बाहरसे आचरणके रूपमें मनुष्यको अधीनस्थ करती है.]

कह्या पैदा आदम हवा से, याकी असल बिध इन ।
सो बाहेर ढूंढे माएना जाहेरी, बिना मगज सुकन ॥ ३६

ऐसा कहा गया है कि यह दुनियाँ आदम और हव्वासे उत्पन्न हुई है. इनकी उत्पत्ती ही झूठसे है इसलिए ये बाह्य दृष्टिवाले लोग आन्तरिक रहस्योंको समझे बिना दुष्ट इब्लीसको भी बाहर ढूँढ रहे हैं.

और हदीसमें यों कह्या, दुनी राह देखे जाहेर दजाल ।
माएना न पावें ढूंढे जाहेर, कहे हम लडसी तिन नाल ॥ ३७

हदीसमें यह भी उल्लेख है कि यह दुनियाँ दज्जालको बाहर ढूँढ रही है. यहाँके लोग यह कहते हैं कि वह आएगा तो हम उसके साथ युद्ध करेंगे इस प्रकार वे इन वचनोंके गूढ़ रहस्योंको समझे बिना दज्जालको बाहर ढूँढ रहे हैं.

सोई सूरत धूआं दजाल, दुनी तिन दई उरझाए ।
मुसाफ बरकत ईमान बिन, छूटी आखर हक हिदायत ताए ॥ ३८

दज्जालका स्वरूप धुआँकी भाँति कहा गया है. (वस्तुतः यह अज्ञानरूपी अन्धकार है) जिससे दुनियाँ उलझी हुई है. वस्तुतः विश्वास न होनेके कारण कुरानका महत्त्व भी लुप्त हो गया और लोग परमात्माके निर्देशनोंसे भी वञ्चित होने लगे.

कयामत फल जिनसों गया, उलट बलाए लगी आए ।
आग नजर आई दोजक, रही बद फैल देहेसत भराय ॥ ३९

यही कारण है कि कयामतके समय प्राप्त होनेवाला फल (मुक्तिस्थलका सुख) भी उनके हाथोंसे छूट गया. उनकी दृष्टिमें नरककी अग्नि ही दिखाई देने लगी और अपने अशुभकर्मोंका भय उन्हें व्यथित करने लगा.

धूआं करे मार दिवाना, कह्या ऐसे ही ईमान बिन ।
छूटी मुसाफ नसीहत बरकत, तब ऐसा क्यों न होए हाल तिन ॥ ४०

जिस प्रकार धुआँ व्याप्त होने पर मनुष्यको कुछ सूझता नहीं है उसी प्रकार विश्वासविहीन मनुष्यको भी किसी प्रकारकी सुधि नहीं होती है. जिन लोगोंसे अपने धर्मग्रन्थ कुरान, उसके प्रति विश्वास एवं उसका निर्देशन छूट गया है तब उनकी यह स्थिति क्यों नहीं होगी ?

कहे इबलीस मैं घेरोंगा, राह मारों तरफ चार ।
वह जाने लई राह दीन की, इन बिध देऊं राह मार ॥ ४१

इब्लीसने यही सङ्कल्प लिया था कि धर्मके मार्ग पर चलनेवाले लोगोंको चारों ओरसे घेरकर मार डालूँगा. मैं उनकी बुद्धिको इस प्रकार भ्रमित करूँगा जिससे वे अधर्मके मार्ग पर चलते हुए भी यही समझेंगे कि हम धर्मका ही मार्ग ले रहे हैं.

ढूंढें जाहेर निसान जाहेरी, सो तो कहे कयामत के दिन ।
जो कोई तावें दजाल के, ताए रूह आंख नहीं बातन ॥ ४२

इस जगतके बाह्यदृष्टिवाले लोग कयामतके समयके लिए दिए गए सङ्केतोंको

भी प्रकट रूपमें देखना चाहते हैं. वस्तुतः जो दज्जालके अधीन हैं उनकी अन्तर्दृष्टि नितान्त नहीं है.

सिपारे चौबीस में, बडी साहेबी दज्जाल ।
पोहोंचे दरीयाव जंगलों, चले याके फिरके नेहेरें मिसाल ॥ ४३

कुरानके चौबीसवें सिपारेमें दज्जालकी अत्यधिक प्रभुताका उल्लेख हुआ है. वह इतना बड़ा है कि उसका विस्तार अज्ञानताकी बड़ी-बड़ी नदियों तथा वनोंके रूपमें फैला हुआ है. इस जगतमें जितने भी भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय हैं वे इसीसे प्रवाहित होती हुई नहरोंकी भाँति हैं.

जो लिख्या अव्वल ताले मिने, सोई दुनी से होए ।
और बात फुरमाए बिना, क्यों कर करे कोए ॥ ४४

परमात्माने पहलेसे ही जिसके भाग्यमें जो लिख दिया है उसी प्रकारका कार्य यहाँके जीवोंसे हो रहा है. वस्तुतः परब्रह्म परमात्माके आदेशके बिना कोई भी प्राणी कर भी क्या सकता है ?

सूरज मगरब का निसान

कह्या मगरब सूरज, दुनियां के दिल पर ।
नाहीं रोसनी तिनमें, तब होसी बखत आखर ॥ ४५

हदीसोंमें ऐसा उल्लेख है कि पश्चिम (मक्का) के लोगोंके हृदयमें सूर्य उदय होगा उसमें प्रकाश नहीं होगा तब समझना कि कयामतका समय आ गया है.

सूरज ऊग्या मगरब दिलों, कह्या रोसन नाहीं तित ।
तो अकस सूरज की अंधेरी, सो गया ईमान रही जुलमत ॥ ४६

हदीसोंके कथानकके अनुसार पश्चिमी देशोंके निवासियों अर्थात् मक्काके रहनेवाले मनुष्योंके हृदयमें सूर्यका उदय होगा किन्तु उसमें प्रकाश नही होगा इसका तात्पर्य यह है कि वहाँके लोगोंके हृदयमें जो ज्ञानरूपी सूर्य था वह उनके विश्वासके अभावमें अज्ञानरूपी अन्धकारके रूपमें परिणत हो गया.

रोसन बिना सूरज कह्या, ऊग्या दिलों पर जे ।
सो आई पुकार मगरब से, देखो निसान जाहेर हुए ए ॥ ४७

हृदयमें प्रकाश रहित सूर्यका उदय होना कहा गया है. जब मक्का आदि धर्मस्थानोंमें लोगोंके हृदयमें अज्ञानरूपी अन्धकार छा गया तब वहाँसे वसीयतनामाके रूपमें पुकार आई. देखो, कयामतके समयके सङ्केत प्रकट हो गए हैं.

ए कह्या रसूलें इसारतों, ऐसा होसी बखत आखर ।
मता ले जासी जबराईल, तब रेहेसी अंधेरी दिलों पर ॥ ४८

रसूल मुहम्मदने पहले ही साङ्केतिक रूपमें कहा था कि कयामतके समय पर ये चिह्न प्रकट होंगे. उस समय जिब्रील फरिश्ता मक्कासे सम्पूर्ण दैवत उठाकर ले जाएगा. तब वहाँके लोगोंके हृदयमें मात्र अज्ञानरूपी अन्धकार ही छाया हुआ रहेगा.

कह्या सूरज होसी मगरब का, तिनमें नहीं रोसन ।
होसी गुलबा जोर दजाल का, तब ईमान न रेहेसी किन ॥ ४९

इसीलिए कहा कि पश्चिमसे सूर्यका उदय होगा उसमें प्रकाश नहीं होगा. जब वहाँ पर दज्जालका प्रभाव बढ़ने लगेगा तब वहाँके रहनेवाले लोगोंके हृदयमें विश्वास नहीं रहेगा.

जाहेरी देखें सूरज जाहेर, अजूं मगरब ऊग्या नांहें ।
देखें न माएना अंदर, कह्या रोसनी नहीं तिन मांहें ॥ ५०

बाह्य दृष्टिवाले लोग प्रकट सूर्यको देखना चाहते हैं और कहते हैं कि वह अभी तक पश्चिम दिशासे उदय नहीं हुआ है. वास्तवमें वे गूढ़ अर्थको ग्रहण नहीं करते हैं जिसमें कहा गया है कि उसमें प्रकाश नहीं होगा (प्रकाश रहित सूर्य उदय होगा कहनेका तात्पर्य कोई प्रकट सूर्यसे नहीं है अपितु लोगोंके हृदयमें अज्ञानरूपी अन्धकार छा जानेसे है).

तब सूरज पना क्या रह्या, कही बिन रोसन अंधेर ।
सो गया ईमान रह्या कुफर, तिन लई जो दुनियां घेर ॥ ५१

जिसमें प्रकाश ही नहीं होगा, वह सूर्य कैसे माना जाएगा. प्रकाशके बिना

तो सर्वत्र अन्धकार ही छा जाएगा (सूर्यकी दृष्टिमें अन्धकार कैसे रह सकता है). इसका तात्पर्य यह है कि लोगोंके हृदयसे विश्वास चला गया मात्र भ्रान्तियाँ ही शेष रह गई उसीने लोगोंको चारों ओरसे घेर लिया है.

आजूज माजूजका निसान

कह्या जो आजूज माजूज, जाहेर होसी आखर ।
खाए जासी सब सय को, ऐसा होसी बखत फजर ॥ ५२

कुरानमें उल्लेख है कि कयामतके समयमें याजूज और माजूज प्रकट होंगे और सारी दुनियाँको खा जाएँगे. ज्ञानके प्रभातके समय ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी.

दिवाल कही अष्टधात की, चाटें आजूज माजूज दायम ।
पीछे रहे जैसी कागद, सुभां देखे त्योंही कायम ॥ ५३

ये याजूज और माजूज नित्य प्रति अष्टधातुकी दीवारको चाटेंगे. दिन भर उनके चाटने पर यह दीवार कागजकी भाँति पतली (क्षीण) हो जाएगी और प्रातः काल पुनः जैसीकी तैसी दिखाई देगी.

[यहाँ पर अष्टधातुकी दीवारका तात्पर्य पाँच तत्त्व एवं तीन गुण युक्त शरीरसे है जिसकी आयुको दिन और रात (याजूज और माजूज) मिलकर क्षीण करेंगे. शरीर शिथिल होने पर रातको मनुष्य सो जाता है किन्तु प्रातः उठते ही पूर्ववत् स्फूर्तियुक्त हो जाता है.]

आजूज माजूज जुफत, गिनती लाख चार ।
सब पी जासी दुनी पानी ज्यों, टूटे दिवाल न रहे लगार ॥ ५४

याजूज एवं माजूज दोनों युगलकी संख्या चार लाख बताई गई है. ये दुनियाँको पानीकी भाँति पी जाएँगे. जिससे अष्टधातुकी दीवार टूट जाएगी फिर कुछ भी शेष नहीं रहेगा.

तीन फौजां तिन होएसी, तूला तावा सावा की ।
दुनी जिमी सब खाएके, तीर आसमान चलावसी ॥ ५५

इन दोनोंकी सेनाएँ, तूलूअ (प्रभात) ताँबा (मध्याह्न) एवं साँबाँ(सायंकाल)

इस प्रकार तीन प्रकारकी होंगी. ये सेनाएँ पृथ्वीके सभी प्राणियोंको खाकर आकाशकी ओर तीर चलाएँगी अर्थात् संसारके सभी प्राणियोंकी आयुको क्षीण कर देवी-देवताओंको भी प्रभावित करेंगी.

बडा कह्या सब चीज से, और आजूज सौ गज का ।
चाटे दिवाल अष्टधात की, कहे सुभां तोडूं इन्साअल्ला ॥ ५६

याजूजको सभी वस्तुओंसे बड़ा कहा है और इसकी लम्बाई सौ गज बताई है. वह पूरे दिन अष्टधातुकी दीवार (शरीर) को चाटता रहता है और सायंकाल कहता है कि परमात्माकी कृपा होगी (इन्साअल्लाह) तो कल मैं इसको ध्वस्त करूँगा.

कह्या और भी बडा सब चीजों से, माजूज बडा गज एक ।
तंग चस्म चाटे दिवाल कों, पीछे कागद जैसी देख ॥ ५७

इसी प्रकार माजूजको अन्य सभी चीजोंसे बड़ा बताया है किन्तु उसकी लम्बाई मात्र एक गजकी कही है. वह अपने आँखें बन्दकर अष्टधातुकी दीवारको चाटता रहता है और उसे कागजकी भाँति पतली देखता है.

ए कही औलाद याफिस की, बेटा नूह नबी का जे ।
जो बाप कह्या तुरकस्थान का, देखो मिलाए कबीला ए ॥ ५८

कुरानमें इन याजूज और माजूजको नूह पैगम्बरके बेटे याफीसकी सन्तान कहा है. यह याफीस तुर्कस्थानका स्वामी (शासक) कहा गया है. अब इनकी कुटुम्ब श्रृङ्खलाको मिलाकर देखो.

इन्सा अल्लाताला जोलों ना कहे, तोलों तोड न सके दिवाल ।
इन्सा अल्लाताला केहेसी आखर, तब टूटसी कागद मिसाल ॥ ५९

हदीसोंमें यह भी उल्लेख है कि जब तक परमात्माका आदेश नहीं होगा तब तक याजूज और माजूज अष्टधातुकी दीवारको तोड़ नहीं सकेंगे. अन्तिम समयमें जब परमात्माका आदेश प्राप्त होगा तब कागजकी भाँति यह क्षीण दीवार टूट जाएगी अर्थात् परब्रह्मका आदेशसे ही आयुकी सीमा है.

आजूज माजूज जाहेर हुए, जो नाती नूह पैगंमर ।
खात जात हैं दुनी कों, क्यों देखें बातून बिगर ॥ ६०

इस प्रकार नूह पैगम्बरके पौत्र याजूज और माजूज प्रत्यक्ष प्रकट हो गए हैं. ये पूरी दुनियाँको खा रहे हैं (उनकी आयुको क्षीण कर रहे हैं). इन वचनोंके तात्पर्यको समझे बिना यह रहस्य कैसे स्पष्ट हो सकता है.

सोए निसान क्यों देखिए, ऊपर जाहेरी नजर ।
जाए ना इलम हक का, सो देखें क्यों कर ॥ ६१

मात्र बाह्यदृष्टिसे देखने पर इन सङ्केतोंका रहस्य कैसे स्पष्ट हो सकता है. जिन लोगोंको ब्रह्मज्ञान प्राप्त नहीं है वे इस रहस्यको कैसे समझ पाएँगे ?

निसान सब जाहेर हुए, जो दुनी देखे सहूर कर ।
जो खोल देखें आंखें रूहकी, तो देखे हुई फजर ॥ ६२

यदि यह दुनियाँ विचारपूर्वक समझनेका प्रयत्न करे तो कयामतके सभी सङ्केत प्रकट हुए दिखाई देंगे. यदि आत्मदृष्टिको खोलकर देखेंगे तो उन्हें ब्रह्मज्ञानका प्रभात हुआ दिखाई देगा.

निसान सब जाहेर हुए, आई बडी दरगाह से पुकार ।
चाक चढी सब दुनियां, पर क्यों देखें बिना विचार ॥ ६३

कयामतके सभी सङ्केत प्रकट हो गए हैं. मक्कासे भी वसीयतनामे आ गए हैं. किन्तु जन्म-मृत्युके चक्रमें फँसी हुई यह दुनियाँ विवेकके बिना उन्हें कैसे देख सकती है ?

हुए हिजाब आदम अकलें, हक गुझ पाइये हक इलम ।
ले माएने दुनी उपले, तासों जाहेर होत जुलम ॥ ६४

आदमके वंशज इन लोगोंकी बुद्धि पर अज्ञानका आवरण है. ब्रह्मके गूढ़ रहस्योंको तो ब्रह्मज्ञानके द्वारा ही जाना जा सकता है. नश्वर जगतके ये जीव मात्र बाह्यार्थको ही ग्रहण करते हैं. इसीलिए इस जगतमें सर्वत्र अनर्थ हो रहा है.

एता दिल मजाजी ना बूझहीं, जो नाती नूह नबी के ।
ए निजस हराम क्यों खाएसी, क्यों पावें माएना जाहेरी ए ॥ ६५

मायावी बुद्धिवाले लोग इतना भी समझ नहीं पाते कि नूह पैगम्बरके पौत्र कहलाने वाले ये याजूज और माजूज इस अपवित्र दुनियाँको क्यों खाएँगे ? बाह्यदृष्टिवाले लोग इसका गूढ़ार्थ कैसे समझ सकते हैं.

पढें करें माएना आजूज माजूज, जो नाती नूह नबी के ।
सो क्यों खाए नापाक दुनियां, पाक पैगंमर जादे ॥ ६६

पढ़े लिखे लोग भी कुरानका अर्थ तो करते हैं किन्तु यह समझ नहीं पाते कि नूह पैगम्बरके पौत्र ये याजूज और माजूज स्वयं पवित्र हैं तो इस अपवित्र दुनियाको कैसे खा सकते हैं ?

पढे दुनी मुसाफ आखरी, खोले माएना बीच मुसलिम ।
कहे पाकों को कुफर, होए ऐसा जाहेरी माएनों जुलम ॥ ६७

इस अन्तिम समयमें भी बाह्यदृष्टिवाले लोग कुरानको पढ़ते हैं और मुस्लिमोंके बीच उसका अर्थ करते हुए कहते हैं कि पवित्र पैगम्बरके वंशज भी भ्रान्तियुक्त हो जाते हैं. इस प्रकार मात्र बाह्यार्थ करने पर बड़ा अनर्थ होता है.

होत जुलम माएनों जाहेरी, तो भी छोडें ना ए सनंध ।
क्या करें हक इलम बिना, कह्या देखीता ही अंध ॥ ६८

मात्र बाह्य अर्थ करनेसे अनर्थ होता है तथापि बाह्यदृष्टिवाले लोग ऐसा अर्थ करना नहीं छोड़ते है. ये लोग करें भी क्या, ब्रह्मज्ञानके बिना देखते हुए भी वे अन्धे (नेत्रहीन) रह जाते हैं.

इनमें लिखी इसारतें, निसान पाइए नजर बातन ।
लिए ऊपरके माएने, क्यों पाइए कयामत दिन ॥ ६९

कुरानमें ऐसी अनेक बातें सङ्केतोंमें लिखी गई हैं. अन्तर्दृष्टिसे ही उनके रहस्यको समझा जा सकता है. मात्र बाह्यार्थ ग्रहण करने पर कयामतके दिनका पता कैसे चलेगा ?

पढें कहें दिन कयामत, हकें रखे अपने हाथ ।
या तो हक आपै खोलहीं, या हादी खोलें जो हक साथ ॥ ७०

कुछ पढ़े-लिखे लोग यह कहते हैं, कयामतके दिनको प्रकट करनेका दायित्व परमात्माने अपने हाथोंमें ही रखा है. या तो उसे स्वयं परमात्मा प्रकट करेंगे या उनके साथ जो सद्गुरु (हादी) होंगे वे उसे प्रकट करेंगे.

हक हाथ दिन तो कहे, जो हकें आप छिपाए ।
सो निसान पाए दिन पाइए, सो जाहेर दुनी क्यों देख्या जाए ॥ ७१

कयामतके दिनको प्रकट करनेका दायित्व परमात्माके हाथमें है ऐसा इसीलिए कहते हैं कि इस दिनको परमात्माने स्वयं छिपा कर रखा है. जब उन सङ्केतोंका रहस्य स्पष्ट होगा तभी कयामतका दिन दिखाई देगा. इसलिए मात्र बाह्यदृष्टिवाले लोगोंसे यह दिन कैसे देखा जाएगा ?

जो जाहेरी देखें जाहेर, माएने तो छिपे निसान ।
निसान देखोगे दिन कयामत, सो क्यों होए जाहेरियों पेहेचान ॥ ७२

बाह्यदृष्टिवाले लोग बाह्यरूपसे प्रकट चिन्होंको ही देखते हैं किन्तु ये सङ्केत तो नितान्त गूढ़ हैं. ये सारे सङ्केत कयामतके दिन प्रकट होनेवाले हैं. इसीलिए बाह्यदृष्टिवाले लोगोंको इनकी पहचान कैसे हो सकती है ?

जो कयामत देखावते जाहेर, तो निसान भी करते जाहेर ।
तो करते ना यों इसारतें, जो दुनी देखावते बाहेर ॥ ७३

यदि कयामतके दिनको प्रत्यक्ष प्रकट करना होता तो उसके चिन्होंको भी प्रकट कर दिया होता यदि बाह्यदृष्टिवाली दुनियाँको यह प्रत्यक्ष दिखाना चाहते तो परमात्मा इस प्रकारके सङ्केत नहीं करते.

बडा कह्या सब चीजों से, ले जिमी लग आसमान ।
दिन बीच दुनी की दौडत, सौ तरफ खाहिस जहान ॥ ७४

याजूजको संसारकी सभी वस्तुओंसे बड़ा कहा है. पृथ्वीसे लेकर आकाश पर्यन्त इसका विस्तार है. इसका तात्पर्य यह है कि दिनके समयमें दुनियाका मन चारों ओर दौड़ता रहता है और सैंकड़ों चाहनाएँ प्रकट करता है.

बडा कह्या इन माएनों, करी रोसन आकास जिमी ।
सौ गज कहे सौ तरफों के, दौडत खाहिस दिन आदमी ॥ ७५

इसीलिए याजूजको बड़ा कहा है. यह पृथ्वीसे लेकर आकाश तक सर्वत्र अपना प्रकाश ड़लता है अर्थात् मनुष्यकी इच्छाओंको बड़ी-बड़ी बनाता है. सौ गजका तात्पर्य यह है कि दिनके समयमें मनुष्यकी चाहनाएँ सौ ओर दौड़ती रहतीं हैं.

योंही कह्या बडा माजूज, हुई रात आकास जिमी ले ।
दुनी आंख मूंदे बीच रातमें, भई दिस मानिंद एक गज के ॥ ७६

इसी प्रकार माजूजको भी बड़ा कहा है. क्योंकि रात्रिके समयमें पृथ्वीसे लेकर आकाश पर्यन्तके लोग आँखें बन्द करके सो जाते हैं. इस मसय उनकी बड़ी-बड़ी इच्छाएँ एक ही दिशामें दौड़ती हैं इसलिए माजूजको एक गज लम्बा कहा है.

जो सय आई दिन में, तिन सबों खाहिस सौ तरफ ।
सोई सबों एक तरफ रातकी, ए देखो माएने कर हरफ ॥ ७७

दिनमें मनुष्यकी चाहना सौ ओर दौड़ती रहती है और वह रातके समय सब ओरसे सिमटकर एक ओर हो जाती है. कतेब ग्रन्थोंके इस कथानकका तात्पर्य इस प्रकार समझना.

जो कह्या सौ गज का, सो सबसे बडा क्यों होए ।
और भी कह्या सबसे बडा, तो क्यों एक गज कह्या सोए ॥ ७८

जिसको सौ गज कहा है, वह याजूज सबसे बड़ा कैसे हो सकता है ? इसी प्रकार माजूजको उससे भी बड़ा कहा है वह फिर एक गजका कैसे हो सकता है ?(यह सब मनुष्यकी चाहनाके लिए किया गया सङ्केत है).

दिवाल कही दुनी उमर, ए टूटे रहे न कोए ।
खाएंगे एही सबन को, उमर चाट काटत हैं दोए ॥ ७९

जिसको अष्टधातुकी दीवार कहा है वह मनुष्यकी आयु है जो क्षणभङ्गुर

होनेके कारण दिन-प्रति दिन क्षीण होती हुई एक दिन समाप्त हो जाएगी. ये दोनों याजूज और माजूज रात और दिनके रूपमें मनुष्यकी आयुको क्षीण करते हुए एक दिन सभीको खा जाएंगे.

जाहेरी कहें दिवाल, हद बांधी सिकंदर ।
सो तो जाहेर किन देखी नहीं, बिन माएने खुले अंदर ॥ ८०

बाह्यदृष्टिवावाले लोग कहते है कि सिकन्दरने अष्टधातुकी दीवार बनाई थी किन्तु आज तक उसको किसीने नहीं देखा है. वस्तुतः इस कथानकके तात्पर्यको समझे बिना इसका रहस्य ज्ञात नहीं होगा.

ए रात दिन काल दुनी के, एही काटे दायम उमर ।
एही खासी सब सय कों, दिन पूरे कर फजर ॥ ८१

ये रात और दिन दुनियाँकी आयुको चाटते हुए उसे क्षीण करते जा रहे हैं. ज्ञानके प्रभातकी अवधि पूर्ण होने तक ये सारे संसारको खा जाएँगे.

आजूज माजूज हुए जाहेर, केता किया दुनी पर मार ।
अजूं न देखे दुनी स्याह दिल, जो पडी आलममें एती पुकार ॥ ८२

इस प्रकार याजूज और माजूज प्रकट हो गए हैं. उन्होंने दुनियाँकी आयुको क्षीण कर उन्हें किस प्रकार व्यथित किया है ? सारे जगतमें हा-हाकार मच गया है तथापि अज्ञानरूपी अन्धकार युक्त हृदयवाले जगतके लोगोंको यह बात समझमें नहीं आ रही है.

औलाद कही याफिस की, जाके भाई स्याम हाम ।
ए तीनों से पैदा सब दुनी, ए लिख्या बीच अल्ला कलाम ॥ ८३

ये याजूज और माजूज याफीसके पुत्र कहे गए हैं. जिसके भाई शाम और हाम थे. कुरानमें यह उल्लेख है कि इन तीनोंसे इस जगतकी सृष्टि हुई है.

ए तीनों भाइयों की पेहेचान, दुनी को होसी हक इलमें ।
एक दीन होसी सबे, जब लई बूझ सबों दिलमें ॥ ८४

इस नश्वर जगतके जीवोंको ब्रह्मज्ञान (तारतम ज्ञान) के द्वारा ही इन तीनों भाइयोंकी पहचान होगी. जब यह बात सभी लोग हृदयपूर्वक समझेंगे तब

सभी एक ही धर्मकी ओर उन्मुख होंगे.

जोलों ले ऊपर के माएने, तोलों कबूं न बूझी जाए ।
सक छोड न होवे साफ दिल, जो पढे सौ साल ऊपर जुबांए ॥ ८५

जब तक बाह्य अर्थ ही ग्रहण करते रहेंगे तब तक यह अर्थ समझा नहीं जाएगा. इस प्रकार चाहे सौ वर्ष तक कुरान पढ़ते रहें किन्तु न संशय ही दूर होंगे और न ही हृदय पवित्र होगा.

इसारतें रमूजें अल्लाह की, सो लेकर हक इलम ।
सो खोले रूहअल्लाह की, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम ॥ ८६

परमात्माने कुरानके द्वारा जो सङ्केत भेजे हैं, श्री श्यामाजीने सद्गुरु रूपमें आकर उनको तारतम ज्ञानके द्वारा स्पष्ट कर दिया है. यह ब्रह्मज्ञान उनके हृदयमें बिना लेखनी ही अङ्कित हुआ है.

महामत कहे ऐ मोमिनो, खोल दिए चार निसान ।
और भी तीन केहेत हों, ले बातून देखो दिल आन ॥ ८७

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! कयामतके चारों सङ्केतोंका रहस्य स्पष्ट कर दिया है. अब शेष तीन सङ्केतोंका रहस्य भी स्पष्ट कर देता हुँ. उनको अन्तर्दृष्टिसे (हृदयपूर्वक) देखनेका प्रयत्न करो.

प्रकरण ८ चौपाई ५८८

बाब तीन निसानका रूहअल्ला इमाम असराफील

चारों निसान ए कहे, और देखो कहे जो तीन ।
ईसा इमाम असराफील, जिन खडा किया झंडा दीन ॥ १

कयामतके चार सङ्केतोंका वर्णन हो गया है. अब शेष तीन ईसा, इमाम और इस्त्राफीलके विषयमें भी समझ लो, जिन्होंने एक धर्म (श्री कृष्ण प्रणामी धर्म) का झण्डा स्थापित किया है.

निसान लिखे दिन कयामत, सो तो रखे हक हादी हाथ ।
या हादी खोलें हक इलमें, या खोलें सुंनत जमात ॥ २

कुरानमें कयामतके दिनके सङ्केतोंको पहले ही लिख दिया था, किन्तु उनको

प्रकट करनेका दायित्व स्वयं परमात्माने अपने हाथोंमें ले रखा था. इस रहस्यको उन्हीं परमात्माके ज्ञान (ब्रह्मज्ञान) तारतम ज्ञानके द्वारा या स्वयं सद्गुरु प्रकट करेंगे या ब्रह्मसृष्टियोंका समुदाय प्रकट करेगा.

तो लिखाया जाहेर कर, इतथें उठ्या झंडा नूर ।
खडा किया बीच हिंदके, हुआ आसमान जिमी जहूर ॥ ३

इसीलिए मक्कासे आए हुए वसीयतनामामें स्पष्ट उल्लेख था कि यहाँसे धर्मका प्रतीक स्वरूप तेजोमय ध्वज उठ गया है. उसे भारतवर्ष (हिन्दुस्थान) में स्थापित किया है जिसके प्रकाशसे पृथ्वीसे लेकर आकाश तक आलोकित हो गया है.

निसान लिखे सो सबे मिले, जो कयामत के फुरमाए ।
ताए नफा न देवे तोबा पीछली, जो अव्वल झंडे तले न आए ॥ ४

कयामतके समयके जो सङ्केत लिखे गए थे, वे सब स्पष्ट ही गए हैं. प्रायश्चितका द्वार बन्द होने पर उन व्यक्तियोंको अपनी उपासनाका लाभ नहीं मिलेगा जो सर्वप्रथम इस झण्डेकी शरणमें नहीं आएँगे.

लिख्या फलाने सिपारे, दिन हुए तोबा नफा नाहें ।
जो अव्वल आया नूर झंडे तले, सो आया गिरो नाजी माहें ॥ ५

कुरानके भिन्न-भिन्न सिपारोंमें इस प्रकारका उल्लेख है, आत्मजागृतिके समय(दिन) पर्यन्त ही प्रायश्चित (तोबा) का द्वार खुला रहेगा उसके उपरान्त यह बन्द होगा जिससे लोग उस लाभसे वञ्चित रह जाएँगे. जो लोग इस तेजोमय धर्मध्वजकी शरणमें पहले आएँगे वे ही ब्रह्मसृष्टिके समुदायमें सम्मिलित माने जाएँगे.

कुल अकल हक इलमें, होए पैदा बका हक दिन ।
इन इलमें जहान जुलमती, करी हिदायत रोसन ॥ ६

ब्रह्मज्ञानसे जिनकी प्रज्ञा जागृत हो जाती है, उन्हींके हृदयमें ब्रह्मज्ञानका प्रभात उदय होता है. इस ब्रह्मज्ञानने शून्य-निराकरसे उत्पन्न अज्ञानी जीवोंके हृदयको भी प्रकाशित कर उन्हें पारका मार्ग प्रशस्त किया है.

जब हक झंडा नूर महंमदी, बीच खडा हुआ हिंद के ।
तब अकस नूर ईमान का, रह्या अंधेर कुफर पीछे ॥ ७

जब रसूल मुहम्मद द्वारा स्थापित धर्मका तेजोमय ध्वज मक्कासे उठकर भारतवर्षमें आकर स्थापित हो गया तब वहाँसे ज्ञान एवं विश्वास भी साथ-साथ उठ गए. वहाँ पर मात्र अज्ञानरूपी अन्धकार ही छा गया.

तो भी न विचारे दिल मजाजी, जो सखत लिख्या सौं खाए ।
हक हादी उठाया वह झंडा, जिने रात के अमल चलाए ॥ ८

मक्कासे आए हुए वसीयतनामामें इतने कठोर शब्दोंमें शपथपूर्वक कहा है, तथापि भ्रमित हृदयवाले मिथ्याचारी लोग उस पर विचार नहीं करते हैं. जिन रसूल मुहम्मदने अज्ञानमयी रात्रिमें कर्मकाण्डको ही धर्म मानकर उसे स्थापित किया था उनके झण्डेको स्वयं परमात्माने सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर वहाँसे उठा लिया.

हक हादी बिना झंडा हकीकी, और किने न खडा किया जाए ।
सो इन बखत सदी आखरी, जिन झंडे रात के दिए उठाए ॥ ९

ब्रह्मस्वरूप सद्गुरुके बिना इस ब्राह्मी झण्डा (सत्यधर्म ध्वज) को अन्य कोई भी स्थापित नहीं कर सकता है. इस अन्तिम सदी अर्थात् रसूल मुहम्मदके पश्चात् ग्यारहवीं सदीमें उन्होंने विभिन्न मत-मतान्तरके धर्मध्वजको समाप्त कर उनके स्थान पर ब्रह्मज्ञानमय ध्वज प्रतिष्ठित किया.

वह झंडा जो जाहेरी, सो भी हक हादी बिना कौन उठाए ।
जिन जैसी नीयत, तिन तैसी दई पोहोंचाए ॥ १०

कर्मके विधानों पर आधारित विभिन्न मत-मतान्तरके प्रकट धर्मध्वजको भी ब्रह्मस्वरूप सद्गुरुके बिना अन्य कौन हटा सकता था ? उस समय जिन-जिन लोगोंकी जैसी भावना रही है उन्हें उसी प्रकार उच्च लोकोंमें स्थान प्राप्त हुआ.

लिखियां ए बुजरकियां, ए जो कहियां बीच आखरत ।
सो कहें हाथ हमारे, दुनी फल पावसी कयामत ॥ ११

कुरान आदि धर्मग्रन्थोंमें जितनी विशेषताएँ लिखीं हैं, वे सभी अन्तिम

समयमें प्रकट होंगी. किन्तु कर्मकाण्डमें उलझे हुए लोग व्यर्थ ही यह दम्भ करते हैं कि हमारे ही हाथोंसे दुनियाँको अखण्ड फल प्राप्त होगा.

कहें हम खासी उमत, और हमहीं वारस कुरान ।
कजा करत हैं हमहीं, हमहीं खावंद ईमान ॥ १२

वे लोग यह भी कहते हैं कि हम ही धर्मनिष्ठ समुदायके हैं और कुरानका उत्तराधिकार भी हमें ही प्राप्त है. हम ही सबको सच्चा न्याय दिलाएँगे एवं परमात्माके प्रति पूर्ण विश्वास भी हमारे पास ही है.

ए लिखे जाहेर माएने, सूरज ऊगसी दिलों पर ।
पहाड पूजें हम निसान, बैत बका देखावें फजर ॥ १३

कुरानमें यह स्पष्ट लिखा है कि इन बाह्यदृष्टिवाले लोगोंके हृदयमें भी सूर्य तो उदय होगा किन्तु उसमें प्रकाश नहीं होगा. इसलिए वे पर्वतोंको ही परब्रह्मका प्रतीक समझकर उनकी पूजा करते हैं और मानते हैं कि यही पर्वत हमें अखण्डके दर्शन करवा कर जीवनमें ज्ञानमय प्रभात लाएँगे.

हम देखें राह निसान की, जो कहे बडे कयामत ।
देखें पैदा बैत अल्लाह से, जो हमसों करी सरत ॥ १४

ऐसे बाह्यदृष्टिवाले लोग कहते हैं कि हम कयामतके उन सङ्केतोंकी राह देख रहे हैं. उनका कहना है कि रसूल मुहम्मदने हमसे ये वचन दिए हैं कि ये सभी सङ्केत मक्कामें दिखाई देंगे.

लिखे निसान कौल कयामत के, ले माएने बातन ।
सो माएना मगज पाए बिना, समझ न परी किन ॥ १५

किन्तु कयामतके लिए लिखे गए इन सङ्केतोंको तभी समझा जा सकता है जब इनके गूढ़ अर्थोंको समझा जाए. इसलिए इनके गूढ़ार्थोंको समझे बिना उन्हें इन सङ्केतोंकी जानकारी प्राप्त नहीं हुई है.

सात निसान बडे कहे, जासों पाइए कयामत ।
सो ए दुनी तब देखसी, ऊगे सूरज मारफत ॥ १६

कतेब ग्रन्थोंमें सात बड़े-बड़े चिन्होंका वर्णन किया है जिनसे क़यामतके

समयका बोध होगा. किन्तु नश्वर जगतके लोग उनको तभी देख पाएँगे जब ब्रह्मज्ञानरूपी सूर्यका उदय होगा.

तोलों अंधेरी रात की, छूटे नहीं क्योंए कर ।
देखें निसान बातून माएने, तब पावें दिन आखर ॥ १७

इन लोगोंसे अज्ञानमयी रात्रिका अन्धकार तब तक किसी भी प्रकार दूर नहीं होगा जब तक वे ब्रह्मज्ञानके द्वारा गूढ़ रहस्योंको समझ नहीं पाएँगे. इन सङ्केतोंके स्पष्ट होते ही उन्हें कयामतके समयकी पहचान होगी.

जोलों लिया जाहेरियों, माएना ऊपर का ।
तब लग फना बीचमें, हुए जिद कर तफरका ॥ १८

इन बाह्यदृष्टिवाले लोगोंने जब तक कुरानके बाह्यार्थको ही ग्रहण किया है तब तक वे इस नश्वर जगतमें ही अज्ञानरूप अन्धकारमें रहकर हठपूर्वक भिन्न-भिन्न समुदायोंमें विभक्त हो गए.

कौल तोड जुदे हुए, तो नारी कहे बहतर ।
लिख्या जलसी आगमें, और कहा इन ऊपर ॥ १९

रसूल मुहम्मदको दिए गए वचनोंका पालन न करते हुए वे भिन्न-भिन्न समदायोंमें बँट गए. इसीलिए उन बहत्तर समुदायोंमें विभक्त लोगोंको नारी अर्थात् नरकगामी कहा गया है. उनके लिए कुरानमें स्पष्ट उल्लेख है कि वे नरकाग्निमें जलेंगे. इससे अधिक उनके लिए क्या कहा जाए !

हक अरस बका तब पाइए, जो खुले हक हकीकत ।
दिन हुए सब देखिए, सूरज ऊगे मारफत ॥ २०

परब्रह्म परमात्मा एवं दिव्य परमधामकी सुधि तभी हो सकती है जब ब्रह्मज्ञानके द्वारा यथार्थका बोध हो जाए. ब्रह्मज्ञानरूपी सूर्यके उदय होने पर प्रकाशमय दिनमें इन सबकी पहचान हो जाएगी.

सूरज ऊग्या मगरब दिलों, होसी जाहेर दाभा जिमी सें ।
अजूं देखें नहीं दजाल कों, जो जाहेर हुआ सबमें ॥ २१

मक्काके निवासियोंके हृदयमें भी सूर्य तो उदय हुआ किन्तु वह प्रकाश रहित

था अर्थात् उनके हृदयमें अज्ञानता छा गई जिससे वहाँके मनुष्योंकी वृत्ति पशुतुल्य हो गई. इसीको वहाँ पर दाभातुलअर्जका प्रगट होना कहा गया है. किन्तु अब भी लोग उन सबके हृदयमें व्यापक इस पाशविक वृत्तिको नहीं देख रहे हैं.

नूर झंडा महंमदी इमामें, किया खडा हकीकी दीन ।
क्यों दाखले मिले दिल मजाजी, दिल दुसमन तोडे यकीन ॥ २२

अन्तिम मुहम्मद इमाम महदीने सत्यज्ञानका धर्मध्वज भारतकी भूमिमें लहराया किन्तु जिनके हृदयमें धर्मके प्रति श्रद्धा एवं विश्वास नहीं है ऐसे लोग धर्मग्रन्थोंमे वर्णित इन सङ्केतोंको कैसे समझ सकते हैं. इसलिए उन्होंने इस पर विश्वास करने नहीं दिया.

सूर बाजत असराफील, क्यों सुने दिल कान बिगर ।
ओतो ले ले माएने बातून, निसान धरे कौल पर ॥ २३

भारत वर्षमें ज्ञानके प्रतीक इस्त्राफील फरिश्ताने ब्रह्मज्ञानकी दुन्दुभी बजाई किन्तु जिनके हृदयके कान ही नहीं हैं वे इसके स्वरको कैसे सुन सकते हैं ? यह इस्त्राफील फरिश्ता तो धर्मग्रन्थोंके उन गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर रहा है जिन पर कयामतका दिन प्रकट होना निश्चित है.

तो कह्या रसूलें हदीसमें, सूर देसी पहाड उडाए ।
सो पहाड जरे ज्यों खाली मिने, फिरें उडते ना ठेहेराए ॥ २४

इसीलिए रसूल मुहम्मदने हदीस ग्रन्थोंमें उल्लेख किया है कि इस्त्राफील फरिश्तेकी दुन्दुभी बजते ही बड़े-बड़े पर्वत भी रूईकी भाँति उड़ जाएँगे. उन पर्वतोंके एक-एक कण शून्यमण्डलमें उड़ते हुए फिरेंगे और उसीमें विलीन हो जाएँगे. क्षण भरके लिए भी वे किसी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहेंगे.

तो मुसाफ मगज असराफीलें, किए जाहेर कै विध गाए ।
तो एक सूरें दुनी फना करी, किए दूजे सूरें कायम उठाए ॥ २५

इस प्रकार इस्त्राफील फरिश्ताने कुरानके गूढ़ रहस्योंको अनेक प्रकारसे प्रकट

किया. उसने अपनी एक दुन्दुभीसे नश्वर जगतके लोगोंके मिथ्याभिमानको समाप्त किया और दूसरी दुन्दुभीसे उनको मुक्तिस्थलोंमें अखण्ड कर दिया.

ए पहाड जरे ज्यों क्यों हुए, क्यों देखे बिना दिल विचार ।
पहाड कहे कुफर खुदी के, सो हुए पाक जरे ज्यों निरवार ॥ २६

ये बड़े-बड़े पर्वत धूलकी भाँति कैसे उड़ गए हैं ? कुरानके इन साङ्केतिक अर्थों पर बाह्यदृष्टि वाले लोग कैसे विचार कर सकते हैं ? वास्तवमें लोगोंकी अनास्था एवं अहङ्कारको ही यहाँ पर पवर्त कहा गया है. तारतम ज्ञानके द्वारा ये सभी नष्ट हो गए और सभीका हृदय पवित्र हो गया.

पाक जो होवें इन विध, जब उडे गुमान कुफर ।
पाक हलके हुए बोझ डालके, तब आए बीच नूर नजर ॥ २७

इस प्रकार जब हृदयका मिथ्याभिमान उड़ जाता है तभी हृदय पवित्र हो सकता है. अज्ञानता एवं कर्मकाण्डके भारको दूर कर जब उनके हृदय पवित्र हो जाते हैं तब वे अक्षरब्रह्मकी दृष्टिमें आ जाते है अर्थात् अखण्ड होते हैं.

लिया दुनी पें ईमान, और दुनियां की बरकत ।
खैंच लिया कुरान को, और फकीरों की सफकत ॥ २८

ऐसा कहा गया है कि दुनियाँसे विश्वास छीन लिया गया और उनकी शक्ति भी छीन ली गई. इतना ही नहीं कुरानका ज्ञान भी छीन लिया गया और फकीरोंके आशीर्वादकी शक्ति भी छीन ली गई.

छीन लिया एता मता, तो भी न हुई खबर ।
क्यों देखे मजाजी दुनियां, जोलों बातून नहीं नजर ॥ २९

जब इतनी सारी सम्पदाएँ छीन ली गई तो भी इन लोगोंको इसकी जानकारी नहीं हुई. वस्तुतः यह झूठी दुनियाँ इसे कैसे समझ सकती है, जब तक तारतम ज्ञानके द्वारा उनकी अन्तर्दृष्टि नहीं खुलती.

बडी दरगाह से नामे वसीयत, पुकार करी केती आए ।
तो भी न बिचारे दिल मजाजी, जो ऐसे लिखे सखत सौं खाए ॥ ३०

मक्कासे वसीयतनामाके द्वारा इस प्रकारके अनेक पत्र (पुकार) आए कि यह

बात सच्ची है और हम शपथपूर्वक यह लिख रहे हैं, तथापि भ्रमित हृदयवाले लोगोंने इस पर विचार नहीं किया.

हिसाब कह्या होसी हिंदमें, पुरसिस करसी हक ।
हक इलम ले रूहअल्ला, करसी सबों बेसक ॥ ३१

कुरानमें यह भी उल्लेख है कि कयामतके समयमें सभीका न्याय भारतवर्षमें होगा. परमात्मा स्वयं प्रकट होकर उनको कर्मके अनुसार फल प्रदान करेंगे. श्रीश्यामाजी सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर ब्रह्मज्ञान (तारतमज्ञान) के द्वारा सभीको सन्देह रहित बना देंगी.

कै बुजरक कहावते रातमें, बैठे बैत अल्ला ले ।
हक हममें बैठ करें हिसाब, जाने हमहीं सिर सब के ॥ ३२

अज्ञानरूपी अन्धकारमें बैठे हुए एवं स्वयंको श्रेष्ठ समझनेवाले अनेक लोग मक्कामें स्थित काबाको ही खुदाका घर समझते थे. वे यही कहा करते थे कि कयामतके समयमें खुदा हमारे बीच बैकठर सभीका न्याय करेंगे. इसलिए हम ही सबसे श्रेष्ठ हैं.

कहे पहाड कुफर खुदी के, बिन हक इलमें जाहेर बढे ।
तब हकें मता छीन ले, पहाड किए हलके ॥ ३३

ब्रह्मज्ञानके अभावमें ऐसे लोगोंका मिथ्याभिमान ही पर्वतोंकी भाँति बढ़ रहा था. तब परमात्माने अस्त्राफील फरिश्ताके द्वारा उनके अज्ञानको दूर कर मिथ्याभिमानरूप पर्वतको हलका कर दिया.

जब यों बुजरक हलके हुए, हिसाब दिए पाक होए ।
कुफर खुदी जब उड गई, तब गुसल किया सब अंग धोए ॥ ३४

बड़े कहलाने वाले इन लोगोंका दम्भ जब दूर हो गया और वे हलके हो गए तभी वे अपना लेखा परमात्माको सौंप कर पवित्र हृदय हो गए. जब उनके हृदयसे अहङ्कार एवं भ्रान्तियाँ दूर हो गई तब उन्होंने तारतम सागरमें स्नान कर अपने हृदयको पवित्र बनाया.

जिन जैसा चीन्ह्या महंमद को, तासों तैसी रखी चिन्हार ।
यों बदला पाए देखिए, या जीत या हार ॥ ३५

सद्‌गरुके रूपमें प्रकट हुई श्री श्यामाजीको जिन्होंने जिस रूपमें पहचाना एवं जैसे भाव रखे उसीके अनुरूप उनको जय अथवा पराजयका फल प्राप्त हुआ.

हिसाब किया देखें नहीं, हादिएं करी फजर ।
किए फैल पुकारे बुजरक, बिन ईमान न देखे नजर ॥ ३६

परमात्माने सद्‌गुरुके रूपमें प्रकट होकर तारतम ज्ञानके द्वारा न्याय करते हुए ब्रह्मज्ञानका प्रभात कर दिया किन्तु अज्ञानतावश लोग उसे नहीं देख पा रहे हैं. इसी कारण पश्चात्ताप करते हुए पैगम्बरोंको पुकार रहे हैं. विश्वासके अभावमें वे यथार्थताको देख नहीं पा रहे हैं.

क्योंए न आवे पढों ईमान, करें ना दिल सहूर ।
तो छीन ले भेजी वारसी, आप मोमिनों हाथ हक नूर ॥ ३७

ऐसे दम्भी व्यक्तियोंको कुरानादिके पढ़ने पर भी उन पर विश्वास नहीं आता है इसलिए वे हृदयपूर्वक विचार नहीं कर सकते हैं. इसलिए सद्‌गुरुने इनसे कुरानका उत्तराधिकार छीन कर ब्रह्मात्माओंके हाथमें देते हुए तारतम ज्ञानके द्वारा उनके हृदयको प्रकाशित किया.

लिख्या सिपारे दूसरे, कहे असराफ मूसा एक हम ।
महंमद मेला और कर, देखें क्यों चलावें हुकम ॥ ३८

कुरानके दूसरे सिपारेमें उल्लेख है, यहूदी लोग भी यही कहा करते थे कि मूसा पैगम्बर और हम ही सबसे बड़े ज्ञानी है. अब देखते हैं रसूल मुहम्मद किस प्रकार अपने समुदायका गठनकर अपने आदेशका पालन करवाते हैं.

मिलावा महंमद का, ए जो मिले दुरवेस ।
देखें हम बिना काम महंमद का, क्यों कर जावे पेस ॥ ३९

ये लोग यह भी कहते थे कि रसूल मुहम्मदके समुदायमें केवल भिक्षुक लोग

ही एकत्र हो रहे हैं. देखते हैं हमारे बिना रसूल मुहम्मदका काम किस प्रकार सुचारु रूपसे चलेगा ?

जो मुनाफक ताना मारते, कौल करते थे रद ।
मारे याही सिरक से, अब नूर झंडे महंमद ॥ ४०

जो अविश्वासी लोग रसूल मुहम्मदको ताना मारते थे और उनके वचनोंको निरस्त करनेका प्रयत्न करते थे. अब अन्तिम समयमें प्रकट हुए सद्‌गुरु उनके वचनोंसे ही उनके अभिमानको परास्त कर धर्मका दिव्य ध्वज प्रतिष्ठित कर रहे हैं.

रसूल ताना ए सुन के, फेर मेहेर कर बुलाए ।
वह तो भी टेढाई ना छोडें, रसूल मेहेर न छोडें ताए ॥ ४१

रसूल मुहम्मद ऐसे लोगोंके व्यङ्ग वचनोंको सुनकर उन पर कृपा करते हुए उन्हें अपने पास बुलाते थे, तथापि वे अपनी कुटिलताको नहीं छोड़ते थे. इतना होने पर भी रसूलने उन पर कृपा करना नहीं छोड़ा.

तब आयत भेजी हक ने, ल्याया जबराईल ।
सो देखो आयत में, हक केहेसी असराफील ॥ ४२

तब खुदाने जिब्रील फरिश्ताके द्वारा आयत भेजी. उस आयतको देखो, उसमें उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि कयामतके समयमें इस्राफील फरिश्ता प्रकट होकर इसकी सत्यता प्रकट करेंगे.

लिख्या सखत सौं खाए के, गया हमसों ईमान मुसाफ ।
सो हादिएं देखाया झंडा अपना, करसी हिंद में हक इन्साफ ॥ ४३

मक्काके काजियोंने शपथपूर्वक वसीयतनामा लिखकर भेजा कि यहाँसे कुरान उठ गया, धर्मके प्रति विश्वास समाप्त हो गया एवं धर्मका ध्वज उठ गया. अब खुदा हिन्दुस्तानमें प्रकट होकर सबका न्याय करेंगे. वस्तुतः परमात्माने सद्‌गुरुके रूपमें प्रकट होकर धर्मके इस ध्वजको दिखाया है.

सो भी लिख्या दिन कयामत, यों वारसी दै पोहोंचाए ।
सो देखो सिपारे बाईसमें, जो उमियों रोसन किए आए ॥ ४४

ये सारे सङ्केत कयामतके दिनके लिए लिखे गए हैं. इस समय कुरानका

उत्तराधिकार हस्तान्तरित होकर भारत वर्षमें ब्रहामात्माओंको प्राप्त हो गया. कुरानके बाईसवें सिपारेमें इसका उल्लेख किया है. तदनुसार जगतके चातुर्यसे अनभिज्ञ ब्रह्मात्माओंने प्रकट होकर तारतम ज्ञानको जगतमें प्रकाशित किया.

खोज्या ढूंढ्या ना पढे, दिए मोमिनों हिसे कर ।
जो एता झंडे किया रोसन, तो भी देखे न दुनी नजर ॥ ४५

इन ब्रह्मात्माओंको ये रहस्य कहीं पर खोजने अथवा पढ़ने जाना नहीं पड़ा. यह शोभा उन्हें स्वभाविक रूपसे प्राप्त हुई. ब्रह्मज्ञानरूपी इस धर्मध्वजने इतना प्रकाशित कर दिया तो भी नश्वर जगतके जीव आत्मदृष्टिसे उसे नहीं देख पा रहे हैं.

ए सोई हुआ जो फुरमाया, आगूं भी फुरमाया होए ।
सो जरा न छूटे फुरमाएसे, तुम देखोगे सब कोए ॥ ४६

यह सब रसूल मुहम्मदकी भविष्यवाणीके आधार पर ही हुआ है और भविष्यमें भी उसी प्रकारसे होता रहेगा. तुम सब स्पष्ट देखोगे कि उनका सम्पूर्ण कथन साकार हो गया है.

कुरान ल्यावे आखर, आवसी फुरमान बरदार ।
अमल करे कहे माफक, वाको सक नहीं वार पार ॥ ४७

कयामतके समयमें स्वयं परमात्मा सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेंगे. उनके अनुयायी भी इस समय प्रकट होंगे और उनके मार्गदर्शन अनुसार आचरण करेंगे. उनके हृदयमें किसी भी प्रकारका सन्देह लेश मात्र भी नहीं होगा.

एता दिल मजाजी न बूझहीं, सोई खोले रमूजें किताब ।
ए बडे काम कौन करसी, बिना आखरी खिताब ॥ ४८

जिनके हृदयमें अज्ञानता भरी हुई है ऐसे लोग इस रहस्यको समझ नहीं पाएँगे कि वे परमात्मा धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर रहे हैं. वस्तुतः कयामतके समयमें जिनको परमात्माकी शोभा प्राप्त हुई है ऐसे सद्गरुके बिना इतना बड़ा कार्य कौन कर सकता है ?

ए अव्वल से आखर लग, दुनी मुई मरेगी जे ।
कर कजा इन मुसाफसों, कौन उठावसी मुरदे ॥ ४९

सृष्टिके आरम्भसे लेकर अन्त तक इस जगतके लोग अज्ञानरूप अन्धकारमें ही मर रहे हैं और मरते रहेंगे. इन आप्तग्रन्थोंके आधार पर उनको न्याय दिलाते हुए उनकी प्रसुप्त चेतनाको परमात्माके बिना अन्य कौन जागृत कर सकता है ?

जोलों न चीन्हे महंमद को, तोलों सुध ना जमाने ।
तब लग सुध ना बका फना, ना सुध नफा नुकसाने ॥ ५०

जब तक परमात्मा द्वारा प्रशंसित (मुहम्मद) श्यामाजीके स्वरूप सद्गुरुको नहीं पहचानेंगे तब तक उन लोगोंको इन घटनाओंकी सुधि नहीं होगी. तब तक उन्हें अखण्ड एवं नश्वरताकी भी सुधि नहीं होगी और न ही उन्हें लाभ अथवा हानिकी ही सुधि होगी.

सो पाइए बातून माएने, उपले आखर नुकसान ।
हक इलमें दिन होवे सब सुध, बिन इलम रात हैवान ॥ ५१

इन धर्मग्रन्थोंकेरहस्योंको समझने पर ही लाभ होता है मात्र बाह्यार्थ ग्रहण करने पर हानि होती है. ब्रह्मज्ञानरूपी सूर्यके उदय होने पर प्रकाशमय दिनमें सब प्रकारकी सुधि होती है अन्यथा ब्रह्मज्ञानके बिना अज्ञानमयी रात्रिमें सभी लोग पशुकी भाँति भटकते रहते हैं.

ए माएने मुसाफ सोई करे, हकें भेज्या जिन ऊपर ।
कुंजी इलम आई जिनपें, सोई खोल दे खुसखबर ॥ ५२

परमात्माने जिनके लिए यह सन्देशपत्र भेजा है वे ही इसका अर्थ ग्रहण कर सकते हैं. जिनके पास तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी आई है वे सद्गुरु ही इन रहस्योंको स्पष्ट कर सबको शुभ समाचार दे रहे हैं.

रसूल आखरी अल्लाह का, ल्याया आखरी किताब ।
खोले रूहअल्ला आखरी, दे मेहेदी को लिया सवाब ॥ ५३

कतेब परम्पराके अनुसार अन्तिम पैगम्बर रसूल मुहम्मद अन्तिम ग्रन्थ कुरान

लेकर आए हैं. गूढ़ रहस्यको श्रीश्यामाजी स्परूप सद्गुरुने कयामतके समयमें प्रकट होकर इसके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर दिया और महदी मुहम्मद(मुझ) को तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी प्रदान किया.

आई कुंजी इलम इमाम पें, जिन सिर आखरी खिताब ।
कजा महंमद जुबांएं, सब पीवसी सरबत आब ॥ ५४

अब अन्तिम धर्मगुरुके (मेरे) पास तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी आ गई है जिनको कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट करनेका अधिकार है. अब श्री श्यामाजी मेरे अन्दर विराजमान होकर सबका न्याय करेंगी जिससे दुनियाँको दिव्यामृत (अखण्डमुक्ति) प्राप्त होगी.

लिख्या सिपारे तीसरे, ले देखो हक अकल ।
सरा तोरा बनी असराईल का, हकें दिया बनी इस्माईल ॥ ५५

कुरानके तीसरे सिपारेमें इस प्रकार लिखा है जिसे जागृत बुद्धिके ज्ञान द्वारा विचार करके देखो. खुदाने इब्राहीमके एक पुत्र इस्राईलसे उत्तराधिकार छीन कर दूसरे पुत्र इस्माइलको प्रदान किया.

[इस प्रकार श्री देवचन्द्रजीकी लौकिक सम्पत्ति (चाकला मन्दिर) का अधिकार श्री प्राणनाथजीके स्थान पर श्री विहारीजीको दिया गया.]

फुरकान दै हारून कों, सो देखो कौल आखर ।
कोई कहे ए किसे हो गए, सो कहे बेकौली बेखबर ॥ ५६

कयामतके समयके इन वचनों पर भी विचार करो. कुरानका दायित्व हारूनको दिया गया. कुछ लोग कहते हैं ये घटनाएँ घट गई हैं. उन्हें परमात्माकी आज्ञासे विमुख अथवा बेसुध समझना चाहिए.

[महामति श्री प्राणनाथजीने कुरानका दायित्व छत्रसालको दिया बड़ा कयामतनामा ग्रन्थ छत्रसालके नाम पर है.]

किसे कुरान तौरेत के, पढे डालत पीठ पीछल ।
कहे हो गए किसे रातमें, यों इनों खोया फजर बकाह्य फल ॥ ५७

कुरान तथा तौरातको पढ़नेवाले लोग इन घटनाओंको बीती हुई घटनाएँ समझ

लेते हैं. इस प्रकार 'अज्ञानमयी रात्रिमें ये घटनाएँ घट गईं' कह कर उन्होंने ब्रह्मज्ञानके प्रभातमें प्राप्त होनेवाले फलको भी खो दिया.

जेता मुसाफ माएना, सब नजूम और बातन ।
सो खोले काम कयामतके, दिन होसी सबों रोसन ॥ ५८

कुरानके जो भी अर्थ बाह्य अथवा गूढ़ क्यों न हों सभी कयामतके समयमें ही स्पष्ट होंगे. इनके स्पष्ट होने पर सर्वत्र ब्रह्मज्ञानरूप दिनका प्रकाश छा जाएगा.

लिख्या सिपारे आठमें, तोलों पढ्या नहीं कुरान ।
मगज मुसाफ पाए बिना, सुध ना नफा नुकसान ॥ ५९

आठवें सिपारेमें लिखा है, तब तक कुरानको पढ़ा है ऐसा नहीं मानना जब तक उसके रहस्योंको समझकर लाभ और हानिकी सुधि न हो जाए.

ए किन भेज्या कौन आइया, ल्याया फुरमान किन ऊपर ।
साल हजार नबे लग, ए पाई ना किन खबर ॥ ६०

यह ज्ञान किसने भेजा है, क्यों आया है और किसके लिए आया है ? इसकी जानकारी रसूल मुहम्मदके पश्चात् एक हजार नब्बे वर्ष पर्यन्त किसीको भी प्राप्त नहीं हुई.

जाहेर कह्या ईसा आखर, आए करसी एक दीन ।
एही दजाल को मारसी, एही देसी सबों यकीन ॥ ६१

कुरानमें यह स्पष्ट कहा है कि कयामतके समय श्री श्यामाजी सद्गुरु (ईसारूहअल्लाह) के रूपमें प्रकट होकर एक धर्म (श्री कृष्ण प्रणामी धर्म) की स्थापना करेंगी. वे ही नास्तिकतारूपी दज्जालको मारकर सबके हृदयमें परमात्माके प्रति विश्वास उत्पन्न करेंगी.

मुरदे एही उठावसी, करसी साबित नबुवत ।
और साबित कुरान माजजा, ए करसी ईसा हजरत ॥ ६२

वे ही कब्रसे मुर्दोंको उठाएँगी अर्थात् शरीरमें स्थित प्रसुप्त चेतनाको जाग्रत करेंगी एवं अपने अवतरणको सिद्ध करेंगी. इतना ही नहीं कुरानमें निर्दिष्ट

गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर धर्मका मार्गदर्शन करेंगी.

अब देखो कुरान वारसी, लिख्या आखर बोझ सिर इन ।
ए कौन करे मसी बिना, रात उडाए के दिन ॥ ६३

देखो, कुरानमें यह स्पष्ट उल्लेख है कि कुरानका उत्तराधिकार और आत्मजागृतिका सम्पूर्ण दायित्व इन पर ही निर्भर है. इस प्रकार अज्ञानरूपी रात्रिको उड़ाकर ब्रह्मज्ञानरूपी दिनका उदय करनेका कार्य सद्‌गुरुके बिना कौन कर सकता है ?

फुरमान आया ईसे पर, ए देखो साहेदी हदीस ।
वह लेने न देवे माएने मगज, जिनों दिल दुसमन इबलीस ॥ ६४

हदीसकी साक्षीको देखो, वहाँ स्पष्ट उल्लेख है कि सद्‌गुरुके रूपमें आई हुई श्री श्यामाजीके लिए ही यह कुरान अवतरित हुआ है. किन्तु लोगोंके हृदयमें दुष्ट इब्लीसका साम्राज्य होनेसे वह उनको इन गूढ़ रहस्योंको समझने नहीं देता है.

सो ईसा कह्या आखरी, ए जो करत आखर के काम ।
करनी माफक सब कों, देसी फल मुसाफ तमाम ॥ ६५

इन्हीं सद्‌गुरुको अन्तिम धर्मगुरु कहा है. वे ही कयामतके समयके सभी कार्य सिद्ध करेंगे और सब लोगोंका न्याय कर उनको अपने-अपने कर्मोंके अनुसार फल प्रदान करेंगे.

ए कही ईसे की आखर, अब कहूं इमदाए ।
तिन वाएदे रसूलें, फुरमान दिया पोहोंचाए ॥ ६६

यह सम्पूर्ण वर्णन अन्तिम समयमें प्रकट होने वाले श्यामा स्वरूप सद्‌गुरुका है. अब मैं प्रारम्भ (परमधाम मूलमिलावा) की चर्चा करता हूँ. इन्हींको दिए गए वचनोंके अनुसार रसूल मुहम्मद परमात्माका सन्देश लेकर आए हैं.

कह्या हकें मासूक भेजोंगा, उतरते रूहों अरस सें ।
सिरदार तिनमें रूहअल्ला, हकें तासों कौल किया आपमें ॥ ६७

परमधामसे इस जगतमें अवतरित होते समय परब्रह्म परमात्माने

ब्रह्मात्माओंको कहा, मैं तुम्हें जागृत करनेके लिए अपनी प्रियतमा श्री श्यामाजीको भेजूँगा. श्री श्यामाजी सभी ब्रह्मात्माओंकी शिरोमणि हैं. परब्रह्म परमात्माने उनको ही अपने आनेके वचन दिए हैं.

कहे रसूल रूहअल्ला वास्ते, ल्याया आखरी फुरमान ।
रूहअल्ला इमाम आवसी, ले हक इलम पढसी कुरान ॥ ६८

रसूल मुहम्मद स्वयं कहते हैं, मैं श्री श्यामाजीके लिए ही यह कुरान (आखिरी फुरमान) लेकर आया हूँ. श्री श्यामाजी सद्गुरुके रूपमें प्रकट होंगी एवं ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर कुरानका स्पष्टीकरण करेंगी.

मारसी सबों का सैतान, तब होसी एक दीन ।
सुभेसक भांने लुदंनी, होसी सब दिलों पाक यकीन ॥ ६९

सद्गुरु जब ब्रह्मज्ञानसे लोगोंके हृदयकी दुष्टताको मार भगाएँगे तब इस जगतमें परब्रह्म परमात्माको सर्वोच्च मानने वाला श्री कृष्ण प्रणामी धर्म स्थापित होगा. तब तारतम ज्ञानके द्वारा सबके सन्देह मिट जाएँगे एवं सबके हृदयमें परब्रह्म परमात्माके प्रति विश्वास उत्पन्न होगा.

ए हक कौल कहे रसूलें, जो रूहोंसों किए इमदाए ।
सो कुंजी दई दिल मसिएं, क्यों औरों खोल्या जाए ॥ ७०

परमात्माने अपनी ब्रह्मात्माओंको जो वचन दिए थे उनको ही रसूल मुहम्मदने कुरानके द्वारा व्यक्त किया है. उनको स्पष्ट करनेकी कुञ्जीके रूपमें परब्रह्म परमात्माने सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके हृदयमें तारतम ज्ञान प्रदान किया. अब उनके अतिरिक्त अन्य किसीसे भी वे वचन स्पष्ट नहीं होंगे.

कुरान वारस मोमिन कहे, पढ्या या उमी होए ।
बिन अरस रूहें हक न्यामत, दूजा ले न सके कोए ॥ ७१

ब्रह्मात्माओंको ही कुरानके उत्तराधिकारी कहा गया है, चाहे वे पठित (विद्वान्) हों या अपठित (लौकिक ज्ञानके चातुर्य रहित) हों. परमधामकी इस सम्पदाको इन ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता है.

हक फुरमान मासूक ल्याइया, कुंजी रूहअल्ला साथ ।
सो इमाम खोलें बीच अरस रूहों, जो एक तन सुंनत जमात ॥ ७२

रसूल मुहम्मद परमात्माके जिस सन्देशको लेकर आए हैं, उसे स्पष्ट करनेकी तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी लेकर श्री श्यामाजी सद्गुरुके रूपमें प्रकट हो गईं. वे ही सद्गुरु मेरे हृदयमें विराजमान होकर ब्रह्मात्माओंके मध्य उन रहस्योंको स्पष्ट कर रहे हैं. इन ब्रह्मात्माओंको ही धर्मनिष्ठ समुदाय कहा है.

जब आवें यार ले महंमद, पट खोल दे मुसाफ दीदार ।
काजी कजा तब होएसी, दूजा कौन खोले ए द्वार ॥ ७३

जब श्री श्यामाजी अपनी अङ्गस्वरूपा ब्रह्मात्माओंको लेकर सद्गुरुके रूपमें प्रकट होंगी तब कुरानके रहस्योंको स्पष्ट कर परब्रह्म परमात्माकी अनुभूति (दर्शन) करवाएँगी तभी जगतको परमात्माका न्याय प्राप्त होगा.

कहे महंमद मैं अव्वल, रूहअल्ला आवसी आखर ।
एहेलवेती मेहेदी बीचमें, गिरो राखी पनाह कर ॥ ७४

रसूल मुहम्मदने यह भी कहा था, मैं पहले आया हूँ श्री श्यामाजी अन्तमें प्रकट होंगी. वे ही सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर परमधामकी आत्माओंके समुदायको अपनी शरणमें लेंगी.

मजाजीयोंमें ले मुसाफ, क्या हक कजा करसी बीच रात ।
जब हक हादी आई उमत, तबहीं उडी जुलमात ॥ ७५

क्या परमात्मा धर्मके प्रति श्रद्धा न रखनेवाले लोगोंके बीचमें प्रकट होकर अज्ञानमयी रात्रिमें कुरानके द्वारा न्याय करेंगे ? जब परब्रह्म परमात्माकी शक्ति श्री श्यामाजीके साथ प्रकट हुई और उनके साथ ब्रह्मात्माओंका समुदाय प्रकट हुआ तब अज्ञानरूपी अन्धकार भी दूर हो गया.

आया फुरमान रूहअल्ला पर, करसी एही क्यामत के काम ।
मार दजाल एक दीन कर, देसी हैयाती तमाम ॥ ७६

अन्तिम समयमें श्री श्यामाजी (सद्गुरु) को तारतम ज्ञानके रूपमें परब्रह्म परमात्माका आदेश प्राप्त हुआ. अब वे स्वयं कयामतका कार्य सिद्ध करेंगी

तथा नश्वर जगतके जीवोंके हृदयमें स्थित नास्तिकतारूपी दज्जालको मारकर उन्हें एक ही परब्रह्म परमात्माको सर्वोच्च मानने वाले धर्म (श्री कृष्ण प्रणामी धर्म) में लाकर अखण्ड मुक्तिस्थलोंका सुख प्रदान करेंगी.

अव्वल ल्याया एहिया, ईसे पर यकीन ।
कहें पढे सो हो गया, जिन दई जिंदगानी दीन ॥ ७७

कतेब ग्रन्थोंमें ऐसा उल्लेख है, सर्वप्रथम एहियाने ईसाके प्रति विश्वास व्यक्त किया जिन्होंने धर्मको नया स्वरूप दिया है. उनके लिए कुरानको पढ़नेवाले कहते हैं कि यह घटना बीत चुकी है.

[इसका तात्पर्य यह है कि सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजके प्रति श्री प्राणनाथजी सर्वप्रथम पूर्ण समर्पित हुए हैं.]

एही गिरो पैगंमरों आखरी, जिन लई महंमद बूंदें नूर ।
ए सोई उतरे अरस से, जिन किए कौल हजूर ॥ ७८

इन्हीं ब्रह्मात्माओंको अन्तिम समयमें प्रकट हुए पैगम्बर श्री देवचन्द्रजीका समुदाय कहा है जिन्होंने उनके द्वारा निर्दिष्ट तारतम ज्ञानके अंशोंको ग्रहण किया है. ये ब्रह्मात्माएँ परमधामसे अवतरित हुईं हैं. इनको परमात्माने अपने आनेका वचन दिया था.

कह्या आखर पैगंमर आवसी, देसी साहेदी अपनी उमत ।
जो आए कौल कर हक से, तब जाहेर होसी कयामत ॥ ७९

कुरानमें इस प्रकारका उल्लेख है कि कयामतके समयमें अन्तिम पैगम्बर (इमाम महदी) अवतरित होंगे और अपने समुदायके लोगोंको परमात्माकी साक्षी देंगे. वे आत्माएँ परमात्मासे वायदा कर इस जगतके खेलमें जब आएँगी तभी जगतमें कयामतका समय प्रकट होगा.

निसान बडा ईसा आखरी, और एही आखरी किताब ।
महंमद मेहेदी आखरी, इमाम आखरी खिताब ॥ ८०

कयामतके सङ्केतोंमें सबसे बड़ा सङ्केत ईसा रूहअल्लाह (सद्गुरु) के प्राकट्यका है और उनके द्वारा व्यक्त किया गया ग्रन्थ (श्री तारतम सागर) ही अन्तिम ग्रन्थ कहा गया है. वे ही अन्तिम मुहम्मद अर्थात् महदी मुहम्मद

कहलाएँगे और अन्तिम सद्गुरुकी शोभा प्राप्त करेंगे.

एही बडे पहाड दो निसान, बका बतावें बैत अल्ला ।
दे मुसाफ मगज साहेदियां, दिन देखावें नूर तजल्ला ॥ ८१

ईसा रूहअल्लाह एवं इमाम महदी इन दोनोंको कुरानमें पर्वतोंकी भाँति महान् कहा है. वे दोनों अखण्ड परमधामकी बातें बताएँगे एवं कुरानके गूढ़ अर्थोंको स्पष्ट कर ब्रह्मज्ञानके प्रकाशमें परमधामका अनुभव करवाएँगे.

कह्या आवसी असराफील, आखरी बडा निसान ।
एक फूंके जिमी पहाड उडावसी, दूजे फूंके कायम करे जहान ॥ ८२

कुरानमें यह भी उल्लेख है कि अन्तिम समयमें इस्राफील फरिश्ता आएगा. उसको भी कयामतका बड़ा सङ्केत कहा है. वह अपनी दुन्दुभी बजाकर नश्वर जगतके लोगोंके हृदयमें पर्वतके समान बढ़े हुए अहङ्कारको उड़ाएगा और दूसरी बार दुन्दुभी बजाकर समस्त जीवोंको अखण्ड मुक्तिस्थलका सुख प्रदान करेगा.

असराफील चिन्हाएसों, मगज मुसाफी गाए ।
चौदे तबक एक सूर से, करके साफ उडाए ॥ ८३

यह इस्राफील फरिश्ता कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर सद्गुरुके रूपमें प्रकट हुए परमात्माकी पहचान करवाएगा एवं दुन्दुभीके एक ही स्वरमें चौदह लोकोंमें व्याप्त मिथ्याभिमानको समाप्त कर सभीके हृदयको निर्मल कर देगा.

जब सूर बाजे दूसरा, देवे हक चिन्हाए ।
तिन सबों कायम किए, रही आठों भिस्त भराए ॥ ८४

जब उसकी दुन्दुभीसे दूसरा स्वर निकलेगा तब वह परमात्माकी पहचान करवाएगा. वह ब्रह्मज्ञानके प्रतापसे नश्वर जगतके सभी जीवोंको आठ मुक्तिस्थलोंका अखण्ड सुख प्रदान करेगा.

आया असराफील आखर, साथ आखरी इमाम ।
माएने मगज मुसाफ के, किए जाहेर सब तमाम ॥ ८५

कुरानमें यह उल्लेख है कि कयामतके समयमें अन्तिम इमामके साथ यह

इस्त्राफील फिरश्ता आएगा और कुरानके समस्त गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेगा.

हकें ऐसा साथ इमाम के, दिया फिरस्ता मरद ।
उडावे जिमी पहाड जड मूल से, सो होसी फिरस्ता कैसे कद ॥ ८६

परमात्माने इमाम महदीके साथ ऐसा समर्थ फरिश्ता भेज दिया जो बड़े-बड़े पर्वतोंको जड़मूलसे उड़ा देगा तो वह फिरश्ता शरीरसे कितना लम्बा चौडा होगा.

आठों भिस्त कायम करी, बजाए दूजा सूर ।
बरस्या आब सबन पर, अरस अजीम का नूर ॥ ८७

इसी फिरश्ताने दूसरी बार दुन्दुभी बजाकर आठों बहिश्तोंको अखण्ड कर दिया और सबके ऊपर दिव्य परमधामके देदीप्यमान ज्ञान (तारतमज्ञान) की वर्षा की.

हैयात किए सब इन ने, ए जो कहे बुजरक ।
और बका सब कों किए, जिमी आसमान खलक ॥ ८८

इस नश्वर जगतमें श्रेष्ठ कहलाने वाले देवी-देवताओंको भी उसने अखण्ड सुख प्रदान किया. इतना ही नहीं पृथ्वीसे लेकर आकाश पर्यन्तके सभी जीवोंको उसने अखण्ड किया.

आठों भिस्त कायम करी, कर रोसन जहूर ।
पेहेचानो ए फिरस्ता, ले हक इलम सहूर ॥ ८९

नश्वर जगतके जीवोंके हृदयको ब्रह्मज्ञानसे प्रकाशित कर उसने उन्हें आठों मुक्तिस्थलोंमें अखण्ड किया. अब ब्रह्मज्ञान (तारतम) के द्वारा विचार-विमर्श कर इस महान् फिरश्तेकी पहचान करो.

आसमान जिमी जड मूल से, एक फूंकें देवें उडाए ।
कायम करे सब दूजे फूंके, बका भिस्तमें उठाए ॥ ९०

इसने अपनी एक ही दुन्दुभीके स्वरसे पृथ्वीसे लेकर आकाश पर्यन्त सम्पूर्ण जगतके जीवोंके अहङ्कारको जड़मूलसे उड़ा दिया एवं दूसरे स्वर (तारतम

ज्ञान) से इस जगतके सभी जीवोंको अखण्ड कर उन्हें मुक्तिस्थलोंका सुख प्रदान किया.

ए साथ महंमद मेहेदीके, फिरस्ता आया आखर ।
क्यों न चीन्हो तुम इनकों, जो करसी दिन फजर ॥ ९१

यह फिरश्ता कयामतके समयमें महदी मुहम्मदके साथ प्रकट हुआ है. इसको तुम क्यों नहीं पहचान रहे हो ? यही तो अज्ञानरूपी अन्धकारको मिटाकर ब्रह्मज्ञानका प्रभात करने वाला है.

कह्या गाए असराफील मुसाफ, किए जाहेर मगज कुरान ।
यासे पाक होए दुनी कयामतें, फल पाया सुभान ॥ ९२

कुरानमें यह भी कहा है, यह इस्राफील फिरश्ता कयामतके समयमें प्रकट होकर कुरानका गायन करेगा और उसके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेगा. कयामतके समयमें इस जगतके जीव उसीके ज्ञानसे पवित्र होकर परमात्माकी पहचान करेंगे और मुक्ति स्थलोंका सुख प्राप्त करेंगे.

ए पहाड निसान आखरी, जिन देखाई बका बिसात ।
दुनी पहाड पूजे जाहेरी निसान, कर बैठे बका बीच रात ॥ ९३

कुरानमें जिनको पर्वतके समान महान् कहा गया है, वे ईसा रूहअल्लाह और महदी मुहम्मद अन्तिम समयमें प्रकट होकर सबको अखण्ड धामकी पहचान करवाएँगे. इस प्रसङ्गको पढ़ कर अरबके लोग वहाँके प्रकट पर्वतों (सफा एवं मरवा) की पूजा करते हैं ये लोग अज्ञानमयी रात्रिमें इनको ही अखण्ड मान बैठे हैं.

म्याराज हुआ महंमद पर, सो लई सब हकीकत ।
हुए इलमें अरस दिल औलियों, ऊगी बका हक सूरत ॥ ९४

रसूल मुहम्मदको जब दर्शन हुए तब उन्होंने परमधामकी यथार्थता बताई. जिन ब्रह्मात्माओंका हृदय तारतम ज्ञानसे प्रकाशित होकर परमधामके सदृश बन गया है उन्हींके हृदयमें परब्रह्म परमात्माका दिव्य स्वरूप अङ्कित हुआ है.

अब देखसी सब नजरों, दोऊ झंडों करी पुकार ।
बातून झंडा नूर का, पोहोंच्या बिलंद नूर पार ॥ ९५

अब जगतके लोग स्पष्ट देख पाएँगे कि रसूल मुहम्मद द्वारा स्थापित कर्मविधानका ध्वज (कुरान) एवं सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज द्वारा स्थापित ब्रह्मज्ञानका ध्वज (तारतम सागर) किस प्रकार पुकार कर रहे हैं. यह तारतम सागर ही मूल रूपसे ज्ञानका ध्वज है जो अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधाम तक पहुँचा है.

दुनी जाहेरी झंडे की, तिन पांऊं कटाए पुलसरात ।
लई ना हक हकीकत, और वजूदें चल्या न जात ॥ ९६

बाह्यार्थको ग्रहण करनेवाले लोग कर्मकाण्डका ध्वज लेकर चल रहे हैं. इसलिए कर्ममार्ग (पुलेसिरात) में चलते हुए उनके पैर कट जाते हैं. उन्होंने परब्रह्मका यथार्थ ज्ञान ग्रहण नहीं किया है. इस मार्ग पर शरीर (शारीरिक कर्मकाण्ड) के द्वारा चला नहीं जा सकता है.

महामत कहे ऐ मोमिनो, हादिएं खोले कयामत निसान ।
हक अरस बका जाहेर हुए, फिरस्तें नूरै नूर किया जहान ॥ ९७

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! सद्गुरुने प्रकट होकर कयामतके सङ्केत स्पष्ट कर दिए हैं. अब उनके ज्ञानसे परब्रह्म परमात्मा एवं परमधामकी पहचान हो गई है. उनके साथ प्रकट हुए फिरश्ता (इस्राफील) ने पूरे जगतमें ब्रह्म (तारतम) ज्ञानको प्रकाशित किया है.

प्रकरण ९ चौपाई ६८५

झंडा हकीकी खडा हुआ हिंदमें

जाए इलम पोहोंच्या हक का, ताए हुई हक हिदायत ।
सो आया फिरके नाजी मिने, झंडा दीन हकीकी जित ॥ १

महामति कहते हैं, जिनको परब्रह्म परमात्माका ज्ञान (तारतम ज्ञान) प्राप्त हुआ है. उनको ही परमात्माका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ. वही समुदाय धर्मनिष्ठ समुदायके रूपमें आया जहाँ पर धर्मका ध्वज अर्थात् एक ही परब्रह्म

परमात्माको माननेवाला धर्म श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके रूपमें प्रसिद्ध है.

लिखी कुरानमें हकीकत, होसी खोलें एक दीन ।
जब उग्या सूर मारफत का, आवसी सबों देख यकीन ॥ २

कुरानमें परब्रह्म परमात्माके विषयमें जो कुछ उल्लेख है. उनका रहस्य जब स्पष्ट होगा तब सभी लोग एक ही धर्ममें सम्मिलित होंगे. जब ब्रह्मज्ञानका सूर्य उदय होगा. उसे देखकर सबके हृदयमें परमात्माके प्रति विश्वास उत्पन्न होगा.

दीदार हुआ हक सूरत का, देख अरस नजर बातन ।
न्यामत अरसोंकी सबे, लै अरस दिन मोमन ॥ ३

आत्मदृष्टि खुलने पर जिनको परमधामके दर्शन हुए हैं उनको ही परब्रह्म परमात्माकी पहचान होगी. धाम हृदया ब्रह्मात्माएँ क्षर जगतसे लेकर अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधामकी सम्पूर्ण सम्पदा प्राप्त करतीं हैं.

कहें आयतें हदीसें जाहेर, नूर झंडा महंमदी जे ।
दिन दिन घडी घडी पल पल, नूर बढताई देखोगे ॥ ४

कुरानकी आयतों तथा हदीसोंमें स्पष्ट उल्लेख है कि सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी महाराजका तारतम ज्ञानरूपी प्रकाशमय ध्वज इस जगतमें प्रकट हो गया है. अब उसका तेज प्रतिदिन, प्रतिघड़ी, प्रतिपल बढ़ता हुआ दिखाई देगा.

महंमद नूर है हक का, कुल सैयन महंमद नूर ।
इन झंडें कौल महंमद के, आखर किया चाहिए जहूर ॥ ५

श्री श्यामाजी परब्रह्म परमात्माकी अङ्गस्वरूपा हैं. उनके ही तेजोमय अङ्गसे ब्रह्मात्माएँ हैं. रसूल मुहम्मदके कथनानुसार वे कयामतके समयमें इस जगतमें अवतरित होकर तारतमज्ञानका तेजोमय ध्वज स्थापित करेंगे.

लैलत कदर बीच मोमिनों, आए खोली रूह नजर ।
हक इलम ले रूहअल्ला, करी इमामें फजर ॥ ६

ब्रह्मात्माओंने इस अज्ञानमयी रात्रिमें अवतरित होकर भी तारतम ज्ञानके द्वारा अपनी आत्मदृष्टि खोली है. श्री श्यामाजी यह ब्रह्मज्ञान लेकर अवतरित हुई

हैं. उन्होंने ही सद्गुरुके रूपमें ब्रह्मज्ञानका प्रभात किया है.

जब लिया माएना बातून, रूह नजर खुली तब ।
दिन मारफत हुआ आलम में, नूर रोसन किया अब ॥ ७

जब कुरानके गूढ़ अर्थ स्पष्ट हो गए हैं तब ब्रह्मात्माओंकी आत्मदृष्टि खुल गई. अब पूरे जगतमें ब्रह्मज्ञानका प्रभात हुआ जिससे चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश फैल गया.

तब सबोंने देखिया, जो कछू हक बिसात ।
हक खिलवत जाहेर हुई, अरस बका हक जात ॥ ८

तब नश्वर जगतके सभी जीवोंने दिव्य परमधामकी सम्पदाओंका अनुभव किया. अब तो परमधामकी ब्रह्मात्माओंके साथ श्री राजजीके एकान्त स्थल-मूल मिलावाकी बातें भी प्रकट हो गईं.

फुरमाया सब हो चुक्या, मिले सब निसान ।
हादी करसी जाहेर, खोल माएने मगज कुरान ॥ ९

आप्त ग्रन्थोंकी भविष्णवाणियाँ पूर्ण हो गईं. उनमें लिखे गए सभी सङ्केत स्पष्ट हो गए. अब सद्गुरु मेरे हृदयमें बैठकर कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करते हुए पूरे जगतमें ज्ञानका प्रकाश फैलाएँगे.

झंडा नूरका महंमदी, ताए कबूं न होए नुकसान ।
जेते दिन जित फुरमाया, रह्या तेते दिन तित ईमान ॥ १०

रसूल मुहम्मद द्वारा स्थापित धर्म ध्वजको कभी भी क्षति नहीं होगी. जितने दिनों तक जहाँ पर विश्वास रखनेका आदेश होता है उतने ही दिनों तक वहाँ पर विश्वास टिका रहता है.

और ठौर हुकमें खडा किया, सो जाए लग्या नूर आसमान ।
जो एक ठौर कदी न देखिए, तो और ठौर बिलंद हुआ जान ॥ ११

परब्रह्म परमात्माकी प्रेरणासे धर्मका यह ध्वज मक्काके बदले भारतवर्षमें आकर प्रतिष्ठित हुआ. यदि इस धर्मध्वजको एक स्थान (मक्का) में नहीं देख

पाए तो समझना कि वह दूसरे स्थान (भारतवर्ष) में आकर अपने तेजोमय प्रकाशसे आकाशकी ऊँचाइयोंको स्पर्श कर रहा है.

लिख्या जाहेर हदीस में, नूर झंडा निसान ।
सो हदीस देखे सेंती, करसी दिल पेहेचान ॥ १२

हदीस ग्रन्थोंमें इस प्रकाशमय धर्मध्वजके सम्बन्धमें स्पष्ट उल्लेख है. उनका अध्ययन करने पर इसकी पहचान हो सकती है.

अव्वल झंडा कह्या सरीयत, जाके तले दुनी पाक होए ।
जो रेहेत तले फुरमाएके, ताकी सिफत करे सब कोए ॥ १३

ऐसा कहा जाता है कि आरम्भमें मक्कामें कर्मकाण्डका ध्वज लहराया गया. जिसके नीचे आनेवाले लोग पवित्र हुआ करते थे. जो लोग रसूल मुहम्मदके आदेशके अधीन चलते थे सभी लोगोंने उनकी प्रशंसा की.

पर सरीयत झंडा नासूतमें, पोहोंच्या न लग मलकूत ।
पकडे पुलसरात ने, छोड ना सके नासूत ॥ १४

किन्तु मृत्युलोकमें स्थापित किया गया कर्मकाण्डका यह ध्वज वैकुण्ठ तक भी नहीं पहुँच सका. कर्मके बन्धनोंने ही लोगोंकी भावनाओंको जकड़े रखा. इसलिए कर्मकाण्डी लोग मृत्युलोकको छोड़कर आगे नहीं बढ़ सके.

जो लेवे राह तरीकत, ताके फैल हाल दिल से ।
सो पाक होए पोहोंचे मलकूत, फिरस्तों के अरसमें ॥ १५

जिन लोगोंने उपासनाका मार्ग अङ्गीकार किया है उन्होंने अपने मन, वचनको अन्तरसे निर्मल किया. वे अन्तःकरणको पवित्र कर विभिन्न देवताओंके धाम वैकुण्ठमें पहुँचते हैं.

बीच चौदे तबकों, कहे सात आसमान ।
कोई सुरैया उलंघ ना सक्या, देखो सोलमें सिपारे बयान ॥ १६

कुरानमें इन चौदह लोकोंके मध्यमें सात आकाश कहे गए हैं. सोलहवें सिपारेमें यह उल्लेख है कि उसके ऊपर स्थित ज्योति स्वरूपको पार कर कोई भी आगे नहीं बढ़ सका.

आसमान जिमी बीच फना के, हवा लग ला मकान ।
ला लग पोहोंचे तरीकत, मुसाफ हकीकत बका बयान ॥ १७

पातालसे लेकर सत्यलोक तक पृथ्वी और आकाशके मध्य जो कुछ भी है वह सब क्षणभङ्गुर है. उपासनाका मार्ग अङ्गीकार करनेवाले लोग इसी शून्य निराकार तक पहुँचते हैं. कुरानका यथार्थ ज्ञान उससे परे अखण्ड धामका विवरण देता है.

देखो सिपारे तीसरे, होवे हकीकत सों एक दीन ।
सो आन मिलाय सब हुकमें, आए तले मारफत झंडे यकीन ॥ १८

कुरानके तीसरे सिपारेमें उल्लेख है कि जगतके लोग यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर एक ही धर्मकी शरणमें आएँगे. श्री राजजीके आदेशसे वे सारे सङ्केत अब स्पष्ट हो गए हैं. अब सभी लोग इस तारतम ज्ञानरूपी झण्डेके नीचे आकर एकत्र हुए हैं और सभीने परमात्माके प्रति विश्वास व्यक्त किया है.

फुरमाया सरीयत तरीकत, किया रात बीच अमल ।
ना पोहोंचे बका दिन कों, बिन हकीकत अरस असल ॥ १९

रसूल मुहम्मदने स्पष्ट किया था कि कर्मकाण्ड एवं उपासनाका विधान अज्ञानमयी रात्रि तक ही सीमित है. यथार्थ ज्ञानके बिना परमात्माकी पूर्ण पहचान नहीं हो सकती है.

माएने हकीकत मुसाफके, पावें हक के इलम ।
सो पोहोंचें जबरूतमें, होए सुध हक हुकम ॥ २०

परमात्मा द्वारा प्रदत्त ब्रह्म (तारतम) ज्ञानसे ही कुरानका यथार्थ ज्ञान स्पष्ट होता है. जिनको परमात्माके आदेशसे यह सुधि प्राप्त हो जाती है वे अक्षरधाम तक पहुँच सकते हैं.

गिरो फिरस्ते नजीकी, बका नूर मकान ।
उतरे मलायक इत थें, सो पोहोंचसी कर पेहेचान ॥ २१

अक्षरधाम स्थित ईश्वरीसृष्टि अक्षरब्रह्मकी अन्तरङ्ग मानी जातीं हैं. ये सभी उसी अक्षरधामसे इस जगतमें अवतरित हुईं हैं. तारतम ज्ञानके द्वारा अपनी पहचान होने पर वे वहीं पहुँच जाएँगी.

जब हक इलमें मारफत खुली, तब देख्या बका अरस सूर ।
सो सूर हुआ सिर सबन के, बरस्या बका हक नूर ॥ २२

जब ब्रह्मज्ञानके द्वारा पूर्ण पहचान हुई तब अखण्ड परमधामके प्रकाश स्वरूप तारतम सागरका प्रकटीकरण हुआ. यह ग्रन्थ सभी प्रकारके ज्ञानका शिरोमणि कहलाया जिससे दिव्य परमधामके ज्ञानकी वर्षा हुई.

खासल खास अरस अजीम, हक सूरत नूरजमाल ।
इत हादी रूहें खिलवत, ए वाहेदत जात कमाल ॥ २३

सर्वश्रेष्ठ परमधाममें विशिष्ट आत्माएँ रहतीं हैं. वे स्वयं परब्रह्म परमात्माकी अङ्गस्वरूपा हैं. इस अद्वैत भूमिकामें श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ अद्वैत स्वरूप (एकात्मभाव) से रहते हैं. यही अद्वैत भूमिकी विशेषता है.

इन विध झंडा खडा किया, हादी मोमिनों इत आए ।
औलिए अंबिए पैगंमर, गोस कुतब मिले सब धाए ॥ २४

श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंने इस जगतमें अवतरित होकर इस प्रकार ब्रह्मज्ञानका ध्वज प्रतिष्ठित किया जहाँ पर औलिए, अम्बिए, पैगम्बर, गोस, कुतब आदि सभी इसकी शरणमें आ गए.

आगुं जिन बंदगी करी, ए सोई जमाना बुजरक ।
सो देखो इत हक कदमों, कोई पीछा रहे न माहें खलक ॥ २५

पूर्वकालमें अनेक लोगोंने तपस्याके द्वारा वर माँगा था कि ब्रह्मज्ञानके अवतरणके समय हमें इस जगतमें जन्म प्राप्त हो. वह यही श्रेष्ठ समय है. अब सभी लोग इस समय पर अवतरित परमात्माके चरणोंमें आ रहे हैं. जगतमें कोई भी इसमें पीछे नहीं रह रहा है.

अब दुनियां पीछी क्यों रहे , जब हुई हक कजाए ।
हुआ सब पर हुकम महंमदी, सो सब लेसी सिर चढाए ॥ २६

जब स्वयं परमात्मा न्यायाधीश बनकर न्याय कर रहे हैं तो जगतके जीव यह लाभ लेनेमें पीछे क्यों रहते हैं ? अब पूरे जगतमें श्री श्यामाजीका आदेश चलने लगा. सभी लोग उसीको शिरोधार्य करेंगे.

उठी कही जेती न्यामतें, सो आईं बीच हिंदुस्तान ।
जो झंडा महंमदी नूर का, नूर रोसन ईमान ॥ २७

मक्कासे जो अमूल्य निधियाँ उठ गईं हैं अब वे भारतभूमिमें आ गईं. श्री श्यामाजी द्वारा स्थापित ब्रह्मज्ञानके ध्वजके प्रतापसे सबके हृदय आलोकित हुए और उन्हें परमात्माके प्रति विश्वास हुआ.

बेसक मेला इत होएसी, महंमद सरा अदल ।
तिन कायम करी दुनी फानी को, ले हक इलम अकल ॥ २८

इस भारत वर्षमें ब्रह्मात्माओंका मिलन अवश्य होगा. सर्वत्र श्रीश्यामाजीका न्याय काम करने लगेगा. उन्होंने ही अपने हृदयमें परब्रह्म परमात्माके तारतम ज्ञान एवं जागृत बुद्धिको प्रतिष्ठित कर नश्वर जगतको भी अखण्ड कर दिया.

जो कह्या सरा दीन महंमदी, तामें सकसुभे कोई नाहें ।
सो सब सुध देवे हक बका, सकसुभे न अरस दिल माहें ॥ २९

श्री देवचन्द्रजी द्वारा स्थापित श्री कृष्ण प्रणामी धर्मकी पद्धतिमें किसी भी प्रकारका संशय नहीं है. उससे अखण्ड परमधाम तथा परमात्माकी पहचान होती है. क्योंकि ब्रह्मात्माओंके हृदयमें किसी भी प्रकारका सन्देह नहीं होता है.

ना सक महंमद दीनमें, ना सक महंमद सरीयत ।
ना सक सुंनत जमातमें, कहे यों हदीसे आयतें सूरत ॥ ३०

श्री देवचन्द्रजी द्वारा स्थापित श्री कृष्ण प्रणामी धर्ममें तथा उनके द्वारा बताई गई सम्प्रदाय पद्धतिमें किसी भी प्रकारका सन्देह नहीं है. इसी प्रकार इस ब्रह्मज्ञानको ग्रहण करनेवाली ब्रह्मात्माओंके समुदायमें भी कोई सन्देह नहीं है. कुरानकी आयतों तथा हदीसोंमें इस प्रकारका उल्लेख है.

अब क्यों झंडा छिपा रहे, हुआ जाहेर तजल्ला नूर ।
जाहेर किया नूर अरस का, अरस दिल महंमद जहूर ॥ ३१

अब यह ब्रह्मज्ञानका ध्वज कैसे छिपा रहेगा, जब दिव्य परमधामका ज्ञान

प्रकट हो चुका है. श्री श्यामाजीके हृदय धामसे परमधामके तेजोमय प्रकाशके समान यह ब्रह्मज्ञान प्रकट हुआ है.

खिलवत भी जाहेर करी, जो हक पातसाही वाहेदत ।
छिपी सब जाहेर हुई, जो हक दिल बीच न्यामत ॥ ३२

श्री राजजीके साम्राज्य परमधाम मूलमिलावेका रहस्य भी प्रकट कर दिया गया. इसके साथ ही श्री राजजीके हृदयका गूढ़ रहस्य जो अभी तक गुप्त था वह भी प्रकट हो गया.

सिपारे चौथे मिने, कही गैब हक खिलवत ।
सो जाहेर करसी मोमिन, उतर के आखरत ॥ ३३

कुरानके चौथे सिपारेमें मूलमिलावाके गूढ़ रहस्योंका उल्लेख करते हुए कहा है कि कयामतके समयमें ब्रह्मात्माएँ प्रकट होकर उसे स्पष्ट करेंगी.

हुई ढील होते फजर, वास्ते आवने हक न्यामत ।
सो आया अरस बका मता, हुआ बीच बारहीं सदी बखत ॥ ३४

परमधामकी सम्पूर्ण सम्पदा पहले प्रकाशित हो जाए इसीलिए कुरानके गूढ़ रहस्योंको मारफत सागरके द्वारा प्रकट करनेमें थोड़ा विलम्ब हुआ. परमधामकी यह सम्पूर्ण सम्पदा बारहवीं सदीमें प्रकट हो गई.

भई रोसनाई रूहअल्लाह की, सुरु दसई अग्यारहीं विस्तार ।
होते सदी बीच बारहीं, आया बका मता बेसुमार ॥ ३५

श्री श्यामाजी सद्गुरुके रूपमें दसवीं सदीमें प्रकट हुईं. उनके ज्ञानका विस्तार ग्यारहवीं सदीमें हुआ. बारहवीं सदी होने पर परमधामकी अपार सम्पदा प्रकट हो गई.

झंडा महंमदी नूर का, सो पोहोंच्या नूर बिलंद ।
हुआ दिन दिल महंमद मारफत, उडी रात फरेबी फंद ॥ ३६

अब यह ब्रह्मज्ञानका ध्वज अखण्ड परमधाम तक पहुँच गया है. श्री श्यामाजीके हृदयमें ब्रह्मज्ञानका सूर्य उदय हुआ जिससे समग्र जगतकी भ्रान्तियाँ दूर हो गईं.

सिपारे उनईसमें, लिखे एक ठौर बयान तीन ।
ए जो देखो दिल देय के, तो दिल नकस होए यकीन ॥ ३७

कुरानके उन्नीसवें सिपारेमें एक स्थान पर तीन प्रकारका वर्णन है. इस रहस्य पर विचार पूर्वक देखोगे तो तुम्हारे हृदयमें विश्वास उत्पन्न होगा.

आवे अरस यकीन हक महंमद पर, जो देखो हकीकत मारफत ।
इलम लुदंनी हक के, होए हक हिदायत ॥ ३८

यदि परमधामके गूढ़ रहस्यों एवं परब्रह्मकी पूर्ण पहचानको स्पष्ट समझ जाओगे तो तुम्हें परब्रह्म परमात्मा तथा श्रीश्यामाजीके प्रति विश्वास उत्पन्न होगा. स्वयं परमात्मा द्वारा दिए गए तारतम ज्ञानके प्रतापसे इस प्रकारका निर्देशन तथा यथार्थताका बोध हो जाएगा.

इन विध झंडा महंमदी, खडा हुआ बीच हिंदुस्तान ।
चौदे तबक जुलमत परे, नूर पोहोंच्या लाहूत आसमान ॥ ३९

इस प्रकार भारत वर्षमें श्रीश्यामाजी द्वारा उपदिष्ट ब्रह्मज्ञानका ध्वज स्थापित हुआ. वह चौदह लोकोंसे परे शून्य निराकारको पार करते हुए अक्षरसे भी परे परमधाम तक पहुँच गया.

महामत कहे मदीने से, लिखे खलीफों पर फुरमान ।
उठी दुनी बरकत सफकत फकीरों, और कलाम अल्ला ईमान ॥ ४०

महामति कहते हैं, मदीनासे भी खलीफाओं पर आदेश हुआ कि यहाँसे भी शक्ति, फकीरोंका आशीर्वाद, कुरान तथा खुदाके प्रति विश्वासका ध्वज उठ गया है.

झंडा सरीयत का उठ्या

कह्या झंडा उठ्या ईमान का, कौल किया जिन सरत ।
महंमद मेहेदी इमाम आए, लिखे आए नामें वसीयत ॥ १

ऐसा कहा गया है कि मक्कासे परमात्माके प्रति विश्वासका ध्वज उठ गया. रसूल मुहम्मदने जो भविष्यवाणी की थी, उसीके अनुरूप उस झण्डेको

लेकर श्रीदेवचन्द्रजी (महदी मुहम्मद) सद्गुरुके रूपमें भारतवर्षमें आए. इसी वास्तविकताको वसीयतनामाके द्वारा लिख कर भिजवाया.

यों हादी लिखे जाहेर कर, दिन देखाए देवें कयामत ।
सो लिखे सखत सौं खाए के, सो भी वास्ते इन बखत ॥ २

सद्गुरु श्रीदेवचन्दजीने इन अधिकारपत्रों (वसीयतनामा) को लिखवाया कि समय आने पर आत्मजागृति (कयामत) के समयके आगमनको सुनिश्चित किया जा सके. मक्काके काजियोंने भी इसी समयको स्पष्ट करनेके लिए सौगन्ध खा कर वसीयतनामे लिखे.

मेहेनत करी महंमद ने, और असहाबों यार ।
झंडा खडा किया दीन का, तले आई दुनी बेसुमार ॥ ३

रसूल मुहम्मदने उनके अनुयायियों तथा मित्रोंकी सहायतासे बड़े परिश्रमसे मक्कामें कर्मकाण्डका झण्डा खड़ा किया था जिसके नीचे असंख्य लोग एकत्र हुए.

दुनियां जो जैसी हुती, सो तैसी विध लई समझाए ।
तोरा किया सिर सबन के, दई सरीयत राह चलाए ॥ ४

उस समयके लोग जिस प्रकार समझ सकते थे उनको रसूल मुहम्मदने उसी प्रकारसे समझाया. सबके लिए कर्मका विधान सुनिश्चित कर उन्होंने कर्मकाण्डका मार्ग प्रशस्त किया.

अग्यारैं सदी लग अमल, चल्या सरीयत का ।
सो फरदा रोज सदी बारहीं, कौल पोहोंच्या फजर का ॥ ५

यह कर्मका विधान ग्यारहवीं सदी तक चलता रहा. जिसके लिए रसूल मुहम्मदने कलका दिन कयामतका (फरदारोज कयामत) कहा था. वह बारहवीं सदीका समय आ गया है.

सो नूर झंडा बीच हिंद के, किया खडा नूर इसलाम ।
इत आई सब न्यामतें, और आया अल्ला कलाम ॥ ६

इस समय कर्मविधानरूपी उस झण्डेके अस्तित्वको उठाकर उसके स्थान पर

ब्रह्मज्ञानरूपी ध्वजको श्रीकृष्ण प्रणामी धर्मके रूपमें भारतभूमिमें प्रतिष्ठित किया. अब यहाँ पर परमधामकी सम्पूर्ण सम्पदाएँ प्रकट हुईं और परमात्माके वचन भी (तारतम सागरके रूपमें) प्रकट हो गए.

तो दरगाह से खादम बुजरकों, लिखें सखत सौं खाए ।
सो जमाना सदी अग्यारहीं, किने न देख्या दिल ल्याए ॥ ७

मक्कासे वहाँके विशिष्ट काजियोंने कठोर शब्दोंमें सौगन्ध खाकर ग्यारहवीं सदीमें परब्रह्म परमात्माके भारत वर्षमें प्रकट होनेके सम्बन्धमें जो वसीयतनामा लिख कर भेजा उस पर (औरङ्गजेब जैसे) लोगोंने विशेष ध्यान नहीं दिया.

करी अव्वल लिख इसारतें, दूजे लिख्या केहेर देखाए ।
तीसरे उठाया झंडा यकीन, चौथे हिंदमें खडा किया आए ॥ ८

सर्वप्रथम उन लोगोंने कयामतके आगमनकी बात सङ्केतोंमें लिखी. दूसरी बार खुदाका भय दिखाकर लिखा. तीसरी बार मक्कासे झण्डा एवं विश्वासके उठनेकी बात लिखी और चौथी बार भारतवर्षमें स्थापित करनेकी बात लिखी.

लिख्या अपने हाथों तेहेकीक, गईं चारों हक न्यामत ।
सिर देखें राह गजब की, क्यों न अजूं आवत ॥ ९

वहाँके काजियोंने निश्चयकर अपने हाथोंसे लिखा कि यहाँसे चारों ब्राह्मी सम्प्रदाएँ चली गईं हैं तथापि बाह्यदृष्टिवाले लोग अभी भी आश्चर्यजनक प्रतीक्षामें हैं कि कयामतका समय क्यों नहीं आ रहा है.

जाहेरी कहें अजूं न आइया, हक सेती गजब ।
यकीन बिना देखें नहीं, जो छीन लिया मता सब ॥ १०

बाह्यदृष्टिवाले लोग यही कहते हैं कि परमात्माकी ओरसे अभी तक वह समय क्यों नहीं आया है ? सम्पूर्ण ब्राह्मी सम्पदाओंके चले जानेसे विश्वासके अभावमें अब वे इस दिनको देख नहीं पाते हैं.

दुनी बरकत सफकत फकीरों, और लिया छीन कुरान ।
बाकी इसलाममें क्या रह्या, जो रह्या न काहूं ईमान ॥ ११

दुनियांकी शक्ति, फकीरोंके आशीर्वाद, कुरान तथा धर्मके प्रति विश्वास छीन लिए गए. अब इस्लाममें शेष क्या बचा, जब किसीमें भी विश्वास ही नहीं रहा.

अजूं राह देखें गजब की, जाने हुआ नहीं फुरमाया ।
इसलाम मता सब से गया, तो भी नजरों किनहूं न आया ॥ १२

अब भी लोग रसूलकी भविष्यवाणीके अनुसार कयामतकी घड़ीकी राह देख रहे हैं. उन सभीके अन्दरसे धर्मकी सम्पूर्ण सम्पदा चली गई तो भी रसूल मुहम्मदकी बातें उनकी समझमें नहीं आईं.

जुदे पडे राह बीच रात के, जिद फितने खोया यकीन ।
तो दुनी बरकत सफकत फकीरों, हक कलाम लिए छीन ॥ १३

रसूल मुहम्मदके बाद अज्ञानमयी रात्रिमें सभी लोग पारस्परिक कलहमें विश्वास खोकर अलग-अलग मत-मतान्तरोंमें विभक्त हो गए. इसीलिए इनसे शक्ति (बरकत), फकीरोंका आशीर्वाद तथा कुरानके ज्ञानको छीन लिया.

ईमान बिना देखें नहीं, रही या गई न्यामत ।
नफा नुकसान तो देखहीं, जो होए इसलाम लजत ॥ १४

अब उन लोगोंके पास विश्वास नहीं रहा. इसलिए उन्हें पता नहीं चलता है कि यह सम्पदा उनके पास है या चली गई है. धर्मके प्रति लेशमात्र भी विश्वास होता तभी वे लाभ और हानिको समझ पाते.

सुध न पाइए बिना लजत, नफा या नुकसान ।
निसबत रहे ना जुबान की, जहां हक मारफत नहीं पेहेचान ॥ १५

वस्तुतः विश्वासके अभावमें लाभ या हानिकी सुधि ही नहीं हो सकती. जब तक ब्रह्मज्ञानसे पूर्ण पहचान नहीं होती है तब तक कथनमात्रसे कोई सम्बन्ध नहीं रहता है.

अजूं चाहे दुनियां माजजा, देखे ना खडा झंडा नूर ।
तब उतथें अकस पुकारिया, कहे हुए इसलाम से दूर ॥ १६

अभी तक ये लोग कयामतके समय प्रकट होनेवाले चमत्कारोंकी राह देख रहे हैं. उन्होंने ब्रह्मज्ञान स्वरूप धर्मध्वजको स्थापित किया हुआ नहीं देखा है. इन्हें विश्वास दिलानेके लिए ही मक्कासे वसीयतनामोंके द्वारा सन्देश भेजा गया कि हम सभी इस्लामसे दूर होते जा रहे हैं.

फजर हुए खुले हकीकत, खुलें हकीकत होए कयामत ।
हुए हक बका अरस जाहेर, सूर ऊग्या दिन मारफत ॥ १७

ब्रह्मज्ञानका प्रभात होने पर सारे रहस्य स्पष्ट हो जाते हैं और रहस्योंके स्पष्ट होते ही आत्मजागृति होती है. परब्रह्म परमात्मा तथा परमधामकी जानकारी होने पर ब्रह्मज्ञानका सूर्य उदय हो गया है ऐसा समझना.

फुरमान जबराईल ल्याइया, बरारब से बीच हिंद ।
आए नूर झंडा खडा किया, गया कुफर फरेबी फंद ॥ १८

जिब्रील फरिश्ता बरारबसे कुरानका रहस्य लेकर भारतभूमिमें आ गया. उसने यहाँ आकर धर्मका प्रकाशमय ध्वज स्थापित किया जिससे सारी भ्रान्तियाँ मिट गईं.

सरा चल्या हक हुकमें, किया कौल जिन सरत ।
सो आए पोहोंची सदी बारहीं, भई फरदा रोज कयामत ॥ १९

परमात्माके आदेशसे इतने दिन तक कर्मका विधान चलता रहा. उसके बाद रसूल मुहम्मदने जिस कयामतके लिए कल होगा ऐसा कहा था वह बारहवीं सदीका समय आ गया है.

यों झंडा नूर बिलंद का, किया खडा हक हादी मोमन ।
देखावे नामे वसीयत, नूर हिंदमें वरस्या रोसन ॥ २०

इस प्रकार परब्रह्म परमात्मा, श्रीश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंने भारत भूमिमें ब्रह्मज्ञानका ध्वज प्रतिष्ठित किया. वसीयतनामोंमें यही उल्लेख है कि भारतभूमिमें परमात्माकी कृपाकी वर्षा हो रही है.

मुसाफ मता महंमदी मोमिनों, पोहोंच्या वारसी आखरी इमाम ।
झंडा पोहोंच्या अरस अजीम लग, देखाए हक बका अरस तमाम ॥ २१

कुरानकी ज्ञानरूपी सम्पदा श्री श्यामाजीकी अङ्गभूता ब्रह्मात्माओंकी है. वह कयामतके समयमें अवतरित इमाम महदीको उत्तराधिकारके रूपमें प्राप्त हो गई है. उनके द्वारा स्थापित धर्मका ध्वज दिव्य परमधाम तक पहुँच गया. जिससे परब्रह्म परमात्मा तथा अखण्ड परमधामकी सम्पूर्ण सम्पदाएँ दिखाई देने लगीं.

अरस देखाया चढ उतर, हुआ म्याराज महंमद पर ।
क्यों दुनी देखे दिल मजाजी, बिन खोलें रूह नजर ॥ २२

जब रसूल मुहम्मदको खुदाके दर्शन हुए तब उन्होंने परमधामका मार्ग प्रशस्त किया. बाह्यदृष्टि वाले नश्वर जगतके जीव आत्मदृष्टिको खोले बिना इस रहस्यको कैसे समझ सकते हैं ?

जेता अरस दिल मोमिन, बिन म्याराज न काढें बोल ।
बिन पूछे देवें सब कों, अरस अजीम पट खोल ॥ २३

जितने भी धामहृदया ब्रह्मात्माएँ हैं वे परब्रह्म परमात्माके दर्शनके अतिरिक्त अन्य कोई बात नहीं करतीं हैं. वे बिना पूछे ही सबको सन्देह निवारक ब्रह्मज्ञान प्रदान करतीं हैं.

करने हैयात सबन कों, देवें हक इलम बेसक ।
सो पोहोंचे बका बीच भिस्तके, नूर नजर तले हक ॥ २४

इस प्रकार समस्त जगतको अखण्ड करनेके लिए सभीको सन्देह रहित ब्रह्मज्ञान प्रदान करतीं हैं. इसके द्वारा नश्वर जगतके जीव भी अक्षरब्रह्मकी दृष्टिके अन्तर्गत अखण्ड मुक्तिस्थलोंमें पहुँच जाते हैं.

जो आया झंडे तले महंमदी, सो तबहीं कायम होत ।
देख्या सब हक दिल मता, हुई अरस अजीम बीच जोत ॥ २५

श्री श्यामाजी द्वारा स्थापित इस धर्मकी शरणमें जो आ जाता है उसे तत्काल अखण्ड मुक्ति प्राप्त होती है. उसे अक्षरातीत परब्रह्म परमात्माके हृदयकी

बातोंका अनुभव होता है एवं परमधामकी पहचान होती है.

अपनी सूरत देखी अरस की, जो रूहें तले हक कदम ।
जब सूर ऊग्या हक मारफत, तब सब आए तले हुकम ॥ २६

इन ब्रह्मात्माओंने परमधाममें श्री राजजीके चरणोंमें बैठी हुई अपनी पर-आत्माके दर्शन कर लिए. जब ब्रह्मज्ञानका सूर्य उदय हुआ तब उन सभीने स्वयंको श्री राजजीके चरणोंमें ही पाया.

महामत कहें ऐ मोमिनो, कही दोऊ झंडों की विगत ।
अब खोल देऊं फरदा रोज की, जो फुरमाई थी इसारत ॥ २७

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! इस प्रकार मैंने दो प्रकारके धर्मध्वजकी बात कही है. अब मैं वह रहस्य स्पष्ट करूँगा जिसको रसूल मुहम्मदने सङ्केतके द्वारा कहा है कि कलका दिन आत्मजागृतिका (फरदा रोज कयामत) है.

प्रकरण ११ चौपाई ७५२

बाब फरदा रोज का

फरदा रोज पेहेले कह्या, ए जो बखत कयामत ।
एक दिन एक रात की, फजर है आखरत ॥ १

कुरानमें पहलेसे ही उल्लेख था कि कलके दिन कयामत होगी. जब खुदाके एक दिन और एक रात व्यतीत हो जाएँगे तब प्रभात होने पर कयामत होगी.

साल हजार दुनीय के, गिनती चांद और सूर ।
सो हक के एक दिनमें, आवे नूर बिलंद से नूर ॥ २

चन्द्रमा और सूर्यकी गणनाके आधार पर दुनियाँके हजार साल व्यतीत होने पर खुदाका एक दिन कहा गया है. उस समय अर्थात् ग्यारहवीं सदीमें दिव्य परमधामसे ब्रह्मज्ञान अवतरित होगा.

इन किल्ली रूहअल्ला अरस के, पट खोल करे रोसन ।
खोली हकीकत मारफत, किया अरस बका हक दिन ॥ ३

सद्गुरुके रूपमें अवतरित श्री श्यामाजीने इसी तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जीसे

पारके द्वार खोल दिए और परमधामकी यथार्थताका पूर्ण पहचान करवा कर ब्रह्मज्ञानका प्रभात कर दिया.

दिन रब का दसमी सदी लग, दुनियां के साल हजार ।
मास हजार लैल के, तीसरे तकरार ॥ ४

दसवीं सदी तक एक हजार वर्ष पर्यन्त खुदाका दिन चलता रहा. तत्पश्चात् लैलतुलकद्रकी रात्रिके तीसरे खण्डमें एक हजार महीनेसे भी अधिक लम्बी रात्रि व्यतीत हुई.

कछू मास हजार से बेहेतर, ए जो कही लैलत कदर ।
ए फरदा रोज कयामत, ए जो कही फजर ॥ ५

हजार महीनेसे भी अधिक अर्थात् सौ सालकी यह रात बताई गई है. इस प्रकार दिन और रात अर्थात् ग्यारह सौ वर्ष व्यतीत होने पर कलका दिन कयामतका माना गया. इसीमें ब्रह्मज्ञानका प्रभात हुआ.

दसमी सदी भी हिसाब में, गिनती में आई ।
इतथें सुरू हुई, रूहअल्ला की रोसनाई ॥ ६

इस प्रकार कयामतके दिनोंकी गणनामें दसवीं सदी भी आ जाती है. इसीके उत्तरार्धसे श्री देवचन्द्रजी (रूहअल्लाह) का आगमन हुआ एवं उनके द्वारा ब्रह्मज्ञान प्रसारित होना आरम्भ हुआ.

हजार मास जो लैल के, हुए सदी अग्यारहीं भर ।
लिखी जो इसारतें, भई पूरी मिल बेहेतर ॥ ७

हजार महीनेसे भी अधिक लम्बी रात ग्यारहवीं शताब्दी कही गई है. कुरानमें यह बात सङ्केतोंमें लिखी गई है. कुछ मास इसमें और अधिक मिलाने पर यह शताब्दी पूर्ण हो जाती है.

और आई सदी बारहीं, इनमें फजर भई ।
लिख्या मुसाफ बीच आयतों, और हदीसोंमें कही ॥ ८

बारहवीं शताब्दी आरम्भ होते ही ब्रह्मज्ञानका प्रभात हुआ. यह प्रसङ्ग कुरानकी आयतों तथा हदीसोंमें उल्लेखित है.

असराफील गावे फुरकान, जाहेर करे निसान ।
मगज मुसाफ के बातून, कर देवे सब पेहेचान ॥ ९

इसी बारहवीं शताब्दीमें इस्त्राफील फरिश्ताने कुरानके गूढ़ रहस्यों तथा सङ्केतोंको स्पष्ट करते हुए उनमें निहित रहस्योंकी पहचान करवाई.

खुलासा मुसाफ का, असराफील बतावे ।
तब सूरज मारफत का, हक अरस दिल नजरों आवे ॥ १०

जब इस्त्राफील फरिश्ता कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेगा तब धामहृदया ब्रह्मात्माओंकी दृष्टिमें परब्रह्म परमात्मा तथा परमधामकी यथार्थ पहचान होगी.

तो हदीसें हक इलम की, भांत भांत करे बडाई ।
बाब भिस्त जो हैयाती, सो याही कुंजीसों खोल्या जाई ॥ ११

इसीलिए कुरान तथा हदीसोंमें ब्रह्मज्ञानकी महिमा भाँति-भाँतिसे गाई गई है. कुरानमें बहिश्तोंको अखण्ड करनेका जो विवरण है वह भी इसी ब्रह्मज्ञानरूपी कुञ्जीसे स्पष्ट हो सकता है.

हक इलम जो लुदंनी, बका अरस असल ।
एही दानाई हक की, कही जो कुल अकल ॥ १२

परब्रह्म परमात्माका यह ब्रह्म (तारतम) ज्ञान परमधामकी शाश्वत निधि है. यह परब्रह्म परमात्माकी बुद्धिकी कला कौशल है इसीको ज्ञानकी पराकाष्ठा कहा गया है.

ठौर सबों के सब कों, फिरस्ता बतावे ।
पाक असराफील इन विध, कुरान कों गावे ॥ १३

इस प्रकार यह पवित्र इस्त्राफील फरिश्ता कुरानका गायन करते हुए सभी जीवोंको अपने-अपने मूल स्थानकी पहचान करवा देता है.

खासलखास रूहें उमत, गिरो फिरस्तों खास कहावे ।
गिरो रूहों गिरो फिरस्ते, दोऊ अपने ठौर पोहोंचावे ॥ १४

ब्रह्मसृष्टियाँ सर्वश्रेष्ठ कहलातीं हैं एवं ईश्वरसृष्टि श्रेष्ठ कहलातीं हैं. इन दोनों

प्रकारकी आत्माओंको परमधाम तथा अक्षरधाम पहुँचानेका कार्य भी यही करता है.

एही सुंनत जमात, महंमद बेसक दीन ।
सकसुभे ना इनमें, जित असराफील अमीन ॥ १५

ब्रह्मात्माओंका समुदाय ही धर्मनिष्ठ है. श्री देवचन्द्रजी द्वारा स्थापित श्री कृष्ण प्रणामी धर्ममें किसी प्रकारका सन्देह नहीं है. जहाँ पर इस्त्राफील फरिश्ता महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा हो वहाँ पर सन्देह ही कैसे रह सकता है ?

ए जो सुंनत जमात, होए सके न जुदे खिन ।
ए गिरो फोड क्यों जुदे पडें, जिनों असल अरसमें तन ॥ १६

ब्रह्मसृष्टियोंका यह धर्मनिष्ठ समुदाय क्षणमात्रके लिए भी एक दूसरेसे भिन्न नहीं हो सकता है. जिनका मूलतन (पर-आत्मा) दिव्य परमधाममें है वह समुदाय अपने पारस्परिक सम्बन्धको विच्छेद कर कैसे अलग हो सकता है ?

कै सरे अमल बीच रात के, चली जो सुभेसक ।
सो फजर हक इलमें, बेसक करी खलक ॥ १७

रसूल मुहम्मदके द्वारा निर्दिष्ट कर्मका विधान अज्ञानमयी रात्रिके अन्धकारमें विलीन हो गया. उसमें विभिन्न प्रकारके सन्देह उत्पन्न हुए जिससे उनके अनुयायी अलग-अलग समुदायमें विभक्त हुए. कयामतके समयमें ब्रह्मज्ञानके प्रभातमें सद्गुरुने प्रकट होकर उन सभी लोगोंके संशय मिटा दिए.

छे दिन की पैदास

पैदास कही छे दिन की, सो इन आलम का विस्तार ।
दिन जुमा के बीचमें, पाई साइत जो कही अपार ॥ १८

कुरानमें छः दिनकी सृष्टिका वर्णन है. जिसका विस्तार यह सम्पूर्ण जगत है. शुक्रवारके दिन ब्रह्मात्माओंने नश्वर जगतका खेल देखा है इसलिए इस घड़ीकी महिमा अपार कहीं गई हैं.

आए एक साइत लैलत कदरमें, उसी साइतमें दूजी बेर ।
उसी साइतमें तीसरे इन इंड, महंमद आए इत फेर ॥ १९

इस दिन जिस घड़ीमें ब्रह्मात्माएँ महिमामयी रात्रिके प्रथम चरणमें व्रजमण्डलमें अवतरित हुईं उसी घड़ीमें रात्रिके दूसरे चरण रासलीलाके लिए प्रयाण किया. उसी घड़ीमें इस तृतीय ब्रह्माण्डमें रसूल मुहम्मद इस जगतमें अवतरित हुए.

एक दिन कह्या रब्ब का, दुनी के साल हजार ।
इतथें आगे लैलत कदर, ए जो फजर तीसरे तकरार ॥ २०

कुरानके अनुसार खुदाके एक दिनमें दुनियाँके एक हजार साल व्यतीत होते हैं. उसके उपरान्त इस महिमामयी रात्रिका तीसरा खण्ड आरम्भ होता है जिसको ज्ञानका प्रभात कहा गया है.

एक कौलमें कहे तीन दिन, सो भी साइत बीच इन ।
इन रोज रब्ब कर जारत, पोहोंचें अपने वतन ॥ २१

कुरानमें एक प्रसङ्गमें तीन दिनका वर्णन आता है. वे भी इसी घड़ीमें व्यतीत हुए हैं. इन दिनों (प्रथम व्रजलीला-हूद तोफान, द्वितीय रासलीला-नूह तोफान, तृतीय मुहम्मदका अवतरण) की लीलाका स्मरण करती हुई ब्रह्मात्माएँ अपने धाम पहुँचतीं हैं.

और तीन दिन कहे रसूललों, चौथे रूहअल्ला आए इत ।
रोज पांचमें इमामें जमा किए, सो पाई जुमा बीच साइत ॥ २२

कुरानमें निर्दिष्ट छः दिनोंमें रसूल मुहम्मदके आगमन तक तीन दिन व्यतीत हो जाते हैं. चतुर्थ दिनमें श्री श्यामाजी सद्गुरुके रूपमें प्रकट हुईं. पाँचवें दिन उन्होंने इमाम महदीके रूपमें समस्त धर्मग्रन्थोंके प्रमाण एकत्र कर कयामतकी घड़ी प्रकट की. उसीके फलस्वरूप ब्रह्मात्माओंने जागृत होकर छठे दिन परमधामके सुखोंका अनुभव किया.

छठे दिन मोमिन जमा हुए, तब गिरो आई सब कोए ।
सो साइत जुमा बीच खोलके, इसकें पोहोंचे पाक होए ॥ २३

जगतमें अवतरित हुई सभी ब्रह्मात्माएँ छठ्ठे दिन एकत्रित हुईं. उनके साथ

ईश्वरीसृष्टि एवं जीवसृष्टि भी सम्मिलित हुई. यह वहीं घड़ी (शुक्रवार) है जिस दिन पारके द्वार खोल दिए गए हैं. अब हृदयको पवित्र बनाते हुए ब्रह्मात्माएँ प्रेमके द्वारा परमधाममें जागृत होंगी.

कहे तीन रोज तीन तकरार के, चौथे फरदा रोज फजर ।
दे दीन दुनी सबों सलामती, पाक हुए खोल रूह नजर ॥ २४

कुरानमें एक स्थान पर महिमामयी रात्रिके तीन खण्डोंको ही तीन दिन कहा है और कहा है कि उसके उपरान्त चौथा दिन कयामतका अर्थात् ब्रह्मज्ञानके प्रभातका होगा. इस दिन एक धर्मकी स्थापना होनेसे जगतके जीवोंको संरक्षण प्राप्त होगा एवं वे आत्मदृष्टि खोल कर पवित्र होंगे.

छे दिन कहे और कौलमें, कह्या तिन का बेवरा ए ।
हादी मोमिन कर सबों बका, अपने अरस बका पोहोंचेंगे ॥ २५

इसी प्रकार दूसरे प्रसङ्गमें भी छः दिनका उल्लेख है. उनका विवरण स्पष्ट कर दिया है. इन दिनों श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माएँ समस्त जीवोंको अखण्ड मुक्तिस्थलका सुख प्रदान कर अपने घर परमधाम पहुँचेंगे.

ए रोज कहे बंदगीय के, आए पोहोंचे सावचेत होए ।
ए दिन समझ रोजे रखे, कह्या तिन पर गुनाह न कोए ॥ २६

ये दिन परमात्माकी पूजा एवं उपासनाके लिए कहे गए हैं. जो आत्माएँ इन दिनोंमें सावचेत होकर भक्ति-भावपूर्वक स्वयंको परमात्माके प्रति समर्पित करेंगी उनके लिए कुरानमें कहा है, उनको किसी भी प्रकारके दोष नहीं लगेंगे.

एही भूल फना दुनी की, डाले बीच निजस अल्ला कलाम ।
तरफ न पावे जिन की, कहे सो हम बका इसलाम ॥ २७

नश्वर जगतके जीवोंकी यही सबसे बड़ी भूल है कि वे कुरानके इन प्रसङ्गोंको मिथ्या जगतके साथ घटाते हैं. उन्हें इन रहस्योंकी सुधि नहीं है तथापि स्वयंको शाश्वत रूपसे धर्मके प्रति निष्ठावान् समझते हैं.

दुनी यों खेलाई हक ने, क्या करे बिना अखत्यार ।
ए सब कछू हाथ कादरके, वही नचावनहार ॥ २८

परमात्माने इस जगतकी रचना कर यहाँके जीवोंको इसी प्रकार नश्वर खेलमें नचा रखा है.अधिकारके बिना वे कर भी क्या सकते हैं ? यह सब कुछ समर्थ परमात्माके हाथोंमें है वे सभीको अपनी इच्छानुसार नचा रहे हैं.

रात दिन फुरमाए हक ने, आप अपने हिसाब ।
सो डाले बीच निजस, ए जो रात का ख्वाब ॥ २९

परमात्माने रात और दिनका विवेचन अपने ही ढँगसे किया है किन्तु नश्वर जगतके जीव स्वप्नकी इस मिथ्या सृष्टिके साथ उनकी तुलना करते हैं.

छे रोज कहे एक कौल में, और तीन रात कौल एक ।
ए हिसाब होए बीच फजर, हुए जाहेर साहेब नेक ॥ ३०

कुरानमें एक स्थान पर छः दिनकी चर्चा है, इसी प्रकार दूसरे स्थान पर तीन रातकी चर्चा की है. ब्रह्मज्ञानके प्रभात होने पर इनका निरूपण होगा. अब परब्रह्म परमात्मा सद्गुरुके रूपमें प्रकट हो गए हैं.

कहे एक कौल में दोए दिन, बीच कही जो रात ।
ए हिसाब दे सब फजर, सो कही कयामत बीच साइत ॥ ३१

एक अन्य स्थान पर दो दिन और दोनों दिनोंके मध्यमें एक रातके प्रसङ्गका उल्लेख है. अन्तिम समयमें परमात्मा प्रकट होकर इन दिन और रातका स्पष्टीकरण करते हुए ब्रह्मज्ञानका प्रभात करेंगे. वैसे तो आरम्भसे लेकर कयामत तककी सभी लीलाएँ परमधामकी दृष्टिमें एक ही क्षणकी है.

ए दिन देखो हक के, जो कहे हैं बातन ।
कह्या अरस हक दिल मोमिनों, देखो कलाम अल्ला रोसन ॥ ३२

देखो, परमात्माके ये दिन विभिन्न रहस्योंसे परिपूर्ण हैं. कुरानमें स्पष्ट कहा गया है कि परमात्माका धाम ब्रह्मात्माओंका हृदय है.

हके काम लिया जो दिल में, सो जब हुआ पूरन ।
मकसूद सबों हो रह्या, तब वाही फजर कह्या दिन ॥ ३३

परमात्माने अपने हृदयमें जो सङ्कल्प लिया, उसके पूर्ण होने पर ब्रह्मात्माओंकी (खेल देखनेकी) सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण हो गईं. उसीको ब्रह्मज्ञानका प्रभात अथवा आत्मजागृतिका दिन कहा गया है.

जब थें आया रसूल हक का, तिन बीच हुए कै काम ।
जहां जो पूरन हुआ, दिन सोई कह्या अल्ला कलाम ॥ ३४

जब रसूल मुहम्मद परमात्माका सन्देश लेकर इस जगतमें आए, उनके समयमें भी अनेक कार्य सम्पन्न हुए हैं. जिस समय जो कार्य सम्पन्न हुआ उसीको कुरानमें दिन कहा है.

जो बात निजस नाबूद, हक कलाम न कहे तिनमें ।
जो हक दोस्त गिरो मासूक, कहे हक कलाम तिनसें ॥ ३५

नश्वर जगतके स्वप्नवत् जीवोंको दृष्टिमें रखकर परमात्माके ये वचन नहीं कहे गए हैं. जो परब्रह्म परमात्माके प्रिय मित्र हैं ऐसी प्रियतमा ब्रह्मात्माओंके समुदायके लिए ही ये वचन कहे गए हैं.

कह्या हदीस कुदसीय में, जब बंदा करे फिकर ।
वह फिकर मुझसों रखे, हकें फुरमाया यों कर ॥ ३६

कुदसी नामक हदीसके अनुसार खुदाने यह कहा, मेरी आत्माओंको किसी भी प्रकारकी चिन्ता हो तो वे उन सबको मुझे समर्पित कर दें तो मैं उनकी सभी चिन्ताओंका हरण कर लूँगा.

कहे हदीस कुदसी, और आयतें हदीसें सूरत ।
इन का रोजा निमाज हक दोस्ती, एक जरा न बिना मारफत ॥ ३७

कुदसी हदीस और कुरानकी आयतोंमें तथा सूरतोंमें उल्लेख है कि इन ब्रह्मात्माओंका रोजा तथा नमाज परमात्माके साथ मित्रता रखना है. उन्हें परमात्माकी पहचानके अतिरिक्त कुछ भी प्रिय नहीं है.

आंखें दई हकें इन को, और दिए कान अकल ।
ज्यों दुनियां मुदा वजूद पर, त्यों कहे मोमिन साहेब दिल ॥ ३८

परमात्माने इन आत्माओंको आँखे, कान तथा बुद्धि प्रदान की है. नश्वर जगतके जीव ऐसी इन्द्रियोंके द्वारा अपने शरीरकी ओर दृष्टि पात करते हैं जब कि ब्रह्मात्माएँ इन इन्द्रियोंके द्वारा परब्रह्म परमात्माके हृदयकी बात जानना चाहतीं हैं.

जेते अंग हैं वजूद के, तेते अंग बातून दिल ।
नजर खुली जब रूह की, हुआ दिल मोमिन अरस असल ॥ ३९

ब्रह्मात्माओंके स्वप्नके शरीरोंमें जितनी इन्द्रियाँ हैं उतनी ही इन्द्रियाँ उनके अन्तर्हृदयमें अप्रकट रूपमें हैं. जब उनकी अन्तर्दृष्टि खुल जाती है तब उनका हृदय ही परब्रह्म परमात्माका धाम बन जाता है.

हाथ पांउ बाहेर अंदर, सब अंगों हक नूर ।
कहे इन विध मोमिन अरसमें, जिनका हक आप करें जहूर ॥ ४०

इन ब्रह्मात्माओंके हाथ, पाँव आदि सभी बाह्य अङ्ग तथा आन्तरिक अङ्गोंमें परब्रह्म परमात्माका ही तेज प्रकाशित होता है. दिव्य परमधाममें भी इन ब्रह्मात्माओंकी महिमा अपरम्पार है जिसको स्वयं परब्रह्म परमात्मा प्रकट करते हैं.

महामत कहे ऐ मोमिनो, हादिएं खोल दिए दिन बातन ।
क्यामत दिन जाहेर कर, देखाया अरस बका वतन ॥ ४१

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! इस प्रकार सद्गुरुने प्रकट होकर गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट कर दिया है. इतना ही नहीं उन्होंने आत्मजागृतिके प्रभातको प्रकट कर अखण्ड परमधामका अनुभव करवाया.

प्रकरण १२ चौपाई ७९३

बाब हादी गिरो की पेहेचान

भाई महंमद के मोमिन, कोई था न उस बखत ।
तो सरा चल्या तोरे बल, कह्या हम फेर आवसी आखरत ॥ १

रसूल मुहम्मदके जीवनकालमें इस जगतमें कोई ब्रह्मात्माएँ (उनके भाई)

अवतरित नहीं हुई थीं. इसलिए उन्होंने अपने आदेशके बल पर कर्मका विधान चलाया और कहा, आत्मजागृतिके समय पर मैं पुनः आऊँगा.

मोमिन का दुनी मजाजी, उठाए न सके भार ।
मारे उसी सिरक से, तो कहे बीच नार ॥ २

मिथ्याभिमानी लोग ब्रह्मात्माओंके लिए कहे गए वचनोंका भार वहन नहीं कर सकते हैं. मिथ्याभिमानसे ग्रस्त होनेके कारण उनकी गणना नारकीय जीवोंके साथ की गई है.

तब रसूल खोलत जो माएने, हकीकत मारफत ।
तो तबहीं होती फजर, जाहेर होती क्यामत ॥ ३

यदि रसूल मुहम्मद परब्रह्म परमात्माका यथार्थ ज्ञान एवं पूर्ण पहचान करवा देते तो उसी समय ब्रह्मज्ञानका प्रभात हो जाता और कयामतका दिन प्रकट होता.

आए सदी बीच आखरी, जो रसूलें करी थी सरत ।
बखत हुआ बीच बारहीं, भई फरदा रोज क्यामत ॥ ४

रसूल मुहम्मदने जैसी भविष्यवाणी की थी उसीके अनुरूप वे ग्यारहवीं सदीमें पुनः प्रकट हुए. उन्होंने जिसके लिए कलका दिन कयामतका (फरदा रोज कयामत) कहा था वह बारहवीं सदीका समय आ गया है.

ए इसारतें हक मुसाफ की, पाइए खुलें हकीकत मारफत ।
ए हक इलमें पाइए मेहेर से, जो होए मूल निसबत ॥ ५

कुरानके ये गूढ़ सङ्केत उसके यथार्थ ज्ञान एवं पूर्ण पहचान होने पर ही स्पष्ट होते हैं. यदि परब्रह्म परमात्माके साथ सम्बन्ध हो तभी उनकी असीम कृपा एवं उनके द्वारा प्रदत्त ब्रह्मज्ञानसे यह रहस्य स्पष्ट हो सकता है.

ए अरस गुझ बिना लुदंनी, क्यों कर बूझया जाए ।
हक खिलवत बातें गैब की, दें अरस दिल मोमिन बताए ॥ ६

तारतम ज्ञानके बिना परमधामके ये रहस्य कैसे स्पष्ट हो सकते हैं ? धामहृदया ब्रह्मात्माएँ इसी ब्रह्मज्ञानके द्वारा परमधाम मूलमिलावा तथा परब्रह्म

परमात्माके हृदयके गूढ़ रहस्योंको प्रकट कर सकतीं हैं.

वाहेदत भी इनकों कहे, जो हादी हक जात ।
त्यों नूर हादी का उमत, इन बीच और न समात ॥ ७

परब्रह्मकी अङ्गभूता (हकजात) श्री श्यामाजी उनका ही अद्वैत स्वरूप हैं. इसी प्रकार ब्रह्मात्माएँ श्री श्यामाजीकी तेज स्वरूपा हैं. इस अद्वैत स्वरूपमें इनके अतिरिक्त अन्य किसीका समावेश नहीं है.

सुंनत जमात इनको कहे, गिरो एक तन जुदी न होए ।
ए हक इलमें बेसक हुए, याकी सरभर करे नारी सोए ॥ ८

इसी समुदायको कुरानमें धर्मनिष्ठ समुदाय कहा है. ये सभी एक ही अङ्ग कहलातीं हैं, ये परस्पर अलग-अलग नहीं होतीं. ब्रह्मज्ञान तारतम ज्ञानके द्वारा ये सन्देह रहित हो गईं हैं. नश्वर जगतके नारकीय जीव व्यर्थ ही इनकी समानताका दम्भ करते हैं.

वाहेद तन मोमिन कहे, एही जमात सुंनत ।
एही फिरका नाजी कह्या, इनों हक हिदायत ॥ ९

ये ब्रह्मात्माएँ परब्रह्म परमात्माकी अद्वैत स्वरूपा हैं. इनको ही धर्मनिष्ठ समुदाय कहा है. कुरानमें इनको ही एक परब्रह्म परमात्माके प्रति निष्ठा रखनेवाला वर्ग कहा है. इनको ही परमात्माका निर्देशन प्राप्त है.

ए जो कौल तोड बहत्तर हुए, कहें हम सुंनत जमात ।
दिन मारफत होए पछताएसी, सिर पटके जिमीसों हाथ ॥ १०

ये मिथ्याभिमानी लोग रसूल मुहम्मदके निर्देशनोंका उल्लंघन कर अलग-अलग बहत्तर समुदायोंमें बँट गए और स्वयंको कहने लगे कि हम ही धर्मनिष्ठ समुदाय हैं. ब्रह्मज्ञानका प्रभात होने पर वे अपनी भूल पर पश्चात्ताप करेंगे एवं अपना सिर धुनते हुए जमीनमें पटक-पटक कर रोएँगे.

मेहेरबान ना देवें दुख किन को, मारे सबों तकसीर ।
क्या राए राने पातसाह, क्या मीर पीर फकीर ॥ ११

परम कृपालु परमात्मा किसीको भी दुःख नहीं देते हैं. सभी जीव अपनी

ही भूलोंके कारण कष्ट पाते हैं. चाहे वे राजा, राणा, सम्राट अथवा गुरु, साधु, सन्त या फकीर ही क्यों न हों.

सुंनत जमात जात हक की, ए मुख से कहें हम सोए ।
कह्या गुनाह बडा इन कौल का, तो कह्या जलना याको होए ॥ १२

ये सभी जीव स्वयंको परब्रह्मके प्रति निष्ठा रखनेवाली ब्रह्मात्माओंका समुदाय कहते हैं. कुरानमें इस दम्भको अपराध माना गया है जिसके कारण उनको नरककी अग्निमें जलना पड़ेगा.

कुंन केहेते जुलमत से, कहे पलमें पैदा मोहोरे खेल ।
सो सरभर करें मोमिन की, तो लटकाए गलेमें जेल ॥ १३

खुदाके द्वारा मात्र 'हो जा' कहनेसे शून्य निराकारसे उत्पन्न हुई है, जगतकी यह सृष्टि खेलके पात्रोंकी भाँति पलमात्रमें उदय और अस्त होतीं हैं. यदि यहाँके जीव ब्रह्मसृष्टियोंसे समानता करने लग जाएँ तो उनके गलेमें मिथ्याभिमानका फन्दा लगा रहेगा.

और गिरो महंमद मोमिनों, ए उन पर हुए मेहेरबान ।
तो दोस्त कहे दुस्मनों, ए मोमिनों बडी पेहेचान ॥ १४

तथापि श्री श्यामाजीकी अङ्गभूता ब्रह्मात्माएँ उन सभी पर कृपा करतीं हैं. ब्रह्मसृष्टियोंकी यही पहचान है कि वे शत्रुके साथ भी मित्रता रखतीं हैं और उनका भला चाहतीं हैं.

एही औलीया अंबीया, एही कहे हैयात ।
दूजा हैयात जरा नहीं, बिना वाहेदत हक जात ॥ १५

इन्हीं सत्य आत्माओंको कुरानमें औलिया तथा अम्बिया कहा है. परब्रह्म परमात्माकी अङ्गस्वरूपा इन ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी जीव अखण्ड नहीं हैं.

कोई कायम जरा दूजा कहे, सो मुसरक और काफर ।
एक जरा कोई कहूं नहीं, वाहेदत हक बिगर ॥ १६

इनके अतिरिक्त अन्य कोई यदि स्वयंको अखण्ड कहते हैं तो वे

मिथ्याभिमानी जीव अविश्वासी कहलाते हैं. परब्रह्म परमात्माके अद्वैत स्वरूप इन आत्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई है ही नहीं.

जो पातसाही हक की, नूर तजल्ला नूर ।
इन दोऊ अरसों बका जिमी, सो सब वाहेदत नूर हजूर ॥ १७

दिव्य परमधाम एवं अक्षरधाम दोनों स्थानोंमें परब्रह्म परमात्माका साम्राज्य है. ये दोनों धाम परब्रह्म परमात्माके अद्वैत स्वरूपमें हैं, इसलिए तेजोमय तथा अखण्ड कहलाते हैं.

वाहेदत की रूहें वास्ते, खेल झूठा देखाया और ।
सो रूहें वाहेदत भूल के, जाने झूठाई हमारा ठौर ॥ १८

अद्वैत परमधामकी ब्रह्मात्माओंके लिए यह नश्वर जगतका खेल दिखाया है. अद्वैत स्वरूप ये ब्रह्मात्माएँ इस मिथ्या खेलको देखती हुई इसीको अपना घर समझने लगीं.

एही कबीला एही घर, एही पूजें पानी आग पत्थर ।
जाने एही फना नासुत कों, कछू नाहीं इन बिगर ॥ १९

इस स्वप्नवत् जगतमें आकर ब्रह्मात्माएँ यहीं पर आग, पानी तथा पत्थरकी पूजा करने लगीं. उनकी यह धारणा बन गई कि इस नश्वर जगतके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है.

आसमान जिमी बीच फना के, ए सब में सबद पुकार ।
फेर याही कों दूजा कहें, जो हक इलमें न खबरदार ॥ २०

पृथ्वीसे लेकर आकाश पर्यन्त यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड नाशवान् है. सभी धर्मग्रन्थोंमें इसी प्रकार कहा है. जो जीव ब्रह्मज्ञानसे सावचेत नहीं होते हैं वे इस अस्तित्वहीन जगतको दूसरा कहकर इसके अस्तित्वको स्वीकारते हैं.

मोमिन और दुनी के, एही है तफावत ।
मोमिन तन अरस में, दुनी तन पेड गफलत ॥ २१

ब्रह्मात्माएँ एवं नश्वर जगतके इन जीवोंमें यही अन्तर है कि ब्रह्मात्माओंका

मूल तन परमधाममें है एवं इनके शरीरोंकी उत्पत्ति अज्ञानरूपी अन्धकारसे हुई है.

मोमिन सूरत पीछी फिरे, उठ खडा होए अरस तन ।
जो दुनियां दम पीछी फिरे, तो जाए ला मकान बीच सुन ॥ २२

ब्रह्मात्माओंकी सुरताएँ जगतसे लौटेंगी तो वे परमधाममें अपनी पर आत्मामें जागृत होंगी किन्तु नश्वर जगतके जीवोंकी सुरता जगतसे हटेगी तो वे स्वयं शून्य निराकारमें समा जाएँगे.

एक तन मोमिन अरस में, दुजा तन सुपन ।
लैल फरामोसी बीच में, भूल गए अरस तन ॥ २३

ब्रह्मात्माओंका एक तन (पर-आत्मा) दिव्य परमधाममें है तो उनका दूसरा तन इस स्वप्नवत् जगतमें है. इस नश्वर जगतमें आकर परमधामकी ब्रह्मात्माएँ अपने मूल स्वरूपको भूल गईं हैं.

दे हक इलम जगाए मोमिनों, देखी अरस बका न्यामत ।
एक जरा छिपी ना रही, देखी अरस हक खिलवत ॥ २४

सद्गुरुने इस जगतमें अवतरित होकर ब्रह्मज्ञानके द्वारा ब्रह्मात्माओंको जागृत किया, तब उन्होंने अखण्ड परमधामकी सम्पदाके दर्शन किए. अब उनसे परमधामका कण मात्र भी अपरिचित नहीं रहा. उन्होंने श्रीराजजीके अन्तरङ्ग स्थल मूलमिलावाके भी दर्शन किए.

सक सुभे कछु ना रही, पट बका दिये सब खोल ।
दई साहेदी आयतों हदीसों, सो सब रूहअल्ला कहे बोल ॥ २५

जब उनके लिए अखण्डके द्वारा खोल दिए गए तब उनके हृदयमें किसी भी प्रकारका सन्देह नहीं रहा. श्री श्यामाजीने उन्हें परमधामका यह ज्ञान दिया एवं कुरानकी आयतें तथा हदीसोंकी साक्षियाँ भी दी.

वजूद मोमिन जो ख्वाब के, सो किए रूबरू अंग असल ।
खोले बातुन देखे रूह नजरों, किए दोऊ मुकाबिल ॥ २६

उन्होंने ब्रह्मात्माओंके नश्वर जगतके शरीरको परमधामकी परात्माके सम्मुख

कर दिया. धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्य स्पष्ट होने पर वे अपनी आत्मदृष्टिसे परमधाम तथा नश्वर जगत दोनोंको प्रत्यक्ष देख रहीं हैं.

सेहेरग से नजीक कहे इनकों, जाकी असल हक कदम ।
जो हुआ असल पर हुकम, सोई नकल देत इत दम ॥ २७

इन्हीं ब्रह्मात्माओंके लिए कहा गया है कि परब्रह्म परमात्मा उनके प्राणनलीसे भी अति निकट हैं. क्योंकि इनकी परात्मा परब्रह्म परमात्माके चरणोंमें बैठीं हैं. इन परआत्माको परब्रह्मका जैसा निर्देशन प्राप्त होता है उसीके अनुरूप नश्वर जगतके शरीरोंसे कार्य होते हैं.

असल दुनी जिन गफलत, ताए इलमें करो पेहेचान ।
ताको नजीक सेहेरग से, सुंन हवा ला मकान ॥ २८

संसारके जीव मूलतः शून्य-निराकारसे उत्पन्न हुए हैं. ब्रह्मज्ञानके द्वारा उनकी पहचान होती है. इस जगतके जीवोंके लिए प्राणनलीसे भी निकट शून्य-निराकार है.

नाहीं करे बराबरी है की, क्यों मिले दाखला ताए ।
है नींद उडे उठें अरस में, फना नींद उडे उड जाए ॥ २९

नश्वर जगतके अस्तित्वहीन जीव यदि शाश्वत ब्रह्मात्माओंके साथ अपनी तुलना करना चाहें तो वह कैसे सम्भव हो सकता है ? क्योंकि स्वप्नके मिट जाने पर ब्रह्मात्माएँ अपने परमधाममें जागृत होंगी जबकि नश्वर जगतके जीवोंका अस्तित्व स्वप्नके साथ-साथ समाप्त हो जाता है.

सुपन उडे जब मोमिनों, उठ बैठे अरस वजूद ।
खासलखास बंदे नजीकी, ए कदमों हमेसा मौजूद ॥ ३०

स्वप्नके उड़ जाने पर ब्रह्मात्माएँ परमधाममें अपनी परआत्मामें जागृत होंगी. इन ब्रह्मात्माओंको सर्वश्रेष्ठ तथा परमात्माके निकट कहा गया है क्योंकि ये सदैव परमात्माके चरणोंमें रहतीं हैं.

ए रूहें फिरस्ते दो गिरो, जो बीच उतरी लैलत कदर ।
और दुनी फूंकें उडावे असराफील, दूजी फूंकें उठावे बका कर ॥ ३१

इन ब्रह्मसृष्टियों तथा ईश्वरीसृष्टियोंके दो समुदाय इस नश्वर जगतमें अवतरित

हुए हैं. कुरानके अनुसार जब इस्त्राफील फरिश्ता अपनी दुन्दुभीके एक स्वरसे नश्वर जगतको उड़ा देगा तो दूसरे स्वरसे सब जीवोंको मुक्तिस्थलोंमें अखण्ड करेगा.

महंमद कहे भाई मेरे, आवेंगे आखरत ।
गिरो रब्बानी अहंमदी, याकी बीच आयतों हदीसों सिफत ॥ ३२

रसूल मुहम्मदने अपने मित्रोंसे कहा, कयामतके समयमें मेरे भाई आएँगे. श्री श्यामाजीकी अङ्गभूता ब्रह्मात्माओंका यह वही समुदाय है जिसकी प्रशंसा कुरानकी आयतों तथा हदीसोंमें की गई है.

खेल किया महंमद वास्ते, जैसे खेल के कबूतर ।
खासलखास गिरो रब्बानी, वह इनोंकी करे बराबर ॥ ३३

परब्रह्म परमात्माने श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंको दिखानेके लिए यह खेल बनाया है. नश्वर जगतके जीव जादुई खेलके कबूतरकी भाँति हैं. वे सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मात्माओंके साथ अपनी तुलना करते हैं.

खेल किया महंमद वास्ते, महंमद आया वास्ते उमत ।
ताए एक दम न्यारी ना करें, मेहेर कर धरी तीन सूरत ॥ ३४

जगतका यह खेल श्री श्यामाजीके लिए उत्पन्न किया है. श्री श्यामाजी अपनी ब्रह्मात्माओंके लिए इस जगतमें अवतरित हुई हैं. वे स्वयं अपनी अङ्गस्वरूपा ब्रह्मात्माओंको एक क्षणके लिए भी दूर रहने नहीं देतीं हैं. उन्होंने ही कृपापूवर्क इस जगतमें तीन स्वरूप धारण किए हैं.

इन उमत भाइयों वास्ते, महंमद आए तीन बेर ।
दुनी क्या जाने बिना निसबत, बिना इलम रात अंधेर ॥ ३५

अपनी अङ्गस्वरूपा ब्रह्मात्माओंके लिए श्री श्यामाजी इस जगतमें तीन बार अवतरित हुई. नश्वर जगतके जीव अपने सम्बन्ध तथा ब्रह्मज्ञानके बिना अज्ञानमयी रात्रिमें इनको कैसे समझ सकते हैं ?

जब जोडे मिले मुकाबिल, तब जाहेर हुए रात दिन ।
रात कुफर फना मिट गई, हुआ हक बका अरस रोसन ॥ ३६

श्री श्यामाजी स्वरूप सद्गुरु मेरे हृदयमें विराजमान हुए और रसूल मुहम्मद

भी पुनः प्रकट हुए तब खुदाके रात और दिन (एक हजार वर्षका दिन और सौ वर्षकी रात अर्थात् ग्यारहवीं सदी) प्रकट हुए. तब अज्ञानमयी रात्रिका अन्धकार मिट गया और परब्रह्म परमात्मा और परमधामकी पहचान हुई.

असल जाकी अरस में, सो सेहेरग से नजीक होए ।
जो पैदा तारीकी हवा से, क्यों हक नजीक आवे सोए ॥ ३७

जिनके मूल तन (परात्मा) परमधाममें हैं वे ब्रह्मात्माएँ परब्रह्म परमात्माके अत्यन्त (प्राणनलीसे भी) निकट होतीं हैं. किन्तु जो जीव शून्य निराकारसे उत्पन्न हुए हैं वे परमात्माके निकट कैसे माने जा सकते हैं ?

सोई फना कही दुनियां, जाकी असल अरस में नांहें ।
सोई हैयात हमेसगी, जो अरस बका के मांहें ॥ ३८

जगतके जीवोंको इसीलिए नश्वर कहा है कि उनका मूल परमधाममें नहीं है. जो दिव्य परमधामके वासी हैं वे ही सर्वदा शाश्वत तथा अखण्ड हैं.

वे इंतजार उसी कौल के, ढूंढत फिरें रात दिन ।
आराम न होए बिना मिले, जेती रूह मोमिन ॥ ३९

ब्रह्मात्माएँ इस जगतमें आने पर भी परमात्माके वचनोंकी प्रतीक्षा करतीं हैं (कि परमात्मा अपने वचनोंके अनुसार प्रकट होंगे). इसीलिए वे रात दिन उनको ही ढूँढ़ती ही रहतीं हैं. परमधामकी आत्माओंको अपने धनीके मिलन बिना शान्ति नहीं मिलती है.

महंमद मोमिनों वास्ते, ले आया फुरमान ।
इलम किल्ली ल्याए रूहअल्ला, किए छिपे जाहेर बयान ॥ ४०

रसूल मुहम्मद भी वस्तुतः इन्हीं ब्रह्मात्माओंके लिए परमात्माका सन्देश ले आए हैं. श्री श्यामाजी इनके लिए ही तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी लेकर सद्गुरुके रूपमें आईं हैं. उन्होंने ही धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट किया.

एते दिन किन ना कह्या, के रसूल आया इन पर ।
ना किन फुरमान सिर लिया, ना किन लई खबर ॥ ४१

आज तक किसीने भी यह नहीं कहा कि रसूल मुहम्मद ब्रह्मात्माओंके लिए

आए हैं. इसलिए उन्होंने न उनके आदेशको स्वीकार किया और न ही उनकी सुधि ली.

नबे साल हजार पर, जब लग बीते दिन ।
एते दिन किन ना कह्या, जो कुरान न पकड्या किन ॥ ४२

रसूल मुहम्मदके पश्चात् एक हजार नब्बे वर्ष व्यतीत होने तक किसीने भी कुरानके गूढ़ रहस्योंको नहीं समझा.

बोहोतों किया कुरान अपना, ना किन लई हकीकत ।
ना किन पाया इलम हक का, ना किन खोली मारफत ॥ ४३

अनेक लोगोंने कुरानको अपना कहा किन्तु इसकी यथार्थताको कोई भी ग्रहण नहीं कर सका. क्योंकि आज तक न किसीको परब्रह्म परमात्माका ब्रह्मज्ञान प्राप्त हुआ और न ही किसीने पारके द्वार खोलकर परमात्माकी पहचान करवाई.

जो रूहें उतरीं अरस से, तामें केते कहे पैगंमर ।
सिरदार सबोंमें रूहअल्ला, कहें हदींसें यों कर ॥ ४४

जो ब्रह्मात्माएँ परमधामसे अवतरित हुईं हैं उनको कतिपय कतेब ग्रन्थोंमें पैगम्बरकी संज्ञा दी है. हदीसोंमें यह उल्लेख है कि उन सभी पैगम्बरोंमें श्री श्यामाजी शिरोमणि हैं.

ए हुजत जाहेर किन ना करी, हम रूहें अरस से आईं उतर ।
कौल किया हकें हमसों, बोलावें बखत फजर ॥ ४५

आज तक किसीने भी यह दावा नहीं किया कि हम परमधामसे अवतरित ब्रह्मात्माएँ हैं और परमात्माने अपने आनेके वचन हमें प्रदान किए हैं और वे ब्रह्मज्ञानके प्रभातमें हमें परमधाम बुलाएँगे.

कह्या रसूलें रूहअल्ला, माहें सिरदार सब रूहन ।
मैं फुरमान ल्याया इनों पर, ए करसी साफ सबन ॥ ४६

रसूल मुहम्मदने इस प्रकार कहा, परमधामकी सभी ब्रह्मात्माओंमें श्री श्यामाजी शिरोमणि हैं. मैं इनके लिए ही परमात्माका सन्देश लेकर आया

हूँ. यही सभीके संशयोंको दूर करेंगी.

मारे एही दजाल कों, और एही करे एक दीन ।
साफ करे सब दिलों कों, हक पर देवे यकीन ॥ ४७

यही श्यामाजी सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर नास्तिकतारूपी दज्जालको मारेंगी और पूरे जगतमें एक धर्म (श्री कृष्ण प्रणामी धर्म) की स्थापना करेंगी. तारतम ज्ञानके द्वारा सभी जीवोंके हृदयका सन्देह मिटाकर परमात्माके प्रति विश्वास बढाएँगी.

एही खोलें हकीकत मारफत, करें माएना जाहेर बातन ।
करें अरस बका हक जाहेर, एही फजर कही हक दिन ॥ ४८

ये ही परमात्माकी यथार्थताकी पहचान करवा कर धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्योंको प्रकट करेंगी तथा परब्रह्म परमात्मा एवं परमधामको प्रकट करेंगी. इसी समयको ब्रह्मज्ञानका प्रभात कहा गया है.

मेट दई रात अंधेरी, और अगले अमल सरे दीन ।
हक बका अरस चिन्हाए, ऐसे हक इलमें किए अमीन ॥ ४९

श्री श्यामाजीने प्रकट होकर ब्रह्मज्ञानके द्वारा अज्ञानमयी रात्रिको दूर किया तथा कर्मकाण्डको ही धर्म मान कर उसीके आधार पर चलने वाले लोगोंकी अज्ञानताको मिटा कर उन्हें अखण्ड परमधामकी पहचान करवा दी.

हकें करी अरसमें रूहोंसों, पेहेलें रद बदल ।
सो इलमें जगाए दिल अरस कर, हकें दई कुल अकल ॥ ५०

परमधाममें श्री राजजीने जिन ब्रह्मात्माओंके साथ प्रेम परिचर्चा की थी उन्हीं ब्रह्मात्माओंको ब्रह्मज्ञान द्वारा जागृत कर उनके हृदयको अपना परमधाम बनाया एवं उन्हें जागृत बुद्धि प्रदान की.

जल बिन जल जीव ना रहे, ना थल बिन जीव थल ।
तो अरस रूहें अरस बिन क्यों रहें, जिनों हक बका अरस असल ॥ ५१

जिस प्रकार जलके जीव जलके बिना एवं भूमिके जीव भूमिके बिना नहीं रह सकते उसी प्रकार परमधामकी ब्रह्मात्माएँ परमधामके बिना कैसे रह

सकतीं हैं, इनका घर ही अखण्ड परमधाम है.

ढूंढें अपने रसूल कों, और अपना फुरमान ।
और ढूंढें हक इलम कों, जासों बातून होए बयान ॥ ५२

वे इस जगतमें आकर भी परमात्माके सन्देशवाहक तथा सन्देशकी खोज करतीं हैं. इतना ही नहीं वे ब्रह्मज्ञानको भी खोजतीं हैं जिससे परमधामके गूढ़ रहस्यका विवरण प्राप्त हो सके.

राह देखें रूहअल्लाह की, और ढूंढें आखरी इमाम ।
हक हकीकत मारफत, चाहें फल कयामत तमाम ॥ ५३

वे श्री श्यामाजीके अवतरणकी प्रतीक्षा करतीं हैं और आखरी इमामको ढूँढ़तीं हैं. वे यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर परमात्माकी पूर्ण पहचान करते हुए आत्मजागृतिके समयका सम्पूर्ण लाभ लेना चाहतीं हैं.

फना बीच से निकसके, बीच आवें बका असल ।
दुनी दुख छोड लें हक सुख, ए रूहें क्यों छोडें अपना फल ॥ ५४

उनके हृदयमें यह भावना बनी रहती है कि हम इस नश्वर जगतसे निकल कर अखण्ड परमधाममें पहुँचे. इतना ही नहीं वे नश्वर जगतके दुःखोंको छोड़कर अखण्ड सुख प्राप्त करना चाहतीं हैं. वस्तुतः ये आत्माएँ अपने लाभको कैसे छोड़ सकतीं हैं.

दिल बका या फना दम, सब असल अपनी चाहे ।
कोई दोजक कोई भिस्तमें, या कोई अरस बीच उठाए ॥ ५५

धामहृदया ब्रह्मात्माएँ हों अथवा नश्वर जगतके जीव हों किन्तु सभी अपने-अपने मूलको प्राप्त करना चाहते हैं. इसलिए इस जगतके जीवोंमें-से किसीको नरकका दुःख प्राप्त हुआ, किसीको अखण्ड मुक्तिस्थलका सुख प्राप्त हुआ तो किसीको परमधाममें जागृत किया गया.

ए जो फना मोहोरे खेल के, मैं मेरी कर खेलत ।
याही को देखें सुनें, सुध ना बका वाहेदत ॥ ५६

नश्वर जगतके खेलके क्रीड़ा पात्र सभी जीव 'मैं तथा मेरा' कहकर

अहङ्कारवश खेलते रहते हैं. वे नश्वर जगतकी ही बात सुनते हैं तथा जगतकी नश्वरताको ही देखते रहते हैं. उन्हें अखण्ड परमधामकी सुधि ही नहीं होती है.

रूहें गिरो तिनमें मिल गई, हक बका न जाने तरफ ।
चौदे तबक फना बीच, कोई कहे न बका एक हरफ ॥ ५७

परमधामकी ब्रह्मात्माएँ भी नश्वर जगतमें आकर इन जीवोंके साथ मिल गईं, जिनमें किसीको भी परमात्माकी दिशा तककी सुधि नहीं है. नश्वर जगतके इन चौदह लोकोंमें कोई भी अखण्ड परमधामके विषयमें एक शब्दका भी उच्चारण नहीं करता है.

ना थे अव्वल ना होसी आखर, ए जो बीचमें देत देखाए ।
सो भी कहे किताबें अबहीं, आखर देसी उडाय ॥ ५८

यह नश्वर जगत न पहले था और न ही भविष्यमें रहेगा. यह तो मात्र बीचमें दिखाई दे रहा है. सभी धर्मग्रन्थोंने यही कहा है कि इस दृश्यमान् जगतको भी अन्त समयमें लय कर दिया जाएगा.

अव्वल आखर नाबूद, बीच फरेब सो भी नाबूद ।
सो बरकत महंमद मोमिनों, पाए कायम भिस्त वजूद ॥ ५९

आरम्भमें तथा अन्तमें जिसका अस्तित्व नहीं है, वह निश्चय ही मध्यमें भी अस्तित्वहीन (नाशवान्) है, किन्तु श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंमें वह शक्ति है जिससे उन्होंने इस अस्तित्वहीन जगतके जीवोंको भी मुक्तिस्थलोंमें अखण्ड कर दिया.

ओ उतरे कहे अरस से, ए कुंन केहेते पैदास ।
जाहेर देखी तफावत, ए आम वे खासलखास ॥ ६०

ऐसा कहा गया है कि ब्रह्मात्माएँ दिव्य परमधामसे अवतरित हुईं हैं और ये जीव खुदाके द्वारा 'हो जा' कहनेसे शून्य-निराकारसे उत्पन्न हुए हैं. इसलिए इन दोनोंमें स्पष्ट अन्तर है कि ये जीव सर्वसाधारण हैं एवं ब्रह्मात्माएँ सर्वश्रेष्ठ हैं.

असल तन इनों अरसमें, ठौर ठौर लिखी इसारत ।
बीच जंजीरों मुसाफ की, करें आयतें इनों सिफत ॥ ६१

इन ब्रह्मात्माओंका मूल तन दिव्य परमधाममें है. विभिन्न धर्मग्रन्थोंमें अनेक स्थानोंमें ऐसे सङ्केत प्राप्त होते हैं. कुरानकी विभिन्न आयतोंकी कड़ियोंको मिलाकर देखते हैं तो सर्वत्र इनकी ही महिमा दिखाई देती है.

तो जाहेर करी बीच लैल के, हक की गैब खिलवत ।
फजर होसी इत थें, दिन याही हक मारफत ॥ ६२

इन्हीं ब्रह्मात्माओंने इस जगतमें अवतरित होकर परमधाम मूलमिलावेके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट किया. अब इनसे ही ब्रह्मज्ञानका प्रभात होगा और इसी दिन परब्रह्म परमात्माकी पहचान होगी.

अव्वल फुरमाया रसूल कों, कहो हरफ तीस हजार ।
राह चलाओ रात की, बका फजरें रखो करार ॥ ६३

पहले रसूल मुहम्मदको खुदाका आदेश प्राप्त हुआ कि तुम तीस हजार शब्दोंको प्रकट कर अज्ञानमयी रात्रिमें कर्मकाण्डका मार्ग प्रशस्त करो और ब्रह्मज्ञान प्रभात होनेका वचन दो.

राह रात की चलाओ सरीयत, ले तरीकत पोहोंचे हकीकत ।
तब फजर दिल महंमदें, दिन होसी मारफत ॥ ६४

अज्ञानमयी रात्रिमें कर्मका मार्ग प्रशस्त करो जब जगतके जीव उससे आगे बढ़ना चाहेंगे तो उन्हें उपासनाके साथ-साथ यथार्थ ज्ञान भी समझाओ. तब श्री श्यामाजीके हृदयसे ब्रह्मज्ञानका प्रभात होने पर परमात्माकी पहचानरूपी दिनका उदय होगा.

सिपारे उनइसमें, लिख्या रात हवा मजकुर ।
सूरज महंमद दिल मारफत, उडे रात हवा देख नूर ॥ ६५

कुरानके उन्नीसवें सिपारेमें इस अज्ञानमयी रात्रिके अन्धकारका उल्लेख हुआ है. इसके साथ ही यह भी कहा है जब श्री श्यामाजीके हृदयसे दिव्य ज्ञानका सूर्य उदय होगा तब उसके प्रकाशसे यह अज्ञानमयी रात्रि समाप्त हो जाएगी.

अग्यारैं सदी जाने आरफ, लिखी हदीसों बीच सरत ।
इस राह पोहोंचावे हकीकत, होसी फजर दिन मारफत ॥ ६६

विद्वानोंके अनुसार हदीसोंमें ब्रह्मात्माओंके प्रकट होनेकी जो बात लिखी है वह यही ग्यारहवीं सदी है. वे प्रकट होकर परमधामकी यथार्थताकी पहचान करवाएँगी, उस समय परब्रह्मकी पूर्ण पहचानका दिन उदय हो जाएगा.

दुनी हजार साल हक दिन के, कही सौ साल एक रात ।
बारैं फरदा रोज फजर, होए जाहेर हादी हक जात ॥ ६७

दुनियाँके हजार सालको खुदाका एक दिन कहा है और सौ सालकी एक रात बताई है. अब बारहवीं सदीमें कलका दिन हो गया है. श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ प्रकट हो गईं हैं.

और पेहेलें छिपे रखाए हक ने, ए जो हरफ तीस हजार ।
सो दिल बीच रखे महंमदें, कह्या तुमहीं पर अखत्यार ॥ ६८

पहले खुदाने रसूल मुहम्मदको जिन तीस हजार शब्दोंको छिपाकर रखनेके लिए कहा था उनको रसूल मुहम्मदने अपने हृदयमें छिपाकर रखा. खुदाने उनको यह भी कहा था कि ये तीस हजार शब्द तुम पर निर्भर है तुम जब चाहो प्रकट कर सकते हो.

तीस हजार और गूझ कहे, ताकी आई न किनकों बोए ।
जबराईल से छिपाए, ए आखर जाहेर किए सोए ॥ ६९

शेष तीस हजार शब्दों अत्यन्त गुप्त रखनेके लिए कहा था उनकी सुगन्धि तक किसीको प्राप्त नहीं हुई. यहाँ तककी जिब्रील फरिश्तासे भी ये वचन छिपाए रखे थे. अन्तिम (कयामतके) समयमें (मेरे साथ) प्रकट होकर इनको व्यक्त कर दिया है.

ए साहेदी नामें म्याराजमें, बीच लिखे माएने बातन ।
हक इसारतें रमूजें, सो बूझे हादी या मोमन ॥ ७०

इन गूढ़ रहस्योंकी साक्षी मेयराजनामा ग्रन्थमें दी है. परमात्माके लिए कहे गए इन सङ्केतोंको श्री श्यामाजी अथवा ब्रह्मात्माएँ ही समझ सकतीं हैं.

हक इलम लुदंनी जिन पें, सोई समझे हक रमूज ।
जो तन खिलवत अरस के, सोई जाने हक दिल गुझ ॥ ७१

यह ब्रह्मज्ञान जिनके लिए अवतरित हुआ है वे ही इसके गूढ़ रहस्योंको समझेंगे. जिन आत्माओंके मूल तन (पर-आत्मा) परमधाम मूलमिलावामें हैं वे ही परमात्माके हृदयकी गुप्त बातें जान सकतीं हैं.

एही करें खिलवत जाहेर, दूर करें तारीकी रात ।
क्यों फना रहे बका नजरों, ऊग्या सूर बका हक जात ॥ ७२

ये ब्रह्मात्माएँ अज्ञानमयी रात्रिके अन्धरकारको दूर कर मूलमिलावेके गूढ़ रहस्योंको प्रकट करेंगी. ब्रह्मात्माओंके हृदयमें ब्रह्मज्ञानरूपी सूर्य उदय हो गया है तब अखण्ड ज्ञानकी दृष्टिमें स्वप्नवत् जगतका अज्ञान कैसे टिका रह सकता है.

अरस न्यामत जाहेर हुई, जोए कौसर अरस हौज ।
हक इलमें कछू ना छिपे, किया जाहेर फरदा रोज ॥ ७३

ब्रह्मज्ञानके प्रकट होने पर यमुनाजी तथा हौजकौसर ताल सहित परमधामकी सम्पूर्ण सम्पदाएँ प्रकट हो गईं हैं. वस्तुतः ब्रह्मज्ञानसे कोई भी वस्तु छिपी नहीं रहती है. उसने कलका कयामतका दिन भी प्रकट कर दिया है.

ए जो दुनी पैदा जुलमत, सो इनों की करे सर भर ।
मजाजी क्यों होए सके, रूहें हक बराबर ॥ ७४

शून्य निराकारसे उत्पन्न जगतके जीव इन ब्रह्मात्माओंके समान होना चाहते हैं किन्तु मिथ्या जगतके जीव सत्य ब्रह्मात्माओंके समकक्ष कैसे हो सकते हैं ?

ए जो मोमिन नूर बिलंद के, दिल जिनों अरस हक ।
सर भर इनों की दुनी करे, हुआ सिर गुनाह बुजरक ॥ ७५

ये ब्रह्मात्माएँ दिव्य परमधामसे अवतरित हुईं हैं. इनका हृदय परब्रह्म परमात्माका धाम है. नश्वर जगतके जीव इनके साथ अपनी तुलना करते हैं तो उनको बड़ा दोष लगेगा.

जब लिया बातून माएना, खोली रूह नजर ।
तब हुआ अरस दिल मोमिनों, जाहेर हुई फजर ॥ ७६

जब ब्रह्मात्माओंने आत्मदृष्टि खोलकर धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्य ग्रहण किए तब उनका हृदय परमात्माका धाम बन गया और ब्रह्मज्ञानका प्रभात उदय हुआ.

ए जो अमल चलते थे रात के, ले राह सरियत ।
सो हुए सब मनसूख, खोले हकीकत ॥ ७७

इस जगतमें अज्ञानमयी रात्रिमें कर्मकाण्डका विधान चल रहा था. जब ब्रह्मात्माओंने परमधामकी यथार्थता स्पष्ट कर दी तब ऐसे विधान एवं व्यवहार निरर्थक सिद्ध हो गए.

कह्या फजर कों होएसी, फरदा रोज आखरत ।
होसी खोलें हकीकत, हक अरस लजत ॥ ७८

कुरानमें इस प्रकारका उल्लेख है कि ब्रह्मज्ञानका प्रभात होने पर कयामतके दिनका आगमन होगा. तब सभी धर्मग्रन्थोंका यथार्थ ज्ञान स्पष्ट होने पर परब्रह्म परमात्मा तथा परमधामके सुखका अनुभव होगा.

सो आए जब इत दिन में, भया नूर रोसन ।
सिफायत महंमद की, फजर पोहोंची तिन ॥ ७९

कयामतके इन दिनोंमें जगतमें ब्रह्मात्माओंका अवतरण होने पर सर्वत्र ब्रह्मज्ञानका प्रकाश फैल गया. इसी ब्रह्मज्ञानके प्रभातमें श्री श्यामाजीके साथ प्रकट हुई ब्रह्मात्माओंको रसूल मुहम्मदकी अनुशंसा प्राप्त हुई.

तो कह्या अमल रात का, सुध आप ना हक ।
हुता ना इलम लुदंनी, जिनसे होइए बेसक ॥ ८०

इसीलिए कहा गया कि जगतमें सर्वत्र अज्ञानमयी रात्रिका अन्धकार व्याप्त है. ऐसेमें न स्वयंकी सुधि होगी और न ही परमात्माकी पहचान होगी. आज तक इस जगतमें जागृत बुद्धिका ज्ञान नहीं था जिससे सभीके सन्देह मिट सकते.

हक इलम से होत है, अरस बका दीदार ।
पट खोलत सब वार के, और नूर के पार ॥ ८१

परमात्मा प्रदत्त ब्रह्मज्ञानसे ही अखण्ड परमधामके दर्शन हो सकते हैं. यही ब्रह्मज्ञान शून्य निराकारके आवरणको दूर कर अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधामका अनुभव करवाता है.

सुध होए हक कुदरत, और आप चिन्हार ।
इलम लुदंनी हक का, खोल देवे सब द्वार ॥ ८२

तब परब्रह्म परमात्माकी शक्तिकी सुधि होगी एवं स्वयंकी पहचान होगी. इस प्रकार परब्रह्म परमात्माका यह ब्रह्म (तारतम) ज्ञान पारके सभी द्वारोंको खोल देता है.

कायम न्यामत हक की, न थी रात के मांहे ।
अमल दुनीमें सरीयत, ए चल्या है तब तांहें ॥ ८३

अज्ञानमयी रात्रिमें परब्रह्म परमात्माकी अखण्ड सम्पदा प्रकट नहीं हुई थी. रसूल मुहम्मदके समयमें कर्मकाण्ड पर आधारित धर्म-सम्प्रदायका व्यवहार चलता रहा.

बुत पुजावते रात के, गई जड मेख तिन ।
सो क्यों जाहेरी आगे चल सकें, हुए हक दिन रोसन ॥ ८४

उस समय अज्ञानरूपी अन्धकारके कारण लोग मूर्तिको ही परमात्मा समझकर उसकी आराधना करते थे. अब वह जड़ता समाप्त हो गई है. अखण्ड ब्रह्मज्ञानका प्रकाश फैलने पर धर्मग्रन्थोंके बाह्यार्थके आधार पर चल रही मिथ्या अवधारणा कैसे चल सकती है ?

झंडा खडा था दीन का, मके मदीने ।
सो जमात ले सरियतें, पकड्या था यकीने ॥ ८५

मक्का तथा मदीनामें रसूल मुहम्मद द्वारा स्थापित कर्म विधानका झण्डा लहरा रहा था. रसूल मुहम्मदके अनुयायियोंने कर्मकाण्ड पर विश्वास रखकर उसी झण्डेको पकड़ रखा था.

हुकम किया था रसूल ने, जिन पडो जुदे तुम ।
सो कौल तोड बहतर हुए, रात के मुसलिम ॥ ८६

रसूल मुहम्मदने उन्हें आदेश दिया था कि तुम अलग-अलग नहीं होना. उनके उस आदेशका उल्लंघन कर मुस्लिम लोग अज्ञानरूप अन्धकारमें बहत्तर समुदायमें विभक्त हो गए.

इन मजाजी जमात ने, छोडे हक हादी कदम ।
सो टूक टूक जमात जुदी हुई, हाए हाए ऐसा किया जुलम ॥ ८७

इन मिथ्या जगतके जीवोंने अपने रसूलके चरण (मार्गदर्शन) को छोड़ दिया. इसलिए यह समुदाय टुकड़े-टुकड़े होकर अलग-अलग समुदायोंमें विभक्त हो गया. हाय, इन्होंने बड़ा अनर्थ किया है.

हाए हाए देख्या न हक हादी सामी, ना हदीसें कुरान ।
तो आए लिखे नामें वसियत, इत ना रह्या किन का ईमान ॥ ८८

हाय, इन्होंने न हक हादीको सामने देखा और न ही कुरान या हदीसोंको पढ़ा. इसीलिए मक्कासे वसीयतनामे लिखे गए कि यहाँ पर किसीमें भी विश्वास नहीं रहा है.

एक सात जने ईमानसों, मुए मुसलमान ।
आए पोहोंच्या सोई बखत, जो कह्या था नुकसान ॥ ८९

(एक कथानक है कि मुस्लिमोंकी आस्था परखनेके लिए नमाज पढ़ते समय आकाशसे सत्तर हजार स्वर्ण मुद्राओंकी वर्षा हुई. उस समय सब लोग नमाज छोड़ कर मुद्रा बटोरनेके लिए दौड़ गए.) केवल सात जने ही खुदाके प्रति विश्वासके साथ नमाज पढ़ते रहे. (वे लोग जब मुद्रा उठाने लगे तब मुद्राएँ कोयले जैसी हो गईं इस प्रकार इन लोगोंको दोनों ओर से हानि हुई.) अब वह समय आ गया है जिसके लिए दोनों ओरसे हानि होना कहा गया था.

और लिख्या जो पिछे रहे, तिन दिलों नहीं यकीन ।
सोए लिख्या सौं खाए के, अब लग था झंडा दीन ॥ ९०

कुरानमें यह भी उल्लेख है, जो लोग पीछे रह गए उनके हृदयमें भी विश्वास

नहीं रहा. इसलिए वसीयतनामामें शपथके साथ लिखा गया कि अब तक धर्मध्वज यहाँ पर था, वह अब उठ गया है.

जो कह्या था रसूल ने, सोई हुआ बखत ।
आए लिखे नामें वसियत, जाहेर करी कयामत ॥ ९१

रसूल मुहम्मदने जैसा कहा था वह समय आ गया है. तदनुसार वसीयतनामें लिखकर भारतवर्षमें आ गए जिससे कयामतका समय प्रकट हो गया.

तो आए नामें वसीयत, जो पेहेलें फुरमाए ।
सोए देखो बीच आयतों, दिलसों अरथ लगाए ॥ ९२

रसूल मुहम्मदने पहले ही भविष्यवाणी की थी. उसीके अनुरूप ये वसीयतनामे आए हैं. कुरानकी उन आयतोंको हृदयपूर्वक विचार करके देखो.

ए जो मजाजी दुनियां, क्या करसी विचार ।
तो क्यों देखे बिना मारफत, बीच राह अंधार ॥ ९३

बाह्य दृष्टिवाली यह दुनियाँ इस पर क्या विचार कर सकती है. ब्रह्मज्ञानके बिना यहाँके जीव अज्ञानरूपी अन्धकारमें कैसे मार्ग देख सकते हैं ?

जिनों मुसाफ लुदंनी खोलिया, पाई हक हकीकत ।
तब जानो फजर हुई, आए पोहोंची सरत ॥ ९४

जिन्होंने ब्रह्मज्ञानको प्राप्त कर कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट किया उनको ही परमधामकी यथार्थता प्राप्त हुई. कयामतका समय आ गया है अब समझना चाहिए कि ब्रह्मज्ञानका प्रभात हो गया है.

तुम जुदे जिन पडो, रहियो गिरोह साथ ।
सो होएगा दोजकी, जो छोडसी जमात ॥ ९५

रसूल मुहम्मदने अपने अनुयायियोंको कहा था, तुम अपने समुदायका साथ छोड़ कर अलग मत होना. जो अपने समुदायका साथ छोड़ेगा वह नरकगामी होगा.

सो तो जिद कर जुदे हुए, फिरके जो बहत्तर ।
ताको नारी आयतों हदीसों, लिख्या है यों कर ॥ ९६

किन्तु उनके अनुयायी परस्पर कलह कर अलग-अलग बहत्तर फिरकोंमें बँट गए. कुरानकी आयतों तथा हदीसोंमें ऐसे लोगोंको नारी (नरकगामी) कहा है.

सो देवाई हादिएं साहेदी, पुकारे सिरदार ।
फैल कहे तिनों मुख अपने, दुनी सब हुई ख्वार ॥ ९७

इसलिए सद्गुरुने प्रकट होकर मक्काके काजियोंके द्वारा वसीयतनामाके माध्यमसे पुकार-पुकार कर इस बातकी साक्षी दिलवाई. उन्होंने अपने मुखसे उनके समुदायके लोगोंका आचरण स्पष्ट किया कि लड़-झगड़ कर उनकी दुर्दशा हो रही है.

कह्या दुनी पढसी, आप दिल बिचार ।
चिठी लेसी पिछली हाथमें, केहेसी फैल पुकार ॥ ९८

रसूल मुहम्मदने यह भी कहा था, मेरे बाद जगतके लोग कुरान पढ़ेंगे और अपनी ही बुद्धिसे विचार करेंगे, उनके लिए लिखे गए पत्रोंको अपने हाथमें लेंगे और अपने आचरणोंके प्रति पश्चात्ताप करेंगे.

फिरका जो तेहेतरमां, कह्या नाजी हक इलम ।
मोमिन दिलों पर लुदंनी, लिख्या बिना कलम ॥ ९९

इन विभक्त लोगोंमें जो तिहत्तरवाँ फिरका होगा वह धर्मनिष्ठ कहलाएगा. उसीके पास ब्रह्मज्ञान होगा. इन ब्रह्मात्माओंके हृदयमें यह ब्रह्मज्ञान लेखनीके बिना ही अङ्कित होगा.

तिन दिलों पर सूरज, ऊग्या मारफत ।
जिनों पाई अरस इलमें, हक की हिदायत ॥ १००

इन्हीं ब्रह्मात्माओंके हृदयमें ब्रह्मज्ञानका सूर्य उदय हुआ है. इन्होंने ही परमधामके ज्ञानके द्वारा परब्रह्म परमात्माके निर्देशन प्राप्त किए हैं.

रूहें फिरस्ते अरस के, सोई महंमद दीन ।
तिनमें सकसुभे नहीं, नूर पूर यकीन ॥ १०१

ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टि क्रमशः परमधाम एवं अक्षरधामकी हैं. वे ही श्री श्यामाजी द्वारा स्थापित श्रीकृष्ण प्रणामी धर्ममें दीक्षित हैं. उनमें किसी भी प्रकारका सन्देह नहीं है. उनका हृदय ज्ञान और विश्वाससे परिपूर्ण है.

ए जो बेसक महंमदी, सुंनत जमात ।
वाहेद तन कुल मोमिन, छोडें न हाथों हाथ ॥ १०२

इसी धर्मनिष्ठ समुदायको श्री श्यामाजीके अङ्ग (सुन्दरसाथ) कहा गया है. ये ब्रह्मात्माएँ अद्वैत स्वरूपा हैं. इसलिए एक दूसरेसे भिन्न नहीं होतीं.

वसीयत नामें आए के, इत करी पुकार ।
राह बीच की छोड बहतर हुए, छूट गया करार ॥ १०३

मक्कासे आए हुए अधिकारपत्रों (वसीयतनामा) में वारंवार यह पुकार की गई थी कि यहाँके लोग रसूल मुहम्मद द्वारा निर्दिष्ट मार्गको छोड़ कर अलग-अलग बहत्तर समुदायोंमें विभक्त हो गए हैं. इसलिए यहाँ पर शान्ति भङ्ग हो गई है.

नाजी फिरका हक इलमें, बेसक हुआ एक ।
मारफत माएना म्याराज का, सब पाया विवेक ॥ १०४

इन सभीमें एक धर्मनिष्ठ समुदाय (नाजी फिरका) ही ब्रह्मज्ञानके कारण सन्देह रहित हुआ है. उसीने रसूल मुहम्मदको म्याराजके समय कहे गए खुदाकी पहचानके तीस हजार शब्दोंके गूढ़ रहस्योंको समझा.

वसीयतनामे में सखत, लिखे सौगंद खाए ।
सो कौन देखे नाजी बिना, दिल सों अरथ लगाए ॥ १०५

मक्कासे आए हुए वसीयतनामोंमें शपथपूर्वक लिखा है, किन्तु नाजी समुदायके बिना अन्य कौन लोग उनका तात्पर्य समझ सकते हैं ?

सो नूर झंडा खडा कर, इत दिया देखाए ।
सो ईमान बिना देखे नहीं, पीछे रोसी पछताए ॥ १०६

ब्रह्मज्ञानका वह प्रकाशमय ध्वज भारतवर्षमें स्थापित कर दिया. किन्तु

विश्वासके बिना लोग उसे देख नहीं पाते हैं और पश्चात्ताप करते हुए रोते हैं.

सो नूर झंडा खडा हुआ, बीच हिंदुस्तान ।
जित जबराईल ले आइया, न्यामत चारों कुरान ॥ १०७

वह प्रकाशमय ध्वज भारतवर्षमें स्थापित हुआ जहाँ पर जिब्रील फरिश्ता मक्कासे कुरानकी चारों सम्पदाएँ (बरकत, शफकत, ईमान एवं कुरान) लेकर आया है.

जिमी आरब से ल्याइया, दुनियां की बरकत ।
और न्यामत बडी ल्याया, फकीरों की सफकत ॥ १०८

जिब्रील फरिश्ताने अरबकी भूमिसे लोगोंका विश्वास छीन लिया है और वह फकीरोंकी दुआकी शक्ति भी वहाँसे उठा कर ले आया.

ए जो दुनियां बरकत, सो तो कह्या ईमान ।
और फकीरों की सफकत, सो आखर मेहेर मेहेरबान ॥ १०९

यहाँ पर दुनियाँकी बरकत का अभिप्राय परब्रह्मके प्रति लोगोंका विश्वास है और फकीरोंकी दुआएँ, ये दोनों निधियाँ आत्मजागृतिके अन्तिम समय निष्कलङ्क बुद्धावतारके प्रति आस्था रखनेवालेको प्राप्त हुई.

उतथें उठाए जबराईल, ल्याया बीच हिंद ।
गिरो सितारे महंमदी, कहे जो सूरज चंद ॥ ११०

इस प्रकार जिब्रील फरिश्ता मक्कासे इन सम्पदाओंको लेकर भारतवर्षमें आ गया. जहाँ पर श्री श्यामाजीका समुदाय (ब्रह्मात्माएँ) नक्षत्रोंकी भाँति चमक रहा है और स्वयं श्री श्यामाजीको सुन्दरबाई एवं इन्द्रावतीके हृदयमें विराजमान होनेसे चन्द्र एवं सूर्यकी शोभा प्राप्त हुई है.

चांद सूरज दोऊ हादी कहे, ए महंमदी सूरत ।
कही गिरो सितारों की, खासल खास उमत ॥ १११

वस्तुतः चन्द्र और सूर्य अर्थात् सुन्दरबाई एवं इन्द्रावती दोनों सद्गुरुके रूपमें प्रतिष्ठित हुईं. उनमें ही श्री श्यामाजीकी शक्ति अवतरित हुई है. शेष ब्रह्मात्माओंका समुदाय नक्षत्रोंकी भाँति सर्वश्रेष्ठ कहलाया.

सिपारे सताईसमें, जाहेर कह्या रोसन ।
सो तुम देखो अरस दिलमें, जाहेर हक हादी मोमन ॥ ११२

कुरानके सत्ताईसवें सिपारेमें यह बात स्पष्ट लिखी है. तुम उसे अपने हृदयधाममें देखो जिससे श्री राजजी, श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंका रहस्य स्पष्ट हो जाएगा.

कह्या बीच हिंद के, हक करसी हिसाब ।
खासलखास उमत, सब लेसी सवाब ॥ ११३

कुरानमें यह भी कहा है कि परमात्मा भारतवर्षमें प्रकट होकर सबका न्याय करेंगे. उस समय ब्रह्मसृष्टियोंके श्रेष्ठ समुदायको उनके दर्शनका लाभ प्राप्त होगा.

अव्वल कह्या रसूलें, कजा होसी इत ।
दीदार तब तिन होएसी, खोलें हक मारफत ॥ ११४

रसूल मुहम्मदने पहले ही कहा था कि यहाँ पर (भारतवर्षमें) परमात्माके द्वारा न्याय होगा. तब सभी ब्रह्मात्माओंको उनके दर्शन होंगे और वे परब्रह्म परमात्माकी पहचानको प्रकट करेंगी.

सिपारे उनइसमें, लिख्या सूरज मारफत ।
सो दिल रोसन महंमद का, होसी खोलें हकीकत ॥ ११५

कुरानके उन्नीसवें सिपारेमें लिखा है कि कयामतके समयमें ब्रह्मज्ञानरूपी सूर्य उदय होगा. वह श्री श्यामाजीके हृदयका ही प्रकाश होगा. उसके प्रकट होने पर कुरानकी यथार्थता स्पष्ट होगी.

ज्यादा हुआ फुरमाए से, जो कौल किया अव्वल ।
सो जोड देखो आयतों हदीसों, ले दिल अरस अकल ॥ ११६

रसूल मुहम्मदने जो कुछ कहा था उससे अधिक कार्य हुआ है. अब तुम अपने हृदयमें परमधामकी बुद्धि जागृत कर कुरानकी आयतों तथा हदीसोंके अर्थोंकी तुलना कर देखो.

और भी देखो साहेदी, ए जो लिखी आयत ।
ए जो किसे कुरान के, आयतें सूरत ॥ ११७

इसके अतिरिक्त इन आयतोंमें और भी साक्षियाँ मिलतीं हैं. कुरानकी आयतों तथा सूरतोंमें ऐसे अनेक कथानकोंका वर्णन है.

और सुकन बोलों नहीं, बिना हक फुरमाए ।
सोई देखेगा मोमिन, जो दिल अरस केहेलाए ॥ ११८

मैं रसूल मुहम्मदके कहे हुए वचनोंके अतिरिक्त अन्य कोई बात नहीं कह रहा हूँ. जिन ब्रह्मात्माओंका हृदय परमधाम है वे ही इन रहस्योंको समझ पाएँगी.

महामत कहें ऐ मोमिनो, देखो अपनी निसबत ।
असल तन अरसमें, जो हक की गैब खिलवत ॥ ११९

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! अपने सम्बन्धोंको देखो. अपने मूल तन (पर-आत्मा) तो परमधाममें श्री राजजीके अन्तरङ्ग स्थल मूलमिलावामें विराजमान हैं.

प्रकरण १३ चौपाई ९१२

बाब असराफील का

तो असराफिलें आखर, कुरान को गाया ।
ऐसा बडा काम तो किया, जो आखर को आया ॥ १

कुरानकी भविष्यवाणीके अनुसार कयामतके समयमें इस्राफील फरिश्ताने कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट किया. उसने इतना बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य इसलिए किया कि वह कयामतके दिनोंमें प्रकट हुआ है.

तो रसूलें अव्वल, ऐसा फुरमाया ।
सो अपनी सरत पर, फिरस्ता आखरी आया ॥ २

रसूल मुहम्मदने पहलेसे ही इस प्रकार कहा था उसीके अनुरूप निश्चित समय पर वह अन्तिम फरिश्ता (इस्राफील) प्रकट हो गया.

लिख्या फलाने सिपारे, ऐसी खुस न कबूं अवाज ।
ए फिरस्ता कबूं न आइया, ए जो आया आज ॥ ३

कुरानके अन्य सिपारेमें लिखा है कि इतना सुन्दर स्वर कभी भी किसीने नहीं सुना था. क्योंकि इससे पूर्व वह कभी भी आया नहीं था जो आज आया है.

जो कौल फुरमाया अव्वल, सो सब आए के किया ।
सूर बजाए दिल साफ से, सुकन सिर लिया ॥ ४

रसूल मुहम्मदने इसके आनेकी भविष्यवाणी पहले ही कर दी थी. तदनुसार उसने आकर सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न किए. उसने पवित्र भावसे दुन्दुभी बजाकर परमात्माके आदेशका पालन किया.

मगज जो मुसाफ का, जाहेर किया छिपाया ।
गाया खुस अवाज सों, कौल सिर चढाया ॥ ५

कुरानके जो रहस्य स्पष्ट नहीं हुए थे उनको स्पष्ट कर दिया एवं परमात्माके आदेशका पालन करते हुए मधुरवाणीसे ब्रह्मज्ञानका विस्तार किया.

लिख्या चारों पैगंमर, सरत अपनी आए ।
तिनों भी सिर हुकम, ल्याए हैं बजाए ॥ ६

कुरानके उल्लेख अनुसार चारों पैगम्बर (मूसा, दाऊद, ईसा और मुहम्मद) अपने वचनोंके अनुसार कयामतके समय प्रकट हो गए. उन्होंने भी परमात्माके आदेशको शिरोधार्य कर अपना कार्य सम्पन्न किया.

पढें किताबें अपनी, पैगंमर तीन ।
सो आए बीच आखर, ए जो हकीकी दीन ॥ ७

मूसा, दाऊद एवं ईसा इन तीनों पैगम्बरोंने पूर्वकालमें रद्द किए गए अपने ग्रन्थों (जबूर, तौरात एवं बाइबिल) को पुनः प्रकाश, कलश एवं रासके रूपमें प्रकट किया. वे सभी कयामतके समयमें प्रकट होकर श्रीकृष्ण प्रणामी धर्ममें सम्मिलित हुए.

आया असराफील आखर, महंमद मेहेदी साथ ।
मुसाफ असराफिल कों, दिया अपने हाथ ॥ ८

अन्तिम समयमें प्रकट हुए महदी मुहम्मदके साथ इस्त्राफील फरिश्ता आया. रसूल मुहम्मदने इस (फरिश्ता) को कुरानके गूढ़ अर्थोंको स्पष्ट करनेका सम्पूर्ण दायित्व अपने हाथोंसे प्रदान किया.

हुआ सोई सरत पर, पैगंमरों मिलाप ।
सो पढें किताबें फुरमायसे, अपनी ले आप ॥ ९

कुरानकी भविष्यवाणीके अनुसार निश्चित समय पर सभी पैगम्बरोंका मिलन हुआ. उन्होंने इस समय प्रकट होकर अपने-अपने उपदेशोंके नाम पर प्रकट किए गए नये ग्रन्थोंको देखा.

एक तौरेत और अंजीर, तीसरी जो जंबूर ।
सोए किया सब जाहेर, छिपा था जो नूर ॥ १०

इन ग्रन्थोंमें एक 'तौरात' है दूसरा 'इंजील (बाइबिल)' तीसरा 'जबूर' है. इनमें जो गूढ़ रहस्य छिपे हुए थे वे सब क्रमशः कलश, रास एवं प्रकाशके माध्यमसे प्रकट हुए.

एक मूसा और रूहअल्ला, तीसरी जो दाऊद ।
ए तीनों पैगंमर, आए बीच जहूद ॥ ११

पैगम्बरोंमें मूसा, ईसा तथा दाऊद ये तीनों यहूदियोंमें प्रकट हुए थे.

ए किताबें जो आखरी, आखरी रसूल ल्याए ।
सो मगज मुसाफ जाहेर कर, असराफिलें गाय ॥ १२

इन धर्मग्रन्थोंमें जो अन्तिम धर्मग्रन्थ कुरान है उसे लेकर रसूल मुहम्मद आए. उसके गूढ़ रहस्योंको अन्तिम समयमें प्रकट होकर इस्त्राफील फरिश्ताने स्पष्ट किया.

सो साहेदी सिपारे चौबीसमें, लिखियां ठौर ठौर ।
हक हादी मोमिन बिना, जाने कौन और ॥ १३

कुरानके चौबीसवें सिपारेमें विभिन्न स्थानोंमें इस बातकी साक्षी लिखी है.

वस्तुतः श्री राजजी, श्यामजी तथा ब्रह्मात्माओंके बिना इस रहस्यको अन्य कौन जान सकता है ?

म्याराज किन पर ना हुआ, पैगंमर आखरी बिन ।
और पैगंमर कै हुए, कै कहावे रोसन ॥ १४

उक्त चारों पैगम्बरोंमें अन्तिम पैगम्बर रसूल मुहम्मदके अतिरिक्त अन्य किसीको भी खुदाके दर्शन (म्याराज) नहीं हुए. वैसे तो पैगम्बर अनेक हुए हैं और श्रेष्ठ एवं महान भी कहलाए हैं.

पर ए जो अरस अजीम, रहें हमेसा मोमन ।
ए रूहें नजीकी हक के, इनों अरस बीच तन ॥ १५

किन्तु ब्रह्मात्माएँ सदैव दिव्य परमधाममें रहतीं हैं. वे परमात्माके अत्यन्त निकट हैं क्योंकि उनका मूल तन परमधाममें ही है.

महंमद की हदीसमें, खबर दई भांत इन ।
कह्या सिरदार रूहअल्ला, बीच अरस रूहन ॥ १६

रसूल मुहम्मदने हदीसोंमें विभिन्न प्रकारसे यह सूचना दी है कि परमधामकी ब्रह्मात्माओंमें श्री श्यामाजी शिरोमणि हैं.

बीच बका लाहुत में, जो हैं रूहें मोमन ।
तीन सूरत महंमद की, सो कहे एक तन ॥ १७

दिव्य परमधाममें जितनी भी ब्रह्मात्माएँ हैं वे सभी एवं रसूल मुहम्मद द्वारा निर्दिष्ट तीनों (बशरी, मलकी एवं हकी) स्वरूपोंमें कोई अन्तर नहीं है वे सभी एक ही अद्वैत स्वरूपमें हैं.

अव्वल सूरत एक बसरी, पीछे सूरत मलकी ।
कही तीसरी आखर, सूरत जो हकी ॥ १८

इस जगतमें श्री श्यामाजीकी सुरता सर्वप्रथम बशरीके रूपमें तदुपरान्त मलकीके रूपमें एवं अन्तमें हकी स्वरूपमें अवतरित हुई है.

ए तीनों बातूनमें एक हैं, जो देखिए हकीकत ।
तब सबे सुध पाइए, होए बका मारफत ॥ १९

यदि यथार्थको देखें तो ये तीनों स्वरूप मूलतः एक ही हैं. जब दिव्य परमधामकी पहचान होगी तब इस सम्बन्धकी सम्पूर्ण सुधि प्राप्त होगी.

ए सबे बीच अरस के, कहावें वाहेदत ।
एक तन रूहें अरस की, हक हादी सूरत ॥ २०

ये सभी दिव्य परमधाममें एकात्मभाव अर्थात् अद्वैत स्वरूप कहलाते हैं. श्री राजजीकी अङ्गना श्री श्यामाजी तथा उनकी अङ्गभूता परमधामकी ब्रह्मात्माएँ सभी अद्वैत स्वरूपमें हैं.

और न कोई पोहोंचिया, बडे अरसमें इत ।
आगे जाए जबराईल ना सक्या, कहे पर मेरे जलत ॥ २१

ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई भी दिव्य परमधाममें पहुँच नहीं पाया. स्वयं जिब्रील फरिश्ता भी अक्षरधामसे आगे न जा सका और कहने लगा कि मेरे पङ्ख जलते हैं.

और हुए कै फिरस्ते, और कै पैगंमर ।
जिन किनों पाई बुजरकी, ना जबराईल बिगर ॥ २२

इस जगतमें अनेक फरिश्ते तथा पैगम्बर अवतरित हुए हैं, उनमें जिसको जो भी महत्ता प्राप्त हुई है वह जिब्रील फरिश्तेके बिना सम्भव नहीं है.

और सबे ताबें कहे, जबराईल के ।
जिंन देव या आदमी, या बुजरक फिरस्ते ॥ २३

सभी पैगम्बर, फरिश्ते, देवी-देवताएँ, मनुष्य, भूत-प्रेत आदि सभी इसी जिब्रील फरिश्तेके अधीन हैं. सभीको इसीसे महत्ता प्राप्त होती है.

खास उमत महंमद की, जो कही अरस रबानी ।
दूजी गीरो फिरस्तन की, जो कही नूर मकानी ॥ २४

श्री श्यामाजीकी अङ्गभूता ब्रह्मात्माओंका विशिष्ट समुदाय अखण्ड परमधामका कहलाता है. दूसरा समुदाय ईश्वरीसृष्टिका है जो अक्षरधामसे सम्बन्धित है.

और बुजरक फिरस्ता आखरी, कह्या जो असराफील ।
किए जाहेर मगज मुसाफ के, सक सुभे न आडी खील ॥ २५

अन्तिम समयमें प्रकट हुआ श्रेष्ठ फरिश्ता इस्त्राफील कहलाया. उसने कुरानके गूढ़ रहस्य स्पष्ट किए जिससे सूईकी नोंकके समान संशय भी नहीं बचा.

असराफीले बीच अरस के, सब हकीकत लई ।
सो मगज मुसाफ के, गाए के जाहेर कही ॥ २६

इसी इस्त्राफील फरिश्ताने परमधामकी सम्पूर्ण यथार्थता प्राप्त की एवं कुरानके गूढ़ रहस्योंका स्पष्ट गायन किया.

ना तो जबराईल महंमद पर, कलाम अल्ला ले आया ।
पर माएना छिपा जो मगज, सो असराफीलें पाया ॥ २७

वैसे तो रसूल मुहम्मदके पास खुदाका सन्देश (कुरान) लेकर जिब्रील फरिश्ता आया था. किन्तु उसके गूढ़ रहस्य इस्त्राफील फरिश्ताके द्वारा ही प्रकट हुए हैं.

देखो पैगंमर आखरी, रसूल केहेलाया ।
सो असराफीलें गाय के, बातून सब बताया ॥ २८

देखो, आखरी पैगम्बर रसूल कहलाए जिन्होंने कुरानका उपदेश दिया. उसके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करनेका कार्य इस्त्राफील फरिश्ताने किया.

कह्या पैगंमर आखरी, असराफील भी आखर ।
ए जुदे क्यों होवहीं, देखो सहुर कर ॥ २९

जिस प्रकार रसूल मुहम्मद आखरी पैगम्बर कहलाए उसी प्रकार इस्त्राफील भी आखरी फरिश्ता कहलाया. विचार पूर्वक देखो ये दोनों भिन्न-भिन्न कैसे हो सकते हैं ?

असराफील फिरबल्या, अरस अजीम के माहें ।
और जबराईल जबरूत की, हद छोडी नाहें ॥ ३०

इस्त्राफील फरिश्ताने परमधाममें सर्वत्र विचरण किया किन्तु जिब्रील फरिश्ता अक्षरधामसे आगे नहीं बढ़ सका.

एक नूर और नूर तजल्ला, कहे ठौर दोए ।
ए नाहीं जुदे वाहेदत से, हैं बका बीच सोए ॥ ३१

वैसे तो अक्षरधाम तथा परमधाम दोनोंका भिन्न-भिन्न उल्लेख है किन्तु दोनों अक्षरातीत परब्रह्म परमात्माके अद्वैत स्वरूपसे भिन्न नहीं है. इसलिए दोनों ही अखण्ड हैं.

एक जाहेर आम खास ज्यों, और अंदर खिलवत ।
ए सोई जाने हक अरस की, जाए खुली मारफत ॥ ३२

इस जगतमें आए हुए जीवोंमें एक सामान्य जीव हैं, जिनको जीवसृष्टि कहा गया है. दूसरी विशिष्ट आत्माएँ ईश्वरीसृष्टि हैं. तीसरी परमधाम मूलमिलावेमें विराजमान ब्रह्मात्माएँ कलार्ती हैं. इनमें जिनकी ब्राह्मीदृष्टि खुल गई है वे ही अक्षरातीत परब्रह्म परमात्मा एवं परमधामको जान सकर्ती हैं.

जिनों खुले मगज मुसाफके, माएने हकीकत ।
सकसुभे तिन को नहीं, जिनों हुई हक हिदायत ॥ ३३

जिन आत्माओंको धर्मग्रन्थोंके गूढ़ रहस्य यथार्थरूपमें स्पष्ट हुए हैं और जिनको परब्रह्म परमात्माका मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ है, उनके हृदयमें किसी भी प्रकारका सन्देह नहीं है.

सक सुभे क्योंए भाजे नहीं, हक इलम बिन ।
ना तो मिलो सब आदमी, या देव फिरस्ते जिन ॥ ३४

ब्रह्मज्ञानके बिना हृदयके सन्देह दूर नहीं हो सकते, भला मनुष्य देवी-देवता, अवतार तथा जिन आदि सभी मिलकर क्यों न प्रयत्न करें.

असराफील के अमल में, सकसुभे नहीं कोए ।
कयामत फल पाया इतहीं, मगज मुसाफी सोए ॥ ३५

इस्राफील फरिश्ताके प्रकट होने पर किसीके भी संशय शेष नहीं रहे. धर्मग्रन्थके गूढ रहस्य स्पष्ट होने पर सभीको कयामतका लाभ प्राप्त हुआ.

आखर फल जो पावहीं, कहे सोई कुरान ।
दिन होवे तिन मारफत, हक अरस पेहेचान ॥ ३६

कुरानके अनुसार कयामतके समयका लाभ उसीको प्राप्त होगा जिनके हृदयमें

ब्रह्मज्ञानका प्रभात हुआ और जिनको परब्रह्म परमात्माकी पहचान हुई है.

तो कह्या असराफील, आवसी आखर ।
सो फल लैलत कदर का, पाया तीसरी फजर ॥ ३७

इसीलिए कुरानमें कहा कि कयामतके समयमें इस्त्राफील फरिश्ता प्रकट होगा. जिससे महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) के तृतीय खण्डमें सभीको ब्रह्मज्ञानके प्रभातका लाभ प्राप्त होगा.

लिखें सबों के मरातबें, ए जो बीच फुरकान ।
सोई जाने रूहें मोमिन, या जाने हादी सुभान ॥ ३८

कुरानमें सभी जीवोंकी अलग-अलग योग्यता (पद) की बात लिखी गई है. उस रहस्यको या ब्रह्मात्माएँ जानतीं हैं या श्री श्यामाजी एवं श्री राजजी जानते हैं.

ए जो गिरो फिरस्तन की, जाकों नूर मकान ।
रूहें बीच नूर तजल्ला, सूरत रेहेमान ॥ ३९

ईश्वरीसृष्टियोंके समुदायका मूलस्थान अक्षरधाम है. परब्रह्म परमात्माकी अङ्गभूता ब्रह्मात्माएँ उससे भी परे अक्षरातीत परमधाममें रहतीं हैं.

जबराईल आइया, सबों पैगंमरों पर ।
सोए रह्या बीच नूर के, ना चल्या महंमद बराबर ॥ ४०

इस जगतमें समय-समय पर अवतरित सभी पैगम्बरोंके साथ जिब्रील फरिश्ता आता रहा है. वह भी अक्षरधामकी सीमा तक ही रह गया, उससे आगे रसूल मुहम्मदके साथ नहीं चल सका.

और कोई अरस अजीममें, पोहोंच ना सकत ।
जित हक हादी रूहें, महंमद तीन सूरत ॥ ४१

इस प्रकार दिव्य परमधाममें अन्य कोई भी नहीं पहुँच सकता. वहाँ पर श्री राजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ हैं. रसूल मुहम्मद निर्दिष्ट तीनों स्वरूप भी उनमें ही सम्मिलित हैं.

और मोमिन बोल ना बोलहीं, एक म्याराज बिन ।
जिनपें इलम हक का, लुदंनी रोसन ॥ ४२

ब्रह्मात्माएँ परब्रह्म परमात्मा एवं परमधामके अतिरिक्त अन्य कोई बात नहीं करतीं हैं. उनके हृदयमें परब्रह्म परमात्माका दिव्य तारतम ज्ञान प्रकाशित हुआ है.

सोई अरस हक का, हादीं रूहों बतन ।
इत हक हादी रूहों सूरत, अरस के तन ॥ ४३

पूर्णब्रह्म परमात्माका परमधाम ही श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंका घर है. वहाँ पर श्री राजजी, श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ अद्वैतस्वरूप (चिन्मयतन) में हैं.

फिरस्ते अरस सूरत नहीं, इनों जुदी असल ।
पैदास कही फिरस्तन की, पेड से नकल ॥ ४४

ईश्वरीसृष्टियोंका मूल तन अक्षरधाममें नहीं है क्योंकि इनकी उत्पत्ति ही भिन्न प्रकारसे हुई है. इन ईश्वरीसृष्टियोंकी उत्पत्ति अक्षरब्रह्मकी सुरतासे ही हुई है.

रूहें असल हक कदमों, है अरसमें सूरत ।
तो कहे हक हादी रुहें, अरस की वाहेदत ॥ ४५

ब्रह्मात्माएँ मूलरूपमें परब्रह्म परमात्माके चरणोंमें विराजमान हैं. उनके मूल तन (पर-आत्मा) दिव्य परमधाममें हैं. इसीलिए श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंको परमधामके अद्वैत स्वरूप कहा गया है.

बीच अरस अजीम के, सूरत बका हक ।
मोमिन हक इलम से, चीन्हें मुतलक ॥ ४६

दिव्य परमधाममें सच्चिदानन्द स्वरूप पूर्णब्रह्म परमात्मा विराजमान हैं. ब्रह्मात्माएँ ब्रह्म (तारतम) ज्ञानके द्वारा उनकी पहचान करतीं हैं.

मोमिन अरस रूहों जैसा, कोई नहीं बुजरक ।
हक इलम यों केहेवहीं, इनमें नाहीं सक ॥ ४७

दिव्य परमधामकी ब्रह्मात्माओंके समान अन्य किसीकी महिमा नहीं है. ब्रह्म

ज्ञान-तारतम ज्ञानसे यह बात ज्ञात होती है इसमें किसी भी प्रकारका संशय नहीं है.

लिख्या अमेतसालुनमें, बडाई रूहन ।
देखो इत दिल देयके, निसां करो मोमन ॥ ४८

कुरानके तीसरे सिपारेकी पहली सूरत अमेतसालुनमें ब्रह्मात्माओंकी महिमा लिखी हुई है. हे ब्रह्मात्माओ ! उसको देखकर इस बातको हृदयङ्गम करो.

हक हादी वाहेदत बीचमें, कहे जो मोमन ।
इलमें कहें इन सिफतें, और नाहीं सुकन ॥ ४९

दिव्य परमधाममें श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंका एकात्म भाव है. तारतम ज्ञानसे ही इन ब्रह्मात्माओंकी महिमा जानी जा सकती है. अन्य कोई भी उनकी महिमाको शब्दोंसे व्यक्त नहीं कर सकता.

सोई कहीए अरस वाहेदत, जो हैं हक की जात ।
हक हादी रूहों बीचमें, कोई और न समात ॥ ५०

पूर्णब्रह्म परमात्माके अङ्गस्वरूपा ब्रह्मात्माओंको ही परमधामका अद्वैत स्वरूप कहा गया है. वहाँ पर श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई प्रवेश नहीं कर सकता है.

पातसाही एक हक बिना, और नहीं कोई कित ।
दूजा हुकम कादर का, कै करत कुदरत ॥ ५१

दिव्य परमधाममें अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्माका ही साम्राज्य है उनके अतिरिक्त अन्य कोई भी कहीं नहीं है. दूसरे रूपमें उनका आदेश कार्य करता है, जिससे अक्षरब्रह्म अनेकों ब्रह्माण्डोंकी सृष्टि तथा लय करते हैं.

सो करे जाहेर हक की, कै भांतो सिफत ।
फानी छल झूठा नजरों, हुकमें देखत ॥ ५२

ब्रह्मात्माएँ अपने प्रियतम धनीका गुणगान भी इसी आदेशके द्वारा करतीं हैं और नश्वर जगतका खेल भी इसीके द्वारा देखतीं हैं.

महमद रूहों को देखाए के, करसी सब फना ।
आंखां खोलें ज्यों उड जाए, नींद का सुपना ॥ ५३

यही आदेश श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंको नश्वर जगतका खेल दिखाकर उसे इस प्रकार मिटा देगा जिस प्रकार आँख खुलने पर नींदका स्वप्न टूट जाता है.

चौदे तबक की दुनियां, और जिमी अंबर ।
ऐसे खेल पैदा फना, होवे कै नूर नजर ॥ ५४

चौदह लोकोंकी दुनियाँ तथा पृथ्वीसे लेकर आकाश पर्यन्तकी यह सम्पूर्ण सृष्टि अक्षरकी दृष्टिमें पलमात्रमें बनकर मिट जाती है.

फिरस्ते देव जिंन आदमी, ए जो चौदे तबक ।
पैदा फना हो जात हैं, नूर के पलक ॥ ५५

इन चौदह लोकोंमें देवी-देवताएँ, मनुष्य व जिन आदि सभी अक्षरब्रह्मके पल मात्रमें उत्पन्न होकर लय हो जाते हैं.

कायम एक वाहेदत, हक की पातसाही ।
दूजी कांहूं कितहूं, जरा कही न जाई ॥ ५६

एक अद्वैत परमधाम ही अखण्ड है जहाँ पर श्री राजजीका साम्राज्य है. इसके अतिरिक्त अन्य कहीं भी कुछ भी नहीं है.

देखाया रूहन को, देखो नौमें सिपारे ।
ए हक हादी रूहें निसबती, जो बंदे अपने प्यारे ॥ ५७

कुरानके नवमें सिपारेमें देखो, वहाँ पर लिखा है कि खुदाने अपनी प्रिय आत्माओंको नश्वर जगतका खेल दिखाया. वस्तुतः श्री राजजी, श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मात्माओंका अद्वैत सम्बन्ध है ये आत्माएँ उनकी ही प्रिय अङ्गनाएँ हैं.

हक बिना जो कछु कहे, सो होवे मुसरक ।
और जरा नहीं काहूं कितहूं, यों कहे इलम हक ॥ ५८

परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त अन्य किसीका अस्तित्व स्वीकार करनेवाला व्यक्ति अविश्वासी कहलाता है. क्योंकि ब्रह्मज्ञान यही कहता है कि परब्रह्म

परमात्माके अतिरिक्त अन्य किसीका कहीं भी अस्तित्व नहीं है.

हुकमें देत देखाई, कुदरत पसारा ।
ए देखत सब पैदा फना, हक न्यारे से न्यारा ॥ ५९

श्री राजजीके आदेशसे अक्षरब्रह्मके द्वारा यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड बना है. यह सम्पूर्ण खेल उत्पन्न और लय होता है परन्तु परब्रह्म परमात्मा इससे सर्वथा भिन्न हैं.

सिपारे ओगनतीस में, हकें लिख्या है जेह ।
सो देखो नीके कर, अपना दिल देय ॥ ६०

कुरानके उनतीसवें सिपारेमें खुदाके द्वारा जो कुछ लिखाया है उसे हृदयपूर्वक देखकर उस पर विचार करो.

[वहाँ पर इस प्रकार उल्लेख है, श्रेष्ठ आयत उतरने पर पूर्वकी आयत निरस्त हो जाती है.]

जब आई आयत हकीकत, तब पिछली करी मनसूख ।
ए हुकम तोडे सो क्यों देखे, जो फोड जमात हुए टुक टुक ॥ ६१

इस प्रकार तारतम ज्ञानरूपी यथार्थ वचन (आयत) प्रकट होने पर कर्मकाण्डका ज्ञान देनेवाली पूर्वकी सभी आयतें निरस्त हो गईं हैं. किन्तु जो लोग रसूल मुहम्मदके आदेशका उल्लंघन कर विभिन्न समुदायोंमें विभक्त हो गए हैं वे उनके इन वचनोंको कैसे समझ सकते हैं ?

हादी देखाएं भी तो देखे, जो दिल होए यकीन ।
सो सखत बखत ऐसा हुआ, जो छोड फिरे सब दीन ॥ ६२

जब हृदयमें विश्वास होगा तभी अपने गुरुके मार्गदर्शनमें सत्यवस्तुको देखा जा सकता है. इसलिए रसूल मुहम्मदके पश्चात् ऐसा कठोर समय आया जिससे अनेक लोग धर्मसे दूर हो गए.

न मानो सो देखियो, अगले अमल सरे दीन ।
मनसूख लिख्या सबनकों, जो गए छोड यकीन ॥ ६३

जिनको इस बात पर विश्वास न हो वे देखें, किस प्रकार पूर्वमें स्थापित कर्मके नियमोंको उत्तरकालमें निरस्त कर दिया क्योंकि लोगोंमें उनके प्रति

विश्वास नहीं रहा.

लिख्या सिपारे तीसरे, होसी खोलें हकीकत ।
एक दिन होसी सबे, कही इन सरत ॥ ६४

कुरानके तीसरे सिपारेमें उल्लेख है, जब ब्रह्मज्ञानसे कुरानके यथार्थ रहस्य प्रकट होंगे तब सर्वत्र एक ही धर्म (श्री कृष्ण प्रणामी धर्म)का प्रभाव होगा. यह इसी समयके लिए कहा गया है.

दुनी राह न पावे रात की, जाहेर फना नाबूद ।
ऊग्या दिन मारफत का, सबों हुआ मकसूद ॥ ६५

अज्ञानमयी रात्रिके लोग स्वयं नश्वर होनेके कारण अखण्डका मार्ग प्राप्त नहीं कर सकते. अब ब्रह्मज्ञानका सूर्य उदय हो गया है इसलिए अब सभीकी सम्पूर्ण इच्छाएँ पूर्ण हो जाएँगी.

दूर किए तारीकी रात के, सितारा करता था मैं मैं ।
डुबाया मारफत सूरजें, नाबूद डुब्या मैं मैं से ॥ ६६

अब अज्ञानमयी रात्रिके नक्षत्रगणकी भाँति तथाकथित ज्ञानीजन दूर किए गए हैं जो मिथ्याभिमानके कारण तुच्छ ज्ञानका गर्व करते रहते थे. ब्रह्मज्ञान रूपी सूर्यके उदय होनेपर उनका अहंकार(मैं)रूपी तारा डूबकर विलीन हो गया.

सो सितारा सरीयत का, करता था रात की रोसन ।
सो नाबूद हुआ देख सूरज, ऊगें मारफत दिन ॥ ६७

अज्ञानमयी इस रात्रिमें कर्मकाण्डका वह नक्षत्र दीपककी भाँति टिमटिमा रहा था. ब्रह्म(तारतम)ज्ञानरूपी दिनका उदय होनेपर ज्ञानरूपी सूर्यको देखकर वह स्वतः निर्मूल हो गया.

अरस बका देखाएके, करसी सबों हैयात ।
असराफील खोल मुसाफ, करसी सिफात ॥ ६८

अब इस्राफील फरिश्ता कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करते हुए अखण्ड परमधामका अनुभव करवाएगा एवं सबके हृदयको निर्मल बनाकर उन्हें मुक्तिस्थलोंमें अखण्ड कर देगा.

कलाम अल्ला का बातून, देखो हक इलम ले ।
महंमद सिफायत रूहों को, इनों करसी विध ए ॥ ६९

अब तारतम ज्ञानके बल पर कुरानके गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करनेका प्रयत्न करो. ब्रह्मात्माओंको श्री श्यामाजीकी अनुशंसा प्राप्त है इसलिए वे ही उक्त गूढ़ रहस्योंको स्पष्ट करेंगी.

चारों किताबों के माएने, और माएने चारों वेद ।
लिख्या सबोंमें जुदा जुदा, कयामत एकै भेद ॥ ७०

चारों कतेब ग्रन्थों तथा चारों वेदोंका गूढ़ रहस्य एक ही है. यद्यपि सभीमें अलग-अलग प्रकारसे लिखा गया है किन्तु आत्मजागृति (कयामत) के सम्बन्धमें कहीं भी कोई भिन्नता नहीं है.

किताबें दुनियां मिने, कहूं केती गिनती अनेक ।
तिन सबोंमें आखरी, कलाम अल्ला विसेक ॥ ७१

इस जगतमें अनेक धर्मग्रन्थ हैं जिनकी गणना नहीं की जा सकती. उन सभीमें ब्रह्मवाणीके रूपमें अन्तिम धर्मग्रन्थ श्री तारतम सागरको विशेष कहा गया है.

तिन सबों किताबों बीचमें, विध विध लिखी कयामत ।
तिन सबों जिकर करी, आखर बडी सिफत ॥ ७२

विभिन्न धर्मग्रन्थोंमें कयामतके सम्बन्धमें भिन्न-भिन्न बातें लिखीं हैं. उन सभीने आत्मजागृति (कयामत) के समयका उल्लेख करते हुए उसकी बड़ी महिमा गाई है.

असाराफीलें मुसाफ का, किया जाहेर खुलासा ।
तो हुआ ए नजीकी, खासों में खासा ॥ ७३

इस्राफील फरिश्ताने प्रकट होकर कुरानके इन सब रहस्योंको स्पष्ट कर दिया है. इसीलिए वह सभीमें श्रेष्ठ कहलाकर खुदाकी निकटता प्राप्त कर सका.

जिंन देव या आदमी, या जिमी आसमान फिरस्ते ।
तीन सुरत महंमद की, हैं हादी सिर सब के ॥ ७४

इस नश्वर जगतमें जिन देवी-देवता, मनुष्य तथा अवतारी पुरुष श्रेष्ठ कहलाए हैं उन सभीमें तथा रसूल मुहम्मद निर्दिष्ट तीनों स्वरूपोंमें श्री श्यामाजी शिरोमणि हैं. वे ही सद्‌गुरुके रूपमें अवतरित हुई हैं.

या जिमीन का तिनका, या बडा दरखत ।
कही सिर सबन के, महंमद हिदायत ॥ ७५

इस भूमिमें तृणसे लेकर वृक्ष तक जितनी भी सामग्री हैं सभी श्री श्यामाजीके मार्गदर्शनके अधीन हैं.

जमाना खाली नहीं, बिना महंमदी कोए ।
करत रोसन सबनमें, चराग नबी की सोए ॥ ७६

कोई भी युग श्री श्यामाजीके बिना रिक्त नहीं रहा है. उनके ही ज्ञानका दीपक सर्वत्र प्रकाशित है.

इन विध केहेवें हदीसें, और हक फुरमान ।
ले मगज माएने मोमिन, सब विध करें पेहेचान ॥ ७७

हदीस तथा कुरानमें इस प्रकारका उल्लेख है. ब्रह्मात्माएँ इन रहस्योंको हृदयङ्गम कर सब प्रकारकी सुधि प्राप्त करतीं हैं.

लिख्या आयतों सूरतों, और हदीसों माहें ।
हादी इन महंमद बिना, और कोई किन सिर नाहें ॥ ७८

कुरानकी आयतों, सूरतों तथा हदीसोंमें इस प्रकार उल्लेख है कि श्री श्यामाजी स्वरूप इन सद्‌गुरुके बिना अन्य कोई भी शिरोमणि नहीं है.

तो अव्वल कह्या महंमद, और बीच आखर ।
खाली नहीं बिना खलीफे, महंमद के बिगर ॥ ७९

इसलिए महिमामयी रात्रि (लैल-तुल-कद्र) के आरम्भ मध्य एवं अन्तमें भी सर्वत्र श्री श्यामाजीकी प्रशंसा लिखी गई है. इन सद्‌गुरुके ज्ञानके बिना कोई भी ज्ञानी पुरुष खाली नहीं रहा है.

यों लिख्या बीच हदीस के, जो मैं काम करता हूं अब ।
सो मैं आखर आएके, तमाम करोंगा सब ॥ ८०

हदीसमें इस प्रकार उल्लेख है कि उस समय रसूल मुहम्मदने कहा, अभी मैं जो काम कर रहा हूँ उसे अन्तिम समयमें आकर पूर्ण करूँगा.

मैं आऊंगा यारों वास्ते, खोलों नजूम मेरा मैं ।
मेरे कूच नजूमी कोई ना रह्या, मेरा नजूम खुले मुझ सें ॥ ८१

मैं अपने मित्रोंके लिए आऊँगा और अपनी भविष्यवाणीको स्वयं स्पष्ट करूँगा. इस जगतसे मेरे जानेके पश्चात् मेरी भविष्यवाणीको स्पष्ट करनेवाला कोई भी व्यक्ति नहीं रहेगा, वे मुझसे ही स्पष्ट होंगी.

मोमिन जिन जिन मुलकों, जुदी जुदी जुबां ले आए ।
ताही जुबां से तिन को, महंमद दें समझाए ॥ ८२

ब्रह्मात्माएँ भिन्न-भिन्न स्थानोंमें अवतरित हुई हैं और उनकी भाषाएँ भी अलग-अलग प्रकारकी हैं. मेरे हृदयमें विराजमान श्री श्यामाजी स्वरूप सद्गुरु उन सभीको उनकी ही भाषामें समझा रहे हैं.

नूर महंमद कह्या हक का, दुनी सब महंमद नूर ।
जरा एक महंमद बिना, नहीं काहूं जहूर ॥ ८३

श्री श्यामाजीको परब्रह्म परमात्माकी अङ्गना कहा है. यह सम्पूर्ण जगत इन्हीं श्यामाजीके लिए उत्पन्न हुआ है. इसलिए श्री श्यामाजीके दिव्य ज्ञानके प्रकाशके अतिरिक्त कहीं भी कुछ भी नहीं है.

कही सूरत महंमद की, खावंद जमाने तीन ।
इन तीनो सिर खिताब, गिरो रबानी हकीकी दीन ॥ ८४

रसूल मुहम्मद द्वारा निर्दिष्ट श्री श्यामाजीके तीनों स्वरूप तीनों युगोंके स्वामी कहलाते हैं. इन तीनोंको ही ब्रह्मात्माओंको ब्रह्मज्ञान देनेका दायित्व प्राप्त हुआ है.

बसरी मलकी और हकी, ए तीनों एक सूरत ।
ए तीनों महंमद की, बीच अरस वाहेदत ॥ ८५

बशरी, मलकी और हकी ये तीनों वस्तुतः एक ही श्यामाजीके स्वरूप हैं. स्वयं श्री श्यामाजी दिव्य परमधाममें अद्वैत स्वरूप हैं.

और गिरो रूहें फिरस्ते, दोऊ कही अरस रब्बानी ।
माहें तीन सूरत महंमद की, जिन मुरग बूंदें लै पेहेचानी ॥ ८६

इस नश्वर जगतमें ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरी आत्माएँ अवतरित हुई हैं. दोनों ही अखण्ड धामसे अवतरित हुई हैं. इन दोनों समुदायोंके लिए श्री श्यामाजीके तीनों स्वरूप अवतरित हुए हैं जिन्होंने तारतम ज्ञानकी अमृतमयी बिन्दुओंको ग्रहण कर उनका पान किया है.

ए तीनों सूरत दोऊ गिरो मिने, कहे जो सिरदार ।
ए सब हक इलमें, कर देखो विचार ॥ ८७

ये तीनों स्वरूप दोनों समुदायोंमें शिरोमणि माने गए हैं. तारतम ज्ञानके द्वारा विचार कर इन सबको देखो.

ए दूजा खेल जो दुनियां, बीच जिमी आसमान ।
ए तो नाहीं कछुए, एक जरे भी समान ॥ ८८

इनके अतिरिक्त इस नश्वर जगतमें पृथ्वीसे लेकर आकाश पर्यन्त जो दुनियाँ अलग-अलग खेल कर रहीं हैं इनका लेशमात्र भी कोई अस्तित्व नहीं है.

लिख्या चौथे सिपारे, चौदे तबक कहे जे ।
ए जरे जेता नहीं, दो टुक होवें जिन के ॥ ८९

कुरानके चौथे सिपारेमें लिखा है कि चौदह लोकयुक्त ब्रह्माण्डका अस्तित्व एक कणके समान भी नहीं है जिसके दो टूकड़े किए जा सकते हों.

रात अमल सरीयत का, चल्या लुदंनी बिन ।
हक इलमें रात मेटके, किया जाहेर बका दिन ॥ ९०

वस्तुतः तारतम ज्ञानके बिना इस नश्वर जगतकी अज्ञानमयी रात्रिमें कर्मका विधान ही चलता रहा. अब ब्रह्मज्ञानने प्रकट होकर इस रातको मिटाकर

अखण्ड दिनको प्रकट कर दिया है.

कह्या दिल महंमद का, सूरज मारफत ।
हकीकत खोले पीछे, होसी हक लजत ॥ ९१

श्री श्यामाजीके हृदयको ब्रह्मज्ञानका सूर्य कहा गया है. उनके द्वारा उपदिष्ट ब्रह्मज्ञानसे यथार्थता स्पष्ट होने पर परब्रह्म परमात्माके साथके दिव्य आनन्दका अनुभव होता है.

एही लुदंनी हक इलम, करसी फजर ।
देखसी मोमिन अरस कों, रूह की खोल नजर ॥ ९२

यह ब्रह्मज्ञान ही अज्ञानरूपी अन्धकारको मिटाकर ज्ञानका प्रभात करेगा. तब ब्रह्मात्माएँ अपनी अन्तर्दृष्टि खोलकर दिव्य परमधामके दर्शन करेंगी.

ए सिपारे उनईसमें, लिखी हकीकत ।
सो आए देखो नीके कर, जो कह्या दिन मारफत ॥ ९३

कुरानके उन्नीसवें सिपारेमें इसका स्पष्ट उल्लेख हुआ है. वहाँ पर जिसको ब्रह्मज्ञानका दिन कहा गया है उसको भलीभाँति हृदयङ्गम करो.

दरम्यान जो साया कही, कह्या आगे ऊग्या दिन ।
सूरज दिल महंमद का, हुआ नूर रोसन ॥ ९४

कुरानमें इस प्रकार उल्लेख है कि एक दिनके पश्चात् रात्रिके व्यतीत होने पर आगे दिनका उदय हुआ है. इसका तात्पर्य श्री श्यामाजीके हृदयका ज्ञानरूपी सूर्यका उदय होना है. उसके उदय होने पर इस जगतमें सर्वत्र ब्रह्मज्ञानका प्रकाश फैल गया.

ए जो चल्या बीच रात के, अमल सरीयत ।
सो कहे दिल मजाजी, जो पैदा जुलमत ॥ ९५

रसूल मुहम्मदके पश्चात् श्री देवचन्द्रजीके प्राकट्य पर्यन्त अज्ञानमयी रात्रिमें कर्मका ही विधान चलता रहा. शून्य-निराकारसे उत्पन्न नश्वर जगतके भ्रमित चित्तवाले जीवोंके लिए ही वे नियम बनाए गए हैं.

अरस दिल मोमिन कहे, सो दिल हकीकी जेता ।
रूहें फिरस्ते अरस सें, इजने उतरे तेता ॥ ९६

ब्रह्मात्माओंको धाम हृदया कहा है. उनके हृदयमें सत्यके प्रति निष्ठा है. ब्रह्मात्माएँ तथा ईश्वरीसृष्टि परब्रह्म परमात्माके आदेशसे ही अपने-अपने धामसे इस जगतमें अवतरित हुई हैं.

रूहें गिरो दरगाह बीच, अरस अजीम जेताई ।
एही अरस दिल हकीकी, महंमद के भाई ॥ ९७

ब्रह्मात्माओंके समुदायका वास परमधाममें है जिसको सर्वश्रेष्ठ धाम कहा है. ये धामहृदया ब्रह्मात्माएँ सत्यनिष्ठ हैं जिनको रसूल मुहम्मदने अपने भाई कहा है.

एही बीच वाहेदत के, खिलवत खुदाई ।
जो हक हादी रूहन की, नूर बका पातसाई ॥ ९८

ये ब्रह्मात्माएँ परमात्माके अद्वैत स्वरूपमें हैं एवं ब्रह्मधाममें परब्रह्मकी अन्तरङ्ग लीलाका अनुभव करतीं हैं. दिव्य परमधाममें श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंका ही एकछत्र साम्राज्य है.

अव्वल हादी रूहन सों, कौल हैं हक के ।
सोए लिखी रदबदलें, कहें आयतें हदीसें ए ॥ ९९

इस नश्वर जगतके खेलमें आनेसे पूर्व श्री राजजीने श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंको अपने आनेका वचन दिया था. इस परिचर्चाका उल्लेख कुरानकी आयतों तथा हदीसोंमें भी है.

रूहें हमेसा रेहेत हैं, अरस बका दरगाह मिने ।
ए रदबदल हक सों, करी उतरते तिने ॥ १००

ब्रह्मात्माएँ सर्वदा दिव्य परमधाममें रहतीं हैं. उन्होंने ही इस खेलमें अवतरित होते समय परब्रह्म परमात्मासे परिचर्चा की थी.

अरस अजीम नूर बिलंद से, रूहें उतरीं जब ।
ए माएने आयत हदीस में, लिख भेज्या है तब ॥ १०१

जब ब्रह्मात्माएँ दिव्य परमधामसे इस नश्वर जगतमें अवतरित हुईं तत्पश्चात्

परब्रह्म परमात्माने कुरानकी आयतों तथा हदीसोंके द्वारा ये बातें लिखकर भिजवाईं.

हक हादी रूहनसों,जो हुई मुकाबिल ।
सो सुकन सब कुरान में, लिखी रदबदल ॥ १०२

श्री राजजी, श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंमें परस्पर जो परिचर्चा हुई उसकी सभी बातोंका उल्लेख कुरानमें किया गया है.

हकें लिख भेजी साथ हादी के, रूहों ऊपर इसारत ।
और कोई समझे नहीं, बिना हक वाहेदत ॥ १०३

श्री राजजीने ब्रह्मात्माओंको रसूलके द्वारा अपने आगमनके सङ्केत भिजवाए. इसलिए उसके गूढ़ रहस्योंको ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई समझ नहीं सकता है.

ए समझे कहिए तिन कों, जो कोई दूसरा होए ।
ए बारीक बातें वाहेदत की, केहेते बंधाए सोए ॥ १०४

इन ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य किसीका कोई अस्तित्व होता तभी वह इस रहस्यको समझ सकता. अद्वैत परमधामका यह रहस्य अत्यन्त सूक्ष्म है. जो भी इसका वर्णन करता है वह समझे बिना ही बँध जाता है.

ए सुकन बिना समझे, केहेते होए मुसरक ।
ए बारीक बातें खिलवत की, अरस की गूझ हक ॥ १०५

इस रहस्यको समझे बिना जो कोई यह बात करने लगते हैं वे अविश्वासी कहलाते हैं. क्योंकि दिव्य परमधामकी ये सूक्ष्म बातें श्री राजजीके हृदयके गूढ़ रहस्य हैं.

ए बातून माएने हक के, जाने हादी मोमन ।
होए ना और किनको, बिना अरस के तन ॥ १०६

श्री राजजीके हृदयके ये गूढ़ रहस्य श्री श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माएँ ही जानतीं हैं. परमधामके स्वरूप (ब्रह्मात्माओं) के बिना अन्य लोगोंको इसकी जानकारी नितान्त नहीं हो सकती है.

दूजा तो कहूं जरा नहीं, कहिए किन विध बात ।
कहें वेद कतेब और हदीसें, कछू नहीं बिना हक जात ॥ १०७

उनके अतिरिक्त अन्य किसीका तो अस्तित्व ही नहीं है. इसलिए वे कुछ बात भी कैसे कर सकते हैं ? वेद, कतेब तथा हदीसोंमें कहा गया है कि दिव्य परमधाममें ब्रह्मात्माओंके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है.

ए जो खुदी बीच दुनी के, मैं तैं करत ।
ए वेद कतेबों देखिया, जरा न काहूं कित ॥ १०८

इस नश्वर जगतके मिथ्याभिमानी लोग अहङ्कारवश 'मैं' और 'तू' कहा करते हैं. वस्तुतः वेद तथा कतेब ग्रन्थोंमें स्पष्ट उल्लेख है कि उनका कहीं भी कोई अस्तित्व नहीं है.

लिख्या वेद कतेब में, ए चौदे तबक कहे जे ।
बंझापूत सींग खरगोस, बोहोत भातों कह्या ए ॥ १०९

वेद तथा कतेब ग्रन्थोंमें इन चौदह लोकोंके विषयमें भाँति-भाँतिसे स्पष्टता की गई है कि ये बन्ध्यापुत्र तथा शशकशृङ्गकी भाँति अस्तित्वहीन हैं.

बसरी मलकी और हकी, ए कही सूरत तीन ।
इनों किया हक इलम से, महंमद बेसक दीन ॥ ११०

बशरी, मलकी और हकी ये तीनों स्वरूप श्री श्यामाजीके कहे गए हैं. इन तीनोंने ब्रह्मज्ञानके द्वारा सत्यधर्म (श्री कृष्ण प्रणामी धर्म) की स्थापना कर परमात्माके प्रति चले आ रहे सन्देहोंको दूर किया.

और भी करी बेसक, ए जो कही सुन्नत जमात ।
इनों लई सब दिलमें, बेसक अरस बिसात ॥ १११

इन्होंने ब्रह्मात्माओंके द्वारा धर्मनिष्ठ समुदायको भी सन्देह रहित बनाया. ब्रह्मात्माओंने इस दिव्य ज्ञानरूपी सम्पदाको अपने हृदयधाममें धारण किया.

तब हुआ रूहन का, हक अरस कलूब ।
याही हक अरसमें, रूह नजरों मिले मेहेबूब ॥ ११२

तभी इन ब्रह्मात्माओंका हृदय परमात्माका धाम कहलाया. ये ब्रह्मात्माएँ इसी धामहृदयमें अपने प्रियतम धनीके दर्शन करतीं हैं.

तब सुंनत जमात की, बातें सबें बनी आई ।
महंमद की तीन सूरतें, करी पूरी पनाही ॥ ११३

इन धर्मनिष्ठ समुदायके लोगोंके सम्पूर्ण मनोरथ तभी सिद्ध हुए जब श्री श्यामाजीने तीनों स्वरूप धारण कर उनको अपनी शरणमें लिया एवं उनकी सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण की.

अव्वल रोसन रसूल, रूहअल्ला आखर ।
गिरो पाक करी बीच इमामें, दुनी सचराचर ॥ ११४

सर्वप्रथम उन्होंने रसूलके रूपमें आकर ज्ञान दिया और अन्तमें श्री देवचन्द्रजी (रूहअल्लाह) के रूपमें प्रकट होकर ब्रह्मज्ञानका प्रभात किया. तत्पश्चात् इमाम महदीके रूपमें ब्रह्मात्माओंके हृदयको पवित्र कर सचराचर जीवोंको मुक्तिस्थलका सुख प्रदान किया.

तीन सूरत महंमद की, मिल फुरमाया किया ।
भिस्त खोल दुनी फानी कों, कायम सुख दिया ॥ ११५

इस प्रकार श्री श्यामाजीके तीनों स्वरूपोंने मिलकर श्री राजजीके आदेशानुसार कार्य किया. उन्होंने ही मुक्तिस्थलोंके द्वार खोलकर नश्वर जगतके जीवोंको अखण्ड सुख प्रदान किया.

चौदे तबक के बीचमें, तरफ न पाई किन ।
हादी गिरो अरस बीच में, बैठाए इलमें कर रोसन ॥ ११६

इस नश्वर जगतके चौदह लोकोंमें आज तक किसीको भी परमात्माकी दिशा प्राप्त नहीं हुई है. ऐसी स्थितिमें श्री श्यामाजीने सद्गुरुके रूपमें प्रकट होकर तारतम ज्ञानका प्रकाश फैलाया जिससे ब्रह्मात्माओंको जागृत कर दिव्य परमधाममें बैठाया.

सेहेरग से नजीक हक अरस, बीच हक इलम देवे बैठाए ।
ऐसा इलम लुदंनी, रूहअल्ला ले आए ॥ ११७

श्री श्यामाजी ऐसा ब्रह्मज्ञान लेकर सद्गुरुके रूपमें अवतरित हुई, जिससे नश्वर जगतमें बैठे-बैठे परब्रह्म परमात्मा तथा दिव्य परमधाम प्राणनलीसे भी निकट दिखाई देने लगे.

रूहअल्ला आप उतर, इलम ल्याए हक ।
तिन समझाई सब उमतें, हक कौल बेसक ॥ ११८

श्री श्यामाजी परब्रह्म परमात्माका ज्ञान लेकर सद्गुरुके रूपमें अवतरित हुईं. उन्होंने ही सभी सृष्टियोंको ब्रह्मज्ञान देकर उनकी शङ्काओंका निवारण किया.

तीन सूरत महंमद की, मिल करी ऐसी सिफात ।
उमतें पोहोंचाई दोऊ वतनों, दुनी सब करी हैयात ॥ ११९

श्री श्यामाजीके तीनों स्वरूपोंने मिलकर ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीसृष्टिकी अनुशंसा (सिफारीश) कर उनको परमधाम एवं अक्षरधाम पहुँचाकर नश्वर जगतके जीवोंको मुक्तिस्थलोंमें अखण्ड किया.

अव्वल भी महंमद कह्या, बीच और आखर ।
वेद कतेब सबों कौलों, केहेवत योंहीं कर ॥ १२०

इस प्रकार श्री श्यामाजी ही आरम्भ, मध्य तथा अन्तमें अवतरित हुईं हैं. वेद तथा कतेब आदि सभी धर्मग्रन्थोंकी भविष्यवाणियाँ इसीकी ओर सङ्केत करतीं हैं.

हक कहे मुख अपने, महंमद मेरा मासूक ।
ए हक गुझ मोमिन जानहीं, जो दिल आसिक हैं टूक टूक ॥ १२१

इसीलिए स्वयं परब्रह्म परमात्माने श्री श्यामाजीको अपनी प्रियतमा कहा है. इस रहस्यको अनुरागिणी ब्रह्मात्माएँ ही समझ सकतीं हैं जिनका हृदय इन वचनोंको सुनकर उत्कण्ठित होता है.

महामत कहे ऐ मोमिनो, रूहें आसिक इसक वतन ।
बहस करी रूहों इसक की, आसिक इसक के तन ॥ १२२

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! सभी ब्रह्मात्माएँ परमधाममें श्री राजजीके प्रेमकी अनुरागिणी हैं. इन्होंने श्री राजजीसे प्रेमकी परिचर्चा की क्योंकि इन अनुरागिणियोंका तन ही प्रेमस्वरूप है.

प्रकरण १४ चौपाई १०३४

श्री मारफत सागर ग्रन्थ सम्पूर्ण

जो हक हुकमसे भाई केसवदासने रिवाइत करी है, जो हादीने जुबान मुबारकसेंती चौपाई एक हजार चौंतीस (१०३४) फुरमाई थी, सो यार मोमिनोंने इसके बाब चौदे (१४) माफक अकल अपनी के गम दिलसे बांध कर किताब तमाम करी. अब भाई मोमिन इस चौपाइयोंके हरफ-हरफके माएने मगज जाहेरके और बातूनके, रूहकी नजर खोलके लेंगे दिल अरसमें. और हक के बेसक इलम लुदंनीसों विचारेंगे और फैलमें ल्यावेंगे. तब ही हाल ले हादीके कदमों कदम धरेंगे. किस वास्ते के आखर के मोमिन आकिल हैं, और हिदायत हक की लई है. सब बिधों कामिल हैं, जिनके दिल अरसमें सूरत खुदायकी ऊगी है. और ए कलाम भी हादीने मोमिनोंको कहे हैं. तो हुकमसे मोमिनोंको जरूर सिर लेना है. तिस वास्ते जो कोई अरवा अरस अजीमकी होए और इलम लुदंनीसों जाग्रत हुई होए और हुकम मदत करे और हक हादी हिंमत देवे, तो सुरत हक हादीके कदमों बांध के. इस फानी वजूद को उडावें. और बीच अरस अजीम के उठ खडी होए और मिलाप हमेसगी का सुख लेवें. हादी ने दरवाजा बका का खोल्या है. केतेक यारोंको लेयके आप अरस सिधारे और अपने जो तन हैं तिनको बुलावते हैं ताकी साख ए चौपाई कयातमनामे की-

सुनत बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड ॥
धिक धिक पडो तिन अकलें, वह नाहीं वतनी अखंड ॥

और आज हमारे हादी को बीच परदे के हुए दो महीने और दस रोज हुए. सो आज हमारे मेहेबूब की साल गिरे का दिन है. याने जन्म उच्छव छेहंत्ररमां तमाम हुआ. पचहत्तर बरस और नव महीने और बीस रोज इस फानीके बीच हम गिरो रबानीके वास्ते कई कसाले सेहे सेहे गुजरान किया और कई न्यामतें बका की इन रूहोंके वास्ते जाहेर करी. सो कहां लों लिखों, बानी में जाहेर लिख्या है, जो देखेगा तिनकी निसां होएगी. सदी महंमद सलिल्लाह अलेह वसल्लम की अग्यारे सै और छे (११०६) महीना मुहर्रम तारीख सत्ताईसमी (२७) पोहोर दिन चढते और हिन्दवी तारीख सम्वत् सत्रह सै इक्यावना बरस (१७५१) भादरवा वदि चौदस (१४) वार गुरु, पोहोर दिन चढते किताब मारफत सागर तमाम हुई. हुकम हक हादी के सें चौपाई एक हजार चौंतीस (१०३४) मुकाम परना में, लिखितं

गिरो रबानीकी पांउ खाक हमेसा चाहत केसबदास की परनाम कोटान कोट डंडवत साथ सबकों अविधारजो जी प्रीत की रीत सों झाझा सनेह प्यारसों.

मसौदा (मसविदा) : उत्तर पक्ष

श्री प्राणनाथजीके आदेशसे भाई केशवदासने महामति श्री प्राणनाथजीकी वाणीको ज्योंका त्यों उतार दिया है. श्री प्राणनाथजीने अपने मुखारविन्दसे मारफत सागरकी सम्पूर्ण १०३४ चौपाई कही थी. उनके मित्र ब्रह्मात्माओंने उनके वियोगसे सन्तप्त हृदयसे अपनी बुद्धिके अनुसार उस वाणीको चौदह प्रकरणोंमें बाँध कर ग्रन्थका आकार दिया है. अब ब्रह्मात्माएँ आत्मदृष्टि खोलकर इन चौपाइयोंके एक-एक अक्षरके बाह्य अर्थ एवं गुह्यार्थ ग्रहण करेंगी और अपने हृदय धाममें धारण करेंगी. सद्गुरु प्रदत्त तारतम ज्ञानके द्वारा उन शब्दों पर विचार करेंगी तथा उनके अनुसार आचरण करेंगी एवं अनुभूति प्राप्त कर सद्गुरुके पदचिह्नों पर चलेंगी. अन्तिम युगमें प्रकट हुईं ब्रह्मात्माएँ प्रबुद्ध हैं. उन्होंने परब्रह्मका मार्ग दर्शन प्राप्त किया है. वे सब प्रकारसे समर्थ हैं उनके धामहृदयमें परब्रह्म परमात्माका चिन्मयस्वरूप अङ्कित है. मारफत सागरका यह उपदेश श्री प्राणनाथजीने ब्रह्मात्माओंके लिए दिया है. उनके आदेशसे इन्होंने इनको अनिवार्य रूपसे शिरोधार्य किया है.

इसलिए जो ब्रह्मात्माएँ परमधामसे अवतरित हुईं हैं एवं तारतम ज्ञानसे जागृत हुईं हैं, परब्रह्म परमात्माका आदेश उनकी सहायता करे अथवा स्वयं सद्गुरु उन्हें शक्ति प्रदान करें तो वे अपनी सुरताको श्री राजश्यामाजीके चरणोंमें लगा कर इस नश्वर शरीरको उड़ा दें और मूल मिलावेके अपने चिन्मय स्वरूपमें जागृत होकर खड़ीं हो जाएँ तथा धामधनीके मिलनका आनन्द प्राप्त करें. श्री प्राणनाथजीने अखण्ड परमधामका द्वार खोल दिया है और वे कुछ अपने मित्र आत्माओंको ले कर वहाँ (परमधाममें) पधारे हैं. वे अपनी अङ्गरूपा आत्माओंको वहाँ बुला रहे हैं. निम्न चौपाई उसकी साक्षी है-

सुनत बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड ॥
धिक धिक पडो तिन अकलें, वह नाहीं वतनी अखंड ॥

अपने सद्गुरुका वियोग सुन कर जो आत्मा शरीर धारण कर रहती है उसकी बुद्धिको धिक्कार है. वह अखण्ड परमधामकी आत्मा नहीं है.

आज हमारे सद्गुरु श्री प्राणनाथजीके अन्तर्धान (धामगमन) के दो महीने और

दस दिन हो गए हैं. आज इन प्रियतमका छिहत्तरवाँ जन्मदिन है. वे पचहत्तर वर्ष नौ महीने और बीस दिन हम ब्रह्मात्माओंके लिए इस नश्वर जगतमें हमारे बीच विराजमान रहे. उन्होंने अनेकों कष्ट सहन कर निर्वाह किया और ब्रह्मात्माओंके लिए अखण्ड परमधामकी अपार सम्पदा प्रकट की. मैं उनका वर्णन कहाँ तक करूँ ? श्री तारतमसागर वाणीमें यह सब स्पष्ट लिखा है. जो उसका अनुशीलन करेगा उनको तृप्ति हो जाएगी. विक्रमी सम्वत् सत्रह सौ इक्यावन भाद्र कृष्णा चतुर्दशी गुरुवार प्रथम प्रहरको पन्नामें एक हजार चौतीस चौपाईयुक्त मारफत सागर ग्रन्थ पूर्ण हुआ. लिखनेवाले सदैव ब्रह्मसृष्टिकी चरणरज चाहनेवाले केशवदासका समस्त सुन्दरसाथको करोंड़ों बार दण्डवत् प्रणाम ! प्रेमकी रीति और अखण्ड प्रेमके साथ...

पहले बीज उदय हुआ, पुरी जहां नौतन ।
सब पुरियों में उत्तम, हुई धन धन ॥

ए मधे जे पुरी कहावे, नौतन जेहनुं नाम ।
उत्तम चौदे भवनमां, जिहां वालानो विश्राम ॥

– *महामति श्री प्राणनाथ*

श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर